तिलक जंजू राखा प्रभुताका । कीनावड़ा कलूमें साका ॥ (दसमग्रन्थसाहिब)

दसमग्रन्थ साहिब

कर्णांकर पर्यों सम होई छभी अगतम देवी अर्थाई

आद ग्रंथसाहिब

भूले सिखे गुरु समझाए ।
औजड़ जांदे मारगपाए ॥

(पुस्तक)

"नवीनसिंह शिक्षा,,

जिसको

"गुरु विद्या रत्न सुखकाल उपदेशक
श्री भारतधर्म : मह मण्डल
रोपड़ निवासी ने रचना किया

जिसमें

गुरु ग्रंथ साहिबादि के ४०० प्रमाणों द्वारा
नवीन सिंहों की अनेक पुस्तकोंका उत्तर
है।

पुस्तक रचताने ॥ सनातन धर्म्मसभा रोपड़ और
सनातन धर्म्मसभा अमृतसर और सनातन धर्म्मसभा
रावलपिंडी की सहायता से प्रकाशित कराया । जिसमें
गुरमुखी पढ़े भाइयोंको भाषापढ़नेका आसान तरीका
रक्खा और अंतमें शास्त्रार्थ के नियम हैं ॥

"तंत्रप्रभाकर प्रेस" मुरादाबाद में मुद्रित ॥
सन् १९०५ ईसवी ॥

तृतीयबार १००० मूल्य ।-)

व्यवहार भानू ग्रंथ देखो जिस में दो हजार गुरु मत धर्म ग्रंथों के प्रमाण देकर पच्चीस विषयों से हिन्दू धर्म के अनुकूल गुरुमत को सिद्ध कियाहै इस के सवाए मेरेरचे और ग्रंथों का सूचीपत्र इस पुस्तकके अंतमें देखो ॥

[४] इस पुस्तक 'नवीन सिंहासिक्षा, से नवीन सिंहों को शिक्षा तो पूर्ण रीति से होगी। गुरुमत में और जो मत खद्योत [पटबीजने] की सदृश निकले हैं यदि वह हठधर्मी का परित्याग करें तो उन के सुधारने के लियेभी यही पुस्तक काफी है ॥

[द्वितियावार छपनेपर विज्ञापन]

[१] इस पुस्तक का कोई ४ वर्ष में उत्तर नहीं देसका इसकार्ण इस पुस्तक 'नवीन सिंह-शिक्षा " का पंजाब प्रांत में गौरब बढ़ा ॥

[२] हमारे भाई नवीन सिंहों नै सिर्फ उपालंभ दिया (उपड़े हथ न थूकौड़ी) कि पंडित जीनै ग्रंथसाहिब की थोड़ी २ अपने मतलब कीं तुकें दी हैं ॥

(उपालंभीओं से निवेदन)

[३] भाईसाहिब आप जरा तो विचारें ग्रंथ-साहिव के समग्रशब्द लिखने से पुस्तक बढ़

जाती है और अपने विद्वान ठाकुरसिंह और दितासिंह ज्ञानी आदियों की पुस्तकें देखो जिन में ग्रंथसाहिबकी थोड़ी२तुकें दीहैं और पता नहीं दिया जिस्से उनका कोई पोप न खोखसके मित्रो हमनै पुरेपते से तुकें लिखी हैं जिस्से किसी को धोखा न लगे और पुस्तकभी न बड़े ॥

[४] दास अपने गुरूका पर्म धन्यबादकरता है जिनकी कृपा से ग्रंथसाहिब और गुरुमत का सिधान्त समझ अनेक झूठे पाखंडीओं के जाल को नष्ट किया ॥

नवीन सिंहशिक्षाकी भूमिका ॥

मित्रों ! लगभग चारसौ तेतीस ४३३ वर्ष हुए-गुरु सम्प्रदाय चले को (हिन्दू धर्म में प्रसिद्ध हुए को) और दसों गुरु साहिबों के आचरण (चाल चलन) और व्यवहारिक कार्यों में गुरुमत इतिहासों द्वारा गुरुसाहिब हिन्दू धर्मावलंबी साबित होते हैं। यहांतक कि श्री गुरु तेग बहादुर जी ने हिन्दू धर्मकी रक्षाके लिये दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) में बलिदान (शहीद यानी कुरबानी) हुए जो भूगोल में दिवाकर की न्याईं प्रकट हैं गुरु मत वलंबी चतुर्वर्णस्थ पुरुष (ब्राह्मण खत्री सूद्र बैस उपदेश चहुँ वर्णों को साझा । आद ग्रन्थ साहिब) खासकर गुरु मतावलंबी सर्वत्र लोग (गरीब, अमीर, सरदार, राजे महाराजे) हिन्दू धर्मके सिद्धान्त अनुकूल आचरण धारण कियाकरते हैं ॥ ॥ यथा ॥ श्री महाराजा साहिब रणजीतसिंह साहिब बहादुरजी नित्यम प्रति श्री गंगाजल से स्नान किया करते थे जो हमेशः उनकी श्री गंगाजी तक डांक लगी हुईथी और महाराजाके अनेक मन्दिर ठाकुरद्वारे आदिक बनवाए हुए मौजूद हैं। और उक्त महाराजा के परलोक पधारनेपरफूल (अस्थि) श्री गंगाजी जाते सामय सर्वत्र सिंह राजधानीओं में घूमते हुए जब पटियाला पहुँचे तो नरेश कर्मसिंह— अहलकारों के साथ पेशवाई को पटियाला से दो मील बाहर

तक आए ॥ उस समय धर्म के दुर्भाग्य समझ यह पुकार कबि जैसिंह जी ने उच्चारण किया ॥

किनो है ध्यान प्रलोकहुं को महाराजा भूमि के पलके आपही बलने हैं ॥ काकी गहो ओट कौन सत्र की बचावे चोट गऊ ग्रन्थ पन्थ वेद बिप्र बलकाने हैं ॥ केहर जैकरे श्री सुख संप्रदा असुर बीरते सरपन देह घुंघपी धरानेहैं । भाहे मरदाने जगजाने रनजीतसिंह एकमरद काने बिन सभी तीन कानेहैं ॥

इसी प्रकार गुरु मतावलंबी सरदार राजे आदिक सर्वत्र का आचारण हिन्दू धर्मके अनुकूल श्री भाई गुरदास जी के कथन अनुसार अपना कल्याण का वसीला हिन्दू धर्म को मानते थे ॥ ॥ यथा ॥

लोकाचारी लोक बिच बेद विचारी कर्म करन्दा ।
सावधान गुरज्ञान बिच जीवन मुक्त जगतवचरन्दा ॥
(श्री भाई गुरदास जी की बार १६ पौडी ३)

श्री अमृतसर निवासी सज्जनों की प्रेरणासे मैंने छोटासा पुस्तक श्री गुर घर में दुर्गापूजन गुरुमुखी अक्षर सम्बत् १९५६ विक्रम में प्रकाशित कियाथा जो सनातनधर्म क्लब श्री अमृत सर ने उक्त पुस्तक को श्रेष्ठ समझ धर्मार्थ बांटा । जिसपर नूतन गुरु मतावलंबीओंने समाचार पत्रों में उत्तर देने के लिये प्रतिज्ञा प्रकाशित की जो अबतक सत्य नहीं होसकी इस्से भी नवीनसिंहों को शिक्षा प्राप्तहो निग्रह कोटि में गिरे ॥ और मेरे

कई शास्त्रार्थ तकरीरी और तहरीरी मध्यस्थों द्वारा हुए इस में भी नवीन सिंहों को नीचा देखनापड़ा। सिवाय कटु वचन कहने से और कुछ न बनसका हम ने समझ लिया " निंदक हमरे कपड़े धोई ,, आद ग्रन्थसाहिब ॥ " मुहों की बोलन बोली थे ॥ जितसनघरे प्यार ॥ जपजी, इस वास्ते हम उनको कटु वचन नहीं कहसकते। और यही हिन्दूओं की बड़ीसभा श्री भारतधर्म महामण्डल का मन्तव्य नम्बर १२ में उपदेश से है ॥ ॥ यथा ॥

पंजाब में श्रीमान् गुरु नानक देवजी से श्री गुरु गोविंद-सिंह जी महाराज तक जिन दस महात्माओंने खत्री कुल में उत्पन्नहोकर आपत् काल में श्री राम नाम महिमा, देव पूजा, व्रत, तीर्थ, श्राद्ध, अपने वर्ण में बिवाह आदि सनातन धर्म के अङ्गों की बीरता के साथ रक्षाकी है। यदि उनको और उनकी सम्प्रदाय को कोई सनातन धर्म्मावलंबी हिन्दूओं से पृथक् समझता है तो उसकी बड़ी भूल है ॥

इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) उत्सव १२ श्री भारतधर्म महामण्डल सन् १९०० ई० में रजूलैशन (मन्तव्य) नम्बर १२ ॥

उक्त रजूलेशनको श्री गुरु मत धर्म्म ग्रन्थों से पुष्ट करने के लिये और अपने प्यारे भाइयोंकी इच्छा पूर्ण करने को जिन के प्रार्थनापत्र मेरेपास बहुत आए हैं कि हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को गुरु मत के धर्म्म ग्रन्थों से मण्डनकर भाषा में पुस्तक

सूक्ष्म आकार रचनाकी जावे जिससे नवीन सिंहों को शिक्षा प्राप्तहोकर गुरु रक्षिक सनातन हिन्दू धर्मकी रक्षाहो। इसकारण नवीन सिंह शिक्षा नामक पुस्तक रचनाकी है जिस में ११ अध्याय और ११ विषय हैं॥

अध्याय १ में गुरुमत हिंदू धर्म्म है जो सिंह अपने आप को हिन्दुओं से भिन्न समझते हैं उनकी बड़ी भूल है। जिस भूल को—गुरु ग्रन्थसाहिब और इतिहासों के प्रमाण और युक्ति द्वारा साबित किया है।

अध्याय २ में गुरुसाहिब जनेउ पैहरना धर्म्म समझते थे और अपने सीस देकर जनेऊ की रक्षाकी यह साबत कियाहै।

अध्याय ३ मे श्री गुरु मत के धर्म्म ग्रंथ वेद शास्त्र पुराणों को पाप विनाशक धर्म्म ग्रंथ जान कल्याण का वसीला समझते हैं और गुरु साहिबों को वेद के प्रतापसे गुरुयाई प्राप्त हुई यह साबित किया है॥

अध्याय ४ में श्री गुरु मत में सर्वत्र हिन्दू रीति से विवाह हुए जो "स्थाली पुलाक न्याय" की रीति से उपकर्म्म श्री गुरु नानक जी का बिवाह और उपमध्य श्री गुरु हरि गोबिंद जी के दो बिवाह और श्री गुरु तेगबहादुरजी का एक विवाह और उपसहार श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के दो विवाह और शंका समाधान से गुरु मत में दो कन्या के विवाह हिंदू की रीति से ८ विवाह साबित किये हैं। अन्त में हिंदू गीत के

अनुसार विवाह करने में श्री गुरु ग्रन्थ साहिबजी का हुक्म दिखलाया है ॥

अध्याय ५ में श्री गुरु मत में सर्वत्र का जोती जोत समावन मृत्युपर श्राद्ध हिन्दू रीति से हुए जो स्थाला पुलाकन्यायसे ६ परमाण दिखलाये हैं। यथा श्रीगुरु नानकदेवजीने पिता का श्राद्ध करना और गुरु अमरदासजी ने अपनी जोती जोत समावन मृत्यु के पश्चात् अस्थि (हड्डी) श्री गंगाजी और पिंडदान के लिये हुक्म देना॥ गुरु ५ ने अपने पिता का दाहादि कर्म हिन्दू रीति से करना और गुरु ४ के ज्येष्ठ पुत्रकी जोती जोत समावन (मृत्युपर) गरुणपुराणकी कथा होनी और श्री गुरु हरगोविन्दजी की जोती जोत समावन (मृत्युपर) १३ तेरहवेंदिन—शय्या वस्त्र शस्त्र असवारी भोजनादि दान होना। श्रीगुरु तेगबहादुरजी का मृतक कर्म हिन्दू रीति से श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने करना॥ और वाणीसद से गुरु ३ का हुकम मृतक श्राद्धके लिये साबित कर दूसरे के कर्म्मों का फल दूसरे को पहुंचता है श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी के वाक्य ६ प्रमाण में दिखलाये हैं जो श्राद्ध में प्रधान अंश है।

अध्याय ६ में गुरु मत धर्म ग्रंथ गंगादि तीर्थों के स्नान से पाप दूर हो सद्गति मानते हैं।

अध्याय ७ में गुरु मत धर्म्म ग्रंथों से ब्राह्मणों की स्तुति और रक्षा करना और दान देना गुरु के सिंहों को दान लेने का

पाप दिखलाया है और जो ब्राह्मणों पर गुरु पुत्र मरवाने का उपालंभ दिया करते हैं उसका समाधान कर.महाराजा हरीचंद दानी की कीर्ति ग्रंथ साहिब जी से दिखाकर श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज का हुकुम ब्राह्मणों को दान देने का साबित किया है।

अध्याय ८ में गुरु मतके धर्म्म ग्रंथों के प्रमाणों से ईश्वर (अकालपुरुष) का नरसिंह बामन राम और कृष्ण अवतार साबितकर श्री दुर्गाजी के निरकों के सिर श्रीगुरु गोविंद सिंह जी का श्री मुख अकाल स्तुत रूप बानी से श्री दुर्गा जी की मानता का मुख मर्दन वज्र जिसका नवीनसिंह कुछ उत्तर नहीं रखते। और गुरु मत के धर्म्म ग्रंथों के प्रमाणों द्वारा मूर्ति में ईश्वर की पूजा करने से सद्गति और मूर्ति पूजन का माहात्म्य साबित किया है।

अध्याय ९ में श्री गुरु नानकदेवजीसे लेकर श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज तक दसों गुरु साहिबों का सूक्ष्म जीवन चरित्र और उनको श्रीमुख बाणी और ग्रंथ साहबजी के शब्दों से ॥ मनो मई सिद्धान्त और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का भेद और समझने की विधि जो ग्रंथ साहिब के जानने में गुरु मतावलम्बियों के सदृश दो घंटे में होसकता है। और सूचना से नवीन सिंहों को शिक्षा कि गुरु ग्रंथ साहबजी को परस्पर विरोध के कारण जगत में झूठा होने से बचें।

अध्यायं १० में पुस्तक रचताका देसारटन और प्रशंसा पत्र।

अध्याये ११ में नवीन सिक्खों की दुरदशा और श्री आर्य के १० नियम हैं॥

मित्रो! प्रेम प्रीतिसे पठन पाठन और श्रवण कीजिये मेरा परिश्रम सफल हो। और सद्दैन के लिये प्रीति बढे॥ इति॥

संवत् १९५८ विक्रम
पौष गत १३

ह० गुरु विद्या रत्न
सुखलाल उपदेशक
श्री भारतधर्म्म महामण्डल
रोपड़ तहशील खास
जिला अम्बाला निवासी
पृथीचन्द का सुत

नवीन सिंहशिक्षा

अबपन उलट सनातन हुआ ॥

" सच्चे मारग चलिदिआ उस्तुति करे जहांन ,,

" गुरसिखमीत चलो गुरचाली ,,

॥ अध्याये १ ॥

(गुरुमत हिन्दूधर्मही है)

(१) हिन्दूकहेंता मारिये मुसलमानबीना पंचतत्वका पूतला खेलै गैबी १ माहि ॥

(श्री गुरु नानक देव जी का जन्म इतिहास)

[नोट]-श्री गुरु नानकदेवजी यवन (मुसलमानी) देश में गए जहां हिन्दूओंको काफिर जान मारदेते थे ॥ वहां मुसलमानों के पुछनेपर गुरुसाहिब हिन्दूधर्मसेमुन्किर नहीं हुए ॥

(२) सुन्नत किये तुर्क जे होएगा औरत का क्य करिये अर्द्धशरिरी नारन छोडी तातें हिन्दू रहिये ॥

(टिप्पणी) १ छिपा हुआ पांच कोशों मे जीव ॥

[श्री गुरु आदग्रंथ साहिब राग आसा बाणी श्री कबीर भगत शब्द ८ तुक १

[नोट] श्री गुरु ग्रंथसाहिब जी उक्त शब्द से उपदेश करता है जो पुरुष सुन्नत [मुसलमानी चिह्न लिंग कटाने] से रहित हैं वोह हिन्दूही हैं सो सिक्खों गुरु मतावलंबी नवीन सिंह आदिक ग्रंथसाहिब जीके माननेवाले हिंदू ही सिद्ध होते हैं जो गुरुसाहिबजीने हिन्दूधर्म रक्षा के लिये उतपन्न किये थे अपने आप को हमेशहसे हिन्दूधर्म के रक्षक मानते हैं ॥

[३] हिन्दू सालाहि[1] हिं सालाहिन दर्शन[2] रूपअपार ॥ तीर्थन्हावे आर्चा पूजा अगर[3] वास बहुकार ॥ [श्री गुरु आद ग्रंथसाहब राग आसाकी वार महल्ला १ श्लोक ६]

[नोट] जो अर्थ सिरफ ईश्वर म्राप्ती का लगाते हैं सो धोखा देते हैं क्योंकि उक्त शब्दमें "तीर्थन्हावे आदि

(टिप्पणी) (१) श्लाघा करने योग्य ॥ (२) ईश्वर अवतारों के अनेक दर्शन (३) यज्ञोपवीतादि । और धूप जगाना अर्थ भी ज्ञानी लोग हिन्दू धर्म्म का मुख्यकर्म वतलाते हैं ॥

पाठ हिन्दूओं काही सिद्धान्त है उक्त ग्रंथका प्रमाण देकर एक नवीन सिंहों के समाचार पत्र का सम्पादक [ऐडिटर] साबितकरता है कि सिंह हिंदूही हैं ॥ यथा ॥ देखो साप्ताहिक गुरुमुखी अखबार॥ खालसा प्रकाश ज़मीमा आफताब पंजाब लाहोर नंबर ३७ जिल्द १६ असौज दिन १७ सं० १९५५ वि० मो छपा सुफा १ कालम १ से ३ तक ॥ " श्री गुरु ग्रंथसाहिब जीके उपदेश " इसमुखी से लेख यह है ॥

साडे खालसाजीदा धर्म पुस्तक श्री गुरु ग्रंथसाहिबजी है ॥ अर जो इस विच हुक्म हैं सो गुरूसाहिब का हुकम है ॥ यथा ॥

हिन्दूसाकाही सालाहिन दर्शनरूप अपार। तीर्थन्हावै आरचा पूजा अगर बास बहुकार ॥

इस थीं साबित हुंदा है कि श्री गुरुनानक साहिब जी ने हिन्दू आदी आसादी वारविच बहुत अस्तुत्ति लिखीहै॥ हिंदू जो हैन सलाहिन जोग हैंन अर हिंदू आंदादर्शन रूप अपार है क्योंकि इनादे कर्म जो हैन सो बहुत अच्छे हैन तीर्थोंविखे जाकर स्नानकरदे हैंन अर पूजा पाठ इनादा

कर्म है ॥ अर धूपदीप जगाओ देहैं ॥ इस थी साबतहुंदाहै कि खालसा जी अर हिंदूआंदे कर्मकांड दीबाबत श्रीगुर ग्रन्थजीदी पवित्रबाणी विच जदगुरु साहिब अपणे मुखार- बिंद थीं अस्तुति करगएहैंन अर उसग्रथसाहिब नूं साडे महाराज कलगीधर [पातसाह १०] हुकमदे गएहन कि ग्रन्थसाहिब नूंही गुरुमंनों ॥ फिर की कार्ण है कि हिंदूआंनू असी अरगैर्थी जुदाजांदीए कृपाकरके ओह भाई सानूं लिख के दसणगे कि सिंहांहिंदू आंनालों किसतरां जुदे है जो लिख देहन कि खालसा धर्म हिंदूआं नालों भिन्न हैं ॥

(४) सगल जगत महि खालसा पन्थ गाजे । जगे धर्म हिन्दू सकल दुंद[१] भाजे (छक्के[२] श्रीमुख पातसाही १०)

[नोट] श्री गुरू गोविंदसिंह जी महाराज संवत् १७५६ वि० चैत्र के नवरात्रों में श्री दुर्गा जी की प्रसन्नता हेतु अनेकों पुरश्चरण (श्री दुर्गा पूजन के छिले) कर अन

(टिप्पणी) (१) अधर्म्म और पाखण्ड । (२) जिसका धर्म्म पवित्र हुकम मान खालसाजी नीले वस्त्र पैहरने है ॥ देखो छका छन्द ६ कोरो खालसा पंथ प्रवेसाजगै सिंह जोवे धरे नील भेरा ॥ आद ग्रंथ साहिब में नलिवस्त्र का खंडन है ॥

में छके (श्री दुर्गा स्तुति के छः छन्द) उच्चारण कर हिन्दू धर्म की रक्षाका वर पाया।

जिन छकों की पुस्तक के प्रमाणों को नवीन सिंहों के लीडर ठाकुरसिंह ज्ञानी अपने गुटके (रिसाले) गुरमुखी गुरमत हुलास सं० नानकसाही ४२९ (१९५५ वि०) वजीर हिन्द प्रेस श्री अमृतसर छपे के पृष्ठ ४ सतर ११ और १२ में प्रमाण मानता है।

(५) जगे सिंह बलवन्त वीर सभ दुष्ट खपाए। दीन महंदी उठगया हिन्दूक ठहराए। श्री भाई गुरदास जी की वारों में एक होर नकली भाई गुरदास जी की वार ४१ पौडी १७॥

। नोट। यह वोह वार है जिस्से खालसा धर्म में पाहुल (कछ१ कडा२ करद३ कंघा४ केश५) इन पाचों का धारना साबित होता है। यथा—गुरु सिमर मनाई कालका खण्डे की वेला। पिवो पाहुल खण्ड धार होए जन्म सुहेला॥ उक्त वार ४१ पौडी १॥ अगर सिंह अपने आपको कालिका (श्री दुर्गाजी) के मानने से और हिन्दू धर्मकी रक्षा करना अपना धर्म नहीं मानते तो पाहुल

(कच्छ कड़ा करद कंघा केश) इनकी धारणा व्यर्थ है (फिजूल है) और उक्त बार मे सिंहों का हिन्दूओं जैसा ही निज धर्म कथन किया है॥ यथा॥ निज फते बुलाई सतगुरु किनो उजेयारा॥ झूठ कपट सभ त्यागए सच सच वरतारा॥ फिर जग होंम ठहराय कर निज धर्म सवारा। तुर्क दुंद १ सभ उठगयो रचिआं जैकारा। जा उपजे सिंह महां बली खल निरधारा॥ उक्त बार ४१ पौडी १८

।६। श्री गुरु अमरदास जी तीसरी पातसाही को हिन्दू धर्म से विरुद्ध देख हिन्दूओं ने अकबर बादशाह की अदालत में उक्त गुरुपर दावा किया कि गुरु अमरदास वेदशास्त्र गायत्री से मुन्किर। हिन्दू नहीं है। श्री गुरु अमर दास जी ने अकबर बादशाह की अदालत में अपने आप को वेद शास्त्र गायत्री मानने वाला हिन्दू स्वीकार किया जिस इतिहास को नाटिककी रीति (अर्थी दावे) की तर्जपर लिखकर पाठकों की दृष्टिगोचर करता हूं।

टिप्पणी (१) अधर्म्म पाखण्ड॥

अभियोग

इम मसलत १ कर इकठ व्हैके ॥ दिजखत्री मुख आगे दुख पैके ॥ लवपुर २ गए फिरादी सारे ॥ ढिग अकबरके जाए पुकारे ॥ तुम मरयाद राखनहारे । विगरत को जगदेत सुधारे ॥ गोयंद बाल अगर गुरु हावा । भेद वर्ण चारोंका खोवा ॥ राम गायत्री मन्त्रन जापै । वहि ३ गुरुकी थापना थापै ॥ जुग चारहुआंई कहाँ नहाई । जिम मरयाद बिगारी सोई ॥ आत्मसमान के राहन चाले । मन को मतकरभए निराले ॥ हमरी करो इदालत एही । दुढहु धर्म सुराज विधेही ॥ (सूर्यप्रकाश ग्रंथरास१ अंस४१ कवितांअंक १४ से १७तक) अकबर बादशाहका हुकम नामा (सम्मन) जारी हुआ । कातिक दिन मह अकबर साहु । लिख पर वाना भेज्यों ताहु तुझपर भए बहुपुर के नरसमदाए । करहूं जवाब देइन संग । नातर इनके चालो ढंग ॥ परवाना सातै गुरु पह आयो ॥ सुभ्यो श्रवन साहि हमे बुलायो ॥

टिपणी (१) संमती (२) लहौर ॥ (३) वाहिगुरू मंत्र हिन्दू अक्षरों के आदि अक्षरों का संग्रह है कल्यानकारी कथन करते हैं ॥ देखो भाई गुरदास वार १ पौणी ४९ में ॥

तारीक पर अकबर बादशाहके दरबारमें मुद्दई दिज खत्री मुहाले गुरु अमरदासका मुखतार रामदास हाजिर हुआ ॥ मुद्दईयों से बादशाहने पूछा तुम दावा इनपर क्यों करतेहो।

सुन अकबर ने सर्व हकारे। दिज खत्री पहुंचे तबमारे ॥ अपरलोक अरु सभ अमराए। मिल इकठे होए तिसथाए ॥ सभन संग अकबरने कहो। कौन खोट इनमांहि तुमलहियो जिसपर कर पुकार सबआए। अपनों धर्म कहो समझाए ॥

मुद्दईदिज खत्रीयोंने मुहाले गुरु अमरदासके मुखतापर श्वाल।

सो बोले इन खत्री जात। अपनों पंथ करह विख्यात ॥ वेद रीतिको त्यागन करियो। और मति अपनोंपर चरियो। अपर बात तो कहनी कहां। हिन्दू धर्म गायत्री महां ॥ सो भी नहीं जानैह नजापै। गुरु बाणी कुछ औरही थापै ॥

अकबर बादशाह ने मुहाळे गुरु ३ के मुखतार रामदास जी से मुद्दईयों के श्वाल का जवाब पूंछा ॥

तब अकबर ने इस दिस देखा। गायत्री तुम धरहु बसेखा सोभी तुमनें पढीन कैसे। हिन्दू धर्म खत्री किम हैसे॥

मुहाले मुखतार रामदास जी ने यह जवाब दिया।

बोले रामदास संगसाहु । पठ गायत्री हम तुम पाहु ॥ अर्थ समेत सुनावहु सारी । जो आसैहै तेहि मझारी ॥ सभा के बीच पाठ तिसपढ़े । पाप१ पुरुसभ इनसिरचढ़े ॥ इमकाहि धुनिकीनासि इसभात । सकल अर्थको कह विख्यात ओं अंकार उचारन करेओ इत्यादि ॥ गायत्रीमंत्र सुनाय ॥

अकबर पातसाहका फैसला जिस्से गुरुसाहिब वेदशास्त्र मानने वाळेहिन्दूही साबित होते हैं ॥

अकबर अतिप्रसन्न हुइगयो । सबन सुनाय बखानत भयो ॥ वेदपुराण केहो इन करेओ ॥ अर्थ सहित गायत्रीजु बखानी इसपहकरहु प्रश्नजे जानहु ॥

(सूर्य प्रकाश रास १ में देखो)

(नोट) उक्त इतिहास से साफ प्रगट है कि गुरु साहिब वेद पुराणों को मानने वाळे हिन्दूयों कि सदृिश गायत्री सुनाने का पाप[२] समझते थे ।

(टिपणी) (१) कहुंहूके हिन्दूआ गायत्री गुप्त जपियो कहुंहूके तुर्का पुकारे बांग देतहो (दशम ग्रन्थ साहिब श्री गुरुगोविन्द सिंह कृत अकाल अस्तुति कवता अङ्क १२ । (२) यवनो को ॥

(७) श्रीगुरु ५ के सिख आकल तखाणने अपनी कन्यासा देन खाणके पुत्र संधुके साथ हिन्दू रीति अनुसार विवाह करदिया मगर चित्तमें बडा दुःखित रहा कि कन्या के श्वसुर सुलतानी हैं॥ वडे ग्राम से जनेत (बरात) विदा हो डरोंकी पहुंची वहा श्री गुरु हरगोविन्दजी महाराज विराजमान थे शब्द कीर्त्तन को कन्याने सुनकर पहचान लिया कि हमारे गुरुकी जगह है॥ डोली मेंसे उतर कर उक्त गुरु के समीप जाबैठी॥ गुरुजी के पूँछनेपर कन्याने अपने पिताका पता दिया और कहा कि मेरापिता मेरे विवाह सुल्तानीओं१ के होने के कारण दुःखितहै॥ इतने मेंही उस कन्या का पति संधूभी गुरु के पास आकर बैठ गया॥ गुरु साहिब उसको उपदेश देते हुए स्व हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता जाहिर करते हैं॥

गुरुको सिक्ख सम्भर है तोरा। तिसकी सुना सम्बन्ध हैं जोरा॥ अब तुम तजो तुर्क की सेवा॥
देहु दरूद फेर तुम खावहु। तुर्क जूठ ते जन्म गवावहु॥
हिन्दू शरीर परमेश्वरदीना। किऊं व्यर्थ खोवहु मतिहीना

टिप्पणी (१) सुलतान अर्थात् लालावाले पीरकोमानने वाले

इत्यादिक जब गुरू सुनायो। संधू बालक तब बिरमायो १ ॥ करयो विचारन वच श्री गुरु का। हम हिन्दू क्यों मानह तुर्का ॥ करके रोट हरूदिखावहु। तुर्क जूठ लखकर पुन खावहु ॥ तुर्क विचारन कौन बडेरी। गुरुपग लपटाये तिस बेरी ॥ मोकहु अपनो सिख्यवनावहु। तुर्क सेवते गोहि हटा बहु॥(सूर्यप्रकाशरास ७ अंस १८ कविता अंक ४१से ४५तक)

(नोट) उक्त प्रमाणसे स्पष्ट प्रतीत होताहै कि गुरु साहिब हिन्दू धर्मको श्रेष्ठ मानते हैं और उपदेश करतेहैं। आज कलक नवीन गुरुमतावलंबी हिन्दूधर्म से घृणा [नफरत] करतेहैं शोकहै एसों की बुद्धिपर जो गुरु साहिबों के उपदेशको कलंकित कराकर झूठा बनारही है।

[८] जब सरकार अंग्रेजी सिक्खों की हकूमत से पश्चात् पंजाब दारूखलाफा२ लाहौरमें कानून बनन के वास्त सरकार ने हिन्दू और सिक्ख इकट्ठे किये उस समय सिखों ने सरकार नू कहा सिख लोग हिन्दू आंदी तरह हीं धर्म शास्त्र के पाबंद हैं [देखो पंजाब सिवलकोट बाब १]

---

(१) निश्चेकरा प्रेरणा किया ॥

(टिप्पणी) (२) पंजाब की बादशाही ॥

[नोट] सरकार अंग्रेजी गवर्नमेंटकी ओर से भी पास होचुका कि सिख हिन्दूहैं।

[९] लाहौर में एक हीरा जुबली के लिये हिन्दू और सिख राजधांदी बडी भारी सभा सन १८९७ ई० में हुई जिसके प्रेजीडेंट श्रीमहाराजा सम्बूसन उस समय सिख हिन्दू नहीं ये ख्याल पैदाहुआ ही था। श्री बाबा खेमसिंह जी ने सभनादीशाय नाळ यं ही फैंसला किया कि सिख और हिन्दू इकोही हैं।

[नोट] बडे २ सिंहराजे और महाराजे रईस उक्त सभा में अपने आप को हिंदू मानचुके हैं। नवीनसिंह अपनी ढाईआ खीचडी जुदीही पकाते हैं।

(१०) श्री महाराजा राजेंद्रसिंह साहिब रियासत पटेआलाजीको अक्टूबर सन १८९८ ई० में उच्च पदवी [खिताब] मिले और वहां बडे लाट छोटे लाट और सिख रईस सभ जमा सन। उससमय उक्त महाराजा साहिब जी के श्री मुख बचनोंसे प्रगटहै कि सिख हिंदू हैं।

मैं देखताहूं के कुछ अर्सःसे बाज तराह में यह दिखलानें की कोशिश कीगई है के सिख हिंदू नहीं हैं। लेकिन

यह गलती है सिखों ने बहैसियत मजमूई कभी अपनें ताईं हिन्दुओं से जुदाख्याल नहीं किया और नाहीं वोह ऐसा ख्याल करसक्ते हैं॥

[नोट] उक्त श्री महाराजा साहिब बहादुर उस खानदान में से हैं जिन को दशमपातसाही का वर है।

मेरा घर सों तुम्हाराघर। तुम्हाराघर सों मेरा घर॥

इस वृत्तांत वाला हुकुम१ नामा पातशाही १० जी से महाराजा के बुजुर्गों को मिला हुआहै मित्रों? उक्त श्री महाराजाका श्रीगुरुमुख वाक्य [गुरू] सदृश माननाचाहिये क्यों कि गुरु १० साहिब उक्त महाराजोंमे अभेद कथन करते हैं।

[११] श्री गुरु नानक कुल भूपण वेदी वंस अवतंस श्री बाबा खेमसिंह जी, सी, आई, ई, जिनकी कीर्ति पंजाब भर में रोशन है जिन को आम सिख और राजा महाराजा सिर झुकाते हैं वोह भी सिख और हिंदू इकोंही हैं कथन करते हैं।

हिंदूओं? डरा मत जिन सिखों को तुम सच्चा सिख समझतेहो वे झूठे बाबू सिख हैं वै नई रोशनी के चिणगारडेहैं

(१) देखो गुरमत प्रभाकर खालसा प्रेस लहौर छपेकी पृष्ट ३०५ पंक्ती ३१ से ३३॥

वैसे लोग सभ समाजों में पैदा होगए हैं सिखोंमेंही क्यों न हों उनकी बातका बुरा न मानना सच्चा सिख और हिन्दू दोनों एक प्रान और दो देह हैं अब से हिंदू हृदय बेधनेवाले सिखों को जातीय दंड दिया जावेगा।

[३०जनवरी सन् १८६६ई० बंगवासी अखबार]

[नोंट] मित्रों ! वेदी, तेहण, भल्ले, सोढी चारों कुलों के साहिबजादेयों के माननेवास्ते श्री गुरु गोबिंदसिंह जी महाराज का हुकम है। यथा बांव १ कें बावरकें दोउ आप करे परमेश्वर सोउ [दसमपातशाही ग्रन्थसाहिब श्री मुख वाक्य व चित्रनाटक अध्याय ११ सहजाद का युद्ध बर्णन कविता अंक ९]

[२] गुरु नानक अंगद की अंस। अमरदास भल्ले का बंस॥ इन्की पूजन जो नर करहैं। सो नेगेहिंद में परहैं॥ [नसीहतनामा श्री मुख वाक्य पातशाही १०]॥

(१) करी सौपना बंस की सभ सिखन के साथ। जो उनकी समसर करे, जलजावे कुल ताम॥

---

(१) श्री गुरु नानकदेवजी की संतान वदीसाहिवजादे॥

(२) ब्रावरी जैसे गुप्त स्थान से कपड़ा पृथक् नहीं होसकता।

[रहितनामा श्री भाई नन्दलाल] मित्रो श्री बाबा खेमसिंह जी का फैसला भी गुरु हुकम सदृश मानना चाहिये

(१२) खालसा कौमने हिंदु आंदा आदर्षी चोली ? दामन वाला साथ वणे आनला आंऊदा है इसे तरां हिन्दू अर सिख इकोहन (गुरुमुखी सिंहों का इखबार हफतेवार॥ खालसा प्रकाश जमीमा आफताब पंजाब लहौर १ अगस्त सन् १८९८ ईसवी जिस के संपादक दिवान बूटासिंहजी हैं।

[नोट] बडे बडे सिंहों की राय में हिन्दू और सिख इकाही है ॥

[१३] श्रीमान् बाबा नारायणसिंह वकील अमृतसर निवासी ने नवीन सिंहों के रसाले " हम हिन्दू नहीं ,, का जवाब "सिख हिन्दू हैं न,, गुरुमुखी रिसाले से दिया है जो सन १८९९ ईसवी मतबा क़ानूनी प्रेस श्रीअमृतसर में छपा इस छोटे से रिसाले में नवीन सिंहों को दंदाने शिकन जवाब देकर साबित किया है कि सिख हिन्दू हैं जो नवीन सिंहों को जवाब देने के लिये लोहे के चणे पिसण हैं ॥

[नोट] मित्रो ! गुरु सन्तानकी शिक्षा भी गुरुहुक्म अनुसार माननी चाहिये ॥

(युक्ति [दलील] सेभी सिंह हिन्दूही साबितहोते हैं)

दृष्टांत (मिसाल) एक खेतकी पैदावार का झगडा पड जाए तो हाकिम वक्त के समीप (नजदीक) के खेतों की व्यवस्था [हालचाल] देख फैसला करदेता है॥ ॥

दार्ष्टान्त ॥ अर्थात् नास्तीक बहुतसारे सबूतहोते हुए कि सिख हिंदू हैं फिर झगडा पडता जाए तो उक्त दृष्टांतअनुसार सिखों में गुण कर्म देख हिंदुओं जैसेहों हिंदू मुसलमान मानों जैसे होते हैं मुसलमान, पाठकगण ! आत्माकोमदनजर रख फैसला करें॥

[१] मुसलमानों के जब बालक जन्मता है तो नाम--अल्ला रक्खा। मामदीन। रमजानी। अल्लादिया। फजल हुसेन। महमूद, आदि होते हैं॥

हिन्दूओं के जब बालक जन्मता है तो नाम ठाकुरदास हीरा दास, मतापू, लालजी, दुर्गादास, नारायण दास, गङ्गाराम, ज्वाला प्रसाद, नत्थूमल, फतूमल, मङ्गल, बुधू, दसौंदी जैसी, नानक, अर्जुन, कान्हा, भगवाना, आदिहोतेहैं।

(नोट) हिन्दू बालकों के नामकें साथ सिर्फ सिंह शब्द लफज लगाने से सिख (सिंह) बनजाता है॥ हिन्दू

राजपूतोंके नामके साथ हमेशः सिंह शब्द होता है ॥ यथा, पृथ्वीसिंह, मानसिंह, आदि इससे साफ प्रकटहैकि सिंह नाम हिन्दूओं से लिया इसकारण हिन्दू है ॥

(२) मुसलमान सुन्नत (लिंग छेदन) और सिर के रोम चट्टपटिंड की तरह (राटपाड) रखना अच्छा समझतेहै। हिंदू लिङ्गका छेदननहीं करना और सिरपर बाल (अव्वलतो जटाजूट नहीं चोटीमात्र) रखना अच्छा समझतेहैं

(नोट) सिंह भी हिन्दुओं की सदृश बाल (केश) रखना और लिंगका छेदन न करना अच्छा समझतेहैं। इससेभी सिंह हिन्दू साबित होतेहैं।

(३) मुसलमान जलमें [गुसलखानें में] नग्न स्नान करना चलते जल और सरोवर में थूकना और दातन ना फाडना आचरण धारण करते हैं।

हिन्दू कपडे सहित स्नानकरना चलते जल और सरोवर में थूक खकार आदि से बचाव रखना और दातन फाडना यह आचरण धारण करतेहैं

[नोट] सिंहभी कपडे सहित स्नान करना जल में थूक खकार मल मूत्र से बचाव रखना और दातन फाडना

हिन्दुओं जैसाही आचरण हैं ॥ इससेभी सिंह हिन्दूही साबित होते हैं ॥

(४) मुसलमान छूतछात नहीं रखते और लड़के लड़की स्त्री आदि के साथ जूंठा भोजन खालेते हैं।

हिन्दू छूतछात और लड़के लड़की स्त्री आदि के साथ जूँठा भोजन नहीं खाते।

[नोट] सिंहभी हिन्दूओं की तरहः लड़के लड़की और स्त्री आदि के साथ जूंठा भोजन नहीं खाते इससेभी सिंह हिन्दूही हैं

[५] मुसलमान—ईश्वर (खुदा) का भजन (बन्दगी) १११ मणकों [दानों] की तसवी [माला] से चुपचापकरते हैं ॥

हिन्दू ईश्वर का भजन ऊंचे स्वर और गायन से करते है और माला १०८ मणकों की होती है ॥

[नोट] सिंहभी हिन्दूओं की तरह ईश्वर का भजन ऊंचे स्वर और शब्द गायन से करतेहैं और माला १०८ दाणों की होती है ॥ इससे भी सिंह हिन्दूहीहैं ॥

[६] मुसलमान खुदा (ईश्वर की उपासना प्रार्थना)

(इबादत और बंदगी) मूधे सीधे होकर करतेहैं ॥

हिन्दू ईश्वर की उपसना प्रार्थना हाथ जोड शिर झुका य करतेहैं ॥

(नोट) सिंहभी हिंदूओं की तरह ईश्वरकी उपासना प्रार्थना हाथ जोड शिर झुकाय करते हैं। इससे भी सिंह हिंदू ही साबितहोते हैं ॥

(७) मुसलमानों के इबादत खाने (मसजिदों) में बाजा गाजा आरती वगैरः नहीं करीजाती ॥

हिन्दूओंके इबादत खाने (मन्दिरों) में बाजे गाजे से आरती वगैरः होती है ॥

[नोट] सिंहों के इबादत खाने [गुरुद्वारों] में हिन्दूओं की तरह बाजे गाज संख घडयाल चौरी नगारा धूप दीपकादि से आरती होती है। इस्सेभी सिंह हिंदूही हैं ॥

[८] मुसलमान अपनी धर्म पुस्तकों की जाहिरा इज्जत नहीं करते।

हिन्दू धर्म पुस्तकों १ की जाहिरा इज्जत (पूजनादि और असवारी निकालना) करते हैं।

---

(१) पंजाबमें अनेक सनातन धर्म्मसभा अपने उत्सवोंमे वेद शास्त्रादि के सादृस ग्रंथसाहिब की धूंम धांम से सवारी निकलती हैं ॥

[नोट] सिंहभी हिन्दूओं की तरह अपनी धर्म पुस्तकों की पूजनादिक नमस्कार चौरी आदिक करते हैं ॥ इससे भी सिंह हिन्दूही हैं।

[९] मुसलमान व्याज [सूद] लेना पाप समझते हैं ॥

हिन्दू व्याज (सूद) लेना पाप नहीं समझते।

(नोट) सिंहभी हिन्दूओं की तरह व्याज (सूद) लेना पाप नहीं समझते। इससे भी सिंह हिन्दूही हैं॥

(१०) मुसलमान १ मुरदे को कबर में दबादेते हैं ॥

हिन्दू मृतक पुरुष को अग्निमें जला देते हैं ॥

(नोट) सिंहभी हिन्दुओं की तरह मृतक पुरुष को अग्निमें जला देते हैं। इससेभी सिंह हिन्दूही हैं। नहीं तो हिन्दू मुसलमानो से विलक्षण कर्म्मकरना चाहीये।

---

(१) आले जारे आलेगडे तेरी गत दुहु नही पाई ॥ इस शब्दके अनुसार तवीनासिंह हिन्दू रीति मुरदेको जलानेके सवाए वृक्षों (दरखतो) पर लटकायाकरे नहीं हिन्दूही रहेगा ॥

(२) जिसकै अंतर राज अभीमान सो नर्क पाती होवतस्वान ॥ जो जानै मै जोवनवत सो होवत विष्टा का जंत ॥ सूखमनी ॥

[११] मुसलमान कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म नहीं मानते। हिन्दू कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म मानते हैं।

(नोट) सिंह भी हिन्दूओं की तरह कर्मों १ के अनुसार पुनर्जन्म को मानतेहैं। इससेभी सिंह हिन्दूही हैं।

आसा इष्ट उपासना, खान पान पहरान।

षट्लक्षण जासों मिले ताहिको बामन मान ॥

(समीक्षा) मित्रों १ सिंहों के जन्म से लेकर मृतक पर्यन्त सर्वत्र) आचरण हिन्दूओं से मिलतेहैं इसवास्ते सिंह हिन्दूहीहैं

सिख हिन्दूनहींका मुखचपेट प्रश्न १

नवीन खालसाजी हिन्दू और हिन्दूओं की सन्तान होतेहुए धर्म्म के कृतघन (पापी) होकर मुनकर होरहे हैं और एक ग्रंथ साहिबजीको ही धर्म्म ग्रंथ मानते हैं सो ग्रंथ साहिब हिन्दू है और धर्म्म के सिद्धान्तों का उपदेश करता हुआ संसार सागर से पार होने लिये हिन्दू धर्म्म के सिद्धांतों को नौका (बेड़ी) रूप कथन करताहै ॥

(१) कोई बोले राम राम कोई खुदाइ ॥ राग रामकली महाल्ला ५

(२) जोगी गोरख गोरख करैं। हिन्दू राम नाम उचरैं। मुसलमानका एक खुदइ। आदग्रंथ साहिब ।

नोट—मित्रो उक्तशब्द श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी हिन्दू सिद्धांत (रामनामादि) काही कल्यान के लिये उपदेशकरता है ॥ यथा (१) सिलो सिता महिमा माहिना आइ मरे न ठागे जाहि जिन के राम वसे मन माहि ॥ आद ग्रंथ साहिब जपजी पौडी ३७ महाल्ला १

[२] राम राम संगकर व्योहार। राम राम प्रान अ-धार। राम राम राम कीरतन गाइ। रमत राम सभरिहिओ समाइ॥ १ ॥ संत जना मिल बोलोहु राम। सभते निरमल पुरण काम॥ १ ॥ रहाउ॥ राम राम धन संच भंडार। राम राम कर अहार। राम राम राम बीसर नहीं जाइ। कर कृपा गुरदिया बताइ॥ २ ॥ राम राम सदा संहाइ। राम राम लिव लाइ। राम राम जप निरमल भए। जन्म जन्म के किल विख गए ॥ ३ ॥ रमत राम जन्म मरन निवारे। उचरत राम भै पार उतारैं। सभ उच राम प्रगास । निस बासर जपनानक दास ॥ ४ ॥ आदग्रंथ साहिब राग गौंड महाल्ला ५ शब्द १०

(३) हरे राम बोल हरे राम बोल सभ पाप गवाधू ॥४
आद ग्रंथ साहिब राग सारंग महाल्ला ४ शब्द ९ तुक १

(४) रामनामको नमसकार जास जपन होवत उधार ॥
आदग्रंथ साहिब राग माली गैड़ा महाल्ला ५ शब्द १ तुक ?

(५) अस्वर संघारण राम ॥ आदग्रंथ साहिब राग मारू सोहिले महाला १ अंजलिआं शब्द ९ तुक ९

(६) राम जपो जिआ औसे औसे धू मलहाद जपे हरि जैसे ॥ आद ग्रंथ साहिब राग गौड़ी कवीरजी।

(७) कवीर सांई मुख धन्यहै जिह मुख निकसे राम। दह किसुकी बापुरी पवीत्र होएगो ग्राम ॥ आदग्रंथ साहिब श्लोक ११० कवीरजी।

(८) संग सखा सभ तजिगए । कोउन निवहिओ साथ । कहु नानक इह विपतमैं टेक एक रघुनाथ ॥ आदग्रंथ साहिब श्लोक ५५ महाल्ला ९ ।

(९) दसरथ नंद राजा रामचंद । प्रणवै नामा तत्त्व रस अमृत पिजै ॥ आद ग्रंथ साहिब राग रामकली वाणी नामदेव शब्द ४ तुक ४

(१०) रघुबंस तिलक सुन्दर दसरथ घर मुनि बांछहि जाकी सरण। आद ग्रथ साहिब स्वैये महाल्ला ४ के स्वैया २

(११) रंग महिल विच दसरथ कौशल्या रलिया ले। मता मताया इन आपाविच चाए चईआले। खंरखुसा ले घर असडे पूत्तहोए नाऊ की धरीऐ बालक बले। राम चन्द नाऊ लैदिआं तिन हत्याते होए निराले। राम राज प्रवाण जग संतोख धर्म्म रखवाले। माया विच उदास हुए सुणे पुराण वासिष्ट वाहाले। रामायण वरताया सिलातरी छुहि ततकाल ॥. श्री भाई गुरदास जीकी वार २१ पाडी ८ ॥

(१२) राम कथा जुग जुग अटल सभकोई भाखत नेत। सुरगवास रघुवर करा सगरी पुरी समेत ॥ दसम ग्रंथ साहिब रामा अवतारके अंत में श्रीमुख पादसाही १० की प्रार्थना।

[१३] श्री गुरू आद ग्रंथसाहिब गुर मन्त्र राम नाम कोही मानताहै ॥यथा॥ मन्त्रं राम नामं ध्यानं सर्वत्र पूरनं। आद ग्रंथ साहिब श्लोक सैहस कीरती महाल्ला५ श्लोक४०

लेखका तात पर्य

श्री गुरु ग्रंथ साहिबतो हिन्दू सिद्धान्त [रामनाम] का उपदेश करनेवाला हिन्दूही है नवीन सिंहों आपको वर्त मान गुरूसे बरूथ निगुरे होना पडेगा ॥ नहीं गुरूसे व मुख और आगया उलंघन करने वाले शिघ्र होजाआंगे ॥

सिख हिन्दू नहीं का मुख चपेट प्रश्न २

श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी हिन्दूओंकी सद्रिम ॥ कर्म उपासना ग्यान ॥ तिनो प्रकारसे उपदेश करताहै ॥ यथा ॥ फल कारण फूली बनराए ॥ फल लागा तब फूल बलाए ॥ ग्यानह कारण कर्म अभ्यास ॥ ग्यान भ्याता कर्मःनास ॥

नोट—मित्रो जैसे हिन्दू ग्यान कांड [वेदान्त] का भगवान व्यासदेव और शंकराचार्य प्रणीत ज्ञान मुक्तीका कारण समझ विशेष प्रचार करतेहैं वैसे हो श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रचार करता है ॥

(१) एक रूप सगलो पासारा ॥ आपे बनज आप व्योहारा ॥ १ ॥ औसो ग्यान बिरलोइपाए ॥ जित जित जाईये तित द्रिष्टाए ॥ १ रहाउ ॥ अनक रंग निरगुन इक

रंगा ॥ आपेजल आपेही तरंगा ॥ १ ॥ आपह मंद्र आपह सेवा । आप पूजारी आपही देवा । १॥ आपे जोग आपही जुगता ॥ नानक के प्रभ सदही मुक्ता ॥ आदग्रंथ साहिब राग बिलावल महाल्ला ५ शब्द ६

(२) सूर्य्य किरण मिले जलका जल हुआ राम ॥ जोनी जोत रली संपूरण थी आराम ॥ब्रह्मदिसै ब्रह्म सुणीअै। एक एक वखाणीअ ॥ आत्म पसारा करण हारा प्रभविना नहीं जाणीये ॥ आदग्रंथ साहिब राग बिलावल महाल्ला ५ छंत शब्द २ तुक ४

(३) सागर महि बूंद बूंद महि सागर । कवण बुझै बिध जाणै । उत्त भुज चलत आपकर चीनै आपे तत्व पछाने ॥ आदग्रंथ साहिब राग रामकली महाल्ला १ शब्द ४

[४] जैसे कुंभ उदक पूर आन्यो तब ओहभिन द्रिष्टा । कहु नानक कुंभजल के महि डारिओ अंभगि अंभ मिल्यो ॥ आद ग्रंथ साहिब राग सारंग महाल्ला ५

(५) ब्रह्मज्ञानी आप प्रमेश्वर ॥ आदग्रंथ साहिब राग गौडी सुखमनी महाल्ला ५ अष्टपदी ८ तुक ७

(६) घटही भितर वस्त निरंजन । ताको मरमनजाना ॥
आद ग्रंथ साहिब राग सोरठ महाल्ला ९ शब्द ७ तुक ३

[७] गुर किरपा जिह नरपर किनी तिह जुगत पछानी ।
नानक लीन भए गोबिंद सियों जियों पानी संग पानी ॥
आद ग्रंथ साहिब राग सोरठ महाल्ला ९ शब्द ११ तुक ३

(८) जब उद करख करत करतारा । परजा धरत तब देह अपारा ॥ जब अकरख करतहों कबहुं तुमें मिकत देह धर सबहुं ॥ दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुखवाक पादसाही १० चौपाई रैहरास ॥

[९] हरि हरि जन दुई एक हैं बिब विचार कुछ नाहि ॥ जलते उपज तरंग जिऊं जलही बिखै समाहि ॥

उक्त पता

लेखका तात पर्य

पित्रो बेदान्त [जीव ईश्वर को एक मानना] हिन्दू धर्मकी मूल पुस्तक उपनिसिधोंका सिद्धान्त है जिसको गुरु साहिब हिन्दूओंकी सांद्रस अपना सिद्धान्त मानते हुए उप-

देश करतेहैं नवीन सिंहों अब आपको शोक सागर में डूबना पड़ेगा। नहीं गुरु रक्षक सनातन हिन्दू धर्मको ग्रहण करो।

आदल गवर मिंटने नवीन सिंहों का सहारा तोड़ दिआ ॥

लहौरके सरदार धाकसिंह मृत्युकी विभवा स्त्री का अपील वलैत तक पहुचन पर लंदनकी बड़ी अदालत [पृवी कौंशळ] ने फैसला कर दिआ कि सिख हिन्दू है॥ देखा पैसा इखवार लहौर हरूफ उड़दू नंवर ३७ जिलद १७ रजिष्टर नंबर ३७ मतवुआ १२ सितंवर सन १९०३ सुफा ७ कालम ३

लेकिन अखीर कार वलैतकी पृवी कौंशलनैं सिंहां के इसध्वाल [सिख हिन्दू नहीं] का कतई फैसलाकर दिआ है वहीयत मजमूई सिख हिन्दूओं में शामिल हैं॥

॥ इति प्रिथम अध्याये ॥

अध्याये २

दसों गुरू साहिब यज्ञोपवीत पैहरने वाले हिन्दू हैं ॥ आजकल के अज्ञानी सिंह ॥ "दयाकहा संतोख सूत जत गंडी सत वंट एह जनेऊ जीअका हाईता पांडे घत ॥ आदि शब्द से जनेऊ का खंडन सिद्ध करते हैं" मित्रो उपरल शब्द के अर्थ से जनेऊ का पूर्ण मंडन है ॥ यथा ॥ दया कपाह (कपास जैसी मुलैम दिया) संतोखसूत (सूत्तर जैसा लंबा संतोख) जत गंडी (जतेंद्रत्तारूपी गांठ) सत वट (पूर्ण सत्तवादी निश्चा) एह जनेउ जीअका (यह जनेऊ के लक्षण निराकार जीवातमा के हैं) हईत पांडे घत (तेरे पास ऐसा शुभ उपदेश है तो मुझे पैहनादे) और इसी शब्द में साफ गुरू साहेब जनेऊकी तारीफ (सलाघा) करते हैं "सकाई सचसूत,, और अखीर की तुकों से पाखंड का खंडनहै ॥यथा॥ "कहु बकरा रिनखाया सभकाआखै पाइ,, नवीन सिंहोंने गुरू हुकम से वरूद्ध बकरा मुरगी

आदिक जीवोंका मांस (झटका) खान धर्म्म करलिया जनेऊ छाडदिआ धन्य कलजुगी सिखी ॥

[१] सिखो चक्क बुड्ढके सामिथ गुरू नानक जी ने अपने प्रोहत पंडित हरयाल जासे संसे निविरत कर कुलकी मर याद्रा अनुसार जनेऊ पैहरा पुराचीन जन्म साखीओंमें लिखा है ॥ हम इस प्रसंगको यहांही छेडते हैं। झगडे में रगडा क्यों करना है ॥ जनेऊकी सिद्धी में प्रबल प्रमाण लीजीए ॥

(२) श्रीगुरू नानक देवजी ने अपने विवाह में चुप चपाते धर्म्म समझ जनेऊ पैहर लिआ जैसे छोटी उमर में पंडित हरयालजी से वैहस करी बतलाते हैं वाह नहीं की।

महिदी पद संयुत कोको नंद मकरंद अनंद उदार वसाई। गरचीरहे पीत पुनीत मनो गहि जग्यो पवीत महा छबछाई। कल कंकन कंचनभूर कियूर वनी उरमाल विसाल सुहाई ॥

नानक प्रकाश पुर्वार्ध अध्याये २२ कबता अंक ४४

[१] श्री गुरूनानक देवजी के गले में वृधावस्था (बुढापे तक) जनेऊथा देखो पुराचीन जन्मसाखी ॥ बोलोभाई जी वाहिगुरू सुलतान पुरों चले सतां दिना देविच लालो दे घर जाए बडे ॥ अगे भाई लालो बैठा किले घडदा आहा ॥ देखता इक तपाजेहा है अते गळविच जंञु है सुअते डूपेटा नाळ है लालो उठ खडाहोआ ॥ गुरु नानक जी आखिआ बैठ भाई लालो कीरतु करू ॥ भाई लालो बैठकर पुछणलगा जीपैं पैहरम नाही तुसां अपणा आप जाहिर करां ।

(इत्यादि वारतालाप से वड़ी खुसी हुई और पुछा)

बाला गुरूजी प्रसाद त्यारहै ॥ तां नानकजी केहा लैआ-ओ भाई अथेही लैआओ ॥ तां भाई लालो आखिआजी तुसादे गलजंञू है श्री गुरू नानक देवजी की पुरानी २०० वर्ष की लिखी जन्म साखी ।

(४) मित्रो येहतो रहा इतीहासक (जनेऊका तारीखी सबूत) अब लीजीये श्री गुरू नानक देवजीका आद ग्रंथ साहिब में श्री मुख वाक से अपने आप जनेऊ धारण

करते हुए जगतको उपदेश करते हैं ॥ सर्वत्र मत मतात्रों के ईश्वर प्राप्त चिन्ह बतलाते हुए इस शब्द की तुक ४.में अपना ईश्वर प्राप्ति का साधन यज्ञोपवीतको कथन करते हैं ॥

(आदिग्रंथसाहिबरागआसामहाल्ला१शब्द३३)

देवतिआ दर्शन के ताई दूख भूख तीर्थ कीये ॥ जोगी जती जुगत मे रहते कारि कारि भगवे भेसभए ॥ १ ॥ तउ कारण साहिबा रंगिरते ॥ तेरे नाम अनेकारूप अनंता कहण न जाही तेरे गुणकेते ॥ १ रहाउ ॥ दरघर मैहला हस्ती घोड़ छोड वलागत देसगए ॥ पीर पेकंवर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइपए ॥ २ ॥ सादसेहज सुखरस कस तजी आले ॥ कापड़ छोडे चमड़लए ॥ दुखीए दरवंद दरितेरे नागिरते दरवेसभए ॥ ३ ॥ खलडी खपरी लकडी चमडी सिखा सूत धोती कीनी ॥ तूं साहिबहउ सांगी तेरा प्रणवै नानक जाति कैसी ॥ ४ ॥

चतुर्थतुकका अर्थ ॥ श्री गुरूनानक देवजीनै येह ईश्वर प्राप्त चिन्ह धारण किये। खलड़ी (चमडेकाथैला)

खपरी [भिक्षाका पात्र] लकड़ी [काठी] चपड़ी [मृग छाला] सिखा [हिन्दूओ जैसे सिरपर ढाईबाल] धोती [हिन्दूओ जैसी ५ गज की] हे ईश्वर तू मालिक है हउसागी १ तेरा (मैं तेरी माफ़ी वास्ते उक्त चिन्ह धार किये हैं) प्रणवै नानक जात कैसी (अपनी और जाती वखानतलाऊं) ॥

नोट-जो लोग मूलसे जनेऊ अर्थ नहीं समझते वोह अनर्थ कारी धोखादेते हैं क्योंकि ग्रंथसाहिब की और तुकें इसी प्रकार यज्ञोपवीतनही साबित करती हैं ॥

॥ १ ॥ दया कपाह संतोख सूत ॥ २ ॥ सूत उपाए करे वुरिआई न्हाता धोता थाएन पाई ॥ ३ ॥ सालाही सचसूत ॥ ४ ॥ सिखासूत । ५ ॥ हिन्दूके घर हिन्दू आवे सूत जनेऊ वडगल पावे ॥ इत्यादि ॥

[५] दसों गुरु साहिब गुरूमत में एकरूप मानेजाते हैं अगर जनेऊका खंडन गुरू नानक जी करजाते तो आपको

---

(१) हउ [मैं] का बोधक है जो आदग्रन्थसाहिबकी तुकोंसे प्रगटहै ॥ ॥ यथा ॥ मैनाही कछु हउ नाही ॥ और ॥ हउ संचो हरि नाइ ॥ और ॥ हउ संचो हरि खाटता ॥ इत्यादि ॥

पैहमते और श्रीगुरू तेगबहादरजी क्यों जनेऊ को धर्म्म समझ अपना सीस [सिर] दिल्ली चानणी चौक में देने की क्या जरूरतथी ? ॥

तिलकजंञू राखाप्रभुताका। कीनोवड़ोकलूमहि
साका ॥ सापनहेत इती जिनकरी। सीसदीआ
पर सीन उचरी ॥ १३ ॥ धर्म्महेत साकाजिन
किया ॥ सीसदीआ पर सिरु नदीआ। नाटक
चेटक कीए कुकाजा। प्रभु लोगनको आवत
लाजा ॥ १४ ॥

॥ दोहरा ॥

ठीकरफोर दलीस सिर प्रभ पुर कीयस पयान।
तेग वहादरसी कृपा करी न किनहूं आन॥१५॥
तेगवहादर के चलत भयो जगतको शोक ॥
हैहैहै सभ जगभियो जै जै जै सुरलोक ॥ १६ ॥

सूक्ष्म अर्थ मिश्रा उक्त शब्द में दो बार श्री गुरु तेगबहादर जीका नाम आने से सपष्ट प्रगट है कि गुरू साहिब ने तिलक जंनऊ धर्म्म की खात्र प्राण देदिगे आर प्रमेश्वर ने उन के तिलक जनेउ की रक्षाकी जो तांका पद से साबित है ॥ धर्म्म हेत पद सपष्ट पडा है ॥

भाव उक्त शब्द में तांका पद दुसरे पुरुषका वाचक है ॥ सो नौंमे गुरूके समाचार का दसमें गुरु कहनेवाळे हैं इस से साफ प्रगट है श्री गुरू तेगबाहादुरजी के तिलक जनेऊ की रक्षा प्रभु प्रमेश्वर ने की अर्थात् गुरू तेगबहादुर जी ने तिलक और जनेऊ धारण किया हुआथा ॥ तांका पद से सपष्ट प्रतीत होता है॥ और श्री गुरू आद ग्रन्थसाहिब बीड भाई बन्नो राग रामकली महल्ल।५ छंत शब्द५ तुक १ ॥ भदण जणेत कराया गुरू ग्यांन जपाई ॥ इस तुक में जनेऊ धारण का और सिर मुंडाने का साफ हुकम है ॥

(६)श्री गुरु गोविंदसिंहने अपने विवाह में ससुराळ घर जनेऊ बड प्रेम से पहरा।

पीत पुनीत उपरना धोती । जोती रवि नव छव छाजै ॥
पीत जनेऊ मनो वदन ससिपै । बिजरी विजुरी भ्राजै ॥

नवीन सिंहोंकी प्रमाणीक पुस्तक पंथप्रकाश जो संमत १९६४६ वि० छपे पुरबार्ध सुफे ५०० सत्तर १५ और १६ कथा गुरू ९ विश्राम ४२ कवना अंक ९

अखीर नतीजा

गिझां उप कर्म श्री गुरू नानक देवजी और उपमध्य श्री गुरू तेगबहादुर जी उपसंघार श्री गुरू गोविंद सिंहजी का जनेऊ पैहरना साफ प्रगट है ब्राह्मण क्षत्री वैश्य तीन वर्णों को वेदका हुकम है गुरू साहिब खत्री वेदके मानने वाले थे उनके जनेऊथा ॥ गुरूके सिख माया करके शुद्र और शुद्रोंसे भी निचेदरजे के हैं उनके लिये जनेऊका हुकमही नहीं ! क्या नवीन सिंहों आप गुरू साहिबों को भी शुद्रही समझतेहैं नहीं वोह रघुवंशी खत्री धर्मके रक्षक थे ॥ और गुरू संतान, बेदी, भल्ले, तेहण, सोढी । जनेऊ धार्ण करते हुए सरवत्र परतीत होते हैं द्रिष्टान्त के तौर पर देखीये हमारे नगर रोपड़ में श्री गुरू नानक देवजीकी संतान बेदी बाबे हरबख सिंह और गुर बखससिंहजी आदिक जनेऊ को धारण करतेहैं ॥ ॥ इति दुतिये अध्याये ॥

अध्याये ३

श्री गुरु ग्रंथ साहिब वेद पुराणों को धर्म्म ग्रंथ मानता है ॥

[१] पांधी पुराण कमाईये । भउ१ बट्टी इतुतन पाईये ॥ आदग्रंथ साहिब रागश्री महाल्ला १ घरु ५ शब्द ११ तुक २

(२) सुणीये शास्त्र सिमृति वेद ॥ जपती पौडी ९ महाल्ला १

[३] अहरन मत२ वेद हथ्यार ॥ जपजी पौडी ३८ महाल्ला १

[४] चार बेद कथहु आकार ॥ आदग्रंथ साहिब राग गौडी महाल्ला १ चौपद शब्द १२ तुक१ ॥

(५) चचे चार वेद जिनसाजे । चारे खाणी चार जुग ॥ वक्त पता राग आसा महाल्ला १ पट्टी लिखी शब्द ९ ॥

टिप्पणी (१) पापों के छुटकारे का आशान मार्ग । (२) मति रुपी बुद्धी अहरन उस के सुधार लिये वेदही हैं ।

(६) दस अठारामैं अपरंपर चिनै । कह नानक इक्क तारे आदग्रंथ श्री राग महाल्ला १ घर ३ शब्द २६ तुक ३ ॥

(७) वेद पाठ मत पापा खाए [उक्त पता रागमूही की वार म० १ श्लोक १७]

(८) कुदरत वेद पुराण कतेवा ॥ कुदरत सभ विचार [उक्त पता राग आसा की वार म० १ श्लोक ३ ।

(९) चारे वेद होये सचआर ॥ पड गुन तिन चार विचार [उक्त श्लोक १३]

(१०) नाभ कमलते ब्रह्मा उपजे वेद पढे मुखकंठ सवार [उक्तपता राग गुजरी म० १ चौपदे घर १ शब्द २ तुक १]

[११] चौथे उपाए चारे वेदा ॥ खाणी चारे बाणी भेदा ॥ अष्टादश खट तीन उपाए (उक्तपता राग बिलावल म० १ तिथी घर १० शब्द अक ५)

(१२) ओअंकार वेद निरमए उक्तपता राग राम कली म० १ दखणी ओअंकार शब्दांक १)

---

(३) अठारा पुराण ।

(१३) सामवेद ऋगु जुजुर अथर्वण ॥ ब्रह्म मुख माया है त्रैगुण ॥ [श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब राग मारू सोहिले महल्ला १ शब्द १७ तुक ९]

[१४] वेद पुकारे पुन्य पाप स्वर्ग नर्क का बिउ (उक्तपता राग सारंग की वार म० १ श्लोक १६)

(१५) वेद बपारी ज्ञान रास १ कर्मी पलै होए (उ० पता सारंग म० १ श्लो० १७)

(१६) जोग शब्दं २ ज्ञानशब्दं वेदशब्दं ब्राह्मणं (उक्तपता श्लोक सहसक्रती म० १)

(१७) कथा कहाणी वेदी आणी पाप पुन्य बिचार [उक्तपता राग सारंग की वार म० २ श्लो० १६)

(१८) ब्रह्मा विष्णु महेश देवउपाया । ब्रह्मेदिते वेद पूजा लाया (उक्तपताराग माल्हारकी वार म०२ श्लो०१)

(१९) सप्तद्वीप सप्त सागर नवखंड चार वेद दसअष्ट-पुराण हरिसभनांविच वरतदा हरिसभना भाणा ॥ (उ० पता श्री राग कावार म० १ श्लोक ४ की पौडी)

(टिप्पणी)—(१) वेद के वापार में ज्ञानरूपी रास (पूंजी) कर्मों से मिलेगी । (२) धर्म्म ॥

[२०] ब्रह्मा मूल वेद अभ्यास [उ० पता राग गौडी अष्टपदी म० १ श० १ तु० १)

[२१] चारेवेद ब्रह्मको दिये पाडि पडि करे विचार (उ० पता राग आसा अष्टपदी म० १ श० १ तु० १)

(२२) जुगि जुगे आयो आपण धर्म है। सोधदेखो वेद पुराण (उ० पता राग बिलावल म० ३ श० ४ तु० ६)

[२३] कहयो गोपाल पण्डित सदेसहु १ । हरि हरि कथा पढ पुराण जीउ (उ० पता राग रामकली वाणी दशपौडी ५)

[२४] गुरु मुख नाद वेद विचार (उ० पता राग मारूसोहिले म० ३ श० ५ तु० १)

(२५) नानक विचार है सन्त जन चार बेद कहंदे [उक्तपता राग गौडी की वार म०४ श्लोक०१२ कीपौडी]

[२६] नाना ख्यान पुरान जस उत्तम खट दरशन गावह राम । आद ग्रंथ साहिब महल्ला ४]

[२७] वाणी ब्रह्मा वेदधर्म द्रिडहु२ पापतजायावली

(टिप्पणी) (१) बुलाना जो शाकार मनुष्य में होसक्ता है।

(२) ग्रहण करो।

राम जीउ। उक्त पता राग सूही म० ४ छंत शब्द २ तुक १

(२८) शास्त्र वेद पुराण पुकारहि धर्मु करहु खट कर्म द्रिडाया [उक्त पता राग बिलावल अष्टपदी म० ४ शब्द २ तु० ६]

[२९] जो शरण परै तिसकी पति राखै जाए पूँछहु वेद पुराणीहे (उक्तापता राग मारू सोहिलां म०४श०२तु०९

(३०) बिन सतसंग सुख किनैन पाया जाय पूंछहु वेद बिचार (उक्त पता रा० सारंग म० ४ श० ६ तु० ३)

(३१) वेद पुराण स्मृति बुझेमूल । सुखम महिजाणै अस्थूल ॥ चहु वरना को दे उपदेश । नानक उस पंडित को सदा अदेश ॥ उक्त पता रा० गौडी वाणी सुखमनी म० ५ अष्ट पदी ९ तु० ४)

[३२] कई कोट वेद के श्रोते (उक्त पता अष्टपदी १० तु० १

[३३] वेद पुरान स्मृति माहिदेख । ससी अरु नखत्र मैं पेख [उक्त पता अष्टपदी २३ तु० ३]

(३४) वेद पुराण स्मृति सुने बहु बिध करु बिचार (उक्तपता रा० गौडी तिथि म० ५ श्लोक १ की पौडी)

[३५] नानक विचारह संत जना चार बेद कहं दं उक्त पता राग गौडी की वार म० ५ श्लोक ३० की पौडी

(३६) वेद शास्त्र जन धिआवहु तरण को संसार (उक्तपता रा० असा घर १२ म० ५ श० १३७ तु० २)

[३७] वेदशास्त्र को तर्क[१] न लागा तत्त्व जो गुन पछानै (उक्त पता रा० आसा घर ६ म० ५ श० ४२ तु० २

(३८) स्मृति पुराण चतुर वेदह खट शास्त्र जाकउ जपात (उक्त पता रा० आसा छंतम० ५ श० ५ तु० ३

(३९) शास्त्र वेद पाप पुन्य विचार (उक्तपता रा० आसा घर ७ म० ५ श० ५८ तु० २)

(४०) वेद शास्त्र जन पुकारह सुनै नाहीं डोरा[२] (उक्त पता रा० आसा पडताल म० ५ श० १ तु०२)

(४१) वेद व्याख्यान करत साधू जन । भाग हीन समझा नाहीं खल[३] उक्त पता राग टोडी म० ५ घर ५ श० २६ तु० २ ।

(टिप्पणी) (१) वेदों पर तर्ककरना धर्म नही ॥

(२) स्वस्त बुद्धि से हीन कानोसे बैहरा । (३) मूर्ख ।

(४२) स्मृति शास्त्र वेद पुराण। पारब्रह्मका करहि वख्यान ॥ (उक्त रा० गौंड म० ५ चौपदे घर २ श० १७ तु० २)

(४३) चार [1] पुकारहि नातू मानै। खट [2] भी एका बात बखानै ॥ दस [3] अष्टी मिल एको कहा। (उक्त पता राग रामकली म० ५ घर २ श० १२ तुक १)

(४४) संत सभा मिल करहु वाख्यान । स्मृति शास्त्र वेद पुराण (उक्त पता रा. रामकली म. ५ श. ५४ तु० ४)

(४५) अमृत नाम दान नानक को गुण गीता नित बखाणिआ [उक्तपता रा० मारू म० ५ अंजलीआं शब्द ८ तुक ८]

(४६) हरि आज्ञा होए वेद पाप पुंन्न बचारीआ (उक्त पता राग मारू की वार म० ५ डखणे पौड़ी ३)

(४७) चहु [4] महि एको खटमाहि पख्यो दस अष्ट स्मृताए सभ मिल एको एक बखानै (उक्त पता राग भैरो म० ५ घ० २ श० १५ तुक ३)

टिप्पणी (१) वेद। (२) शास्त्र । (३) १८ पुराण (४) वेदादि ।

[४८] पोथी १ परमेश्वर का थान [उक्त पता राग सारङ्ग म० ५ श० ११३ तु० १]

(४९) जो संत वेद कहत पंथ २ गाखरो मोहि मगन अहंतापजाए (उक्तपता रा० कानडा म०५ घर ९ श० ४४ तु०१]

[५०] अजै गंग जलु अटल सिख संगत सभ न्हावै। नित्य पुराण बाची अहि वेद ब्रह्मा मुख गावै [उक्तपता ग्रथ साहिब सवैये म० ५ सवैया २०]

[५१] वेद पुराण जास गुन गावत ताको नाम हियै मों धरूं (उक्त पता राग गौडी म० ९ श० ९ तु० १)

(५२) वेद कतेब कहो मत झुठे। झठा जो न विचारै। जा सभ माहि एक खुदाई कहतहोंता क्यों मुरगी मारे (उक्त पता रा० प्रभाती बाणी कबीर भगत श० ४ तु० १)

[५३] सर्वशास्त्र बहु रूपिआ अन गरुआ अखाडा मंडलीक बोल बोले काछ (उक्तपता रा० मलहार बाणीनाम देव श० १ तु० ३)

[५४] सगलीस्मृति श्रवनी सुनै। करै निंदकवनै नहीं गुनै ॥ [उक्त पतारा० गौड बाणी रविदास भगत श० २ तु० २]

(१) ईश्वरका स्थान। (२) मारगको पहिचानो।

[५५] उठे गळानी जगत विच वरतै पाप भ्रष्ट संसारा॥ वरना वरनन भावनी खहि खहि जलन बांस अगिआरा॥ वेद१ ग्रन्थ गुरु हटहैं जिस लग भवजल पार उतारा (श्री भाई गुरुदासजी की बार १ पौड़ी १७)

[५६] पित्रों वेद शास्त्रादि के प्रताप से गुरु साहिबों को गुरुआई प्राप्त हुई जो दसम ग्रन्थ साहिब जी से प्रगटहै। श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज सोढ वंश उत्पत्ति कथन करतहुए संसार सागरकी रचना का वर्णन करते हैं॥ लव औरकुशसे बेदीऔरसोढीओंकीउत्पत्तिइसप्रकारबतलातेहैं॥ अब मैं कहुं सु अपनी कथा। सोढ बंस उपजिआ जथा॥

दोहा—

प्रथम कथा संछेप ते कहौं सुहित चित लाय।
बहुर बडो विस्तार कै कहिहों सभो सुनाय॥

चौपाई— प्रथम काल जब करा पसारा। ओअंकारते सृष्टि उपारा॥ शेष नाग पर सोएवो करै। जग तह सेव साई

टिप्पणी (१) गुरू का धन।

उचरै ॥ एक श्रवनते मैल निकारा। ताते मधुकैटभ तनुधारा।
दुतीय कानते मैल निकारी। तातों सृष्ट भई यह सारी ॥
[श्रीगुरु दसम पातशाही ग्रन्थ साहिब विचित्रनाटक ग्रन्थ अध्याय २ कविता अंक ८ और ९-१२-१३]

श्रीगुरु गोविंदसिंह जी महाराज नें उक्त प्रकार से जगत् रचना कथन करते हुए दक्ष प्रजापति के कन्यादान का महात्म्य और उन्हीसे सूर्य बंशियोंकी उत्पति लिखीहै ॥

तिनके बंस बिखै रघु भयो। रघुबंस जिह जगह चलयो ॥
ताते पुत्र होत भयो अजबर। महारथी और महाधनुरधर ॥
जब तिन भेस जोग को लयो। राज पाट दसरथ को दयो ॥
होतभयो वह महाधनुरधर। तीनात्रिआन बरयो जिह रुचिकर॥
प्रथम जयो तिह रामकुमारा। भरत लछ्छमन सत्रबिदारा ॥
बहुतकाल तिन राजकमायो। कालपाइ सुरपुरहि सिधायो ॥
सिअ सुत बहुर भएदुइ राजा। राज पाट उनहीका छाजा ॥
मद्रदेस ऐस्वरज बरीजब। भांति भांतिके जग्गकियेतब ॥
तहीं तिने बांधेदुइ पुर बा। एक कशूर दुतीअ लहुरवा ॥
अधकपुरी ते दोऊ बिराजी। निरख लंक अमराबति लाजी॥

बहुत काल तिन राज कमायो । जाल कालके अंत फमायो ॥
तिन के पुत्र पौत्र जे बए । राज करत इह जग को भए ॥

दसम पातसाही ग्रंथ साहिब नाटिक ग्रंथ अध्याय २ कविता अंक २० से २५ तक

लव और कुशकी संतान अपने नगरों को छोड कर सनौढ देशको भाजगए और वहां ही एक राजा के दामाद (जमाई) बनराज पुत्र पौत्र सहित कीर्तिवान हुए ॥

भाज सनौढ देस ते गए । तही भूपजी विआहत भए ॥
तिहत पूत भयो जो धामा । सोढीराय धरा तिस नामा ॥
बंस सनोढ ता दिन ते थियो । परम पवित्र पुरुष जु कियो ॥
राज करत भए विविध प्रकारा । देस देस के जीत नृपारा ॥
जहां तहां तिह धर्म चलायो । अँत्र पत्र कह सीस दुरायो ।

(दसम ग्रंथ साहिब विचित्र नाटिक ग्रंथ अध्याय २ कवता अंक २८—२९—३१)

लवं और कुशकी संतानका आपस में महान् युद्ध हुआ लवी जीते और कुशी हार जा उस युद्ध के अंतसे प्रगट है ॥

लवीसर्वजीते कुशी सर्वहारे। वंचजेवली भाण लै लै सुधारे॥
उक्त पता अध्याय १ कविता अंक ५३)
कुशकी संतान युद्धमें हारकर काशीजी को चलगए वेद पढा सोढियों से पृथक वेदी कहलाए।
चतुरवेदपठियोकियो कांसिवासं। घनेवर्षकीनतहांकीनिवासं॥
जिनवेदपठियोसुवेदीकहाए। तिनै धर्म्मके कर्मनीके चलाए॥
(उक्त पता अ० ४ क० १)

जो लव की संतान का राज कररहा था उसने पुर्बला वैर भाव त्याग कुश की संतान को बुलाने के वास्ते प्रार्थना पत्र काशीजी लिख भेजा।
पठे कागदं मद्र राजा सुधारं। अगोआपनो वैरभावं बिसारं॥
नृपंमूक लियं दूतसो आसि आयं। सबै वेदीयं भेदभाखं सुनाय॥ (उक्त पता अ० ४ क० १ और २]
कुशकी संतान वेदपाठी मद्रदेश को चली आई राजा को प्रणाम कर वेदपाठ सुनाया॥
सबैवेदपाठी चले मद्रदेसं। प्रणामं कियो आनकै निरेसं॥
धुनं वेदकी भूपताते कराई॥ सबै पास बैठे सभाबीचभाई॥

पडेमापवेदं जुजरवेद कँथं । रिगं वेदराठियं करेभाव हँथ ॥ आर्थव बेद पठियं । सुणे पाप नठियं ॥ [उक्त पता अ० ४ क० अं० ३ और ४]

वेद पाठ श्रवण कर सोढियों के मूल राजा का हृदय शुद्ध होगया और राजपाट कुशवंस [जो सोढियों से पृथक् वेद पढने से वेदी कहातेथे] उन को दे ऋषि भेषकर वनवास लिया ॥

रहारीझ राजा दिआ सर्वसाजा ॥ लगो वन वासं महां पाप नासं ॥ रिषीभष कीयं ॥ तिसै राज दीयं ॥ हरेखार लोगं तजे सर्वसोगं ॥ घनं धाम त्यागे परं प्रेम पागे [उक्तपता अ० ४ क० अं० ४—५ ६]

कुशवंश क राज को पाकर सोढी का बरदान देते हैं कलियों मैं नानक होकर आऊँगा । तुझे जगत पूज्य परम पदवी [गुरुवाई] दूँगा ॥ जैसे तैने तीन वेद श्रवण कर चतुर्थ वेद पाठ (वेदोंके प्रताप से) राज्यपाट दियाहै वैसे ही हम भी तीन जन्म [श्रीगुरु नानक श्रीगुरु अंगद श्रीगुरु अमरदास [धर चौथेजन्म में सुखदियाहै इसका बदलादेंगे ॥

वेदी भयो प्रसंन राज कह पाइकै ॥ दंत भयो वर दांन हिऐ हुलसाइ कै ॥ जब नानक कल में हम आनकहाइ है ॥ हो जगत पूजकर तोहि परम पदवी पाइ है ॥

दोहा ॥

लवी राज देवन गए वेदी अन किओ राज ॥ भांतिभांतितिन भोगिअन भुअका सकलसमाज॥ चोपाई ॥ त्रितीय वेद सुनबो तुम किया ॥ चतुर वेद सुन भूअ को दिया ॥ तीन जन्म हमहूँ जब धर हैं ॥ चउथे जन्मगुरूतुहि करहैं ॥ उतराजा काननहि सधायो ।इतराज करत सुख पायो ॥ कहां लगे करि कथा सुनाऊँ । ग्रंथ वढनते अधिक डराऊँ [दसम पातशाही ग्रंथ साहिब वचित्र नाटक ग्रंथ अध्याय ४ कविता अंक ७ से १०]

(गुरधर्म वेद पुराणों की सबूती में अधिक प्रमाण)

खालसाकालज अमृतसर के प्रेजीडंट श्रीमान् महाराजा जरनल सर हीरासिंह जी महाराज जी० सी० एस० आई० श्री १०८ महाराजा नाभा पती खालसा धर्म के मुखी आ जी ने संमत १९६१ वि० वैसाख ८ से जेठ ८ तक जैनमत के ढूंडीये और पुजेरों का फैसला पुराणों का अपना धर्म ग्रंथ मानकर किया है ॥ यथा ॥

देखो दुर्गा प्रेस नाभा में आठ जेठके छपे उक्त फैसले का सुफा १ सतर ३ से १० तक ॥ वाजे हो कि ८ वैसाख १९६१ को बजुरिये पुजेरे साधूने शरकार वाला दाम इकबालहुं में पेश होकर छे सवाल तहिरीरी पत्र करके ख्वाहश जाहिरकी कि जबाब इनका ढूंडीये साधूओं से लियाजावे। सरकार वालाको रुवारूहुआ कि "अगरचे जैनीओं से मिलने की हमारे शास्त्र में मुमानत है ,, लेकिन गवरमिंट ईंगलिशआ बहादुरकी तरफ से जो हमें राजा खिताब हासल है इस लिये जो सखस दरख्वास्तकरे उस का सुनना जरूरी है। इस नजर से वास्ते निराणेके सात सभ सद मुकर्रर किये इत्यादि ॥

नोट-नवीन खालसाजी आपके बजूरग ने कौन से शास्त्र के अनुसार जैनीओं से पिळन (दरशनाकी पुपानी-यत मानी हैं येह तो हिन्दूओं केही शास्त्र में है॥ अगर कहो आदग्रन्थ साहिब रागमाझ की वार महल्ला १ श्लोक २५ में मुपानेगत है तो इसका खंडन आप के ग्यानी सरदार कांनसिंह जीने गुरमत प्रभाकर में हिन्दू धर्म्म मंडनका शब्द समझ कर खंडन कर दिआ है॥ और उक्त आप के कथन शब्द में गुरु साहिब डुडीओं से शास्त्रार्थ कर अपने धर्म (तीर्थ॥ मृतकश्राद्ध॥ हवन दि) का मंडन करते हैं और डुडीओं को धर्म्म से विमुक्त जान अत्यन्त निंदा करते हैं।

(१) ओना पिंड पत्तलन किरआ दिवा मोए किथा उपाही॥ अठसठ तीर्थ देनन ढाई ब्राह्मण अन न खाही॥

(२) दान हुते असनान वंज भसपई सिरखुथे॥

(३) मोयां जिव दिआ गतहोवै जां सिर पाई अै पाणी॥

सिंघ—नवीनसिंहों आपके बजूरग श्रीमहाराजा साहिब उक्त फैसले के अखीर सुफ ४ सतर १६ पर पुराणों के

अनुसार फैसला देते हैं जिस से अब कोई संदेह नहीं बकाया रहसका ॥ "हमारी राय मुंदरजे बाला बाइतफाक बाक शिवपुराण के है" ॥ इति ३ अध्याये ॥

अध्याये ४

दसों गुरु साहिब चार खत्री (क्षत्री) कुल (बेदी, तेहण भल्ले, सोढी) में से हुए हैं और इनका बिवाह सम्बन्ध बारह कुल (कुमराव १ रिपराउ २ सूहडी ३ सिल्ले ४ मरवा हे ५ खोसले ६ धुस ७ चोणे ८ लम्ब ९ सखडी १०) आदि खत्रीजाते प्रसिद्ध हैं इनसे हुआ ॥ श्रीगुरु मत में सर्वत्र के बिवाह हिन्दू [वैदिक] रीतिसे हुए जिनका विस्तार पूर्वक पुस्तक बढनें के भयस नहीं करसकते सिर्फ नवग्रह पूजन और लावां हवनादि दिखलाता हूं जो हिन्दू रीति में मुख्य हैं।

"सिख धर्म्मकी बुनियाद,,

श्रीगुरु नानक देवजी के विवाह की विधि ।

श्रीगुरु नानक देवजी को विवाह [लावा] के लिये घंत घर बुलायागया। हेरत बुलावन मूले१ नर पठयो तबै॥ लावा लेवन समों वेग चलिये सबै ॥ यों सुन दुंधप बाजे तव बुलंद हैं। हानिको गमन बरात महित सुख कंद हैं। रची हुती जिहवेदी तिहवेदी गए । निरखउठे दिज ब्रिंद आसिख दए॥ सादर सवन बठाए आपवेठंहुवै वेदमंत्र पढ़व्याह रीत कीनी सबै ॥ दाहन दिस श्री दूलो दुलही वाम है। कीन वनायक२ पूजन सब सुख धाम है ॥ बार हुतासन किनो होम अभंग है। :होलीनी वहुर भवा३ मान उमंग है॥ इसकालू उतमुलेका मांहितहांकरहैं साख उचार सोध गात्र महां। लोकक वेदक रीत करी विध गुसबै ॥ हो पान ४ ग्रहन इमकीन निरख हरखे सबे। नानक सूर्योद जन्म साखी मयूख २० कविता अक५४से५८तक।

(टिप्पणी) (१) मूला गुरुनानकका असुरथा ॥
(२) गणेशादि पूजन ॥ (३) फेरे ॥ (४) विवाह ॥

(नोट) श्री गुरु नानक सूर्योदय जन्म साखी [इतिहास] गणेशसिंह कवि वेदी वंश रचित जो रियासत बिलासपुर की ओर से धर्मार्थ वांटीगई । इस में प्रकरण मयूख में लिखेहैं । येह जन्म साखी इस वास्ते मोतबिर समझी गई श्री गुरु नानक देव जी के वेदी वंशावतंस उक्त कविजी ने सत्य २ रचना की होगी । और जन्म साखीओं में और नानक देव जीके विवाहपर मर्यादा लिखी है ।

यथा ॥ सवैया ॥ वेदी जबिंद औवेकि सिरोमणी वेदी रची जहगं तिथाई । पुंज जहा द्विजराज विराजत हेर समाज उठे हरखाई । दे सुख आसिखका सुख पाए गए सभे वैस तहां चहुं धाई । वेद के मंत्र उचारतवे शुभ रीति करी जिव वेद ने गाई ॥ चित्रपदा छन्द ॥ पंकजनै वनै दिस दाहनि श्री महिला किय वामजिअंगा । दीपत कीन हुता सनको दिज पूज वनायक चंदन संगा । धारआए विखै सरपीमध पावक पावत जोत अभंगा । छेय भवीरिढर वरचार सुहावत ज्योरति संग अनंगा ॥ छपै छंद ॥ इति मेधा हरयाळ वहुर मूळेके मोधा । पढहै साखोच्चार गोत्र

और दिककर सोधा। उनकहि चोणा गोत रीति जिऊ नीकी सुहाई।सुनकर नरतिह रहे हिरदे हरखाई।सभलौकिक वैदिक विधि करी जिउ जिउ दिजन रजाइ।इम पान ग्रहन कीथदान दिय स्वस्तिबोल्ल वर विप्रलिया ॥ *

श्रीगुरूनानक प्रकाश

सूर्य प्रकाशका प्रथम भाग कवी संतोख सिंह रचित विवाह प्रसंग अध्याये २२ कवता अंक २४ से २६ तक

गुरुमतके प्रकाशिक श्रीगुरु अर्जुन देवजी ने अपने पुत्र हरगोबिंद का विवाह हिन्दू वैदिक रीति से किया।

आए नारायण[1] दास अगारे। लेत प्रवरगो अंतर द्वारे॥
जहवेदीसुन्दर रचिराखी॥ मनबंधू पावितदेखनकांखी॥
खरेहेर श्रीगुरु आगवनू॥ सभ आगे दुलहु दुसर वंनू॥
सादर सगरे करे बिठावन॥ चहुदिस वेदी के थलपावन॥
बिप्रउचारकरन तव लाग॥ पूजत नवग्रहगण पति आगे॥
बीचहु तासन[2] कीन प्रकाशन॥ पावत सरपा[3] करत उपा-

(टिप्पणी)—(१) नारायणदास श्रीगुरुगोविंदसिंहजी का सश्वरथा।
(२) अग्नि। (३) घृत।

धन ॥ तब दुलहन ढिग आन बैठाई । जथा जोग सभ विधक रवाई ॥ वर वर संग फारकर फेरे । पाणिग्रहण किनमाणि सवेरे॥जथा जोग श्री अरजन तहां । दियो दर्ब हरख जह कहां ॥ साखोचार कुमारानि कीनस । सुन्यो सभन पुन धन गनदीनस ॥ इबलावाले कर जस साजा । बीच बेद का उठ समाजा ॥

सूर्य १ प्रकाश रास४ अंस १२ कविता अंक २६ से १८ तक ।

[नोट] श्री गुरु अर्जुनदेव जीने अपने पुत्र श्री गुरु हरगोविन्द जीके विवाह हिन्दू [वैदेक] मर्यादा से किया इसवास्ते गुर मर्यादा हिन्दू रीति है ॥

गुरूमतके

प्रकाशक ॥

श्रीगुरु अरजनदेवजी की जोतीजोत समावन [मृत्यु] के पश्चात श्रीगुरु हरगोविन्द जीका द्वितीय विवाह हिन्दू [वेदक] रीतिसे हुआ ।

टिप्पणी (१) दरअसलमें नाम गुरु परताप सूर्य ग्रंथ है जिस मे सर्वत्र गुरुसाहिबों के जीवन चरित्र हैं ॥

भलोपहूरत धेनु[१] धूक। बिन बूझे शुभ मंगलमूल ॥
सुनत हने बाजत परडंके। दूलहु चल्यो वेस घर बंके ॥
मुख्य मसंद[२] संग सभगए। जाए वेदका महथित भए ॥
देखत उठे तहां सहुद य। बैठ गये सतगुरन बैठाय ॥
विप्ररीत शुभ पूजन[३] करी। कई दच्छना जानघनेरी ॥
कर जो प्रकाश हुतासन[४] तहां। डार आपते घृत महां ॥
हरिचन्द[५] निज तनुजा साथ ॥ अग्न प्रदछना फेरे नाथ ॥ अर रीत सभ जतक होई ॥ जथा जोग कर कीन सहोई ॥ ले लापा डेरेजत आए। बैठे हुते कुछ निज थाए ॥

सूर्यप्रकाश रास ५ अंस २८ कविता अंक १४ से १८ तक]

[नोट] यह विवाह श्री गुरुआद ग्रन्थ साहिब जीकी बीड [जिलद] बनण के पश्चात् हुआ। इससे साफ प्रगट है विवाहों में गुरुमर्यादा हिन्दू रीति ही है ॥ इसी प्रकार दीपरा विवाह समझो ॥

(टिप्पणी) (१) ज्योतिषमें गोधुली लग्न सायंकाल प्रारंभ का होता है। (२) गुरु के पुजारे। (३) नवग्रह पूजन। (४) अग्नि। (५) गुरु हरगोविंद जीका सम्बरथी ॥

सिख धर्म की ध्वजा

श्री गुरु तेगबहादुरजी का विवाह हिन्दू [वैदिक] रीतिसे हुआ ॥

तिस कूडजाम जब बीती ॥ हित कारजादेसन प्रीती ॥ नर पठ कर गुरू बुलाए ॥ लख सभा तुरत चलआए ॥ श्रीतेगबहादुरबैसे।जेह वेदीसुन्दरहैसे॥गणपति सुरपूजनकीने॥ तिह जथा जोग धन दीने ॥ श्री गुजरी को लेआए ॥ दिस वाम विखे बैठाए ॥ कर पूजा अग्र प्रकाशी ॥ त्रिच हवी १ पाइ बहु भासी । दिज २ वच ते फिर कर फेरं। सभ लाग दियो तिस बेरे ॥ कर रीत जथोचित सारी ॥ चल आए डेरे मझारी ॥

सूर्यप्रकाश रास ८ अंस ६ कविता अंक ९से १३ तक

(नोट) श्री गुरू तेगबहादुरजीका विवाह आदि ग्रंथसाहिब की जिल्दके २५ वर्ष पश्चात् हुआ । इससे साफ प्रगट है गुरु मर्यादा विवाह आदिकों में हिन्दू रीति है ।

(टिप्पणी) (१) घृत । (२) ब्राह्मण ॥

सिंह धर्म्म की बुनियाद

श्रीगुरु गोविंदसिंहजीका विवाह हिन्दू वैदक रीतिसेहुआ

लावा लगन विलोक विप्र वर हरजस प्रती बुलवायो ॥ फेरे देन कर त्यागी गुरु दूलहु को बुलुवायो ॥ वेदी बेद विधी युत वर वड विश्व कर्मा सुठ ठाठ ठयो ॥ नवग्रह सफल होन हित द्यज वन हरजसके ग्रह आएगयो ॥ अमृत वेला मंगल झेला मेलागन कन लगनवरे । श्री गुरु नौम ब्रिधं १ कुल चारो आएस दुलो मोद भरे ॥ थिरे जाए मण्डप मैं आशन पैं भैं जथा जोग धरे । चौंकीं चारु चंदन पै वर थिर दै दरशन सव मोद करें॥ कुल अनुसार आचार २ वेद विध कर पुन अग्नि जगाई ।

[टिप्पणी] (१) वेदी तेहण मकेसाई । [२] वेद विधि ॥

हमन समंत्र समग्री करहीं ग्रवर प्रतँख्य है पाई॥ पुन हरजस १ सुन आज्ञा द्विज की नित तीआ युत तहि आयो। समै ज्ञान कन्या बुलवाई दूलहु निकट वैठायो॥ बिधवत वेद्द मंत्र प्रसिद्ध सिद्ध पाधा वन विधि टेरं। साखाचार उचार सुनत धार देह दिज केरे। समें समें पर कोकल वैनी गावत गीत वधेरे॥ वेद २ विधान ठान वर हर जस कन्यादान महान करेयो॥

पंथप्रकाश मतवै आफताव पंजाव लाहौर संवत् १९४६ विक्रमी छपे के पूर्वार्द्ध सुफे ५०७ से ५०९ तक। विश्राम ४२ कवित अंक ९ कथा श्री गुरु तेग बहादुर जी।

(नोट) श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज का विवाह हिन्दू (वेदक) रीति से गुरु ग्रंथ साहिब की जिल्द के ६९ वर्ष पश्चात हुआ। इस्से प्रगट है विवाह में गुरु मर्यादा हिंदू रीति है जो गुरु साहिबों के विवाहों पर हुई।

---

[१] गुरु १० का सुसर खत्री था॥ [२] वेद विधि।

सिंह धर्म्म की बुनियाद

श्री गुरु तेगबहादुरजी की जोतीजोत समावन (मृत्यु) के पश्चात् श्री गुरु गोविंदसिंह जी महाराज जब सबकार्यों में स्वयं (खुद मुख्तार) हुए।

तव द्वितीय विवाह खुद हिंदू वेदक रीतिसे कराया। सुन सतगुरु तिह धीर धरायो। डेरा भली ठौर करवायो ॥ सुध श्री माता पास पठाई। मात हरख हिये बटी बधाई ॥ साहा तुर्तही लियो सुधाई सवै समग्रीं त्यार कराई ॥ रीत १ वेद कुल कर सब भाए। सति गुरको फेरेफिरवाए ॥ वजे सधाने मंगल गाए। अनंद रहा नंदपुर छाए ॥ शशि वदनी पिकवैनी भामन। मृगनैनी गज गामन गावन। मृदुल मधुर स्वर मदन जगावन ॥ जा

[टिप्पणी] (१) हिन्दू वेदक रीति।

सुन सावन मेघ लजावंन । लै दुलहन दुलहा जब आए ॥ जुरी द्वार पर तिया समुदाए । रोके गुरु पौर १ पर घरकी।करी आरती आरतहरकी ॥ वारी २ वार मात तव पिओ । अनंद उमक चल्यो भरहीओ ॥ अती सुंद्री नाम सुंद्री । करसु सगन इकठे बैठए ॥ सची हुती सभा सोहि महाए पुन कंगना मिल सवनखिलाए । हास विलास कीन मन भाए ॥ अतिउत्साह व्याहिमें धावा । वाहि वाहि सब कहे अलावा ॥

उक्त ग्रंथ प्रकाश पूर्वार्द्ध कथागुरु १० बिश्राम ५० कविता अंक १० सुफे ६२८ से ६२९ तक ॥

(नोट) गुरु १० जी का विवाह आद ग्रंथ साहिबजी जिलदके पश्चात् ११२ वर्ष में हुआ ॥ इसमे प्रगट है गुरु घरणाद्म हिन्दू रीति है ॥ क्योंकि चदार नावें सरीण खत्रीने

(१) घरका दरवाजा [२] जल ॥

अपनी कन्या [सुन्द्री] को गुरु १० की माताश्री आनन्द पूर में की गुरु साहिब जैसे मरजी विवाह कर लेते।

[नवीन सिंहकी शंका गुरुमतानलंबी हिन्दू का उत्तर]

(प्रश्न) गुरुसाहिबों को जिस रीति (मरयादा) से लोगों ने कन्याएँ गुरुसाहिबों ने ले लीं। गुरुसाहिबों ने अपनी कन्याका वैदिकरीति से विवाह नहीं कियाहो तो बताओ।

[उत्तर] दसों गुरुसाहिबों में तीन गुरुओं के कन्या थीं। सो दसों १ गुरुस्वरूप है गुरुकी कन्या का विवाह हिन्दू [वैदक] रीति से दिखानें पर सर्वत्र का विवाह हिन्दू रीति से ही समझो॥

श्री गुरुहरगोविन्द जीकी कन्या बिबीबीरोजीका विवाह हिन्दू [वैदिक] रीति से हुआ॥ जो मेला झबालमें जेठ २६ को माणक चौंक गुरद्वारेमें होताहै।

पांच घड़ी जांनिसगई प्रोहित कहजों सुनाय॥ महाराज

' [टिप्पणी] [१] श्री नानक अंगद पहिचाना अंगद अमरदास कामाना॥ अमरदास रामदास कहाओ इत्यादिक दसमग्रंथसाहिब श्री विचित्र नाटक ग्रन्थमें।

बिलमन करहु लाबा देहु बुलाए ॥ तुरतनबन हकारन गया धर्मे१ साथ करत इमभिया ॥ लंकर दूलहु करहु अगारे । सभा जान गुबतुमें हकारे । सुनत सिघरही इकं त्यारी । बाजत बादत २ कार अगारी ॥ असनबाजी छोरतभये जहसाते गुरू थिरतचल्लगए ॥ करकुलरीत बेंदका अंदर ॥ बैठारयों दूलहु नवसुन्द्र ॥ गणपती नवग्रहका पुजवाए । अग्निकी अभिसेचन३ लवाए ॥ इनकह लगे करन सो काज । फेर फगनि कर समाज ॥ द्विज ४ आज्ञा ते कन्याआनी । बेदी बिखै बठावनि ठानी ॥ वैदिक लौकिक कनिम रीत । लामादई मुदित सभि चीत । सगरो काज सम्पूरण भयो । उठदूलो निजडेरे गयो ॥

सूर्यप्रकाशरास ६ अंस १८ कविता अंक १ से ४ और १५ से १७ तक

(नोट) उक्त विवाह हिन्दू (वैदिक) रीति से हुआ इससे प्रगट है गुरुमर्यादा हिन्दू रीतिहै ॥ यह विवाह ग्रन्थसाहिबजी की जिल्द के पश्चात् १९ वर्षहुआ ।

(प्रश्न) गुरु साहिब हिन्दूओं में से खत्रीथे । उन्होंने

---

[१] गुरु ६ का सिमधी । [२] श्रेष्ठसुरोंवाला बाजा ।
[टिप्पणी] [३] प्रकट । [४] ब्राह्मण के हुक्मसे ॥

विवाहों में हिन्दू (वैदिक) रीति की होगी हमें क्या । आप किसी गुरु के सिख लुहार तरखाण आदि के विवाह में हिन्दू रीति पुराचीन दिखाईये तो हम मानजाएगें ॥

(उत्तर) श्री गुरु अर्जुन देवजी के सिन्द की सिख आकल तखाण बडे ग्राम निवासी ने अपनी कन्या का विवाह हिन्दू (वेदक) रीति से सादे तरखाण के पुत्र संधु के साथ उक्त रीति से किया ।

आकल सादें मिलनी कीन । जथा सक्त दे कीरत कीना॥
संधूको दीने तब फेर । जथा जोग कर रीत भलेरे ॥
(सूर्य प्रकाश रास ७ अंस१८कविता अंक१५ और १६ ।

(प्रश्न) हमतो श्रीगुरु ग्रन्थसाहिवजी का मानते हैं अगर विवाह हिन्दू रीति ग्रन्थ साहिबजी से मिलजाए तो हम मानजाएग ।

(उत्तर) कुडमाई (वाकूदान) से गृहस्थ धर्म्म तक हिन्दू (वैदिक) रीति अनुसार हुक्म ग्रन्थ साहिवजी में बाहर मुखी रीति के अंत्रमुखी घटाया स्पष्ट है ॥ यथा ॥
(१) हिन्दूओं के प्रथम कुडमाईहोती है कन्यावाले की इच्छा अनुसार और उससमय सर्वत्र सम्बन्धी एकत्रहो मेवा

आदिक मिष्टान्न बांटते हैं । और येही गुरुग्रन्थसाहिब जीकी आज्ञा है ।

साधूसंग इकत्रकर बालक करो सगेवा । लभ सुजान जन कुड़म भलेर वडहु अमृत सेवा ॥ (श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब वीड भाई वंनों राग रामकली महल्ला ५ छतशब्द ५ तुक ४)

[२ हिन्दूओं के साहा सुधवाकर विवाह में भेजा जाता है और वैसही श्री गुरु ग्रन्थसाहिब जीकी आज्ञाहै ।

आगा लग्न गणाया हिरदे धनआ साहिगा बालगा । जीउ । पण्डित पाधे आणपती विवाह चाया वलिराम जीउ [श्रीगुरु आद ग्रन्थसाहिब वीड.भाई गुरुदासजी राग सूही महल्ला ४ छंतशब्द १ तुक ४]

(३) हिन्दुओं के विवाहके समीप येल कड़ाही [ने. लका पक्वान्न] होताहै ॥ वैसेही श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजीकी आज्ञाहै संवत्साहा लिखया मिलकर पावहु तेल [आद ग्रंथ साहिब]

(४) हिन्दूओं के विवाहके प्रथम कँगना बांधतेहैं वैसेही गुरू ग्रंथसाहिब जीकी आज्ञा है ॥

कर कारिवार कंगना पहिरे इन विध चित्त धरेई ॥ (श्री गुरु आ० ग्रं० सा० बीड़भाई गुरदासजी राग आसा महल्ला १ शब्द ३५ तुक २)

(५) हिन्दूओं के जनेत (जंज) बरातकी धूमधाम से चढाई होती है वैसेही गुरु ग्रंथसाहबकी आज्ञा है ॥

अचरज जंज बडाई ठाकुर मुनि जन हुके देवसुरा ॥ (आ० ग्रं० सा० बीड़भाई बंनो राग रामकली महल्ला ५ छन्दसब्द ५ तुक ४)

लाड़ा इक विवाहीऐ बाहले जाजी [१] कर पिहमाणा ॥

(श्रीभाई गुरदासजीकी वार ५ पौडी २१)

(६) हिन्दूओं के ढकाओंपर घोडीचढ बालककी स्त्रियां मिणती (पैमाइश) कियाकरती हैं वैसेही गु० ग्रं० सा० जीकी आज्ञा है घोडीते जण देहरा मिणाया राग (आ० ग्रं० सा० बीडगुरदास जी राग वडहंस महल्ला ४ घोडीआं शब्द १ तुक ४)

(७) हिन्दुओं के विवाह में वेदी (विवाह के लिये उत्तम लकडी आदि से बनी हुई होती है जहां ब्राह्मण वेद

टिप्पणी [१] बराती ॥

मंत्र पढा करते हैं) वैसेही ग्रं०, सा० जी की आज्ञा है ।

नाभ कमलमहि बेदीरचले ब्रह्मज्ञान उचारा।(आद ग्रं. सा. बीड गुरदासजी राग आसावाणी कबीरजी शब्द २४तुक२

(नोट) यह शब्द कबीर जी पर हिन्दू रीति की मर्यादा को रूपक अलंकारकी तरह ज्ञान भरी कथन किया है जो उक्त शब्दकी उत्थानका (शब्द बनणके कारण से जाहिरहै)

(८) हिन्दुओं के विवाह प्रोहितके हाथही होते हैं वेद विधान से वैसेही ग्रं० सा० जी की आज्ञा है ।

राय प्रोहित लिये बलवाई । सुभट सिंह मती दई पठाई ॥
मोपर कही अनुग्रह करिये । वेद विधानसहित येह वरिये ॥
(श्रीगुरु दशमपातसाही ग्रंथसाहिब चरित्र पाख्यान पातसाही १० श्रीगुरु गोविंदसिंह जीका कथन चरित्र ५२ कविता अंक ९ ॥

(९) हिन्दूओं के विवाह में फेरेहोते हैं वैसेही ग्रं०सा०जीकीआज्ञाहै गुणज्ञानी बह मता पकाया फेरे तत्व दिवाए (आ० ग्रंथसाहब बीड गुरदास रागसूही महल्ला ४ छंदशब्द १ तुक ४)

(१०) हिन्दूओं के विवाह फेरों को लामांभी कहते हैं जो वैदिक रीति से होतीहैं जिस वैदिक कर्मद्वारा स्त्री पुरुषका संबन्धकियाहुआ अधर्म्मो नहींहाता। वैसे ग्रंथसाजीकी आज्ञाहै

हरि पहलड़ी लावपर वीरति कर्म दृढाया बलिराम जीउ। बाणी ब्रह्मा बेद धर्मदृढहु पाप तजाया बलिराम जीउ॥ (आ० ग्रंथसा० श्रीहगुरुरामदासजी रागसूही महल्ला ४ छन्द्र० २ तुक १)

(नोट) उक्त शब्द से नवीन सिंह विवाह में लांमा पढाते हैं जिसमें "बाणी ब्रह्मा वद धर्म दृढहु,, स्पष्ट पाठहै नामाकूप कड़ाहप्रसादके लालच में आंखें मीच (बंद) कर लेते हैं॥ जो वैदिक रीति विपरीत विवाहकरते हैं॥

[११] हिन्दूओं के युवती (नवजवान स्त्रीआं) लाड़ा (विआह हद्ड) को इकठ्ठीहो देखतीहैं वैसही ग्रंथसाहिब जी की आज्ञा है।

लाडा वेखन लाडीआ चौगिरदे होईआं (श्रीगुरुदसम पातसाही ग्रंथसाहिब श्री भगवती जी की वार श्री गुरु गोविंदसिंह कृत कविता अंक ४२ :)

(१२) हिन्दूओं के विवाह मंत्रों में पुरुष को स्त्रीव्रत

धारणकी शिक्षाकी जातीहै ॥ जैसे श्रीगुरु गोविंदसिंह जी ने अपने ऊपर अनुपकौर को मोहित देख शिक्षा की है॥ छोर व्याहुता नार केळपासों न कमाऊं। धर्म राज्यकी सभाठौर कैसेकर पाऊं॥ (श्रीगुरु दसम पातसाही ग्रंथसा॰ चरित्र पाख्यान पातसाही १० चरित्र २१ कविताअंक १७)

(११) हिन्दूओंके विवाह मंत्रों में स्त्रीको येह शिक्षाकी जातीहै कि पतिव्रतधारणकरपतिकोहीपरमेश्वरसमझ उसकी आज्ञा भंग नहीं करनी ॥ वैसेही ग्रंथसाहिबजीकी आज्ञाहै।

[१] मै कापण मेराकंत करतार। जेहा करावी तेहाकरी सिंगार॥जांतिस भावै करे भोग मन तन साचे साहिबजोग॥

[आ॰ ग्र॰ सा॰ बीड गुरुदासजी रागभैरों महल्ला ३ शब्द ४ तुक १]

[२] कतीनारवर एकसपाळ गुरमुखमरण जीवन प्रभनाळ [आ॰ ग्रं॰ सा॰ बीड गुरदासजी रागरामकळी दखणी ओअंकार महल्ला १ शब्द २१]

[३] खसममरे तौ नार न रोवै। उस रखवाला औरैहोवै ॥ रखवारेका होए विनास। आगैनर्क इहांभोग विलास [आ॰ ग्रं॰ सा॰ बीड गुरदासजो गौडबाणी कबीरजी शब्द ७ तुक १]

[४] जोधिर बहुघर इंढणा सतरक्ले नारे ॥ अमर चलावे चमद्दे चाकर विचारे [श्रीभाईगुरदासजीकी वार १९ पौड़ी २०]

(१४) हिन्दूओं के दाज देहेज (वस्त्र धन धान्य) दे विदा करते हैं बालक कन्या स्त्री पुरुष हो गृहस्थ धर्म मार्ग होते हैं जिस्से कुटुंब हो रिस्तेदारी चलतीहै ॥ वैसेही श्री भाई गुरदास जी अपनी वारों में आज्ञा करते हैं।

पत्रकडखर लाडली माऊं पिऊं खरी प्यारी ॥ विच भरावा भेनडी नानक दादक सण परवारी ॥ लॅख खर्च विवाहीआ गहणे दास साज अतभारी ॥ सहुरडे घर मनी आहि सणखती परवार सुधारी ॥ सुख माणे पिर सेजडी छतीं भोजन सदा सिंगारी ॥ लोक वेद गुणज्ञान विच अर्धशरीरी मोखद्वारी ॥ गुरमुख सुख फलनिहचों नारी ॥ श्रीभाईगुरदास जी की वार ५ पौड़ी १६)

(१५) हिन्दुओं के करतूत कर्म को श्रेष्ठ समझते हैं ॥ वैसेही श्री गुरुग्रंथ साहिव जी की आज्ञा है ॥ कर्म करतूत अमृत फल लागा (आ० ग्रं० सा० पोड गुरदासजी रागा रू सोहिले महल्ला १ शब्द १८ तुक ७)

(१६) हिन्दुओं की शास्त्रोक्त मर्यादा है स्त्रियां घुंघट १ परदा आदि रक्खें ॥ वैसेही ग्रं० सा० जीकी आज्ञा है । रह रहुरी बहुरीआ घूंघट जिन काढै। अंतकी बार लहैगी न आढै ॥ घूंघट काढ गई तेरी आगै । उनकी गैल तोहि जिन लागै ॥ घूंघट काढेकी यह वाडि आई ॥ दिन दसपांच बहु भले आई ॥ आ० ग्रं० सां० बीड गुरदास जा राग आसा वाणी कवीर भगतजी शब्द १४ तुक १ और २)

अनंद की असलियत ॥

अनंद भिआमेरी माए सतगुर मैं पाया ॥ सतगुरता पाय सेहिज सेती मन व जीया वधाईआ रागरतन परवार परीयां शब्द गावण आईया ॥ शब्दोत गावह हरि केरा मनिजिनि वसाया ॥ कहे नानक अनंद होआ सतगुर मैं पाइया [श्री गुरुआद ग्रंथ साहिब राग रामकली महल्ला ३ वाणी अनंद पौडी १]॥

---

(१) त्रीण धरओट बोलेवैदेही ॥ श्रीरामायण लंका काण्ड श्रीसीताजी से शोक बागमें रावणकी वार्तालाप प्रसंग ॥

[भावार्थ] यह शब्द स्त्री को पास बिठा कर (प्राप्ति समय) पढना महा मूर्खता का कामहै क्योंकि उक्त शब्दमें " अनंद भिया मेरीमाए,, और सतगुरुमैं पाया,, यह वाक्य स्त्री प्राप्ति व्यवहारिक कार्योंमें घटित नहीं होसक्ता ॥ यथा अनद भिया मेरी माए ॥ वहां मां (माता) कहां ॥ वहां तो पुरुष के लिये प्राप्ति हुई अर्धांगी (स्त्री) है इस वास्ते उक्त शब्द व्यवहारिक कार्यों में घटित नहीं हो सक्ता पर-मार्थिक में घटित हो सक्ता है । इसी प्रकार ४० पौडियों की व्यवस्था समझो ॥

(नोट) जो लोग आनन्द बाणी से बिवाह और करेवे [नियोग] कीसंमति देते हैं वोह महान अनर्थकर पापकेभागी बनते हैं उक्त अनन्द बाणीके अर्थ अनुसार ॥ और बाजेर पुरुष अनन्दके समय लावांभी पढातेहैं॥तथा॥ हरि पहिलडी लाव परविती करम द्रढया बलि रामजीऊ । बाणी ब्रह्मावेद धर्म द्रढहु पाप तजाया बलिराम जीऊ ॥ धर्म द्रढहु हरिनाम धियावहु स्मृति नाम द्रढाया ॥ सतगुरु गुरु पूरा आराधहु सभिकिलविख पाप गवाया ॥ सहजअ-

नंद होआ वडभागी मनहरिहारि मीठा लाया॥जन कहैनानकलाव पहिली आरम्भ काज रचाया॥ १ ॥

हरि दूजड़ी लाव सतगुरु पुरुष मिलाया बलिराम जीउ। निर्भव भयमन होइ हो मैं मैलगवाया बलिरामजीउ॥ निर्मल भवपाया हरि गुणगाया हरि वेखेराम हदूरे॥ हरि आतमरामपसारया स्वामी सर्व रहिआ भरपूरे॥ अंतरबाहर हरि प्रभुएको मिलि हरिजन मंगल गाये॥ जन नानकदूजीलाव चलाई अनहद शब्द वजाये॥ २ ॥

हरि तीजड़ी लाव मन चावभया वैरागिया बलिराम जीउ। संत जना हरिमेलु हरिपाया वडभागिया बलिराम जीउ। निर्मल हरिपाया हरिगुणगाया मुखि बोली हरि बाणी॥ संत जनावड भागी पाया हरि कथियै अकथ कहाणी॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपियै मस्तकभाग जीउ॥ जन नानक बोले तीजी लावै हरिउपजै मन वैरागजीउ॥ ३ ॥

हरि चौथड़ी लाव मन सहज भया हरिपाया बलिराम जीउ॥ गुरु मुखि मिलिया सुभायां हरिमनतन मीठा लाया

बलिराम जीउ ॥ हरि मीठाकाया मेरे प्रभुभाया अनदिन हरिलिव लाई ॥ मन चिंता फल पाया स्वामी हरि नामव जी वधाई ॥ हरि प्रभुठाकुर कारज १ चापाचन हिरदे नाम बिगासी ॥ जन नानक बोले चौथी लावे हरि पाया प्रभु अवनाशी ॥ ४ ॥

[श्री गुरुआदग्रन्थ साहिबरागसूही महल्ला ४छंदशब्द२]

[भावार्थ] उक्त शब्द से गुरुमहाराज वेदवाणीब्रह्मा जिकी कांही धर्ममानना और उसपर क़ायमरहने के लिये उपदेश है(हरि पहिडीलाव परविरती कर्म दृढाया बलि-रामजीउ ॥ वाणी ब्रह्मावेद धर्मदृढहु पाप तजाया बलि-रामजीउ) ॥ और ईश्वरके हरि आदिनामकी महिमा और उक्त वेद वाणी के प्रतापसे ईश्वरका मिलना (प्राप्ति होना) परमार्थ के लिये उपदेश है विवाहादि व्यवहारिक कार्योंपर उक्त शब्द[लामा]घटित नहीं होसक्ती ॥ यथा ॥ जोस्थाली पाकन्यायकीरीतिसे परीक्षाकर आपकी दृष्टिगोचरकरताहू ॥

---

(१) गुरुग्रंथ साहिब विवाह हिन्दू वेदकी रीति हवन आदिसे ही मानता है ॥ यथा ॥ तंतघी होम अगसद पुजा पाईये कारन सोहै ॥ और रागआसा वाणी कबीर शब्द २४ में देखो

लप १ में ॥ सतगुरुगुरु पूरा अराधासिम किलविष पाप गवाया ॥

[नोट] क्या पुरुषके लिये स्त्री सतगुरु है अथवा गुरु मतमें स्त्रीके लिये पुरुष सतगुरु है ॥

लांप २ में ॥ सतगुरु पुरुष मिलाया और अंतर बाहर हरि प्रभुएको स्वामी सर्व रहिआ भरपूर ॥

[नोट] इत्यादि ईश्वरकी स्तुति है गुरुमत में सर्वत्र स्त्री पुरुषको ईश्वर नहीं जो उनके विवाह अथवा नियोग करेने में उक्त शब्द लगाया जावे ॥

लांप ३ में ॥ संत जना वड भागी पाया हरि कथियै अकथ कहाणी ॥

[नोट] यह ईश्वरकी स्तुति है स्त्री पुरुष के विवाहादि पर घटित नहीं होसक्ती उक्तवाणी ॥

लांप ४ में ॥ जन नानक बोले चौथी लावे हरिपाया प्रभु अविनासी ॥

[नोट] पुरुष के लिये स्त्री प्रभु अविनाशी है ॥ अथवा स्त्री के लिये पुरुष प्रभु अविनाशी है दोनों ही नाशवान गृहस्थ कार्यों में खचित नारकीय जीव हैं ॥

इत्यादि कारणों से उक्त शब्द [लांवा] विवाहादि पर घटित नहीं हो सक्ती क्योंकि उक्त लांवों से किसी गुरुका विवाह नहीं हुआ और नहीं गुरुमहाराज ने किसी विवाह के समें उच्चारण करी ॥ जो उक्त शब्द वर्णन कारण [उत्थानका] से ज़ाहिर है ॥

नवीन प्रश्न ॥

पंडितजी आजकल नवीन खालसा ग्रंथ साहिबजी के साथ स्त्री पुरुष लांवा (फेरे) लेते हैं और चिरकाल से विवाहहुए हुआएकों फिर दुबारे ग्रंथ साहिबजी से विवाह करते हैं और कहतेहैं यह असल गुरमरयादा है ।

[उत्तर] मित्रो मैं इसपर अपनी राय कुछनहीं कथन करता क्योंकि खालसाजी नराजहोंगे॥मगर उनहींमेंसे एकखालसा की राय छपी छपाई दिखलाताहु ॥

(१) देखो खालसासुधार तरुंदीअठभी संचीकृत गुरमत प्रकाश संत खालसा भाईअवतारसिंहजो गुरमत प्रेस लहौर विखे प्राथिमवारछपीकेसुफे४०९सत्तर१६सेसुफा४१०सतर१२तक

परिक्रातां एहगलहै कि अपणे गुरूके मतविच गुरु ग्रंथसा-हिबजी देदुआले लांवां (फेरे) लैनदा नाकोई खासहुकम हीहै अते नकोई साखहै। मिथमेंता हुकम होणाचाहीदाहै। तेजरूर हुकम नहींतां कोई साख होणी चाहीए। गुरुसाहि-बादे खानदान विच कोई इस रीति नाल विवाह होयाहोवे अथवा खालसा पंथदे विच विचार वानाने एहरीति वरती होवे। सो एह दोवें गलां नहीं अतं सारे हिन्द देसदे लोकां हिन्दी आंविच जो अग्नी दे दुआले लांवां लैनदीरीति है इसदेबरूध गुरुग्रंथ साहिबजीदे दुआले लांवां (फेरे) लैनदी कोई जुगतीभी नहीं है। एह रसम निरंकारीआं-देफिरकेदी रीति है। जो पाली सालदे लगभगहोए होनगे भाई दिआलजी जो निरंकारी आंदे मूल होए हैन जिसफ-रके अकसर खालसा पंथदे लोक इनानू ग्याल दासीआं दे नामपर पुकार देहैंन। इनादे मन घड़त कलपत कीतीहोई एहरीतिहैं जिसपर कोई हुकम साख जुगती प्रमाण नहींहै॥

(२) उक्त पोथी खालसा सुधारकी अठमीं संची सुफे ४४९ सतर ६ से १० तक॥ हेठान होके॥ एह की

तुसां वकत कढ सुणाया कि गुरू ग्रंथ साहिब जी दे दुआले भकरमां करन नाल पती पतनी दा साक नहीं पैदा होंदा भैण भाई दा साकजुड़दा है।

(१) उक्त पांथी। खालसा सुधार तरुदी अठवींसन्धी। सुफे ४४८ सतर ११ से सुफे ४४९ सतर १ से १४ तक०

तातपर्य इह कि गुरुग्रंथ साहिबजीदेदुआले भकरमा करन नाल किसीनवे साकदा गंढ नहीं गंढआजादा। तेजेकर कोई साक जुड़ना समझजा भी जाइतां पती अते पतनीदा साक नहीं जुड़ सकदा भैण भरादा साकहो सकदा है। कारण इह कि गुरू ग्रंथ साहिब जीदी भकरमा करनी इक आम रसम है। भैण भाई मां पुत्र पिता पुत्री भी मिल के करदे हैन। जेकर इस रसम नाल कोई रिश्ता साकदारी गंढन गंढना समझजा जाएतां ओह रिस्ते गंढे जाणे सिद्ध होंदेहैन जो धर्म्म देरिस्ते दे नाम पर सदे जांदेहैन जांकुरु धर्म्म दा पुत्र धर्म दे मात पिता धर्म्म दे भरा (गुरभाई) धर्म्म दे भैण भाई। एह कदी नहीं होया सुणिया अते नाहो सकदा है कि जिकर धर्म्म दे पिता माता पुत्र भाई भैण दे रिस्ते कायम होए कहे मंनजादेहैन एहभी

मांनिआ जांदाहेंगे कि अपकी अपके ही धर्म स्त्री है अथवा अपका धर्म पती है । सो इस कई स्त्री पुरुष दा सजोग जुड़ना जो है एह निराला संजोगहै इस संजोग विच संतान उतपती करनी अते काम चेष्टा भी सामल है सो एह संजोग आम वसरीती नाल नहीं हो सकदा जो नित भैण भाई मां पुत्र पिता पुत्री भी वरत दे होंन ॥

(४) उक्त पोथी खालसा सुधार तरूदी अठवीं संची सुफे ४५० सतर २८से १९ तक ॥ लावां गुर वाणी है हर वकत पाठ होसकदा है कोई गुरू ग्रंथ साहिब परही पाठ कर दा होवे । अथवा रागी पड़दे होंन अथवा कोई होर उस वेल पास उचारण करदा होवे अजहे समें कोई ग्रंथ साहिब प्रकरमा भैण भरा अथवा मां पुत्र अथवा पिता पुत्री रलके करदे होंन तांउना दाकीहाल संमझना चाहिए॥ अते अर दासाभी ऐसाही नाजाइजहै क्यों कि कर्पतां ओहकी नाजाइ भैणभए मांपुत्र पितापुत्रीदे वरतण विचऔण वाला होवे अरगुर भाई आदी रीतिदा होवेतां उसरीतिपर अरदासापती पतनी दे संजोगदा कदीभी जाइज नहीं होसकदा ॥

नोट॥ इसपर मैं अपनाआशय जाहिर नहीं करता पढ़ने वालेखुद विचारकरें॥

और स्त्री पुरुष को खंडेका अमृत [पाहुल] छकाकर ग्रंथ साहिब जी से विवाहकर लेते हुए असली गुर मरयाद बतलाते हैं यह आयोज्ञ बहुत पुरुषों की रायमें है और नवीन सिंहों के ज्ञानी दित्त सिंह लहौर से भगवान सिंह ज्ञानी पटआला वाले की बहुत बैहसहुई॥ भगवान सिंहका येह प्रबल पक्षथा जो अमृत छकता है वोह गुरू गोबिंद सिंहजी का और साहिब देईका पुत्र सोढ वंस जन्म पटना वासी अनंद पुर बन जाताहै॥ जबस्त्री अमृत [पाहुल] छकेगी तो पुरुषोंकी तरहः स्त्री भी गुरू गोबिंद सिंहजी और साहिब देईकी पुत्री सोढवंस जन्म पटना वासी अनदपुरकी बन जाएगी॥

विचार कर देखो पुरुषभी गुरू दसमजी और साहिब देईका पुत्र और स्त्री भी गुरू दसम और साहिब देईकी पुत्री दोनोंका जन्म पटना वासी अनंद पुरके और सोढ वंस दोनोंका है॥ नवीन खालसाजी क्या स्त्री पुरुषों का

भेण भाई से बगैर कोई और रिस्ताहो सक्ता है धन्य आपकी गुर मरयादा ॥

पित्रो सनातन हिन्दू रीति जो असली गुर मरयादाहै उसके अनुसार बिवाह करो ॥ नहीं पापी होजाओगे ॥ उक्त पापके बचने लिये गुरू साहिब जी उपदेश कर गए हैं॥ दसम ग्रंथ साहिब में ॥ चौपाई ॥ अबमैं महा सुद्ध मति करकै । कहों कथा चित्त लाए बिचरकै॥ चौबिसमों कलकी अवतारा । ताकर कहों प्रसंग सुधारा ॥ १ ॥ भाग क्रित होत जब धरणी । पाप ग्रस्त कछु जातन बरणी ॥ भांतभात होत उत पाता । पुत्रहि सेज सोवत कैमाता ॥ २ ॥ सुता पिता तन रमत निसंगा । भगनी भरत भ्रात कह अंगा ॥ भ्रात बैहन तन करत बिहारा । स्त्री तजी सकल संसारा ॥ ३ ॥ संकर बर्ण प्रजा सभहोई । एक गियातको रहा न कोई । अती रुपभ चार फसी बरनारी । धर्म्म रीत की प्रीत बिसारी ॥४॥ घर घर झूठ अम्यास्या भई साच कला ससिकी दुरगई ॥ ५ ॥ इत्यादि इस गुरू जीके उपदेशके उलट करने वालोंको ॥ लौकिक शिक्षाभी याद मिलतीहै ।

देखो गुरमुखी का खालसा इखबार लहौर नंबर ३६ जिलद ११ पोहादिन २९ संमत १९६० त्रि० ८ जनवरी सन १९०४ ई० में येह लेख छपा है॥ मुकाना नागीये जो राह पैजाए।

मासक पत्र खालसा सेवक अमृतसर के अडीटर जीवन सिंहजी का विवाहथा जो नवीन सिंह सभाकी गुर मरयादा से कराना चाहताथा॥ जिवन सिंहके ससुर भाई ठाकुर सिंहजीने मए ब्याहदड (नौसा) के बराती वापिस मोडदिये॥ अपने २ साहुंह लेकर ब्याह दड और बराती अपने२ घर चले आए। खालसा जीके मुखीआ ब्याहदड साहिब जीवन सिंहजी घर आकर मुआफीनामा लिखते हैं॥ जिस मुआफी नामे की असल नकल उक्त इखबार में ऐसे छपी है॥

नकल मुआफीनामा॥

निखिदमत जुनाब किबलह गाही साहिब भाई ठाकुर सिंह साहिब बाद फतहः श्री वाहे गुरूजी के अरज खिदमत सरीफ में करताहुं। वह कि बरोज शुकरवार वकतदो

बजे रातके वर वकत शादी के। चंद अमूर नाशइस्ता जो मरदमा हमराही मेरे सिंह सभाके आएथे काबल मुआफी हैं। क्योंकि इस खात्र मैं इकरार करताहुं जो कुछ रसम रशुम कदीमाना वा बजूरगाना त्रीकामें हैं वह ममुजब मनशा आपके मनजूर करूगा। और आपकी अहलीआ से भी सचे दिलसे मुआफी मागताहुं। लेकिन येह जरूरी है कि बात लांमां वरी वगरा की तमाम रसम रसूमात आज रातको होजानी चाहीयं ॥

बंदा जिवन सिंह ॥ मवरखा ११ दसंवर सन १९०३ ईसवी ॥ दसखत अंग्रजी

मित्रो असी दुरदसा होतेहुए भी न समझें तो श्रीगुरु नानक देवजी का वाक जो आदग्रंथ साहिब जी में पापीओं के लिये कहाथा उसको नवीन सिंह पुराकर रहेहैं॥

काजीआं बामण की गलथक
अगद पड़े शैतान वेलाको ॥
और पाप बुरा पापी को प्यारा ॥

॥ इति ४ अध्याये ॥

अध्याये ५ ॥

गुरुसाहिबों की जोतीजोत समावान (मृत्युपर) श्राद्धादि हिन्दू रीति से हुए ।

(१) श्रीगुरु नानक देवजी शरीर त्याग छोडने चोणी १ आई मांहां (उडदों) की दाल विचहथ लिबडे होएसी ॥ श्रीगुरु नानक देवजी ने पुछिआ चोणी ये क्या है चोणी ने हाथ जोड बेनती कर कहा महता २ जीके श्राद्धकी तिथि है श्रीगुरु नानक देवजी ने कहा भला चोणीयें बाबे कालू का श्राद्धकर अष्टमी नौमी दो दिन पिछे समावांगे ।

श्री गुरु नानक देवजी की जन्म साखी बडी जो गुरु अंगदजीने भाई बालेकी जबानी लखवाई । जो मतबा मुस्तफाई लहौर संवत् १९४७ वि० छपी के सुफे ३९९ से सुफे ४०० तक साखी (८९)

(टिप्पणी) (१) गुरुनानकजी धर्म्म पत्नीके पिताका गोत्र करके असलसे नामचोणी पडगया था [२] गुरु १ का पिता पटवारी होने से महताजी कहतेथे ॥

(नोट) उक्त इतीहाससे साफ प्रगट है श्री गुरु नानक देवजी मृतक श्राद्ध कर्मको श्रेष्ट (धर्म) मानते थे जो पिता कालूजी के श्राद्ध की खातर दो दिन अपनी करामात से जिवत रहे ॥ और इसीप्रकार श्री गुरू नानक देवजीका मोतबर इतीहास नानक प्रकाश मे भी ऐसेही लिखा है

चोपाई॥गई सुलखणी ढिग सुधसोउ । वचन मानीआ पुत्रन दोऊ ॥ निकसे लगे समावन साई । थाइालपाए कुशा विछावाई ॥

नानक प्रकाश उत्रार्ध अध्याय ५४ कवताअक ८१

सुनकर दीनभई इहवानी । कता वातते जिउकुपलानी ॥ हाथ बंदहुए निमर विशाला । बोली बचन सुनो प्रभग्याला । कालूकेहै श्राद्धतुहि ताता । जउ भावेहि तिउकर सुखदाता ॥ भलो बातजे करहु श्राद्धू । बहुर समावहु बाधा बाधू ॥

उक्त पता कवता आक ८७—८९ ॥ चौपाई ॥

अष्टादश प्रकाशिओ भाना । भोजनभए त्यार बिधनाना ॥ धर्म्म सालते उठ गुरराना । गए सुलखणी केर अवासा॥ विप्रनो लगे करावन श्राद्धू । जिह मध्य राजहि धर्म्म अगाधू॥ प्राप्त मुक्त लेजे नाम । ताहि श्राद्ध कियाकर वे काम ॥

हुती श्राद्धकी विध जो सारी । भली प्रकार कीनअघहारी॥
चौका ठान सुंद्र स्थाना । सर्व बोलके दिजन बखाना ॥
ठौर ठौर नर भेज बुलाए । सुन आपस सभही चलआए॥

उक्त पता अध्याये ५५ कवता अंक ५ से ८ तक ॥

[२] श्रीगुरु अमरदास जीकी जोतीजोत समावन [मृत्यु] समय मोहन मोहरी जीने पूछा के आपकी के पश्चात कुल क अनुसार क्रिया कर्म किया जावे कि नहीं ॥

सुनत मोहरी कहिबच ऐसे । कृपाकर्म की आयुस कैसे ॥ निजकुल की मारयाद जुअहई । कराहि कि नहीं आपाजिम कहई ॥

(सूर्य प्रकाश रास १ अंस ६८ कविता अंक २६)

श्रीगुरु अमरदासजी पुत्रोंको उत्तर देते हुए हुक्म करतेहैं मेरेअस्त [फूल] हरिसर (श्रीगंगा) जी में प्रवाह कर देने और पिंडदान अवश्यमेव करना ॥

जग मर्याद रखीजे चाही आहि ॥ सुरसर १ अस्त पिंड २ का दीजे । तुम बडओं की मरयाद रखीजे ॥

(टिप्पणी १) श्रीगंगाजी में मृतकशरीरके अस्त । (२) मृतकनमीत पिंडदान ।

[सूर्य प्रकाश रास १ अंस ६८ कविता अंक २१ और २८]

श्री गुरु अमरदासजीने गृहस्थ और व्यावहारिक मर्यादा की शिक्षाकर यह आज्ञाकी ॥ इम कहिसतगुरु घरलिप वाइस ॥ चंदन आदिक सुगंध छिरकाइस ॥ बरनबरन फूलनकी माला ॥ कुशाआसन पर पौढ घाला ॥

(सूर्यप्रकाश रास १ अंस० ६८ कविता अंक ३५]

श्री गुरु अमरदासजीकी लोथ [मृतक शरीर] को बड ठाठवाठ से विमान में लेजाकर व्यासानदी के किनारे दाह [भस्म] कर पश्चात् हिन्दुओं की तरह कर्मकांड किया ॥ करी कृपाल क्रया तिसकाल ॥ उठे मोहरी के सभनाल ॥ नीर विपासा कीन स्नान। पित्त को करियो तजांजली१ दान॥ (सूर्यप्रकाश रास १ अंस ६८ कविता अंक ४२)

(नोट) उक्त इतिहाससे प्रगटहै कि श्रीगुरु अमरदासजी का जोतीजोत समावन [मृतक] श्राद्ध हिन्दू रीति से हुआ पिंडदान कपालक्रिया तिलांजलि आदिक ॥

(टिप्पणी (१) मृत्यु प्राणी के निमित्त तिल जल देना ।

[१] श्रीगुरु रामदास जीकी जोतीजोत समावन [मृत्यु पर] श्राद्धादि हिन्दू रीति से श्रीगुरु अर्जुन साहिब जी ने किया ॥

रच्यो कुशासन थित हैके । पौढे मुखको छादन केके ॥
ज्यों गैंळफूल माल को डारें । त्यों तनत्याग बैकुण्ठपधारे ॥
जब तिळ चंदन घृत अगरबहु आदि । सब मिलकर ताहि चिखा सुधारी ॥ सतगुरु को शरीर विच धरके । श्रीअरजन लै अगनी हाथ ॥ लाए नरै रोदनकेसाथ ॥ इत्यादि ॥
श्रीअरजन मनमाहिं परवीन । उठजो कपालक्रिया तबकीन ॥
गुरु शरीर नीके ससकारा । हर बिपासा रुचिर किनारा ॥
श्री अरजन को करे अगारी । आए स्नान निरमलवारी ॥
वृद्धकेसंग तलांजली[१] दीने । पितको नाम सिमर विधकीने ॥
[सूर्यप्रकाश रास २ कविता अंक ११-२१-३५-४१]
तिसंत चौथे दिन मिलसारे । गमने जाहि सतगुरु ससकारे ॥ तिस थल भस्म[२] अस्तको हेरे । श्रीअरजन

---

(१) मृतकनमित्त तिल जल दान (टिप्पणी) २) राख ।

लोचनजलगेरे ॥ पुन मिलगुरुफूल१ सब वीनं। सर्व क्रिया कर अच्छी भात ॥ आए उर कहिजस अब दात।

[सूर्यप्रकाश रास २ अंश २५ कविता अंक ६--७]

[नोट] उक्त इतिहास से प्रगटहै कि श्रीगुरु अरजनदेव जीने गुरु रामदासजी के जोतीजोत समावन (मृत्यु) पश्चात् हिन्दूरीतिसे श्राद्धादि किया।

(४) श्री गुरु रामदास जी के पुत्र पृथिआ श्री गुरु अरजन देवजी का ज्येष्ठ भ्राताकी जोतीजोत समावन (मृत्यु) पर उसके पुत्र मेहरवान ने हिन्दू रीतिसे श्राद्धादि क्रिया और गरुडपुराणकी कथासुनी ॥

मेहरवान बहु रोय मृतक२ क्रिया कराइ। गरुड३ पठायो दरवदे सुनत समुदाई। तिनकी संगत आई करपुन पाग बधाई ॥ [सूर्यप्रकाश रास ४ अंश २६ कविता अंक ४२

उक्त इतिहाससे प्रगटहै कि संतानोंकी जोतीजोत समावन

(१) अस्थि (२) श्राद्ध (३) गरुडपुराण जिस्से गुरुमत.वलम्बी अवसंकुचित होतेहैं ॥

(मृत्यु) पर हिन्दू रीति और गरुड पुराण की गाथा हमेशः हुआ करती है ।

(५) श्री गुरुहरगोविन्द जीकी जोनीजोत समावन (मृत्यु) पर हिन्दूरीतिसे श्राद्धादि हुआ ॥ निकट थान सिख जाए उतारे । सिखचंदनकी ऊचसुधारं ॥ जव तिलघृत आने समुदाय । काष्टके अंवर लगाए ॥ सूर्य मल्लुकर कांवू धार । कूक मारिकर दीयो लगाइ ॥ बहुर कपाल कृया तिह धारी ।

(सूर्य प्रकाश राम ८ अंस५८कविता अंक २०से२१)

जे सिख मुखी सभनसमझावै । काहि वहु भांतन शोक मिटावै॥ क्रिया१रीतसूर्य मल्लजारी । करताभिआ वृद्ध यथा उचारी ॥ पुस१२चनावनआदिकजोए। भोजन आनेक प्रकार कराए॥ कईहजार को त्रिप ताए । सति गुरु हेत दानवहु किने ॥ सिहजा३वस्त्रशस्त्रकोदिने । वहु मोलेगन दिये तुरंग ॥ अकार सुंद्र सर्वंग । यथा जोग सभही करवाए ॥ निज निज सदन गए समुदाए ।

(टिप्पणी) (१) हिन्दू रीति (२) अस्त (३) मिज्जा आदिक ॥

(सूर्यप्रकाश राम ८ अंस ५९ कवितां अंक १६ से १९)

[नोट] उक्त इतिहास से प्रगटहै श्रीगुरु हरगोविंद जी की जोतीजोत समावन [मृत्यु] पर हिन्दू रीतिसे श्राद्धादि हुए।

६ श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी के पास श्रीगुरु तेगबहादुर जीका शीश हिन्दू धर्म्म की रक्षाके लिये दिल्ली चानणी चौक में दिया हुआ [जिसकी वावत श्रीगुरु गोविंदसिंह जी दसम ग्रन्थ साहिब विचित्र नाटक ग्रन्थ अध्याय ५ कविता अंक११ में लिखतहैं] तिलक जंजू राखा प्रभु ताका। किनों वडो कळू महिसाका॥ साधन हेत इती जिन करी। सिस दिया परसीन उचरी। ठिकर फार दलीप सिर इत्यादि॥

श्री अनंदपुर आनेपर श्रीगुरु गोविन्द सिंहजीने हिंदू रीतिसे मृतकक्रिया की यदपि था व्याकुल दिल सभका। तौभी रच्यो विवान अजबका॥ फूल खिले मन बहुतो वोये। करितन रुदन तबै बहु होये॥ सीस चिखा चंदन ससकारा। किनों पिरतु किरतु पुनसारा। लौकिक

वैदिक १ जेवक रीती। कुल अनुसार करी सहप्रीती।

[पंथ प्रकाश संवत १९४६ वि० मुस्तफाई प्रेस लहौर में छपा पूर्वार्द्ध सुफै ८५८ सतर १९ से २१ तक कथागुरु ९ विश्राम ४८ कविता अंक)

(७) देखो नवीन सिंहों (सिंहसभा) के जोर सोर में बनी पुस्तक "टिका श्रीजापजी,, जो श्रीठाकुर निहाल सिंहजी कृत जिसको सरदार मतासिंह ठकेदार आहू वालीआ रावल पिंडी निवासी जी ने संवत् १९५८ वि० ऍंगलो संस्कृत प्रेस लहौर में छपवाकर धर्मार्थ वांटी जो ६ इंच चौंडी ७ इंच लंबी जिसके ११३४ पृष्ठ गुरमुखी की पुस्तक है जिसकी भूमिका में दशमग्रन्थ साहिबजी के ग्रंथ वनण का समय लिखा है।

श्रीगुरु तेग बहादुरजी की जोतीजोत समावन (स्वैहिंदू धर्म्म रक्षार्थ दिल्ली सीस देन के पश्चात् जापजी की रचना हुई) जिस समय श्रीगुरुतेगबहादुरजी का सीस (सिर) आनंदपुर साहिब में आया उस समय गुरु गोविंदसिंह

(१) हिन्दू रीति। गुरु तेगबहादुरजीका श्राद्धगुरु १० नै किया॥

साहिब जी ने हिन्दू रीति अनुसार क्रियाकर्म की ॥ यथा देखो उक्त टिका श्री जापजी पृष्ट ४१ पंक्ती ५से१२तक॥
प्रथम गुलाबसनानकराई । पुन गंगा जलणो अनवाई ॥
दिवस सात मे फुल्लन पाई । बैठेहुते कथा सुरराई ॥
सभाविल हरन चर्म मोपाई । विष्णुपादि प्रभ दिये पठाई ॥
देवीदास पुन गरड पुराना । दिन तरहि मा पूरन ठाना ॥
करीक्रिया सुभधर्म सानि पुनःब्रह्मभोज कियगाग सुदछन॥

(नोट) पित्रा उक्त पुस्तक रचता और धर्म्मार्थ बांटना दोनो ही सिंह खालसा है " आद् सो जो सिर चडवाले " इससे बडकर खालसा धर्म्म में मृतक श्राद्धका कैसे सबूत होसकेगा इससे नवीन खालसा को शर्म्म होनी चाहिये। श्रीगुरूआदग्रंथ साहिब जी से मृतक श्राद्ध मंडनम अंते सतिगुर बोलिया मैं पिछे कीरतन करि अहु निरबाणजीउ केशो गोपाल पण्डित सदि अहु १ हरिहरि कथापढेह पुराण २ जीउ। हरि कथा पढीऐ हरिनाम सुणी

[टिपणी] (१) श्री भाई गुरदासजी सदिअहुका अर्थ बुलानाही करते हैं यथा ॥ राजेश्वर सदिअहु मंगस्व माजो तुधभावै ॥ वार १० गौड़ी ३ और ग्रंथ साहिबजी का कोश तारासिंहजी कृतमे सदिअहका अर्थ बुलाना ही किया है । [२] मृत्यु समेका गरुड़पुराणही है ।

अंते वेत्राण १ हरि रंग गुरभावए।पिंडपत्तल किरिआ-दीवा फूँल २ हरि सर पावाये ॥ हरि भाइआ सतिगुर बोलिआ हरि मिलआ पुरुष सुजाण जीउ ॥ रामदास ३ सोढी तिलक दिआ गुरु शब्द सच निसा एण जिउ ॥
(श्रीगुरु आदग्रन्थ साहिब-रागरामकलीवाणी सदकीपौडी५)

(भावार्थ) अंते सतिगुरु बोलिआ (श्री गुरु अमर दासजी ज्योतीजोतसमावन (मृत्यु) समें हुक्म (वसीहत) करने लगे मैं पिछे किरतन करिअहु निरबाण जीउ (मेरी मृत्यु के पश्चात् ईश्वर भजन करना) कमोगोपाल पण्डित सदिअहु (केशोगोपाल संज्ञक पाठन ब्राह्मणको बुलाना) कथा पडह पुराण जीउ [जो गरुड पुराण की कथा को श्रवण करावे] हरि कथा पढीये हरि नाम सुणीये [जब हरि कथा पडी और सुणी जायगी तो श्रवण मनन। निधि ध्यासन। सुनना मानना और अमलदरामद करना] अवश्यमेव होगा ॥ वेबाण हरिरंगगुरु भावीये ॥

[१] मरघटस्थान [२] अस्नश्रीगंगाजी में परवाहने [३] गुरु ३ जीने अपने जमाईको गुरुयाईदी ॥

मरघटों में मृतक [शव] शरीर गुरु का बताया हरिभजन करते हुए लेजाना । पिण्ड पत्तल क्रिया दीवा [अन्नादक के पिण्ड और पत्र पुष्प सामग्री से अंतेष्टिकर्म दीपक आदिक से सर्वत्र विधि] फूल हरिसरपावीयें [अस्त] [हाड] श्री गङ्गाजीं में परवाहदन] हरिभाइआ सतिगुरु बोलिआ] [श्रीगुरु अमरदासजी कहतेहैं कि मैं ईश्वर की आज्ञा अनुसार बोलता हूं] हरि मिलिआ पुरुष सुजान जांउ ॥ ईश्वर रूप मिला पुरुष श्रेष्ठ ॥ रामदास सोढी तिलक दिया गुरु शब्द सच निसाणजीउ ॥ रामदास सोढी को गुरुयाई दी वोही शब्द साचा कथन करनेवाला निसान (झंडे) की तरह बुलन्द होगा ॥

नवीन सिंह की शंका ।

गुरुके सिख हिन्दू धर्मावलंबीका समाधान ।

[प्रश्न] केशो गोपाल नाम ईश्वर का है आदिअहु अर्थात् शीघ्र उच्चारण करना ।

(उत्तर) मित्रों केशो गोपाल ब्राह्मण गोयंदवाल के निवासी श्रीगुरु अमरदासजी के मंडल धारी अर्थात् पांधेथे

जो गुरुदरबार (सत्सगत)मेंनित्यप्रति वेद पुराणोंकी कथा कियाकरतेथ जिनकी संतानके ब्राह्मण श्रीगुरु अमरदासजी की नगरी में मौजूद हैं और सिक्खोंकी प्रमाणीक पुस्तक सूर्य प्रकाश बावली साहिब के प्रसंग में केशो गोपाल कथा करने वाला लिखाहै और पन्थ प्रकाश में साफ लिखा है कि पंडित केशो गोपाल श्रीगुरु अमरदास जी के कथा किया करता था । सुनै कथा दिन ढरै त्रिपालू । पंडित इक केसो गोपालू ॥ निगमागम पौरानन केरी । कथा सुनावे नित प्रति टेरी ॥

(पन्थ प्रकाश सम्वत् १९४६ वि० मतबै आफताब पञ्जाब लहौर में छपे के पूर्वार्ध सुफे १८१ सतर १ से ७ कथा गुरु ३ विश्राम १५ कविता अंक ९)

गुरु गिरार्थ कोस भाग१ (ग्रन्थ साहिब जीकी लुकात) जो श्रीमान पं० तारासिंह जी कृत जिसको श्री महाराजा पटेआला नें सं० १९५२ वि० गुरुमुखी अक्षरों में छपवाकर धर्मार्थ वांटे के सुफे ४५८ कालम २ सतर १५ केसोगोपाल शब्द का अर्थ श्रीगुरु अमरदासजीकी सभामेंकथा

करनेवाला ब्राह्मण पण्डित किया है उनकी बंसावली ये है ॥

केशोगोपालका वाल्मीक। वालमीक का नथमल। नथमल का लखनराम। लखनरामके चारबेटे॥ ताराचंद, नरोत्तम, लछमण, ताराका जेठ, जेठका दुर्गादत्त। दुर्गादत्तका सैहजू। सैहजूका चंद। चंदका जाध और ठाकुर। ठाकुरके देवीदत्त गोविंद। दुलोराय।

ठाकुर के प्रथम बेटे देवीदत्त के छजूराम। छजूराम के सोमाराम। बृंदावन। नरंजनदास। लभूराम॥

ठाकुरके दुतिय बेटे गोविंदके मायाधारी और श्री कृष्ण मायाधारीका सालग्राम ठाकुरके त्रीतीआ बेटे दुलोराम का नथूराम। नथूरामका ब्रह्मानंद।

(नोट) मित्रो यह केशोगोपालकी तरमी पुस्तकं ब्राह्मण ब्रह्मानंद और सालग्राम दोनोंही श्रीगुरू अमरदास जीका ख्याहश्राद्ध जो (भादोंकीपूरनमासी)को गोयंदवाल में यज्ञ के नाम से मेला होताहै उसपर करातेहैं एक रूप्या दक्षणा और छे मोसो (ब्राह्मणका भोजन) मिलताहै केशो गोपाल का अर्थ विपीत करन वाले नवीन सिहों तअसबकी पट्टी उतारकर आंखखोलो॥

और जो सादिअहु पाठ से शीघ्र अर्थ करतेहैं वोह धोखा देते हैं क्यों कि जैसे पंजाबी देश भाषा उक्त पौडी में वाक्यहैं ॥ बोळिआ ॥ मैं पीछे ॥ करिअहु ॥ कथापढै ॥ सुणीअै ॥ पावीये ॥ भाया ॥ मिलिअ ॥ वैसेही सादिअहु का अर्थ बुलानाहै जैसे श्रीभाई गुरदासजीनें वार १० पौडी १ में सादिअहुका तातपर्य बुळानाही सिद्ध होता है ॥ यथा ॥ " राजे अंद्र सादिअहु मंगस्वामी जो तुधभावै " और उक्त श्रीगुरुग्रन्थ साहिबजी के कोस सुफं १९५ कालम २ सतर १९ में सादिअहु का अर्थ बुळायो स्पष्ट किया है ।

[प्रश्न] पुराण शब्द से अकाल पुरुष के स्मरण मात्र नामकी कथा समझनी ॥ गरुग पुराण पुस्तककी नहीं ॥

[उत्तर] प्यारे भाईयो इसमें तीन संदेह और असळ पाठ हरिहरि कथा पढै पुरानजीउ है ॥

(१) हरिनाम शिवका है जो मृत्यु [प्रलय] करे ॥ सो हरि हरि कथा [मृतकों की कथा] वोहहैं गरुडपुराण में ॥ इससेभी गरुडपुराण ही सिद्ध होता है ॥

(२) हरि नाम विष्णुका भी है यथा-[हज्ज हमारी

गोमती तीर। जहां वसे पीतंबर पीर ॥ वाहु वाहु कथा खूब गावता है। हरि का नाम मेरेमन भावता है॥ नारद सारद करह खवासी। पास वैठी बीबी कमलादासी ॥ आद ग्रंथ साहिब राग आसा कबीर जी शब्द १६ तुक १] हरि कथा विष्णु द्वितीय हरि उसकावाहन जो कालरूपी सर्प का हरने वाला सो कहिये गरुड ॥ कथा और पुराण पद स्पष्ट पढे हैं ॥ इससेभी गरुडपुराण ही सिद्ध होता है ॥

(३) हरि हरि कथा पढै पुराण जीउ। रहती प्रलयकाले सर्व जगत इति हरि ॥ जिस में प्रलयकाल (मृत्यु) के समाचार होन वोहपुराण क्या गरुडपुराण ॥ इससे भी गरुडपुराणहीसिद्धहोताहै ॥

[४] श्रीगुरु ग्रंथसाहिब जीका कोश श्रीमान् पं० तारा कृत भाग २ जो श्रीमहाराजा पटेआला ने संवत् १९५५ वि० में छपवाकर धर्मार्थ बांटे उसके सुफे २९७ कालम २ में पुराण पद के अर्थ १८ पुराणोंके नामही बतलाएहैं जिनके पिंजुमले गरुडपुराण भी है और श्रीगुरुअमरदासजी महाराज पुराण १८ को अच्छीतरह जानतेहुए श्रीमुख से कथनकरते हैं।

[१] चार बेद दश अष्ट पुराण [श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब राग श्रीकी वार महल्ला १ श्लोक ४ की पांडी]

[२] दस अठारा मै अपरं पराचिनो । [आद ग्रन्थसाहब राग श्री म० १ शब्द २६ तुक २]

[३] दस अठ लिखे होवे पास [आद ग्रन्थसाहब राग बसंत म० १ शब्द ३ तुक २]

सो पिश्रो गरुडपुराण कोही श्रीव्यास देवजी ने मृत्यु के लिये नियत कियाहुआ है जिनकी श्री मुख से गुरु अमर दास जी खुदस्तुति करते हैं ॥ यथा ॥ जाए पूछहु स्मृति शास्त्र व्यास शुक नारदबचन सभ श्रेष्ट (आद ग्रं० सा० राग रामकली की वार म० ३ श्लोक १० इत्यादि कारणों से स्पष्ट प्रतीत होताहै (हरि हरि कथा पढै पुराण जीउ) वाणी में गरुड पुराण की कथा का ही हुक्म ॥ श्रीगुरु अमरदासजी दगए हैं ॥

(प्रश्न) पिंड पत्तल किरिआ दीवा फुल हरि सरपा वीये ॥ इस वाक्य से क्या समझते हो ॥

(उत्तर) श्री गुरु अमरदासजी के पूर्वज श्रीगुरुनानक

देवजी उक्त आपके प्रश्न का उत्तररूप शब्दसे हिन्दू रीति के अनुसार श्राद्धकाविधान कथन करते हुए श्राद्धहीनों की निन्दा करते हैं ॥ यथा ॥ ओना पिंड पतलना क्रिया दीवा मोए किथा १ उपाहीं । दानहु ते असनानह वंजे २ भस ३ पई सिर खुथे ४ ॥ [आद ग्रंथसाहब राग माफ की वार महल्ला १ श्लोक २५]

जैसे श्रीगुरु नानक देवजी का वाक्य हिन्दू रीति मृतक श्राद्ध मंडन में है वैसाही वाक्य हिन्दू रीति मृतकश्राद्ध मंडनमें श्रीगुरु अमरदासजी ने कथन किया है ॥ क्योंकि " फुल हरि सर पावीये ,, का अर्थ कुछ बदल नहीं सक्ते हिन्दूओं की तरह श्रीगंगाजी में ही अस्त परवाहने पड़ेंगे अगर हरि सरका अर्थ श्रीअमृतसर करो तो उसमेंभी श्रीहर मंदिर के समीप सूर्य उदय की ओर श्रीगंगाजीकी नकल हरकीपौडी बनाई हुई है फिरभी श्रीगंगाजी रही यही अर्थ निकला मित्रो ? अंते सतगुर बोलिआ शब्द से कोस श्री

[टिप्पणी] (१) व्यर्थ समझ । (२) खाली । (३)—राख ॥ (४)-सिरके रोम उखेडने वाले ॥

गुरु ग्रंथसाहिब भाग १ पं० तारासिंह कृत जो सं० १९५२ वि० में महाराजा पटेआलाने छपवाकर धर्मार्थ बांटा उसके सुफे २९९ कालम २ में ॥ श्राद्ध शब्दके अर्थ में उक्तशब्दों द्वारा हिन्दू रीति अनुसार श्राद्ध सिद्ध किया है ॥

[प्रश्न] गुरु मत में मृतक को प्रेत कथन करना बुराहै ।

[उत्तर] गुरु मत धर्म ग्रन्थ [आद ग्रन्थ साहिब] मृतकों को प्रेतही कथन करताहै ।

[१] जिस दिन देह बनससी तित वेळे कहसन प्रेत [आद ग्रन्थ साहिब राग माझ बारामहा महल्ला ५]

[२] तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार [आ० ग्र० सा० राग देव गन्धारी म० ९]

[३] जब हंस तजी यह काया प्रेत प्रेतकर भागी (आ० ग्रं० सा० राग सोरठ म० ९]

(४) अंतकाल जो मंद्रासिमरैं ऐसी चिंता महि जेमरै प्रेत जोन वलि वलि उतरे ।

(आ० ग्रं० सा० राग गुजरी वाणी त्रिलोचनजी)

(प्रश्न) गुरु मतमें दूसरे किये कर्मों का फल दूसरे को

नहीं पहुंचसक्ता और ना कोई इसकी पुष्टिमें ग्रंथसाहिबका प्रमाण है ॥

(उत्तर) गुरुमत धर्म ग्रंथ (ग्रंथसाहिब) जी के प्रमाणों द्वारा दूसरे के किये कर्मोंका फल दूसरे को पहुंचसक्ता है ॥

(१) प्रल्हाद जनके इक्कीस कुल उधारे (श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब रागभैरों महल्ला ३ शब्द २० तुक ५)

(भावार्थ) जब उक्त गुरुके वाक्य अनुसार प्रल्हाद की भक्ति कर्म के फलसे इक्कीस मृतक कुलोंका उद्धार (फल-पहुचकर निस्तार) होजाएगा। तो मृतक श्राद्ध कर्म दूसरे के कियेका फल दूसरे को अवश्यमेव पहुंचेगा ॥

(२) मत्तमें पिछेकोई रोवसी सो मैं मूलनभाया। (श्री गुरु आद ग्रंथसाहिब राग रामकली वाणीसदपौड़ी ४)

(भावार्थ) उक्त वाक्यमें गुरुसाहिब दूसरों का रुदन (अशुभ कर्म) पहुंचना मानते हैं ॥ तो मृतक निमित्त श्राद्ध रूपी श्रेष्ठ कर्मका फल अवश्यमेव पहुंचेगा ॥

(३) दात पिआरी विसरे आदातारा। जाणेनाहीं मरणविचारा ॥ वस्तपराई कच उठिरोवै। कर्म धर्म संगलाई

खोवै ॥ श्रीगुरुआद ग्रंथसाहिब राग धनासरी महल्ला ५ शब्द २ तुक २) ॥

(भावार्थ) उक्त शब्दकी उत्थानिका [शब्द बनणका कारण] से प्रगट है श्रीगुरु अरजन देवजीने एक मृत्युपुरुष के संबंधी रुदन करने को उपदेश किया है कि रोनेसे तेरा कर्म धर्म (श्राद्धादि पिंडदान) निष्फल जाएगा ॥

[नतीजा] जब मृत्यु पुरुषको दूसरे पुरुषके रुदनसे कर्म धर्म (मृतक श्राद्धादि पिंडदान) का फल निष्फल जाएगा तो इससे स्पष्ट प्रगटहै कि मृत्यु पुरुष निमित्त प्रेमभाव श्रद्धा से किया श्राद्धका फल उक्त गुरुवाक्य अनुसार अवश्य-मेव पहुंचेगा ॥

संतां रामदास सरो वर नीका १ जो न्हावै सो कुल तरावै उद्धार होआ है जीका [श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब राग सोरठ महल्ला ५ शब्द १७ तुक १]

(भावार्थ) जब गुरुवाक्य अनुसार दूसरे पुरुष के तीर्थ स्नान कर्मके फलसे कुल (कुटंबके मृत्यु और जीवित

(टिप्पणी) (१) श्रेष्ठ ॥

पुरुषों) का उद्धार होजाएगा। तो दूसरे पुरुष के श्राद्ध रूपी कर्मका फल अवश्यमेव पहुंचेगा।

[५] हरका संतमरै हडंवै? सगली सैनतराई [श्री. गुरु आद ग्रंथसाहिब राग आसावाणी श्रीकबीरभगत श्री शब्द ३७ तुक १]

(भावार्थ) जब कबीरजी के ग्रंथसाहिब में वाक्य अनुसार हरका संतमरे हडंवै [भ्रष्ट भूमि] में मराहुआ सगलीसैन (सम्बन्धी) कोंतरा (सद्गति) करासकेगा॥ तो दूसरे के किये कर्म (श्राद्ध) आदिका फल अवश्यमेव पहुंचेगा॥ और मृत्यु के निमित्त श्राद्धका अंस तर्पणादि को श्री कबीरजी खुदमानते हैं॥

आपन देहि चुरूभारे पानी। तिहि निंदहि जिहिगंगाआनी॥

(श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब रागगौड़ी चेतीवाणी कबीरजी शब्द ४४ तुक २]

(६) जे मांहाक्का २ घरुमुहे। घरुमुहि पितरी देइ। अगेवस्तू सिञाणी ३ आपितरी चारकरेइ॥ वढीअहु हथ-

(१) भ्रष्टपृथवी। [२] गरीब। (३) पहचानी॥

दुकाल के मुसफी१ एहकरेइ ॥ नानक आगेसो मिलैजो खाटे घाले२ देइ ॥ श्रीगुरु आद ग्रथसाहिब राग आसाकी वार महल्ला १ श्लोक १७)

(भावार्थ) जोगरीबोंको तकलीफ देकर पितरों के अर्पण वस्तुदान करता है। वोह अधर्म की कमाई धर्म राजके आगे (सन्मुख) पहचानी जाएगी धर्मराज उसके पितरों को चोरीकी सजा में दाखल करेगा ॥ ऐसे दानका फल [दलाली] चाहने वाले के हाथ कटेंगे ॥

(नतीजा) उक्त शब्दसे दूसरे के निमित्त किये शुभ अशुभ कर्मोंका फल पहुंचना स्पष्ट है अर्थात् नेक कमाई के दानका फल पितरोंको पहुंचेगा और दान कर्ताको शुभ फल पहुंचाने वालाहोगा ॥ बद कमाई के दानका फल पितरों कोभी दुःख रूप और दानकर्ताकोभी दुःख दिलाने वालाहोगा ॥

[प्रश्न] हमतो श्रीगुरु गोविंदसिंहजी को मानते हैं उन्हों ने अपनी बानी में मृत्यु (प्रेत) आदिके कर्मोंके लिये कहीं नहीं हुक्म दिया ॥

(टिप्पणी) (१) मुन्सफी अर्थात् इनसाफ (२) दसनौहो की कमाई ॥

(उत्तर) मित्रो ? श्रीगुरू गोबिंद सिंहजीने वाजुबुल अरज साखी १५४ वासीआं वाले सिखोंके १० प्रश्न रहितोंके उत्तर में हिन्दू रीतिके अनुसार विवाह और मृतक श्राद्ध आदिका स्पष्ट हुकम दिया है ॥ और अकाल उसतात जापसाहिब में ॥ "नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधर्मे," [दसमग्रंथ साहिब जाप श्रीमुखपातसाही १० कबिता अंक ९४] [अर्थ] नमस्कार हो प्रेत और पितर देवतों को इनका मानना शुभ और धर्म है ॥

श्रीगुरू गोविंद सिंहजी महाराज दसम ग्रन्थ साहिब में घोर कलू जीवोंका लक्षण वर्णन करते हैं । कि कलयुगी पामर लोग पितर आदिक को नहीं मानेंगे ॥

"देव पितरन पीर १ को नहीं भूल पूजन जाहिंगे,"

॥ इति ५ अध्याये ॥

[टिप्पणी] [१] गुर पीर हममांता भरे जां मुरदार न खाए । आद ग्रंथसाहिब ॥ और सैहिफ श्रोही सैहथी थेई हमारे मीर ॥ दशम ग्रंथसाहिब और महाकाल को गुरके पहचाना मुरीद हूं उसी की वही पीर येरो ॥ ग्रंथ १० पातसाही २६६ पीरसे तातपर्य गुरूका है ॥

अध्याये ६ ॥

गुरुमत धर्मग्रन्थ तीर्थों के स्नानसे पाप दूर हो सद्गति मानते हैं ॥

[१] संतो रामदास औवर निका १ जो न्हावे सो कलमरावै उद्धार होआहै जीका [श्रीगुर आद ग्रन्थ साहिब राग सोरठ महल्ला ५ शब्द १७ तुक]

[२] रामदास औवर न्हाते, सभ उतारे पाप कमाते ॥ निरमल होए करे असनान (श्री आ० ग्रं० सा० राग सोरठ म० ५ श० ६५ तुक १)

(३) हरिहां २ नानक कस मल जाहि न्हाईऔ राम दास सर [आ० ग्रं० सा० फुनहे महल्ला ५ शब्द १]

[४] गुरु अमृतसर नावालिआ । साभिलाथे किल विख पंडु (आ० ग्रं० सा० राग सूहा म० ४ श० ३ तु०)

[टिप्पणी] [१] श्रेष्ट [२] पापों की गठड़ी ॥

[५] मैल गई मन निरमळ होआ अमृतसर तीर्थ न्हाए। [आ० ग्रं० सा० राग वडहस की वार म० १ श्लोक ४]

(६) अमृतसर गुरु सतवादी जिस न्हातें क्यों अहंस होआ [आ० ग्रं० सा० राग गुजरी म ०९ घ० २ तु० ४]

[७] इस्नान करे अमृतसर न्हावै सभ किल विख पाप दोख लहजावै (आ ० ग्र ० सा ० राग गौडी की वार म ० ४ श्लोक ११)

(८) हरिसर मळ न्हाए। निरमळ न्हाए॥ मैळगवाए। भए पवीत शरीरा (आ ० ग्रं ० सा० राग सूहीछंत म० ४ घ० १ तु ० २)

(९) कुरबाणी तिनागुर सिखा अंमृत्तसर न्हावंदे (श्री भाई गुरदासजीकी वार १२ पौडी २)

(समीक्षा) उक्त प्रमाणों द्वारा श्री अमृतसर तालाब के स्नानसे पाप दूर हो सदगति (मोक्ष) होना साबितहै तो मित्रो अमृतसर तीर्थसे श्रीगंगाजी आदिक तीर्थ हरेक गुणमें वढ़कर है॥ और श्रीगुरु ग्रंथसाहिबजी श्रीगंगाजी का महात्म्य कथन करताहैं॥

(१) गंगाजल गुरुगोविंद नाम जो सिमरे जिसकी गत होवे पवित्त बहुडिन जोन आप (आ० ग्रं० सा० राग भैरों म० ५ श० ८ तुक १

(२) गंगाका उदक १ करते की आगि २ (आ० ग्रं० सा० राग बसंत म० १ श० ३ तुक० १]

(३)श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज भगवान वामन अवतार का वर्णन करते हुए श्रीगंगाजीको आकाश मार्गसे पवित्र करण के लिये आई कथन करते हैं ॥

एक पाव पत्तारह ३ छुआ। दूसर पाव गगन ४ कौहुआ ॥ भिदिओ ५ अंड ब्रह्मंड अपारा। तहिते गिरी गंग की धारा [दसम ग्रंथ साहिब गुरु १० कृत अष्टम अवतार) ॥

(४) सारस्वती न्हात हैं पूर्व पाप उत्तारनको (दसम ग्रंथ साहिब गुरु १० कृतचंडी चरित्र अध्याय ३ कविता- अंक ६७]

[टिप्पणी) (१) जल। [२] यज्ञकी अग्नि पापोंकी दाहक ॥
(टिप्पणी) (३) पताल। (४) आकाश। (५) पमैश करकी॥

(५) तीर्थ स्मृति पुन्य दान कुछ लाहा । पिलै दिहाडी[१] आ० ग्रं० सा० राग बसंत हिंडोल अष्टपदी म० १ शब्द ८ तु० ८)

(६) मनकी मन माही रही न हर भजेओ । न तीर्थ सेवओ चोटीकाल.[२] गही [आ० ग्रं० सा० राग सोरठ म० ९ श० २ तु० १)

[७] तीर्थ तपादिया दिन दानजेको पावै तिलका[३] मान [आ० ग्रं० सा० जपजी पौडी २१]

[८] तीर्थ न्हावाजेतिसभावा विणभाणे की नाएकरी (आ० ग्रं० सा० जपजी पौडी ६]

[९] धंन धंन संजोग है अठसठ तीर्थ राज पिरागे [श्री भाई गुरदासजी की वार ६ पौडी १७)

[१०) ऊँख दरयाओ समुंद विच ॥ ऊँख तीर्थ गंगा (श्रीभाई गुरदासजी की वार ११ पौडी १०]

[११] तीर्थ न्हाते पाप जान पत्तित उधारण नाम धराया [उक्त वार २१ पौडी २)

---

(१) दिवस (२) बोदी (चोटी) पकड़ी [३] तिलबराबर ॥

श्रीगुरु नानक देवजीने हिन्दू विधिके अनुसार तीर्थ यात्रा की जो उनके वाक्य ग्रंथसाहिबजी से स्पष्ट प्रकटहै।

देवत्तआ दरशन कै त्ताई ॥ दुख भुख तीर्थ किये । खलडी १ खपरी २ लकडी ३ चपडी ४ सिखा ५ सूत्त ६ धोत्ती ७ किनी ॥ तूं साहिबहौं सागी ८ तेरा॥ भणवै नानक जात कैसा (श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब राग आसा महाल्ला १ शब्द १३)

श्रीगुरु नानक देवजी के तीर्थ यात्रा करने की भाई गुरदास जी शहादत देते हैं ॥ बाबा आया तीर्थे तीर्थ पुर्ब सभे फिर देखे (श्रीभाई गुरदासजी जी की बार १ पौडी २५)

श्रीगुरु नानक देवजी महाराज तीर्थोंका महात्म्यमानते हुए औरोंको उपदेश करते हैं ॥

[टिप्पणी) [१] मृगचर्मकी थैली अर्थात् बक्स । (२) खप्पर अर्थात पात्र । (३) लठ्का । (४) मृगछाला । (५) चोटी अर्थात् बोदी । [६] यज्ञोपवीत [७] हिन्दूधर्म्म जे तीर्थयात्रियों की सदृश उक्त चिन्ह धारण किये ॥ [८] कटी बाधनेकी हिन्दूओंकी धोती ५। गज ॥

सिर खोहाई १ पिअइ मल वाणी २ जुठा मंगि मंगि खाही ॥ फोल फुलिहत ३ मुंहलैण भडासा४ ॥ पाणी देख सगाहीं ५ भेडावागी सिर ६ खोहायन भरीअन हथ स्वाहीं॥माऊ पिऊकिरत७ गवायन खररोवन धाहीं । ओना पिंड पतलना क्रिया दिवासुए किथा उपाही ॥ अठिसठि तीर्थ देनन ढोई ८ ब्राह्मण अंनन खाहीं ॥ सदा कुचील९ रहन दिन रातीमथै टिके नाही ॥ झुठी १० पाए वहन नित मरणै दड़ दिवाणन ११ जाही ॥ लैकी कासे १२ हथी फुंमण १३ अगोपिछी १४ जाहीं । नाओह जोगी नओइ जंगम नाओई काजी मुल्लां ॥ दैया वगोए १५ फिरह बिगुते १६ फिटा १७ वत्तगल्लां ॥ जिआपार जिवाले सोई अवरन कोइ रखे दान हुते अस·

(टिप्पणी) [१] रोमउखाड़ने । [२] मैल'जल । [३] बिष्टा । [४] भ्रष्ट भाफ [५] डरना । [६] रोम उखाड़ना । [७] कर्म्म [८] जाणा । [९] अपवित्र अर्थात् भ्रष्ट । [१०] जैसे स्त्रीये रुदन लिये बैठती हैं (११] बड़ीसभा ॥

[टिप्पणी] [१२] काष्टका पात्र । [१३] चौरीसी । [१४] कतार से चलना । [१५] बिहुँणे । [१६] बेगते । [१७] मुरखताकी ॥

नानह वंजे १ भस २ पई सिर ३ खुथे॥पाणी।विचहु रतन उपंने ४ मेरकिआ ५ माधाणी॥ अठिसठि तीर्थ देवीथापे ६ पुर्वी ७ लगैवाणी॥ नाइ निवाजा नातैपूजा नान्हावन सदा सुजाणी। मुइयां जिवदियां गतहोवै जा सिरपाईऐ पाणी नानक सिरखुथे ८ सैतानी ९ एना गलांना १० भाणी ११ वुठै १२ होईयै होए विलावलु १३ जीआ जुगति १४ समाणी॥ वुठै १५ अंनु १६ कमादु १७ कपाहा १८ सभसै पड़दा होवै॥वुठैघाहु १९ चरहि नित सुरही २० साधन २१ दही विलोवै॥ तितघी होम जग सद पूजा पाई पै कारजु सोहै। गुरु २२ समुंद नदी २३ सभि सिखी न्हातै जितु वडिआई॥नानक जे सिर खुथे न्हावन नाही तासन २४ चट २५ सिर छाई २६॥

(१) खली। [२] राख। (३) रेमउखाड़ने। [४] चौदारत्न उत्पन्न किये। (५) सुमर पर्वत। (६) तीर्थ नियत किये हुए। (७) तीर्थ मे महातमकाल दानकरना। (८) रोमउखड़ने। (९) धूर्त। (१०) आचरण। (११) भावते। (१२) वर्षा। (१३) खुशी। (१४ बीच। (१५) वर्षा। (१६) अनाज। (१७) ईख। (१८) कपास। (१९) घास। (२०) गऊ। (२१) स्त्री। (२२) कल्यानके करनेवाला तीर्थों का गुरू। (२३) समुद्र से उपरत तीर्थ गुरू है। (२४) शातयानिश्वे। [२५] सिरे अर्थात् पावे। [२६] राख॥

श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब रागमाझकीवार महल्ला१ श्लोक२५

(भावार्थ और मतलब) सर्वत्र मत मतान्तरोंवाले बेहस करते हुए दूसरे के धर्म (मत) का खण्डनकर अपने धर्म (मत) का उपदेश किया करते हैं। वैसेही श्रीगुरु नानक देवजी ने जैन मत के ढुंडक पंथीओं से शास्त्रार्थ कर उनके अर्थ (मत) का खण्डनकर अपने धर्म (गुरमत) का उक्त शब्दसे उपदेश किया है । जिस से मृतक श्राद्ध और तीर्थों के स्नानका महात्म्य साफ सिद्धहोता है ॥

श्रीगुरु रामदास जीने अनेक तीर्थों में महात्म्य सेहित तीर्थयात्राकी । न्हावण पुर्व अभीच (श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब राग तुखारी छंत महल्ला ४ शब्द ४ तुक १)

हरि आप करते पुर्व किया। सतिगुर कुलखेत्र न्हावण आया ॥ (उक्त पता तुक १)

प्रथम आए कुल खेत्र (उक्त पता तुक ३)

दुतिआ जमन गए [उक्त पता तुक ४]

त्रितिआ आए शुरसरी [उक्त पता तुक ५]

(समीक्षा) उक्त गुरुकी तरहही श्रीगुरु अमरदासजी २१ वारगंगाजी स्नान किया जो इतिहास ग्रंथों से प्रगटहै॥

श्रीगुरु तेगबहदुरजी ने तीर्थ यात्रा की जिसके फलसे उनके पुत्र श्रीगुरु गोविंद सिंहजी महाराज उत्पन्न हुए ॥ देखो मोतबर जन्म साखी [व चीत्र नाटिक ग्रंथ] जिसके मानने से नवीन सिंह नहीं मुनकर होसक्के ॥

अथ कवी १ जन्म कथनं। मुरपित पुर्व क्रियस पयाना २ भांत भांत के तीर्थ न्हाना। जबही जात त्रिवेणी३ भए ॥ पुंनदान दिन करत बतए ॥ १ ॥ तही प्रकाश ४ हमारा भयो। पटना शैहर विखै भवलेओ ॥ [पातसाही १० गुरु ग्रंथसाहिब श्री व चित्र नाटिक ग्रंथ अध्याय ७ कविता अंक १ और २]

श्रीगुरुगोविंदसिंहजी महाराज अनेक तीर्थों की महात्म्य सहित यात्रा करते हुए प्रयागराजमें स्नानकर तीर्थ पुरोहित घनश्याम को अनेक प्रकार के दानादिये और जो हुक्म नामा श्रीगुरु तेगबहादरजी देगएथे उसी को स्वीकारकर उसके पिछे दसखत कर दिये ॥

[टिप्पणी] (१) गुरु गोविंदसिंहजी अपने आपको दसमग्रंथ साहिब जीमें कवी लिखते है। (२) देशाटन। (३) प्रयागराज। (४) उतपत्तिका कारण। उत्पन्नहुए ॥

॥ दोहरा ॥

सनें सने मग चलत ईम पूरत दासन आस ।
आए थिरे प्रयाग में न्हाए त्रिवेणी खास ॥
दान दियो बहु दिजनको उतरे संगत माहि ।
लिख्योपिख्यो गुरुनौमको घनश्यामादिजपाहि २
तहिं पुस्तपर दसम गुरु इम करते लिख दीन ।
जो गुरखावे मम लिख्यो सो प्रमाण हमकीन ॥

अबलौ नाणा हुकमसांहै उन विपन पास भेटा १ निज सिखते ॥ दे दरशन भरआस [नवीन सिंहोंकी प्रमाणीक पुस्तक पंथ प्रकाशजो सं० १९४६ वि० मतबै आफताब पंजाब लहौर छोके पूर्वार्द्ध सुफे ६०० सतर ५ से ११ कथा गुरु १० विश्राम ४८ कविता अंक १० से ११ तक]

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह दसमपातसाहजी ने अपने पश्चात् नियत किया हुआ गुरु (श्रीगुरु आदग्रंथ साहिब) तीर्थों

टिप्पणी। (१) नज़र ना ॥

का महात्म्य मानता है जो भ्रष्टकर्म करनेसे तीर्थों का फल निष्फल जाएगा ॥

(१) जे ओह अठि सठि तीर्थ न्हावै ॥ करै निन्द सभ बिर्था¹ जावै [आदग्रंथ साहिब राग गौड बाणी रवि-दास भगत शब्द २ तु० १)

[२] तीर्थ ब्रत अरु दान करु मनमें धरै गुमान नानक निहफल² जात हैं जिऊं कुचर³ स्नान [आ० ग्रं० सा० श्लोक महल्ले ९ का श्लोक अंक ४६]

[३] भांग⁴ माछली⁵ सुरापान⁶ जो जो प्राणीखाहि तीर्थ ब्रतनेम किये ते सभै रसातल⁷ जाहि ॥ [आ० ग्रं० सा० श्लोक श्रीकबीर भगतजी श्लोकअंक २३]

नवीन सिंहकी शंका हिन्दू धर्मावलम्बीका समाधान ॥

[प्रश्न] श्रीगुरु ग्रंथ साहिब जी तो तीर्थ स्नान को निषेध करता है ॥

[उत्तर] पित्रो जिन शब्दों से आप तीर्थ निषेध

---

(१) व्यर्थ । (२) निष्फल । (३) हस्ती । (४) सुखा यानी भांग । (५) मच्छी । (६) मदरा । (७) निष्फल ॥

समझतेहो अगर उनको विचारकर देखो तो विधि [महात्म्य] है ॥

न्हावण चले तीर्थी मनखोटे तन चोर ॥

इकभउ १ लथी न्हातीआ दो भउर २ चढीआ होर ॥

[भावार्थ] तीर्थ स्नान से पाप दूर होते हैं ॥ जो तीर्थों पर पाप करे वोह दुगना पापी होता है ॥ जैसे तीर्थों में पुण्यका फलभी विशेष होता है वैसे ही तीर्थों पर पापका ॥

नवीन खालसाजी पर प्रश्न ॥

नवीन खालसाजी गुरमत में जो तीर्थ माने जाते है ॥ पंजा साहिब हसना अबदाल में ॥ वावली साहिब गोयंद वालमें ॥ रामसर कौलसर ॥ बिबेक सर अमृत सर मे छेहरए कुआ इत्यादि फरहिस्त त्यार की जाए तो एक जिस्ता कागज़ खर्च होसक्ते हैं खालसाजी पेहले इनको दुनीआ परसे मिटा दिये फिर गुरू साहिबोंके माने हुए हिन्दूओंको तीर्थों की निन्दा करके पापके भागी बनना ॥ ॥ इति ६ अध्याये ॥

टिप्पणी (१) इकगुणउतरा । (२) तीर्थपर पापकरने से दुगनापापचहड़ा

अध्याये ७ ॥

श्री गुरु ग्रंथसाहिब जी से ब्राह्मणों की स्तुति रक्षा और दान देना ॥

(ब्राह्मणों की स्तुति)

ब्राह्मण गुरु है जगत् १ का भगतनका गुर नाह ।
अरिफ़ उरिझके पचमुआ चारो वेदों माहि ॥
[आद ग्रंथसाहिब श्लोक २३७ कबीर भगत]

सो पण्डित जो मन पर २ बोधे ॥ राम नाम आतम महि सोधे ॥ वेद पुराण स्मृति बूझै मूल ॥ सुखम महि जाणे अस्थूल ॥ चहुबर्ना को दे उपदेश । नानक उसपंडित को सदा अदेश ३ ॥ [आद ग्रंथसाहिब राग गौडी महला ५ सुखमनी अष्टपदी ९ तुक ४]

[भावार्थ] उक्त कर्मों में सम्पन्न ब्राह्मण [पण्डित] को गुरुसाहिब आदेश [नमस्कार] करने के लिये उप-

---

(१) ब्राह्मण को जगतका गुरू माना है क्या भगत जगतसे बाहररैहते हैं इसकारण भगतों का भी गुरू ब्राह्मण है ।

(२) उपदेश । (३) नमस्कार ॥

देश करते हैं क्योंकि पण्डित ॥ पाधे ॥ और मिसर ब्राह्मणों के ही नाम हैं ॥

(१) इक पण्डित बाधे मिसर कहाई [आद ग्रंथसाहिब]

[२] पण्डित पाधे आणपती डगाहु चाधा [आदग्रंथसाहिब]

उक्त सुखमनी अष्टपदी ९ तुक ४ के प्रमाण के सदृश श्री भाई गुरदास जी ब्राह्मणोंकी स्तुति करते हैं ॥

गुर ! मुख पण्डित होए जगपर बोधीये ॥ चहुवर्णा उपदेश जिस मैं जोधीये २ धन जणेदी माए जोधा जोधीयें [श्री भाई गुरदास जीकी वार १९ पौडी १८]

[जन्म से ब्राह्मण]

सो ब्राह्मण जो विन्दै ३ ब्रह्म ॥ जप तप संयम कमावै कर्म ॥ सील संतोष का रक्खै धर्म ॥ बन्धन तोड होवै मुक्त । सोई ब्राह्मण पूजण जुगत ॥ (श्री आदग्रंथसाहिब श्लोक वाराने वधीक महल्ला १ श्लोक १६)

---

(१) आस्तक । (२) परविरत । (३) वीर्य । आद ग्रंथसाहिब

" विंद राख जो तरीये भाई । खुसरे क्यों न परम गत पाई ॥

" जो विंद न देए झरना । तिसकाजीको जरा न मरना ॥

" मातकी रकत पिताकी विंद । " स जनमीत विंदनहीं रक्खी "

दसम ग्रथ साहिब ॥ विंद के सधईआ जाहे होजकी वडाई देत ॥

(भावार्थ) उक्त शब्द में गुरुसाहिब ब्राह्मणोंको बिंद (वीर्य) से मानते हुए जप तप संयमकर्म पृथक् कथन करते हैं शील संतोष धर्म जुदा बतलाया है ॥

(नतीजा) गुरुसाहिब कर्म से ब्राह्मण मानतेतो उक्त शब्द में जप तप संयम शील संतोष आदि धारण करे सो ब्राह्मण ऐसे कथनहोना चाहिये था॥ उक्त शब्दमें है "सो ब्राह्मण जो बिंदे ब्रह्म,, वोह ब्राह्मण जो जन्मसे हो और जप तप आदि कर्म करे अर्थात् जन्म और कर्म दोनोंही प्रधान हैं जन्म मुख्य है ॥

तिलक हीण १ यथा बिप्र॥ अमर २ हीणं यथा राज नह॥ अवध ३ हीणं यथा सूरा ॥ नानक धर्म हीणं यथा वैष्णवाह (आ. ग्र. सा. श्लोक सहस किरती ५६ पं ५)

(भावार्थ) उक्त शब्दमें तिलक (मस्तकपर चन्दनादि का टिक्का) मात्र लगाने से विप्र [ब्राह्मण] और सच्चा इनसाफ से राजा ॥ जो अपनी आयू को न समझे वोह सूरमा॥ वैसेही धर्मनिष्ठ वैष्णवहोता है॥

(टिप्पणी) (१) वगैरः। (२) इन्साफ। (३) आयू ॥

(नतीजा) तिलक मात्र लगाने से ब्राह्मण होसक्ता है। खत्री ब्राह्मण सूद वैश्य उपदेश चहु वर्णा को साझा [आद ग्रंथ साहिब राग सूही महल्ला ५ शब्द ५० तुक ४]

(भावार्थ) उक्त शब्दसे साफ प्रगट है चारोवर्ण जन्म से हैं तो ब्राह्मण भी जन्मसे ब्राह्मण हैं।

ब्राह्मणों की रक्षा.

ब्राह्मण कैली १ घात कंजका २ अणा ३ चारी का धान ४ (आ० ग्रं० सा० श्लोक वरांते व धीक म० ३ श्लोक ४)

(भावार्थ) उक्त शब्दमें गुरु महाराज उपदेश करतेहैं ब्राह्मण और कैली (गऊ) कंजका (कन्या) इन तीनों का घात कर दिया जैसा अणाचारी (भ्रष्टाचारी) का भोजनादि खालिया !!

(नतीजा) मित्रो गुरुमहाराज उक्त शब्द में ब्राह्मण और गऊ ५ को अपनी कन्याओंके सदृश मानने के लिये उपदेश करते हैं। वैसेही श्री भाई गुरुदासजी ॥

(टिप्पणी) (१) गऊ। (२) कन्या। (३) भ्रष्टाचारी। [४] वस्तु। (५) श्लोक है नवीन सिंहोंपर जो गुरू हुकम से वहध घाती बन बैठ ॥

वामण गाई वंसघात अपराध करारे (श्री भाई गुरदास जी की वार १४ पौडी १६)

बामण गाई वंसघाट लाइतबार असाधी (श्री भाई रदास जी की वार १७ पौडी १७)

सौ साखी में श्री गुरुगोबिंद सिंह जी का हुक्म ॥

सारस्वत खाक से की जुगत ॥ खाक से का दरवेस रहे काहु वेष ॥

ब्राह्मणों को दानदेना ॥

जवही जात त्रिबेणी भए पुण्य दान दिन करत बतए (ग्रंथ साहिब पातसाही १० बचित्र नाटिक अध्याय ७ कविता, अंक १–२)

(भावार्थ) गुरु साहिब तीर्थयात्रा करते हुए जब त्रिवेणी [प्रयागराज] में गये तो तीर्थ पुरोहित ब्राह्मणों को नित्य प्रतिदान दिया करते थे ॥

द्विजन दिजी अहुदान दूजनन को हाटि दरबई अहु (उक्त ग्रं० सा० चरित्रोपाख्यान चरित्र २१ कविता अंक ५५)

[भावार्थ) ब्राह्मणों को दान देना और शत्रुओं को भगाने का गुरुजी उपदेश करते हैं ॥

खत्री सो जो कर्मों का शूर ॥ पुन दानका करै शरीर ॥ खेत पछाणै बीजै दान ॥ सो खत्री दरगह परवान ॥ लभ लोभ जे कुडकमावै ॥ अपणा किना आपेपावै॥ [आद ग्रंथ साहिब श्लोक वाराते वधीक महल्ला १ श्लो॰ १.७]

[भावार्थ] खत्री [क्षत्री] को शूर वीर और दान करता दाना होना स्पष्ट है इससे नतीजा क्या निकला क्षत्री ॥ वैश्य ॥ शूद्र ॥ इनको दान नहीं लेना चाहिये ॥ " खेत पछाणै बिजै दान,, जन्म और कर्म में श्रेष्ठ ब्राह्मण को दान देवै अर्थात् विर्जे खालसा [सिंह] को दानलेनेका अधिकार नहीं है ॥ गुरु ग्रंथ साहिब जीके हुकम अनुसार॥

(१) पंथ रचिओ मैं धर्म हित पूजा दानन खाए (सूर्य प्रकाश रू॰ ५ अध्याय २४)

(२) ज्यों जननी निज तनजको निरखे जेहर नही देत ॥ त्यों पूजाकी अंन याहि सर्व दुःखको हेत (गुर विलास)

श्रीगुरु नानक देवजी जनक राजा विदेह का अवतारथे सो इसकारण हुआ कि जनकने मृत्युहो नारकीय जीव नर्क में दुःखी देखछुडा दीये॥ तब धर्मराज के पूछनेपर जनक

जी ने कहाकलू में मेरे संमदाय विना अधिकार पूजा (दान) खायगे तिनसे तेरा नर्क भरेगा ।।

कवित्त ।। अब कबभैं फेर कह जो तौ जनकटेर कलि यह नानक अवतार हम धरहैं। बिना अधीकार पूजा खाहिगे अपार सिख तिन हूंको डारकै नर्क तेरा भरहैं ।। ताहीं के बचाव हेत दसम गुरुभी कहयो "जहर कहर पूजातप तेजहरहैं,,। फेरभीन डारे गुरवचन न धारे उर कारे सारे कलिके विचारे ज्ञान हरहैं ।। बड़ो अफसोस आए छत्री कहाए सिंह फेर पूजा खाए कछ कदवेस धारीआ ।। (नवीन सिंहों की प्रमाणिक पुस्तक पंथप्रकाश जो सं० १६४६ वि० मतवै आफताव पंजाव लाहौरके छपे पूर्वार्ध सुफे ४३६ सत्तर २१ से २६ तक कथा गुरु ६ विश्राम ३५ कविता अंक ५ ।

[१] रहितवान गुरु सिख है जोई। कर उपाए धन खटें सोई ॥ ताही कर घरको निरवारै। पूजा भूकन कब हूं गहै ॥ (रहितनामा देसा सिंह)

(नवीन सिंह की शंका हिन्दू धर्मावलंबीका उत्तर)

(प्रश्न) सिंह लोग गुरु १० जीके दो पुत्र गंगू ब्राह्मण के मरवाने के कारण सर्वत्र ब्राह्मणों से जिद रखते हुए ब्राह्मणों को दान देने के बजाए आप लेलेते हैं ॥

(उत्तर) जम्मण मरणा हुकम है ॥ भाणे १ आवे जाए [आदि ग्रन्थ साहिब राग आसा की वार महल्ला १]

(भावार्थ) जन्म मृत्यु ईश्वर आधीन है मित्रों ! उन बालकों ने वैसेही मरणा था ब्राह्मणका कोई कसूर नहीं ॥

श्री गुरु अर्जुनदेवजी और चन्दू दिवान की कन्याका नाता हटाने के कारण आपस में जिदथी चन्दू दिवान नें पातसाह जाहागीर को सिखलाकर गुरु ५ जी लाहौर बुलाया गुरु ५ के चलते वखत बावे वुढने शिक्षाकी के आपकी चन्दू दिवानसे जिद है आप ना जाईये ॥ गुरु ५

[टिप्पणी] [१] ईश्वर इच्छा ॥

जीने उनको उत्तर में कहा ॥ श्री गुरु नानक देव जी सात मुट्ठी भांग के बदले सात पुश्त बादसाही देने लगे ॥ भाई बाले और मरदानें ने कहा महाराज यहतो आपनें बडा जुल्म किया तो गुरु १ जीनें कहा हमारे सात सिर लगकर बाद साहित फिर मुडआवेगी वुढाजी इस में मेरा सिर प्रथम और अष्टम नौम चार १० गुरु के पुत्र लगकर बादसाहित वापिस आजायगी ॥

श्री गुरु कही तंचम वपु लेवो, प्रथम सीस इस हितदेवं ॥ अष्टम ग्रह पुन नवम धार वपु देवो सीस उतार दसम रूप के चारसुत देवो इह हित वार (गुरु बिलास छेवी पातसाही कृत भाई पनी सिंह जो अँगलो संस्कृत प्रेम लहौर सम्वत् १९५१ कि और सं० ४२६ नानक साही में छपे के अध्याय ७ कविता अंक १२१ और १२४)

(भावार्थ) उक्त इतिहास से प्रकट है के श्रीगुरु गोविंद सिंहजी के पुत्र श्री गुरु नानक देवजी की आज्ञा अनुसार मृत्यु हुए ॥ ब्राह्मण का कोई कसूर नहीं है ॥

(नोट) मित्रों ! गंगू ब्राह्मण ने गुरु पुत्र मरवादिये तो वह पाप का भागी होगा सर्वत्र ब्राह्मण नहीं होसकते

सिंहों को उससे जिद रखनी चाहिये नहीं उसके कुटम्ब [गोत्र] से रखनी चाहियं ॥ सो खबर है गंगू कौन ब्राह्मण था गौड़, द्रौड़, सारस्वत, कान्यकुब्ज, आदि इस वास्ते सिंहों की सर्वत्र ब्राह्मणों से जिद करनी महा मूर्खता है, अगर ऐसी बेइनसाफी कोही इनसाफ समझते हैं ॥ तो खालसा धर्मके दो बालक एक ब्राह्मण के मरवा नेपर सर्वत्र ब्राह्मण को गुरु मत से निकाल देनेकी तजवीज है तो मैं बताताहूं ॥ एक औरत जिन्दा ने खालसा धर्म की जड रूपी फौजको बारूदके एवज में सरसों देकर मरवादिया, जैसे एक ब्राह्मणके कसूरपर सर्वत्र ब्राह्मण निकाल देने की इच्छाहै वैसेही उक्त एकस्त्रीके कसूरपर खालसा धर्मसे सर्वत्र स्त्रियां निकालदेनी चाहिये। दिवान चंदूखत्री और सुचा नंदखत्री जिसने गुरु १० जीको दोनों बेटे सरहिन्द में मर वाए ॥ प्यारे खालसाजी इनसाफ तोहै जवसारे खत्रीओं कोभी गुरमत से निकाल देवोगे ॥ पूराहाल देखना होतो सूर्य प्रकाश मेहै और श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब जी में त्रिलोचन, जयदेव, रामानन्द सूरदास आदिक कई ब्राह्मणों की बाणीहै॥नवीनसिंहो को वोहभी निकाल देनीचाहिये ॥

मित्रो श्री गुरू गोविंद सिंह जी झूठ नहीं बोलते ॥ जो दसमपातसाही ग्रंथ साहिब में जफरनामा हिकायत १. तुक ७९ में अपने चार बेटे मारनेका उलाभा औरंगजेब पातसाहको देते हैं। ब्राह्मणों को नहीं ॥

चिहांशुद कि चूं वचगां कुस्तचार।
कि वाकी विमादशत पेचीदहमार॥

(भावार्थ) क्या हुआ जो तैं मेरेचार बेटेमार दियेहैं मैं भारा सर्प मौजूदहुं ॥

(प्रार्थना)

मित्रों ! नवीनासिंहों क्या श्रीगुरू गोविंद सिंहजीभी झूठ बोलते हैं अवतो लालचसे झूठ बोलनेकी शर्मकरो ब्राह्मणों के झूठे निंदक न बनों ॥

श्रीगुरु ग्रंथसाहिबजी से श्रीमहाराजा हरिचंद्रदानी की कीरती और दानके फलसे सद्गति ॥

(१) विन हरिचंदि प्रिथमी पतराजे कागदकी मनपाई।

औगण१ जाणैत पुंनकरै क्यों क्योंने खास २ विकाई ॥ [श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब प्रभाती अष्टपदी महल्ला १ शब्द ४ तुक २]

[२] हरीचंद दानकरै जसलेवै [श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब राग गौडी अष्टपदी महल्ला १ शब्द ९ तुक ३]

[३] सुखराजे हरीचंद घरनारि सुतारा ३ लोचन राणी। साध संगत मिलगावदे राती जाए सुणं गुरबाणी ॥ पिछो राजा जागिआ अंधीरात निखंड ४ विडाणी। राणी दिसन आवई मनविच बरतगई है राणी।। होर तुराती उठके चलिआ पिछै तरळ जुआणी ५ राणी पहुंची संगती राजेखडी खडाओं निसाणी ॥ संगत अराध्याओं जोडी जुडी खडाऊं पुराणी। राजेडिठा चालित पेहु पए खडाव है चोज वडाणी ॥ साध संगत विचहु कुरबाणी। श्रीभाई गुरदासजी की वार १० पौडी ६]

(४) हरीचंद सतरख्या निखास बिकाणा (श्रीभाई गुरदासजी की वार ३८ पौडी ८)

(टिप्पणी) (१) अपगुण। (२) स्वैम। (३) राणी। (४) ठीक। (५) पैडी ॥

नवीन सिंहों के झूठे तुफान सिक्खों को दान लेनेका नेस्तवाबूद।

शंकासमाधान॥

(१ प्रश्न) सतगुरु प्रीति गुरु सिख सुख पाया (गौडी मुहल्ला ४)

(२) सेवकरी इन ही की मन भावत और की सेव सुहातन जी को॥ दान दियो इनही को भलो अरुआन को दानन लागत नीको॥ आगे फलै इनही को दियोजग में जस और दियो सभ फीको॥ मो ग्रह तनते मनते सिर लौ धन है सभी इनको।

(३) चटपटाय चित्र में जरयो त्रिण ज्यों क्रुधि होय॥ रोज खोजहत लग दियो मिश्र जुरोय (सवैये पातसाही १०)

(उत्तर) सतगुरु प्रीतगुरसिख सुखपाया इस्से सिखों को अथवा सिंहों को दान लेना नहीं साबित होता॥ क्योंकि आद ग्रंथ साहिब में रोटी भोजनादि का जिकर नहीं॥ यथा॥ मन तन रसना पाया भई भोजन नाम अ-धार॥ और सतगुरु प्रीति गुरुसिख्य सुखपाया॥ इसशब्द

का अर्थ उक्त शब्द की तरह रोटी और कडाह प्रसाद प्र-घटित नहीं हो सक्ता ॥ मित्रो साफ अर्थ यह है जो सिख गुरु में प्रीति करे वोह मुख्य (अव्वल दरजे) है और जो संख्या २ और ३ के प्रमाण गुरु १० जी की बाणी से ब्राह्मणों को दान निषेध कर सिंहोंको दान का हुक्म बतलाते हुए लालचसे धोखा देतेहैं ॥ जिसकी व्यवस्था यहहै ॥

श्री गुरुगोविन्द सिंहजी महाराजने देवी प्रसिद्ध (प्रत्यक्ष) कराने वाले ब्राह्मणों को धन आदि और गुरु घर में ब्राह्मणों की सदैव के लिये मान्यताके हुक्म नामें दिये जो पोथी हुक्म नामों की श्रीतखत गुरद्वारा पटना साहिब जी में गुरु १० जीकी लेखनी से लिखी हुई में मौजूदहैं ॥ उक्त ब्राह्मणों को धन देने के पश्चात एक ब्राह्मण जो गुरु १० जी के हमेशह (नित्यप्रति) वेद पुराणोंकीकथाकिया करता था ॥ यथा ॥ ॥

गुरु देवन स्थान वेद पौरान बाची यत ॥ सुनैगुनै मनधरै नार नर मोद माची यत (पंथ प्रकाश कथा गुरु १० पूर्वार्ध)

इस कथा करने वाला ब्राह्मणको कुछ न मिलने के कारण क्रोधातुर (कोप) हुएने श्रीगुरु गोविन्द सिंह जीसे कुछ मांगा तोगुरु १० जीने१सवैये ब्राह्मणकी स्तुति (तारीफ) औ ब्राह्मणों को दान देने का हुकम वर्णन करते हुए चतुर्थ दोहरा।उस ब्राह्मणकी सख्त मिजाजी की हालत का बरनन किया ॥ यथा ॥

(सवैया) जो कुछलेख लिख्यो विधना सोई पायत मिश्र जू शोक निवारो ॥ मेरो कछु अपराध नहीं गयो याद ते भूलन कोप चितारो ॥ बागो१ निहाली२ पठैदेहों आज भले तुमको निश्चे जीआ धरहुं ॥ छत्री सभे कृत विपनके इनहू पै कटाक्ष कृपाके निहरहो ॥ १ ॥

(सवैया) जुँद्ध जिते इनहीं के प्रसाद इन हीं के प्रसाद सुदान करे ॥ अघ ओघटरे इनही के प्रसाद इनही की कृपा फुनिधाम भरे ॥ इन ही के प्रसाद सुविद्या लई इन ही की

[टिप्पणी] (१) उपवन फूलवाडी से रहित बाग । (२) निहारी यानी द्दष्टि का अपभ्रंश है निहाली यथा निहारी देखा देखी । अथवा— बख्रभी कहते हैं ॥

कृपा समसत्रु मरे ॥ इनही की कृपा के सजे हम हैं नहीं मांसे गरीब करोर परे ॥ २ ॥

(सवैया) सेवकरी इन ही की भावत और की सेव सुहात न जी को ॥ दान दियो इन ही को भलो अरुआन को दान न लागत नीको ॥ आगे फलै इन ही को दियो जगमें जस और दियो सभ फीको ॥ मोग्रह में तन ते मन ते सिरलौ धन है सभ ही इनको ॥ ३ ॥

जब गुरु साहिब जी ने कुछदिया लिया नहीं " जो कुछ लेख लिख्यो विधना सोई पायत मिश्र जू शोक निवारो। मोरो कछु अपराध नहीं गयो याद ते भूल न कोपचतारो॥ इतने मात्र उपदेश कर दिया और आगे को दान देनेका वायदा किया ॥ उस समय कुछ द्रव्य न मिलने के कारण ब्राह्मण की एसी आकृति (हालत) हो गई !! मानों तृण की तरह गुरु १० जी के पुराणों की कथा वाचणे का सम्बन्ध तोड दिया ॥ और क्रोधातुर हुए ने कहा क्या और जगह हमको रोजगार नहीं मिलता जो आप के वेद पुराणों की कथा वाचण उच्चेस्वरसे रुदन करेंगे ॥ यथा॥

(दोहरा)

चटपटाय चित्त मैं जस्यो त्रिणज्यों कुद्धत होए॥
रोज खोज के हेतलग दियो मिश्र जू रोए॥४॥

मित्रो! उक्त सवैयों से जो सिंहों को दान देना कथन करतेहैं वोह महान धोखा देतेहुए गुरु के प्यारों को नारकीय बनाते हैं क्योंकि उक्त सवैयों में जैसी आधीनता गुरुसाहिब वर्णनकरतेहैं वैसी गुरु चेलोंके प्रति नहींकरसक्ता और नही सिख (सिंहों) का उक्त सवैयोंमें नामहै ब्राह्मणोंका नामहै तो उनकी स्तुति और दान देनेकेलिये हुक्मसाफहै॥

(नतीजा) साफ यह निकलता है श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने ब्राह्मणों की स्तुति से उस ब्राह्मण की अधीनगी की॥ उस ब्राह्मण ने कुछ परवाह नहीं की॥ यदि इस नतीजे से विपरीतता है तो गुरुसाहिब भट्टोंकी तरह व्यर्थ ही स्तुति करने वाले चक वासी सिद्ध होंगे॥

क्योंकि "विद्याकई इनहीं के प्रसाद" और "नहीं मोसे गरीव करोर परे" यह चेलों के प्रति कथन करना

महान अयोग्य चेलोंको नर्क में पहुंचाना है ॥ और उक्त स्वैयों से सिंहों को दान लेनेका पाप पर चलते करना चाहते हैं उसके दूर करने के लिये एक विज्ञापन खालसा कालज अमृतसर के जलसे पर बांटा जिसका कोई नवीन सिंह (दानके झुठेलाकची) उत्तर नहीं देसके ॥ यथा ॥

देखो गुरमुखी विज्ञापन एक महात्मा जीकी ओरसे दिये हूए पुरुष के फरज़ों का उपदेश जो १७ इंच लंबा १.४ चौड़ा १ बैसाख १९६१ वि० को वजीर हिन्द प्रेस अमृतसरमें छपे की सतर १२ से १७ तक ॥ उक्त स्वैयोंमें से दो स्वैये ॥

जुध जिते इनहीं के प्रसाद और सेवकरी इनहींकी भावत लिखे है और सतर ४० से ४६ तक अपनी शंका उक्त स्वैयों से दान लेने वालोंपर लिखी हैं ॥ यथा ॥

संसे—गुरू साहिब ने विद्या किससेली और दान देना किसको लिखा है ॥ अगर कहोकि सिंहों कोही दाना लिखाहै तो बहुतसी जगा ॥ इसके निषेध के वाकभी हैं जो सज्जन इससंसे का समाधान करना चाहें वाह चार

दिनके अंदर मुकर्रर करके निचे लिखे पते पर तसरीफ ल्यासक्ते हैं ॥ तारीख १ वैसाख सं० १९६२ बि० विज्ञापक ॥ सर्वत्र खालसाजीका सेवक ॥ भाई तारा सिंह ॥ नाभा निवासी ॥ नाभाकैंप श्री अमृतसर ॥

नोट मित्रो कोई नवीन सिंह उत्तर नहीं देसका हालां के उक्त स्वैयों के झूठे अर्थ के परचार करने वाला सरदार कान सिंहभी मौजूदथा ॥

श्री गुरू ग्रंथ साहिब दानादि का महातम मानता है जो निंदा से निसफल जाएगा ॥

जे ओहु अठिसठि तीर्थ न्हावै । जे ओहु द्वादस सिला पूजावै ॥ जे ओहु कूपतटा देवावै । करैनिंद सभबिर्था जावै ॥ १ ॥ साधका निंदक कैसे तरै । सरपर जानहु नर्कही परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो ओहु ग्रहन १ करै कुलखेत अरपै २ नारासिंगार समेत । सगली स्मृति श्रवणी सुनै ॥ करै निंदकबने नहीं ॥२॥ जे ओहु अनिक प्रसादि ३ करावै । भूमीदान सोभा मंडिपावै ॥ अपना बिगार

(टिप्पणी) (१) सूर्य्यादि ग्रहण (२) दानकरे (३) कृपा ॥

विराना १ सांढे। करै निंद बहु जोनीहाढै ॥ ३ ॥ निंदा कहा करहु संसारा। निंदक का प्रगठ पाहारा २ निंदक सोधसाध विचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नर्क सधारिआ ॥ ४ ॥ (श्रीगुरुआद ग्रंथ साहिब राग गौंडबाणी रविदास भगतशब्द २) ॥ इति ७ अध्याये ॥

अध्याये ८ ॥

(श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजीसे ईश्वर के राम कृष्णादि अवतार)

इश्वर(अकालपुरुष) का नरसिंह अवतार संख्या १

मेरी पटीआ ३ लिखहू हरि गोविंद गोपाला। दूजे भाए फधे ४ जमजाला ॥ सतगुरु करे मतिपाला हरि सुख दाना मेरे नाला ॥ १ ॥ गुरु उपदेशह मलहाद हरि उचरे सासना ५ ते बालक गमन करे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माता उपदेशह मलहाद प्यारे पुत्र रामनाम छोड़हु जीव लेहु उबारे। प्रहलाद कहे सुनहु मेरी माई

(टिप्पणी) (१) विगाना सवारे। (२) परिहार। (३) पट्टी (४) द्वैत में फसे (५) ताड़ना।

राम नाम न छोडा गुर दिया बुझाई ॥ ३ ॥ संडे १ मर का सभ जाए पुकारे ॥ प्रल्हाद आप बिगड़ेआ सभ. चाटडे बिगाडे ॥ दुष्ट सभा में मंत्र २ पकाया ॥ प्रल्हाद का राखा होए रघुराया ॥ ४ ॥ हाथ खडग कर धाया अति अहंकारी ॥ हरि तेरा कहां तुझे लए उबारी ॥ खिन. में भयानक रूप निकसिया थंमु पाड हरनाकुश नख ३ बिदारिआ ॥ प्रल्हाद लिया उबार॥४॥ संतजनाके हरि जीउ कार्य सवारे ॥ प्रल्हाद इकी कुल उधारे ॥ गुर के शब्द हौं मै जिख मारे ॥ नानक राम राम निसतारे ॥ ५ ॥ (श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब राग भैरों महल्ला १ शब्द २०) तिनकरते इक चलत उपाया। अनहद बाणी शब्द सुनाया॥ मन ४ मुख भूल ५ गुरमुख बुझाया॥ कारण करता करदा आया ॥ १ ॥ गुर का शब्द मेरे अतर ध्यान। हौं कबहू न छोडू हरि का नाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिता प्रल्हाद पठन पठाया। लै पाटी पाधेके आया। नाम बिना नह पडह अचार मेरी पटीआ लिखदेहु गोविंद मुरार ॥ २ ॥ पुत्र

---

(१) प्रल्हाद के पढ़ने वाला पाधा (२) सलह (३) नखून। (टिप्पणी) (४) नास्तिक (५) आस्तिक ॥

प्रल्हाद स्यों कहा माई । पर विरतिन पढहु रही समझाई॥ निरभे दाता हरि जिउ मेरे नाल ॥ जे हरि छोडु तौ कुल लागे गाल ॥ ३ ॥ प्रल्हाद सभ चाटडे१ विगाडे हमारा कहा न सुने अपने सभ कार्य सवारे॥ सब नगरी में भगति दिड़ाई । दुष्ट सभा का कुछ न वसाई ॥ ४ ॥ संडे२ मरके की पुकार । सभे देतरहे झकमार । भगत जना की पत राखे सोई किरेके हो क्या होई ॥ ५ ॥ किरत संयोगी दैतराज घलाई ॥ हरि न बुझे तिन आप भुलाया पुत्र प्रल्हाद स्योंबार चलाया अंधा नबूझे काल नेडे आया॥६॥ प्रल्हाद कोठे विच रखिआ बाहर दिया ताला निरभो बालक मुलन डरई॥मेरेअंतर गुरु गोपाला । कीता होवै सरीको३ करे अणहोंदा नाऊं धराया । जो धुर लिखआ सुआण पहुंताजन स्यों बाद रचाया ॥७। पिता प्रल्हादस्यों गुरज उठाई कहा तुम्हारा जगदीश गुसाईं जग जीवन दाता अंत सखाई जह देखा ताहिरहा समाई ॥ ८ ॥ थंम उपाडि हरि आप दिखाया अहंकारी दैत्य मार आप चलाया । भगत

[टिप्पणी] (१) लड़के [२) प्रहलादका पाधा पढ़ानेवाला । (३) बराबरी ॥

मन आनंद वजी वधाई अपने सेवक को दे वडाई ॥ ९ ॥ जन्म मरण मोह उपाय आवण जाणा करते लिखाया उपाआ ॥ प्रह्लाद के कार्य हरि आप दिखाया भगतों का बोल आगे आया ॥ १० ॥ देवकुली लखमी को करहै जैकार माता नरसिंह का रूप निवारु । लखमी ⁽¹⁾ भौ करेन साके जाए, प्रह्लाद जन चरणी लगा आए ॥ ११ ॥ सत गुरु नाम निधान दिडाया राज माल सभ झूठी है माया लोभी नर रहे लपटाई ॥ हरि के नाम बिन दर गह मिले सजाई ॥ १२ ॥ कहै नानक सबको करे कराया से परवाण जिन हरि सिउ चित लाया ॥ भगता का अंगीकार करदा आया करते अपणा रूप दिखाया ॥ ११ ॥

[श्रीगुरु आद ग्रन्थसाहिब राग भैरों अष्टपदी महल्ला ३ शब्द ५९)

हरि जुगि जुगि भगत उपाआ पैज ⁽²⁾ रखदा आया रामराजे । हरणाखस दुष्ट मारेआ प्रह्लाद तराया ॥ (श्री गुरुआद ग्रंथसाहिब राग आसा महल्ला ४ शब्द २० तुक ४

---

(१) भियै—यानीडर । (२) इजत अर्थात् पत ॥

प्रल्हाद पठाए पढनसाल १ संगसखा बहु लियेबाल। मोको कहां पढावस आल२ जाल मेरी पटीआ लिख देओ श्रीगोपाल॥ १ ॥ नहीं छोडूरे बाबा राम नाम मेरो और पढन से नहीं काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संडै ३ मरके कहिओ जाए। प्रह्लाद बुलाओ वेगधाए॥ तू राम कहन की छोडबान। तुझ तुरत छडाऊं मेरो कहोमान॥ २ ॥ मोको कहां संतावो बार बार। प्रभुजल थल गिर किए पहार॥ एक राम न छोडू गुराहिगार। मोको घारजार मारमार डाल ॥३॥ कढ्यिखडग कोपिओ रिसाई ४ तुझ राखन हारो मोहेबताई॥ प्रभुथंभते निकसकै बिस्वथार। हरनाखस छेदओ नख बिदार॥ ४ ॥ ओही परम पुरुष देवाधी देव। भगत हेत नरसिंह भेव॥ कह कबीर कोउ लखैन पार। ५ ॥ (श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब राग बसंत बाणी श्रीकबीर भगत शब्द ४)

संडा ५ मरका जाए पुकारे। पडै नही हमही पचहारे

(टिप्पणी) (१) पाठशाला। (२) बिअर्थ (३) प्रह्लादका पाधा (४) अनन्त क्रोध। (५) प्रह्लादकापाधा।

राम कहेकर ताल १ बजावै चटीआ २ सभैविगारे ।। १ ।।
राम नाम जपिबो करै । हिरदै हरिको सिमरनु धरै ।। १ ।।
रहाउ ।। बसुधा बसि किनी सभराजे बिनती करै पटरानी
पूत प्रहाद केहा नहीं मानैं तिनतौ औरहि ठानी ।। २ ।। दुष्ट
सभा मिल मंत्र पकाया करसह औध घनेरी गिरतर जल
ज्वाला भैराखिओ राजा राम मायाफेरी ।। ३ ।। कढखड्ग
कालु भैकोपिओ मोहि बताओ जुतुहीराखै । पीत पीतंबर
त्रिभवण धणीथंभ महिहरि भाखै ।। ४ ।। हरनाखस जिन
नखह विदरिओ सुरनर किये सथाना कह नामदेउ हमनर
हरि नरध्यावहु राम अभैपद जाता ।। ५ ।। (श्रीगुरु आद
ग्रंथसाहिब रागभैरों बाणीनाम देव शब्द ९)

घर हरनाखस दैतदे कुलर ३ कवल भगत प्रहाद पढन
पराया चटसाल ४ पाधे चित हो आलाद । सिमरे मनविच
राम नाम गावे शब्द अनाहदनाद ।। भगती करन सभ
चाटडे५ पाधे होएरहे विसमाद । राजेपासरु आया दोखीदैत
बधाआ वाद ।। जल अग्नीविच घतीआ ६ जलेन डुबे

(टिप्पणी) (१) हाथों से स्वर [२] बालका । (३) विश्रर्थभूमी ।
(४) पाठशाला (५) बालक । (६) गेरिआ ।

गुरुप्रसाद। कढखडग सद धुछिआ कौणसु वेराहै उस्ताद॥ थंमपाड परगटिआ नरसिंहरूप अनूप:अनाद। बेमुख पकड़ पछाड़िअन संतसहाई आद जुगाद जैजैकार करन प्रसाद॥ श्रीभाई गुरदासजीकीवार १० पौडी२]

प्रहलाद भगत लिनो अवतार शुभ करन काज संतन उधार॥ चटसार १पडन सौपयों नृपाल॥ पटीयाह कहियो लिख दै गुपाल।१॥ इक दिवस गयो चटसार नृपं॥ चित चोपारिहो सभ देख सुतं॥ जु पांडिओदिज ते सुनता हि राहिओ॥ भैसिसनाम गुपाल पडेओ॥२॥ सुननाम गुपाल रिसिओ असुरं।बिन मोहिसो कौन भजों दुसरं॥ जिय माहि धरो सिस याह हनो॥ जह क्यों भगवान को नाम भनो॥३॥ जलं और थलं इक बीरमनं इहकाहि गुपालको नाम भनं॥ तबहीं इह बांधत थंम भए सुन श्रवन दानव वेन धए॥४॥ गहमूडचले सिसि मारनको निकसिओ जु गुपाल उवारनको॥ चक चौंप रहेजन देख सबे॥ निकसिओ हरि फार इकबार जबे॥५॥ लख देव दिवार सबै थरहे। अविलोक चराचर हूं हरिहे॥६॥

(टिप्पणी) [१] पाठशाला॥

(श्रीगुरु ग्रंथ पातसाही१० सप्तम नरसिंह अवतार श्रीमुख वाक्य गुरुगोविंद सिंहजी महाराज पाधडी छन्द]

[भावार्थ] श्रीगुरुमत धर्म्म ग्रंथ आद और दसम ग्रंथ साहिब श्रीभाई गुरदासजी की वाणीसे भगवान का नरसिंह अवतार स्पष्ट प्रगट है]

(ईश्वर अकाल पुरुष) का वावनअवतार संख्या २

कर[१] ढाई धरतीमांगी बावन रूप वहाने। किऊं पिआले[२] जाए वर्षों छलीये जे बलरूप पछाने (श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब राग प्रभाती अष्टपदी महल्ला १ शब्द ४ तुक १)

वावनरूप किया तुधकरते सभही सेती है चंगा। श्रीगुरुआद ग्रंथ साहिब रागमारू सोहिले महल्ला ५ शब्द ११ तुक ३

नामा कहे भगत वस केसव अजुहुं वलिके द्वारखरो। (श्री गुरुआद ग्रंथसाहिब रागमारू वाणीनाम देव शब्द १ तुक ४)

वलीराजा माया[३] हंकारी। जगनकरै वहुभार अफारी॥ (श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब रागगौडी अष्टपदी महल्ला १ शब्द ९ तुक २)

(टिप्पणी) [१] ढाईहाथ (२) पत्ताल [३] रव्यकी इच्छासे।

बली राजा घर आपणे अंद्रवैठा जग करावै । बावन रूपी आया चारवेद मुख पाठ सुणावै ॥ राजे अंदर सादिआ मुंग स्वामी जो तुधभावे । अँछल छलन तुधआया शुक्र प्रोहित कह समझावे १ करो अढाई धरती मंग पिछो देह त्रिहु२ लोए मनावे ॥ दुइ करवा कर तीन लोए बलिराजा ले मगर मणावे । बलिछल आप छलाया अनुहोए ध्याल मिले गलवावे ॥ दिनाराज पतालदा होई अधीन भगत जसगावे । होए दरवान महासुखपावे ॥ (श्रीभाई गुरदास जीकीवार १० पौडी ३

वावन रूपी होएके बलिछल आप छलाया । करो अढाई३ धरत्ती मंगीपिछो वडपिंड वधाया ॥ दुइकर तिनलोए बलिराजे फिर मगर मिणाआ । स्वर्गहुं चंगा जाण के राज पताल लोक दा पाया, ब्रह्मा विष्ण महेश त्रै भगत वछल दरवान ४ सदाया ।

[श्रीभाई गुरुदासजी की वार २१ पौडी ६]

वाकि पाता प्रलहाल दा ईंदूपुरीदी इच्छ करंदा । करसंपूर्ण

[टिप्पणी] [१] ढाईहाथ । [२] त्रिलोक । (३) ढाईहाथ । (४) पहरुआ ॥

जंग रचो इकइकोत्र जंग करंदा। वामन रूपी आपके गर्ब निवारन भगत उधरंदा। इन्द्रासण नो परहरैजाई पताल सुहुकमी धन्दा। बलिछल आप छलाओन दरवाजे दरवाण हो बन्दा। (श्रीभाई गुरुदासजी की वार २५ पौडी ७) तोटकछन्द पातशाही १० । सरूपछोटधारकै चलिओ तहां बिचारकै ॥ सभनरेस जानिओ। तहींसुपाठठानिओ। १। सुबेद चार उचार कै, सुणीओ नृपंसुधार कै, बुलाय विप्र को लियो प्रदक्षणा अनेक कै।करोर दक्षणा दई नहीं विप्रने लई। नराज छन्द पातसाही १० ॥ केहोन मोर काज है मिथ्या तोर समाज १ है। अढाई २ पाव भूम दै बिसेख भूप कृष लै ॥ ॥ चौपाई ॥

जव द्विज अैस बखानी। धूपति से हितनजान्योरानी। पैर अढाई भूप दे कहीं। दृढकर बात द्विजों तुम गहो। द्विजकर शुक्र हुतो नृप तीरा, जानगयोसब भेद वजीरा। ज्यों ज्यों देन प्रिथवी नृप कहे, तिम तिम नाहि मोहित गहे। जब नृप देन धरा मनकीना। तबही उत्तर शुक्र इम दीना॥ लघु

(टिप्पणी) [१] सर्वत्रतस्तु। (२) अढई हाथ॥

द्विज याहन भूप पजाने, विष्णुवतार इसीकर मानें। पंछ नीर कर भीतर परा, बहै संकल्प द्विज कर धरा, ऐसतवै निज देह बढायो, लोक छेद परलोक सिधायो ॥ निरख लोग अति भूप विसमारा; पेख मूरछा भारा। पाव पताळ छुयो सिरकाशा, चकृत भए लख लोक तमासा। एक पात्र पता रहछुआ, दुसरा पाव गगन लौं हुआ। भिदियो अण्ड ब्रह्मा- ण्ड अपारा, ताहिते गिरी गंगकी धारा। विघ भूप अचंभन कहा, कर्धनवच चकृत व्है रहा॥ कुछ भयो जो शुक्र उचारा, सो आखिअन हम आज निहारा। अरधदेह आपनो मिन दीना इह विघ के भूपति जस लीना॥ जबलौ गंग जमन को नीरा। तबलौ चली कथा जगबीरा। विष्णु प्रथम प्रत्यक्षव्है कहा। चोपदार दुआरे व्है रहा॥

दोहरा--

जह साधन संकट परै तह तह भए सहाए।
दुआर पाल व्हेदर वसे भगत हेत हरिराय॥

(श्रीगुरु दसम ग्रन्थ साहिब श्रीमुख वाक्य पातसाही १० अष्टम अवतार)

(भावार्थ) उक्त गुरुमत धर्म ग्रन्थों के प्रमाण से भगवान बावन अवतार स्पष्ट प्रगट है ॥

[ईश्वर](अकालपुरुष)का रामाअवतार)संख्या ३

दसरथ राय नन्द राजा रामचन्द प्रणवै, नामा मत्त रस अमृत पिजै ॥

[श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग रामकली बाणी श्रीनामदेव शब्द ४ तुक ४)

भजओन रघुपति राजा ॥

(श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग सोरठ बाणी श्रीकबीर भगत शब्द१ तुक १)

रघुवंस तिलक सुन्द्र दसरथ घर मुनि बांछहि जाकीसरणं।
(श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब सवैये महल्ला ४ के सवैया २)

गावै जमदगन परसरामे सुरकर १ कुठार रघुतेज हरियो (श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब सवैये महल्ला १ के सवैया १

दस अवतारी राम राजा आया, देता मारे धाए हुकमसबाया॥

(श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग मलहार की वार महल्ला २ श्लोक १ की पौडी)

(टिप्पणी) (१) देवता के कुठार अर्थात् कुहाड़े ॥

राजारामकी सेवन कीनी कहु रविदास चामार ॥

श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग आसा वाणी रविदास भगत शब्द ३ तुक ३)

नामेके स्वामी अवहोरी लंक भवीषण आपिहो ॥

(श्रीगुरु आदग्रंथ साहिबराग सोरठ वाणी नामदेव शब्द २ तुक ४)

रंगमहिल रंगविच दसरथ कौसल्या रळीआले ॥ मता मताया इन आपाविच चाइ चईआले खरे खुसाले ॥ खर असाडेपुत होइनाऊ कि घरीऐ बालक बाळे ॥ रामचन्द्र १ नाऊ कैदिलां तिन हत्या ते होए निराले ॥ रामराज पर-वाण जगसत संतोष धर्म्म रखवाले ॥ माया विच उदास हुई सुणै पुराण वासिष्ट बहाले ॥ रामायण वरताया सिला तरी पगछुहि तत्काले ॥ साध संगत पग धूड़ निराले ॥

(श्रीभाई गुरुदास जी की वार २३ पौड़ी ८)

रामचन्द्र कार्ण २ कर्ण ॥ कार्ण वसहोआ देहधारी ॥ वन मतेई येवण वास बडाई चारी ॥ परसुराम दावल

---

[१] मंत्ररामनाम ध्यानं सर्वत्र पूरन: आदग्रंथसाहिब श्लोक ४० सहस कृती महाला ५ । (२) करता हरता ॥

हरे दीनदयाल गर्वपर हारी ॥ सीता लक्ष्मण सेवकर जती सभी सेवाहितकारी ॥ रामायण वरताया ॥ रामराज कर शिष्टउधारी ॥

(श्रीभाई गुरुदास की की वार ३१) पौडी २०)

भला बुरा संसार विच जो आया तिस सरपर मरणा ॥ रावण ते रामचन्दवाग महाबली लड कारण करणा ॥ जर जर वाणा बसकर अन्त अधर्मरावण मनधरणा ॥ रामचंद्र निरमल[१] पुरुष धर्महु सायर पत्थर तरणा ॥ बुरिआई यहु रावण गआ कालकाटका परत्रिया हरणा ॥ रामायण जुगि जुगि अटल से उधरे जो आए शरणा ॥

(श्रीभाई गुरुदासजी की वार ३१ पौडी १८)

निन्दा कर हरणाखसे वेखहु फलवटे ॥ लंका लुटाई रावणै मस्तक दसकटै ॥

[श्रीभाई गुरुदास जी की वार १५ पौडी ५]

चौपाई-अवमैं कहों राम अवतारा, जैस जगत्में करा पसारा बहुत काल बीतत भयो जवै, असुर वंस प्रगट भयो तवे ।१। असुर लगे वहु करैं विखाधा, तिनहुंन तिनैं तनक मैं साधा ॥

[टिप्पणी] [१] शुद्ध चेतन ॥

सकल देव इकठे जबभए, छीर १ सिंध जहथो तहगए ॥२॥ बहु चिर बसत भए तिहि ठामा, बिष्णु सहित ब्रह्माजिहनामा॥ बारबारही दुखत पुकारत, कानपरी कळके धुनआरत ॥ ३ ॥

तोटक छन्द--विष्णुादिक देव लसे बिमनं, मिद हासकरी करकाल धुनं ॥ अवतार धरो रघुनाथ हरं, चिरराज करो सुख सों अवधं ॥ ४ ॥ थिस नेस धुणं, सुण ब्रह्म सुखं ॥ अब सुधचली रघुबंस कथं, जुइ छोर कथा कथियाइ रहै, इनबातनको इक ग्रन्थ बढै ॥ ५ ॥ सुहितकाहि थोरहि थीन कथा ॥ बळतवै उपजी बुध मध्य जथा ॥ जह भूल भई हमते लहियो । सुकबोतह अछा बनाय कहियो ॥

(श्री गुरु दसम पातसाही ग्रन्थ साहिब बिसमों राम अवतार अध्याय १ कविता अंक १ से ६ तक) और अंत में गुरु १० जी प्रार्थना से कथन करते हैं ॥

दोहरा ॥

राम कथा जुग जुग अटल सभ कोइ भाखत नेत।
स्वर्ग वास रघुवर करा सगरी पुरी समेत ॥

टिप्पणी [१] जळसाई भगवान विष्णु ॥

चौपाई—जो यहकथा सुनै अरु गावै, दुःख पापतह निकटनआवै। विष्णु भगतकी एहफल होई, आधिव्याधि छे सकनकोई॥ संवत सतरासहस पचानव, हाड वदी प्रथम सुख दानव॥ त्व प्रसाद कर ग्रन्थ सुधारा, भूल परी लहु लेहु सुधारा॥

(दोहरा)

नेत्र १ तुंग के चर्ण तर सतुद्रव तीर तुरंग।
श्री भगवत पूरण कियो रघुवर कथा प्रसंग॥

(श्री गुरु दसम पातसाही ग्रन्थ साहिब विसमो रामा अवतार श्री गुरु पातसाही १० कथन)

[भावार्थ] उक्त गुरु मत के धर्म ग्रन्थों से भगवान रामा अवतार स्पष्ट प्रगट है॥

[ईश्वर[अकाल पुरुष] काकृष्णअवतार]संख्या ४

जुज महि जोर छलो चंद्रावल कान्ह कृष्ण जादव भिआ पार जात गोपी लैआया विन्द्रावन मे रंग किया॥

(श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग आसा की वार महल्ला १ श्लोक ११)

[टिप्पणी] [१] श्रीनमो देवीजी के चर्णोंमें सत्तलुज पर॥

रास मण्डल किनों अखारा १ सगलो साज राखियो पसारा । बहु बिध रूप रंग अपारा। पेखे खुशी भोगनहारा, सभ रसके तव मत निसारा ॥

[श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग सूही महल्ला ५ पड-ताल शब्द ४५ तुक १]

वाहिगुरु २ वाहिगुरु वाहिगुरू वाहिजीउ ॥ कमल नैन मधुर बैन कोट सैन संग सोभ कहत मा जसोदा जिस हदही भात ३ खवाहि जीउ ॥ देखरूप अतिअनूप मोह महां मगकिंकनी ४ शब्द झनत खेल पाहि जीउ ॥ १ ॥ पीत वसन कुंद सदन ५ प्रिय सहित कंठमाल मुकटशीश मोर पंख चाहिजीउ ॥ बेवजीर ६ वडे धीरधर्म अंगअलख अगम खेल किया आपणै उछाणि ७ जीउ ॥ २ ॥

[टिप्पणी] (१) रासमण्डल [२] सतजुग सतगुर वासदेव ॥ बाबा विष्णुनाम जपावै ॥ द्वापर [सतगुर कृष्ण हाहा हरि हरि नामजपावै ॥ त्रेते गुरुरामजी रारा राम जपे सुख पावै ॥ कलियुग नानक गुरुगोविन्द गंगा गोविन्दनाम जपावै ॥ चारों अक्षर इककर वहि गुरुजप मंत्र जपावे (श्री भाई गुरुदासजी की वार १ पौडी ४९) [३] चावल ॥ [४] पैरों का जेवर (५) सुदवस्त्र (६) खुद मुखत्यार । (७) इच्छा ।

(श्रीगुरु आद ग्रन्थसाहिब सवैये महल्ला ४ सवैया ६ पश्चात् १६)

एक कृष्णंसर्वदेवा देव देवता आतमा ॥ आतमं श्री बासदेवस्य जे को जानस भेव ॥ नानक ताका दास है सोई नरंजन देव ॥

(श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब श्लोक सहसू कीर्ति महल्ला १ श्लोक ४)

गुरुमत कृष्ण गोवरधन १ धारे ॥

[श्रीगुरु आद ग्रंथ साहिब राग मारू सोहिले महल्ला १ शब्द २० तुक १०)

रिषीर२ केस गोबर्धन३ धारी मुरली मनोहर हरिरंगा ॥ १ ॥ मोहन माधव कृष्ण मुरारे जगदीश हरिजिउ असुर संघारे ॥ २ ॥ बनमाला बिभूषन कमल नैन सुंद्र कुंडल मुकट बैन संखचक्र गदा है धारी महासारथी सतसंगा। आपेगोपी आपे कान्हा आपे गऊ चरावै बाना ॥ १५ ॥

(टिप्पणी) (१) गोपालों की रक्षाके लिये गोवर्धन परवत उठाया। (२) इन्द्रियों का स्वामी [३] परवत ॥

(श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब रागमारू सोहिले महल्ला ५ शब्द ११ तुक १—२—१—१५)

मन तन अति सोहिणा भई भेटिआ१ कृष्ण मुरार॥ (श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब रागसूहीकी वार महल्ला १ श्लोक ९ की पौडी)

दीनदयाल भए है जीउं कृष्ण बिदर घरआया। मिल्यो सुदामा भावनी२ धार सभ कुछ आगै दाल३ दुभंज समाया॥ (श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब राग बसंत हिंडोल अष्टपदी महल्ला ४ शब्द १ तुक ४)

जाहरनवी४ तपै५ भागीरथ आणी किदार थापेओ महसांई। कांसी कृष्ण चरावत गऊआं मिलहर जनसोभा पाई॥ [श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब राग मलहार महल्ला ४ शब्द २ तुक २)

बिंद्रावन मनहरन मनोहर कृष्ण चरान गऊरे। जाका ठाकुरतुहीं सारंगधर६ मोहि कबीरा नाऊरे॥ श्रीगुर आद ग्रंथसाहिब रागगौडी बाणी कबीर भगत शब्द ६६ तुक २

[टिप्पणी] [१] प्रासहुआ [२] श्रद्धा [३] दारद्र [४] श्री गंगा [५] तपस्याकर [६] विष्णु॥

धन्न धन्न ओ राम बेन१बाजै। मधुर मधुर धुन अनहद गाजै२ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धन्न धन्न मेघारोमा३ वली। धन्न धन्न कृष्ण ओढे कामली४ ॥ १ ॥ धन्न धन्न तूं मात देवकी जिहग्रिह रमया५ कमला६ पती ॥ २ ॥ धन्न धन्न बनखंड बिंद्रावना जह खेलै श्री नाइना ॥ ३ ॥ बेन७ बजावे गोधन८ चरै नामे के स्वामी अनंद करै ॥४॥ (श्री गुरु आदग्रंथसाहिब राग मालीगौडावाणी नाम देवशब्द १)

देवा पाहन तारीआले राम कहत जनकसन तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारीले गणिका बिनरूप कुबजा ब्याध९ अजामिल तारीआले ॥ चरन बधिक जनतेऊ मुक्तभए ॥ हौं बलबल जिनराम कहे ॥ १ ॥ (श्रीगुरु आद ग्रथसाहिब राग गौडी वाणी नाम शब्द १)

हरि हरि करत पूतना तरी। बालघातनी कपटह भरी॥ सिमरण द्रुपद सुत उधरी। कैसी कंस मथन जिन किया॥

[टिप्पणी] (१) वेणी अर्थात् बंसरी [२] गायन (३) भेडोंके रोम [४] कंबली [५] सर्वव्यापक [६] लक्ष्मी पति (७) बंसुरी (८) गौ [९] फंदक ॥

जिआ दान काली को दिआ मणवै नामा ऐसो हरी॥ जास जपत भै अपदा टरी॥ (श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब रागगौंड बाणीनाम देव शब्द ५ तुक ३-४)

संता मध्ये गोविंद आछे गोकल मध्ये स्यामगो ॥ श्री गुरुआद ग्रंथसाहिब राग टोडीवाणी नामदेव शब्द ३ तुक४)

हरिके संगबसे हरिके लोक। तन मन अर्प सर्वसु अर पिओ अनहद सैहज धुनि जोक॥१॥ रहाउ॥ दरशन पेख भए निरवखई पाए है सगले थोक॥आन वस्त सिउ काजन कछुअ सुंद्रवदन अलोक॥१॥स्यामसुंद्र तजिन जुचाहत जिऊं कुष्टीतन जोक। सूरदास मन प्रभ हथलिनो दिओइहु परलोक ॥ २ ॥ (श्रीगुरु आद ग्रंथसाहिब राग सारंगवाणी सूरदास भगत महल्ला ५ शब्द ८)

किसन लिआ अवतार जगमहि मादस मास मसकंद वखाणै।लीला चलत अचरज कर जोग भोग रलीआ माणे॥ महाभारथ करवाय ओन कैरो पांडों कर हैं हैराणे । इंद्रादिक महमा मित मिरयादन जाणै ॥ मिलीआं टहलां वडकै जॅग राजसू राजेराणै । मंगल हारे टहल एह पैरधोए चरणोदक माणे ।। (श्रीभाई गुरदासजी की वार २३ पौडी १

किसन सहाई पांडवा भाए भगत करतूत विसेखै। वैर भाउ चित करवा गणतीगणत अद्रका लेखै ॥ भलाबुरापर वंनिआ। भाळण गएन दिट्ट सरेखै॥ बुरान कोई जुधिष्टरे दुरजोधनको भला न देखै। करवै[1] हाए सुटोटी[2] गेखै ॥ [श्रीभाई गुरदासजी की वार ३१ पौडी ४]

कहूं गीतके गवैया। कहूं वेनके वजैया ॥ कहूं नृत्तके नचैया। कहूं धेनके चरैया ॥ कहूं लाखन लवैया। कहूंसुंद्र कुमारहो ॥ सुद्धताकी शानहो। कि संतनके प्रानहो ॥ कि दातामहां दानहो। निरदोखी निरंकारहो ॥ (श्रीगुरु दसम पातसाही ग्रंथसाहिब अकाल स्तुति कविता अंक १८)

अब वर्णों किसन अवतारू। जैस भांति बपधरो मुरारू ॥ परम पापते भूमडरानी। डगमगात विध तीर सधानी ॥ १ ॥ ब्रह्मा गयोछीर निध

[टिप्पणी] [१] कर्म [२] फल ॥

जहां । काल पुरुष इस्थत थे जहां ॥ कहो विष्णु कह निकट बुलाई । किसन अवतार धरोतुम जाई ॥ काल पुरुषके वचनते संतन हेत सहाए । मथरा मंडल के विखै जन्म धरो हरीराय ॥ जेजे किसन चरित्र दिखाए । दसम वीच सभ भाख सुणाए ॥ ग्यारा सहस वानवे छंदा । कहे दसम पुर वैठ अनन्दा ॥ (दसम पातसाही ग्रंथसाहिब गुरु १० मुखवाक्य २१ किसन अवतार)

गुरु१०जीकृष्णाअवतारसमाप्तिपरप्रार्थनाकरतेहैं॥

कवियोवाच ॥ सवैया ॥ जैसोतिना वरत्तो अघको सुवका १ सुरको वधजा मुख फारिओ । खंड कियो सकटा २ सुरको गह केसनते जिऊं

[टिप्पणी] (१) अक्षर । [२] अक्षर ॥

कंस पछारिओ ॥ सिंधजरा १ हुंको सैन मथिओ अरु सैंत्रहको जिह मानहि टारिओ । तिऊं ब्रजनाथ के साधनको पुनचाहतहैं सभ पापन टारिओ ॥

सवैया ।-- जो उपमा ब्रजनाथकी गाय हैं अरु कवित्तन वीच करैंगे ॥ पापन की तेऊ पावक २ मैं कविस्याम३ भनै कवहुंन जरैंगे ॥ चित्त तभै मिट हैं जुरही छिनमैं तिनके अघविंद ४ टरैंगे । जेनर स्यामजूके परसे पगते नर फेर न देह धरैंगे ॥

सवैया ॥ जो ब्रजनायक को रुचसो कवि स्यामभनै पुनजाप जपैहैं । जो तिह के हितके मन मैं बहु मंगन लोगन को धनदेहैं ॥ जो तज कामसभै

टिप्पणी (१) जरासिंध (२) अग्नि ॥

[३] पापों का समूह ॥ [४] श्रीगुरु मत ग्रंथ सशोधक कमेटी श्री अमृतसर रिपोर्ट सुधाई दसम पातसाही ग्रंथ साहिबजो सम्बत १९५४ वि० मुफत बटी में स्यामकवी श्रीगुरुगोविन्द सिंहजी कोही सावित किया है शाभिषा नक्षत्र में जन्म होने के कारण ॥

घर के तिह पायन को चित भीतर दैहैं। भीतर ते अबया जग के अघवृंदन बीर बिदारक जैहैं॥

कबित्त॥छत्री १ को पूतहों बामन को नाहि कै तप आवत जुकरों। अरुऔर जंजार जितो गृह को तुहि त्याग कहांचित तामैंधरों॥ अथ रीझ कै देहुवहै हमको जोऊहों विनती करजोर करों। जब आवकी २ औध निदान बनै आतिही रन मैं तब जूझमरों॥ (पातसाही १० ग्रन्थसाहिब के अखीर गुरु १० कृतबाक्य)

श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज पर एक स्त्री रूपकुअर नाम करके अत्यंत आसक्त [आशक] होगई थी और उस स्त्रीने श्रीगुरु गोविंदसिंहजी को अपने मकानपर छल से बुलाया जो दसम पातसाही ग्रंथसाहिब चरित्र उपाख्यान

[टिप्पणी] [१] गुरु १० अपने आपको खत्री का पुत्र मानते हैं [२] आयू।

चारित्र २१ खास श्रीगुरु गोबिंदसिंहजी का जिसकी ६० तुक हैं उसमें दानों का संवाद है ॥ यथा ॥

तीर[१] समुद्रबके[२] हुतो पुरअनंद[३] इकगाउ। नेत्र[४] तुंग के ढिगवस्त कहलूर[५] के ठाउ ॥ तहां सिक्ख साखा बहुत आवत गोद[६] बडाए। मन वांछत मख मांगवर जात ग्रिहन सुखपाइ ॥ इक त्रिया धन वंतकी तौउ नगर में आन। हेर राग[७] पिण्डत भई विध ब्रिह के[८] बान ॥ मगन[९] दास ताको हुतासो तिन कियो बुलाए। कछुक[१०] द्रव्य ताको दियो ऐसो कहो बनाय नगरराग तुमरो बसत ताहि मिलावहु मोहिं ॥ ताहि मिले दैहों तुझे अमित द्रव्यलै मोहि ॥ मगन लोभ धन के आन राव के पासपर पायन कर जोर कर यह विधकी अरदास[११]। सिख्यो चाहित जो मन्त्र तुमसो आयो मोरेहाथ, कहैतमै सो कीजिये ॥ गुरु साहिब॥ चल्योधार अतीत[१२]को भेसराई। मनापन विखै श्रीभगवती मनाई। चल्यो सोत

[१] समीप [२] दरयावसत्तलुज [३] अनन्दपूर ॥
[टिप्पणी] (४) श्री नैनादेवी का पहाड । (५) बिसालपूर ॥
[६] इच्छा [७] देख (८) जुदाई [९] गुरु १० का सेवक ।
(१०) द्रव्य (११) प्रार्थना (१२) फकीरकाभेस ॥

ताके फिरे नाहि फेरे ॥ धस्याजाएके वा त्रिया के सुडेरे १

मित्रो ! उस स्त्रीने गुरुसाहिबको हरतरह मैथुन (व्यभिचार) करनको कहा गुरुसाहिबने उस स्त्रीको उपदेश करते हुए उक्त व्यभिचार रूपीपाप का इनसाफ धर्मराजके आगेहोने से डरेजो उनके श्रीमुख वाक्यसे प्रगट है॥

(१) धर्मराजकी सभाठौर कैसेकर पाऊं (उक्त चरित्र २१ कविताअंक १७)

(२) कहोतुहारो मानभोग तोसों क्योंकरीये ॥ घोर नर्कके बीच जाए परवे ते डरीगे (२५)

(३) धर्म्मराजकी सभाज्वाव कैसे कर देहों (२६)

(४) नर्क परन ते में डरूं करूं न तुमसो भोग (३६)

उस स्त्रीको अनेक प्रकार शिक्षा करते हुए गुरुसाहिब कहते हैं कि मैं गुरुगद्दीपर विराजमान सबका पूज्य हूं ॥ अगर ऐसा व्यभिचार तेरे संगकरूं तो नर्कमें पडूंगा ॥ गुरु १० साहिब को रूप कुअर उत्तर देती हुई प्रश्न करती है कृष्ण सभके पूज्य हुए और रासादि [राधका आदि परस्त्रियों से भोग विलास] किये वाह नर्क नहीं पडे ॥ मित्रों !

(१) जगह ॥

श्री गुरु गोविन्द सिंहजी महाराज रूप कुअर को उत्तरदेते हुए श्रीकृष्णचन्द्रजी को पूर्ण ब्रह्म कथन करते है ॥

[प्रश्न] रूपकुअर। तब तासो त्रिया यों कही भोग करो मुहिनाथ ॥ पसुपतार दुख दे घनों मैं वेचित वेहाल ॥

[उत्तर] गुरु गोविन्द सिंहजी। कहा तुम्हारे मान भोग तो सो नहीं करिये। कुल कलंकके हेत अधिक मन भीतरडारिहों

[प्र०] रू० कामातुर व्है जो त्रिया आवत नर के पास। महानकर सोंडारीये देतह जान निरास ॥

[उ०] गु० पाए परत मोरे सदा पुज कहतहैं मोहि ॥ तासों रीझ रमियो चाहित लाज न आवत तोहि।

[प्र०] रू० कृष्ण पुज जगके भए, किनी रास बनाए। भोग राधका सो करे नर्क पर नहीं जाए ॥

[उ०] गु० पञ्जतत्तले ब्रह्म करकिनी नरकी देह। किया आपही तिन विखै स्त्री पुरुष सनेह ॥

[नोट] श्रीगुरु गोविन्द सिंहजी महाराज श्रीकृष्णचन्द्रजी के हासविलास रासआदि [श्री भागवत अध्याय१०] को धर्म युद्धमानते हैं ॥ " दसम कथा भागवत की भाषाकरी बनाए और बासना नाहि प्रभुधर्म युद्ध के चाए [राहिरास]

दसमग्रंथ साहिव असफोटक कवित्त ॥

श्रीमुखवाक पातसाही १० कवता अंक २५ से २८ तक ॥ जो उक्त रिपोट सुधाई दसम ग्रंथ साहिव अमृतसर में असफोटक कवीत्तों के दसमगुरूकी वाणी नवीनसिंह साबित करते हैं । और उन असफोटक कावितों में भगवान श्रीकृष्णजी की गुरू १० जीनै ऐसी उस्तुतिकी है ॥

(अथ श्रीकृष्णजीकी उसत्तत)

कवीत्त ॥ देवकी तन्नया कहौं मुसलीके भय्या कहौं रधाके रमय्या कहौं मुरके मुरय्या कहौं । संतन सहय्या कहौं दैंत्तन दलय्या कहौं वारन वचय्या कहौं संकट कटय्या हैं । कारन करय्या कहौं रमांकेरिभया कहौं सागरमथय कहौं विस्व के वनया हैं । वेदन वनया कहौं द्वारका वसया कहौं कौस्त त्तरजा पांछ जंनके वजया हैं ॥२५॥

कवीत्त ॥ धेनके चरया कहौं वेंनके वजया कहौं। गोकल वसया कहौं बृजके रहयाहैं । माखन भखया कहौं गोरसु लुटया कहौं चीरन चुरया कहौं गु· आरन हरया हैं । अनंद दिवया कहौं सारिंग धरया कहौं पूत्तना मरजा कहौं त्तालके कतया हैं ॥ नाग के नथया कहौं वियाधके वध्या कहौं भीखम तनयाके कनयाजू हरया हैं । ॥ २६ ॥ कवीत्त ॥ कंसके वधया कहौं केसी के मरया कहौं कांरीके हनय कहो कुंजन भ्रमयाहैं ॥ साहन के साह कहौं संत्तन सनाहि करी करि बाह कहो रांम जूके भयाहैं ॥ चौदा लोक नायक कहौं साचेपति साहि कहौं दुजन के दाह कहौं दैतन दलईया हैं । अरिन को अरकहौं संतन सहार कहौं ॥ दांनहूंकी धारकांन केसव कनया हैं ॥ २७ ॥

कवीत्त॥ वंसीके वजया कहौं ब्रिजके रहया कहौं व्याधके वधईया कहौं बिश्वके वनयाहैं॥ वेदनो उचरैया कहौं बुध वढया वलरांमजूके भया हैं॥ वीरविच रया कहौं वैरन हनया कहौं विखके वटया वृजवन तालभया हैं॥ वनके भ्रमया कहौं वछरा चरया कहौंजाकी सभ लेत कविकोविद्बुलयाहैं॥

॥ इती ॥

उक्त गुरमत धर्म्म ग्रंथों के प्रमाणों से॥ भगवान श्रीकृष्ण अवतार सपष्ट प्रगटहै जिसका नवीनसिंह कुछउत्तर नहीं रक्खते

(गुरू घरमें दुर्गा पर्मइष्ट)

श्री दुर्गाजीके निन्दक (नवीन सिंहोंके लिये शिक्षा रूप) गुरु १० वाक्यों द्वारामुख मर्दन वज्र॥ जिसका नवीन सिंहकुछ उत्तर नहीं रखते॥ संख्या ५।

श्री गुरुगोविन्द सिंह जी महाराज का सच्चा जीवन चरित्र इतिहास (जन्मसाखी) दसम ग्रंथ साहिब जी में

बिचित्र नाटिक ग्रन्थ है ॥ जिससे नवीन सिंह भी मुनकिर नहीं होसकते ॥ मित्रागुरु १० जी के उक्त ग्रन्थ में जितने चारित्र (कार्य) हैं उन सबको बिचित्र नाटिक ग्रन्थ के अन्त में सर्व काल की अरदास (भेटारूप प्रार्थना) कथन करते हुए सर्वकाल को पिता और देवी (कालका) को माता मानते हुए चण्डी (देवी) जी के चारित्र (लीला) खुद बनाई मानते हैं ॥ यथा ॥

सर्वकाल है पिता अपारा । देवी कालका मात हमारा॥

(दसम पातसाही ग्रंथ साहिब बिचित्र नाटक ग्रंथ अध्याय १४ कविता अंक ५)

प्रथमै देवी चरित्र को कहा । पहले चण्डी चरित्र बनायो॥

नखसिख ते क्रमभाग सुनायो ॥ छोर कथा तब प्रथम सुनाई । अब चाहित फिर करूं बडाई ॥

[उक्त पता कबिता अंक १० और ११)

(अकाल स्तुति त्रिभंगी छन्द पातसाही १०)

(१) दुरजन दल दंडण असुर बिहंडण दुष्ट निकंदन आदम्रते । अच्छे अखण्डे तेज प्रचण्ड, खण्ड उदंडं

अलख मते ॥ जै जै होसी महिखासुरमरदन रम्भि कपरदन छँत्र छिते (दसमपातसाही ग्रन्थसाहिब अकाल स्तुति कविता अंक २११)

(२) असुर विहण्डन दुष्ट निकन्दन पुष्ट उदन्डन रूप अते। चण्डासुर चण्डन मुण्ड विहण्डन धूम्र बिधुंसण महिख मथे। दानव महारण नर्क निवारन अधम उधारण उर्ध अधे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन रम्भ कपरदन आदव्रते ॥ [उक्त पता कविता अंक २१२]

(३) डावरूडवंके बबर १ बबके भूजा फरंकै तेज बरं ॥ लंकडीआ फाधै आयुध बांधै सैन बिमरदन काल असुरं ॥ अष्टा २ युँध चमकँ भूखन दमकै अतासितझमकै फंक फुणं ॥ [उक्त पता कविता अंक २१३]

[४] चण्डासुर चण्डन मुण्ड विमुण्डण खंड अखंड णसुम्भ खिते ॥ दामणी दमंकण धुजा फरंकण फणीअर फुंकण जोध जिते ॥ सरधार बिवरखण दुष्ट प्रकरखण

(टिपणी) (१) सिंह अर्थात् सेर की जुद्ध लाये गरजना ॥

(२) जिसके अष्टहाथो में शस्त्र ॥

पुष्टप्रहारखण दुष्ट मथं ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन भूप अकास तल उर्ध अधे ॥ (उक्त पता कविता अंक २१४)

[५] दामनी प्रहासन सुछवीविनासन शिष्ट प्रकाशन गूडगते ॥ रकता सुर आचन जुध प्रणाचन त्रिभै निराचन धर्मब्रते ॥ श्रोणान्त अचिन्ती अनल विनंती जोग जयन्ती खडग १ धरे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन पाप बिनासन धर्म करे (उक्त पता कविता अंक २१५)

(६) अघ ओघ निवारन दुष्ट परजारन श्रिष्ट उवारन शुद्ध मते ॥ फणी अर फुकारण बाघ चकारण शास्त्र प्रहारण माधमते ॥ सैहथ सिनाहण अष्टमवाहण बोल निवाहण तेज अतलं । जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि अकाश पताल जलं ॥ (उक्त पता कविता अंक २१६)

(७) चाचर चमकारन चिछुर हारन धूम्र धूंकारण द्रव्य मथे ॥ दाडवी प्रदंते जोग जयंते मनुज मथंन गूडह कथे ॥ कर्म प्रणाशन चन्द प्रकाशन सूरज प्रते जनअष्ट २ भुजे । जै जै होसी महिखासुर मरदन भ्रम बिनासन धर्म धुज ॥ (उक्त पता कविता अंक २१७)

(टिप्पणी) (१) खड़ग धारण करनेवाली (२) अठबाहों वाली ॥

(८) घुँघरूघमंकण शस्त्र झमंक्कण फणी अर फुकारण धर्म धुजे ॥ अष्ट महासन शिष्ट निवासन दुष्ट मणाशन चक्र गते ॥ केसारी प्रवाह सुध सनाहेअगम अथाह एक अंत ।, जै जै हासी महिखासुर मरदन आदकुमार अगाध व्रंत ॥ (उक्त पता कविता अंक २१८)

(९) सुर नर मुनि वन्दन दुष्ट निकन्दन भ्रष्ट विनाशन म्रित मथे ॥ कायरू कुमारे अधम उधारे नर्क निवारे आदि कथं ॥ किंकणी मलोहण सुरनर मोहण सिंघा रोहण चितललते ॥ जै जै हांसी सब ठौर निवासन वाण पताल अकाश अनल ॥ (उक्त पता कविता अंक २१९)

[१० । संकट निवारन अधम उभारन तेज मकरखण तुन्द तवं ॥ दुख दोखदहन्ती ज्वाल तपन्ती आद अनादि अगाध अछे ॥ शुद्धता सपर पण तर्क बितर्कण तपत मता पण जपन जिवे ॥ जै जै होसीमभ शस्त्र मकरखण आदि अनील अगाध अभे ॥ (उक्त पता कविता अंक २२०)

[११] चंचल चखंगी अलक १ भुअंगी तुंदतुरंगण तिछसरे करकस्म कुठारं नर्क निवारे अधम उधारं तूरभुजे॥

(टिप्पणी) (१) अलका कसन जुभुगनकालीआं जुलफां सर्पजैसी ॥

दामनी दमंके केहर १ लंके आद अतंके कूर कथे ॥ जै जै हासी रकतासुर खण्डनि सुंभ चकरदन सुंभ मथे ॥ [उक्त पता कविता अंक २२१]

[१२] वारिज विलोचन विरत विमोचन सोच विलोचन कौच कसे ॥ दामनी महासे सुक सरनासे सुव्रित सुवासे दुष्ट ग्रसे ॥ चंचला अंगी वेद प्रसंगी तेज तुरंगी खण्ड सुरं ॥ जै जै हासीमहिखासुर मरदन आद अनाद अगाध उरधं [उक्त पता कविता अंक २२२]

[१३] घण्टाका विराजै रूण झुण बाजे भ्रमभै जाभै सुनतसुरं ॥ कोकळ सुन लाजे किल विख भाजै सुखउपराजै मँध्य उरं ॥ दुरजन दलदँझै मन तन रिंझै सभै न भंजे हार रणं ॥ जै जै हासीमहिखासुर मरदन चण्ड चकरदन आदे २ गुरं ॥ (उक्त पता कविता अंक २२२)

[१४) चाचरी मजोधन दुष्ट विरोधन रोस अरोधन कूर ब्रित ॥ धूमाछँ विधुँसन मलै मजुंसन जँभाविधँसन शुद्ध मते जालपा जयन्ती सत्रमथन्ती दुष्ट मदाहन गाढमते । जै जै

---

(२) सिंह अर्थात् सेर ॥

(१) श्रीगुरु गोविंद सिंहजी श्री दुर्गाजी को आदगुरु मानते हैं ॥

हासीमाहिखासुर मरदन आद जुगाद अगाध गते (उक्तपता कविता अंक २२४)

[१८] खत्री आणखतंगी अभे अभंगी आद अनंगी अगाध गते। विड छाछ विहंडण चछरासुर दंडण तेजप्रचण्डण आदअंते ॥ सुरनर मित्री पारनपतित उधारण दुष्ट निवारण दोख हरे ॥ जै जै हासी माहिखासुर मरदन विश्व विधुंसन सिष्ट करे (उक्त पता कविता अंक २२५)

(१६) दामनी प्रकाशे उततन नासे जोतिप्रकाशे अतुलबले ॥ दानवी प्रकरखण सरवर बरखण दुष्ट प्रधरखण वितल तले ॥ अष्टायुध बाहण बोल निबाहण सन्तपनाहण गूढगते॥ जैजै हासी माहिखासुर मरदन आद अनाद अगाध व्रते [उक्त पता कविता अंक २२६]

[१७] दुखदोख प्रभछँण सेवक १ रछँन सन्त प्र तछन शुद्ध सरे ॥ सारंग सनाहे दुष्ट मदाहे अरि दलगाहे दोख हरे ॥ गंजन गुमाने अतुल प्रवाने सन्त जमाने आद अंते ॥ जैजै हासी माहिखासुर मरदन साध प्रदँछन दुष्टहते [उक्त पता कविता अंक २२७]

(टिप्पणी) (१) सेवकोंकी रक्षक ॥

(१८) कार्ण कपाली मर्व महीली जोत जतीली तुन्द मते ॥ अष्टायुध चमकण शस्त्र झमकण दामण दमकणआद व्रते ॥ डुकडुक्की दमंके वाघ बवंके भुजां फरंके सुद्धगते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आद जुगाद अनाद मते ॥ (उक्त पता कविता अंक २२८)

(१९) चछरासुर मारन नर्क निवारन पतित उधारण एक भटे ॥ पाप१ बिहण्डग दुष्ट प्रचण्डण खण्ड अखण्डण काल कटे ॥ चन्द्रानन चारे नर्क निवारे पतित उधारे मुण्ड मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन धूम्र बिधुंसन आद कथे (उक्त पता कविता अंक २२९)

(२०) रक्तासुर मरदन चण्ड चकर्दन दानव अरदन विडाल बधे ॥ सरधार बिवरखण दुरजन धरखण अतुल अमरखण धर्मधुजे॥धुम्राछ बिधुँसन स्रोणत चूँसन सुंभनि पाति निसुंभ मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदअनील अगाधकथे ॥ (उ० प० क० अं० २३०)

[श्रीगुरु दसम पातसाही ग्रन्थ साहिब अकाल स्तुति त्रिभंगी छन्द २११ से २३१ तक]

(टिप्पणी) (१) पापों की विनासक ॥

मित्रो श्रीगुरु गोविन्द सिंह जी महाराज श्री दुर्गाजी के प्रेमी अनन्य भगत थे जो उक्त अकाल स्तुति के प्रमाणों से प्रगट है और दसमपातसाही ग्रंथसाहिब में हरेक पुस्तक के प्रारंभ्म में श्री भगवतीजी सहाय मंगलाचरण रूप अपना इष्ट लिखते हैं ॥ और श्रीकृष्ण चरित्र प्रारभ करते हुओंने अपना इष्ट दसम ग्रंथसाहिबजीमें श्रीदेवी (चंडिका) जी की कृपा कटाक्ष सेही लेखक और कथन शक्ती और श्रीदेवीजी के नाम जापसे कल्यान [संसारसागर से पारहोने के लिये] गुरु १० जी और कोईवसीला नहीं समझते थे जो और लोगोंकोभी उपदेश करगए हैं। यथा ॥

चौपाई ॥ काल पुरुष के बचनते संतन हेत सहाए । मथुरा मंडल के बिखे जन्म धरो हरी राय ॥ जे जे किसन चरित्र दिखाए। दसम बीच सभ भाख सुनाए ॥ ग्यारा सहस बानवे छन्दा। कहे दसम पुर बैठ अनन्दा ॥ अथ देवीजूकी स्तुति कथनम् ॥ ४ ॥

सवैया। होइ कृपा तुमरी हमपै तुसभै सगनं गुनही धरिहों। जी अधार विचार तबै वर बुद्धि महां अगनं गुनको हरिहों॥

(टिप्पणी) (१) नौका ॥

बिनचंड कृपा तुमरी कबहूं मुखते नहीं अक्षर हऊं करहों॥
तुमरो करनाम किधो तुलहा१ जिम वाक्य समुद्र बिखैतरिहों ५

दोहरा। रेमन भजतूं सारदा अनगन गुनहैं जांहि।
रचों ग्रंथ इह भागवत जउवै कृपा कराहि॥ ६॥

कवित्त। संकट हरन सभसिद्ध की करन चंडतारन तरन सरन लोचन बिसाल हैं॥ आदि जाकै आहि वहैअंतकोन पारावारू सरन उवारन करन प्रतिपाल है। असुर संघारन अनक दुःख जारन सुपातित उधारन छुडाए जमजालहै॥ देवीवर लायक सुबुद्धहूंकी दायक सुदेहवर पायक बनावै ग्रंथ हाल है॥ ७॥

सवैया। अद्रसुता हूंकी जो तनया महिखासुरकी मरता फुन जोऊ॥इंद्रको राजह की दिवया करता बध सुंभानिसुंभ दोऊ। जोजपकै इहसेव करै वरको सुलहै मन इच्छत सोऊ॥ लोक बिखै उहकी सम तुंल गरीब निवाज न दूसरकोऊ ८

इती श्री देवीजी की स्तुति समाप्त॥

मित्रो श्रीगुरुमत संसोधक कमेटी श्रीअमृतसर रिपोट सुधाई दसम पातसाही ग्रंथसाहिब जो सं० १९५४ बि०

(टिप्पणी) १ नौका॥

मुक्तबाटी में उक्त प्रमाण (ग्यारा सहिस बानवे छंदाकहे दसमपुर बैठ अनंदा) इत्यादि से श्रीगुरु गोविंदजीमहाराज कृत वाक्य सिद्ध किये हैं ॥ जिन से स्पष्ट प्रगट है श्रीगुरु १० जी महाराज श्रीदुर्गाजी को परम इष्ट मानते थे ॥ ताही उन्होंने दसम ग्रंथसाहिब में श्रीदुर्गाजी की स्तुति रूपतीन पुस्तके श्रीभगवतीजीकी वार पातसाही १० कृत औरचंडी चरित्र और उक्तिविळास उक्त तीन पुस्तक ५५० कविता अंकोंमें गुरुसाहिब ने श्रीदुर्गाजी की स्तुति की है उक्त प्रमाण अस्थाळी पाकन्याए ॥

श्रीगुरु गोविंदसिंहजी श्रीदुर्गाजीको परमइष्ट मानते हैं जिसकी सिद्धी के लिये इतिहासकप्रमाण और प्रत्यक्ष सबूत मौजूद हैं ॥

श्रीमान् पण्डित तारासिंह हरि नरोत्तम सुद्धीरचित पटेआळा निवासी जीने गुरुमतके सरवत्र इतिहाससार " श्री गुरु तीर्थ संग्रह,, नामक पुस्तक रचना की है जिसमें बुद्धिवानीसे सर्वत्र गुरुओं के गुरद्वारे और बनणका कारण और उनके यात्रा करनकी विधी और महातम वर्णन किया है॥ जोदैंपळप्रेस अंबाळा छावनी संवत् १९४१ वि० में छपी

से साफ गुरुघर में श्री दुर्गाजी इष्ट प्रगटहै ॥ मित्रो उक्त पण्डितजी गुरु घर में प्रमाणिक और माननीय पुरुष हैं श्री गुरुआद ग्रंथसाहिबकी भगतबाणीपर टिका और श्रीगुरुग्रंथ साहिब जीका कोश (गुरु गिरार्थ कोश) रचनाकेकारण॥

बद्री नारायण के आठकोश बराबर लोह पाल तालाब सप्त श्रिंग पर है वहां महाकाल और महाकाली का मंद्र है श्रीगुरु गोविन्द सिंहजी ने पूर्व जन्मतप किया।

उक्त तीर्थ संग्रह पृष्ट ९२ पंक्ती २ से ७ तक ॥

उक्त वृतान्त का नक्शा (चित्र) जिस में श्रीगुरु १० जी की इष्ट भगवती का मंद्र और तप स्थानादि प्रगट दिखलाये हैं उक्त तीर्थ संग्रह पृष्ट ९८ ॥

(नोट) श्रीगुरु गोबिन्द सिंहजी महाराज उक्त पते के अनुसार पूर्वजन्म तप करना और महाकाली (भगवती) को इष्ट मानना दसम ग्रंथ साहिब अपने जन्मइतिहास विचित्र नाटिक ग्रंथ अध्याय ६ में बर्णन करते हैं। कथा वखानूं ॥ तप साधित जिह विधु मुहे आनू ॥ हेम कुंड परवत है जहां ॥ सपतश्रृंग सोभित है तहां ॥ सपत शृंग

तह नाम कहावा। पण्डराज जह जोग कमावा।। तह हम अधिक तपस्या साधी। महा काल कालका राधी॥

अनन्दपुर सम्वत् १७५५ वि० श्रीगुरु गोविन्द सिंह जी के चित्त में तुर्क तेज परिहार करता पूर्वज इष्ट भगवती के प्रत्यक्ष करनेके लिये ब्राह्मण पुंज एकत्र कर यज्ञ क्रिया गुरुजी ने सभ से पूंछा॥ सभ ने केशवदासजी कासी निवासी का नाम बताया॥ उक्त तीर्थ संग्रह पृष्ठ ११८ पंक्ती १० और ११

कई महीने हवन हुआ श्री नैनादेवी वाले पर्वतपर (श्री दुर्गा जी के भवन समीप उक्त तीर्थ संग्रह पृष्ठ ११८ पंक्ती २१।

सं० १७५६ चैत्र शु० ९ रविवार डेढ महरदिन रहे गुरु १० जी को महाकाली भगवतीजी का दर्शन हुआ तेजस्वी पंथ खालसा रचने का वर दिया:.उक्त तीर्थसंग्रह पृष्ठ ११९ पंक्ती १ से ३॥

(नोट) गुरुमत के बडे२ विद्वान श्रीगुरु गोविन्द सिंहजी ने श्री दुर्गा प्रत्यक्ष कर पंथ रचने का वर पाया मानते हैं आनन्दपुर श्रीगुरु द्वारा के सगड साहिब

जहां खालसा धर्म्मकी नीव (बुन्याद) रक्खी उस जगह से दो तोपें श्रीगुरु १० जी के हाथ की दबी हुई निकसीं अष्टभुजी सेर बाहनी श्री दुर्गा जीकी मूर्ति वाली जो अब लहौर के अजायब घर में मौजूद हैं॥ पुस्तक रचइता लिखता है गुरु १० जीकी वस्तू अनन्द पुरहि चाहिये थी दरशन हेत ।

उक्त तीर्थ संग्रह पृष्ट १२९ पंक्ती ५ और ६ ।

(नोट) गिरो गुरु साहिब श्री दुर्गाजी के प्रेमभगत थे तांहीं उन्हों ने अपनी इष्ट की मानता (पूजन) के लिये मूर्त्ति नियत कराईथी ॥

आगरे बाग में श्रीगुरु गोविन्द सिंहजी उतरे वहांहीं बहादुर साह से सं० १७६४ वि० बैसाख में औरंगजेब मरे पश्चात मुलाकात हुई बहादुर साहकी बेनतीमान गुरु १० जी महीने ६ आगरे शहर में रहे ॥ जब बहादरशाह हकूमत पर बैठ दखणकी ओर चला तबगुरु १० जीपै अरजकरीःआपभी साथ चलो॥ श्री गोविन्द सिंहजी ने कहा हम नवराते पूजकर दशहरे पीछे चलेंगे ॥ तुम राजपूताना में चलो ॥ कुछदिन बाद गुरुजी बादशाह को जामिले ॥

उक्ततीर्थ संग्रह पृष्ठ १६० पंक्ती १ से ९ तक।

(नोट) मित्रो गुरु १० जी ने श्री दुर्गा जी के नवरात्रे श्री दुर्गा पूजन के आगे वादशाह की कुछ परवाह नहीं की श्री गुरद्वारा अनचला नगर साहिब सं० १७६५ में गुरु गोविंद सिंहजी नौकर गुलेखां ने अपने दादे पैडेखां का बदला लेने खातर नवराते पूजन करते नवमी को गुरु १० जी अकेले बैठे देख पेशकबजमारी। वरछी में घाव खुलगया नौकर का सिर सिखों ने उतारा गुरुजी के घाव पर टांके लगाय ११ दिन में घाव मिलगया। अगले दिन खबर हेत वहादुरसाह के अमीर (अहलकार) आए बडी कमान आगे धरी देखकर कहा महाराज ये कभी चढती भी है। गुरुजी ने झटपट जोर से चढाई वखी के टांके खुलगए। रुधिर बह निकला फिर टांके न लगाने दिये इस कारण गुरु साहिब परलोक पधारे॥ उक्त तीर्थ संग्रह पृष्ठ १६६ पंक्ती ८ से १० तक॥

(नोट) मित्रो श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज श्री दुर्गा जी की मानता (पूजन) में सं० १७५५ वि० से प्रवीरत हुए। सं० १७६५ वि० जोतीजोत समावन

[मृत्यु] तक श्रीदुर्गाजीको परमइष्ट मानते रहे और एकान्त बैठ भक्ती करते रहे इसी कारण परलोक पधारे।

श्रीअबचला नगर गुरुद्वारे में श्री भगवती जीका त्रिशूल जिसको दीपमाला और दशहरेको जिगा १ और फूल माला पहराईजाती है। उक्ततीर्थ संग्रह पृष्ठ१६८पंक्ती १०।

(नोट) श्री अमृतसर अकाल तुंग में सच्चखंड निवासी निरंकार का स्वर्णमई मंद्र है। उसके बाई ओर श्री हजूर अबचला नगर साहिब का नक्शा (चित्र)— १। गज लंबा १ चोडा संगमरमर पर कीमती बनाहुआ है जिसके मध्य श्री दुर्गा जी की मूर्ति के चफेरे गर्द्दन के शस्त्र हैं और मूर्ति के ऊपर गुरुमुखी अक्षरों से श्री देवी जीकी मूर्त्ति लिखाहुआ है । और इस प्रकार का चित्र श्री विवेक सर साहिब गुर द्वारेकी सज्जी ओरकी तंदरीमें दक्षिणकी दीवारपर उक्त प्रकार अबचला नगरका चित्रहै देखो गुरुमुखी पुस्तक श्री गुरु दसम लीला प्रश्नोतरी॥ कवीराज श्री बेदी साहिब श्रीबाबा गणेश सिंघ जी साहिबहै जो सं० ४१३ नानकसाही में वजीर हिन्द प्रेस अमृत

(१) जो महाराजो के सिरपर होती है॥

सर बिच छपी ॥ के सुफे १ से ६ तक ॥ अथ श्री दसम गुरूलीला प्रश्नोत्री लिख्यते ॥ लहौर की सिंहसभा ने नव प्रश्न लिखेथे तिनोंका क्रम सहित उत्तर जैसे गुरुजनों से सुना है तैसे कवि वेदी गनेशसिंह अल्पमती अलापन करता है ॥ सुफा ७ सतर६ से सुफा १० सतर १२ तक ॥

प्रश्न दूजा॥ देवी प्रगट करनेका संमत कौनथी ॥उत्तर॥ सं० १७५६ चेतसुदी नोमी रवीवार डेढ पैहर दिन रहे ते ग्यारमें महीने गुरू जीको महाकाली का दरशन हुआ ॥ प्रश्न तीजा॥देवी प्रगट करनेका हेत्तक्या था ॥उत्तर॥ श्रीमुख वाक दोहिरा ॥ ठाढ भयो मै जोर कर वचन कहा सिर नाइ ॥ पंथ चलै तव जगत्त मैं जव तुम करो सहाइ॥ १ ॥ पंथ के रचने को अर तुरका की सफा उठावणे को और हिन्दू धर्म रखने हेत प्रवल देवता महाकाली को प्रगट कीआ जैसे श्री रामचंद्र जीनै लंका मैं जान समें रामेश्वर शिवजी पूजेहैं ॥ और गुरू जीनै अपने पूर्व जन्म मै भी महाकाल और काली की उपाशना लिखी है ॥ श्री मुख वाक ॥ अवमैं अपनी कथा वखानो ॥ तप साधत जिह विध मुहि आनो ॥ हेम कुंड परवत है

जहां ॥ सप्त सिंग सोभत है तहां ॥ सपत स्रिंग तह नाम कहावा ॥ पंडराज जिह जोग कमावा ॥ तिह हम अधक तपस्या साधी । महाकाल कालका अराधी॥ १ ॥ बद्रीनारांयण के मारगमैं अबलग महा काल औरमहा काली के दोमंद्र छोटे छोटे है कड़ाह प्रसाद का भोग लगता है ॥ प्रश्न चौथा ।' देवी को बलीदान क्या दिया ॥ उत्तर ॥ श्री महांकाली प्रगट होनेके समे श्रीगुरू जीते बिना मंद्र मैं कोई नहीं रहाथा सभ भै करके पर बत के नींचको भाग गएथे ॥ देवी का तेज नहीं सैहस के कोटान कोट बिजलीआ जैसा चमतकारा और शब्द होताभिया गुरू जीनै अपनी चीची अगुरी के रुधर का पान कराया महाकाली को तिस समैं ॥ प्रश्नपंज मां ॥ पंडित को क्यों कहा आपसे पवीत्र होर कौन बली है ॥ उत्तर ॥ गुरूजीनै पंडित केशो दासको असे कहाहै कि अपने शरीर के रुधर से पवीत्र होर कौन बली है ॥ बिरोधाभास अलंकार है"॥

(नोट) इस अध्याय ८ में गुरुमत धर्मग्रंथों से भगवान नरसिंह ॥ भगवान बावन । भगवान रामचंद्र ॥ भगवान

कृष्णचंद्रजी अवतार और श्रीदुर्गाजी की मानता के लिये गुरुसाहिबों कास्पष्ट उपदेश है।मित्रो उनकी मानता मूर्तियों द्वारेही होसक्ती हैं सो हिन्दू लोगगुरु आज्ञानुसार मूर्तियों द्वाराही मानता (मूर्तिपूजन) करते हैं॥

" नवीनसिंह की शंका हिन्दू धर्मावलंबीका समाधान,,

(प्रश्न) गुरुमत धर्मग्रन्थों में मूर्ति पूजन की महिमा (स्तुति) कहीं नहीं है ॥

(उत्तर) मित्रवर गुरुमत धर्मग्रंथों में मूर्तिपूजन करने वालोंने मूर्तिके द्वारा ईश्वर (अकाल पुरुष की) प्राप्तिहो मोक्ष पाई औरमूर्तिपूजन की महिमा स्पष्ट प्रगट है ॥ एहविध सुनके जाटरो उठभगती लागा।मिले प्रतख१ गुसाई आपना धनधहभागा (श्रीगुरु आदग्रंथ साहिब राग आसावाणी धन्ना भगत छन्द २ तुक ४ जिसपर महाल्ले पांचकी तसदीकी है) [भावार्थ] उक्तछन्द का श्रीभाई गुरुदासजी वर्णन करते हैं ॥ यथा ॥ ब्राह्मण पूजेदेवते धन्नागउ चरावन आवे । धन्ने डिठा चलत२ एहुपुछे वा मण आख सुणावे ।' ठाकुरदी सेवाकरे जो इच्छे सो फल

(टिप्पणी) (१) प्रत्यक्ष (२) चरित्र ॥

पावे ॥ धन्ना करदाजो घड़ी[1]मैंभी देह इकजो तुधभावे ॥ पत्थर इक लपेटके धन्नेनू गौल खेहड़ा छुडावे। ठाकुरनूंन्ह वाल के छाह २ रोटीलै भोग चढ़ावै ॥ हाथ जोड मितना करे पैरी पै पै बहुत मनावे ॥ हौंभी मुंहन जुंठाल ३ सातूंरूठ मैं क्यों न सुखावे ॥ गो माई ४ परतख होए रोटी खाएछाह मुंह लावे। भोले भाव गोविन्द मलावै

(श्री भाई गुरुदास जी की बार १० पौडी १३)

दूधकटोरे गडवे पानी । कापिला गाएनामें दुहआनी ॥ दूध पिओ गोविन्दराय ॥ दूध पिओ मेरोमन पतयाए ॥ नहीं तो घरको वापुरसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोयनकटोरी अमृतभरी ॥ लै नामें हरिआगे धरी ॥ २ ॥ एक भगतमेरे हिरदेवसे। नामे देख नारायन हसे ॥ ३॥ दूध पिआ भगत घर गिआ ॥ नामें हरिका दर्शन भिआ ॥ ४ ॥ (श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब राग भैरो बाणी नामदेवजी शब्द १)

(भावार्थ) उक्त शब्दका श्रीभाई गुरुदासजी वर्णन करते हैं ॥ यथा ॥ कंमकितारिउ चालिआ नामदेवनू

(१) मिंनतां (२) लस्सी अर्थात् छाछ (३) भक्षण (४) साक्षात् ईश्वर ॥

आख १ सिधाया २ ठाकुरदी सेवा करीं दूध पिआवन कह समझाया । नामदेव स्नानकर कपला गाई दुहके ले आया ठाकुर नूंन्हवाल के चर्णोंदक ले तिलक चढाया ॥ हाथ जोड बेंनतीकर दूध पिओजी गोविन्देराया ॥ निचों ३ कर अराध्याहोएंग्राल दरश दिखाया ॥ भरीकटोरी नामदेव लै ठाकुर नूं दूध पिआया ॥ श्री भाइ गुरुदासजी की वार १० पौडी ११]

देवल ४ मधे लिंग ५ आच्छे ॥ [श्रीगुरु आदग्रन्थ साहिवराग टोडी वाणीनामदेव शब्द ३ तुक २]

[भावार्थ] उक्त शब्द से प्रगट है श्री गुरुग्रंथ साहिब जी देवल [मन्द्र] मध्ये [दरमियांन] लिंग [मूर्त्ति का चिह्न] अच्छे श्रेष्ठ कल्याणकारी ॥ बसीका मानता है ॥

जे ओहु अठि सठि तीरथ न्हावै ॥ जे ओहु द्वादस ६ सिला पुजावै । करै निंदसम बिरथा जावै ॥

(टिप्पणी) (१) आज्ञा (२) मार्ग चला (३) निश्चय (४) मंद्र (५) शिव लैंग अर्थात चिन ॥

[टिप्पणी] (६) वारामूर्ति ११ रुद्र १ सालिग्रांम ॥

[श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग गौंड बाणी रविदास भगत शब्द २ तुक]

[भावार्थ] उक्त शब्दमें मूर्त्तिपूजनका महात्म्य श्री गुरुग्रथ साहिबजी मानता है जो निन्दा करने से निष्फल१ जायगा ॥

श्रीगुरुनानक देवजी देवतों [मूर्त्तियों] के दर्शन और तीर्थयात्रा विधीसे हित खुदकी और लोगों को उपदेश करतेहैं देवाति २ आदरशन के तांई दुःखभूख तीर्थ किये ॥ खलडी ३ खपरी ४ चमडी ५ सिखा ६ सूत ७ धोती किनी ॥ तूं साहिब हउ सांगी ८ तेरा प्रणवै ९ नानक जात कैसी ॥ श्री गुरु आदग्रंथ साहिब राग आसा घर४ महल्ला १ शब्द ३३)

श्रीगुरु नानकदेवजी परमात्मा (अकाल पुरुष) का स्वरूपवर्णन करते हैं जिसकी पूजन होसक्ती है ।

---

(१) व्यर्थ (२) उक्त भाई गुरदास देवतोकी मूर्ति मानताहै (३) वकस यानी तोवरा (४) पात्र (५) मृगछाला (६) चोटी (७) यज्ञोपवीत (८) स्वागोवाला । (९) नमस्कार

तेरेबंके १ लोयण दन्त ३ रीसाला॥ सोहिणेनँक ४ कंचन ५ काया ६ सुयने की ढाला ७ सोवनढला कृष्ण८ माला जपहु तुसींसहेली ९ हो ॥ जमदुआरिनहोहु खडीआं सिख १० सुणहु महेली ११ हो । ७ ॥ श्री १२ रंगराती १३ फिर माती१४ उदक१५ गंगावाणी बिनवंत१६ नानक दास हरिका तेरी चाल १७ सुहानी १८ मधुराणी १९ वाणी ॥ (श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग वडहंस छंत महल्ला १ शब्द २ तुक ७-८)

नवीन सिंहकी शंका हिन्दू धर्मावलंबीका समाधान ॥

(प्रश्न) गुरुमत के धर्मग्रंथों में जड (मृतका, काष्ट, धातू आदि) से ईश्वर (अकाल पुरुष का प्रगट होनाकहीं प्रतीत नहीं होता ॥

(टिप्पणी) [१] सुंदर नेत्र [३] दांतसुंद्र [४] नाक (५] (६) स्वाण का शरीर [७] तरह (८) तुलसीकी माला [९] सर्वत्रको सखीभावसे उपदेश करते हैं [१०] शिक्षा [११ सखी [१२] लक्ष्मी (१३) रती अर्थात् क्रिड़ा (१४) उनमत्त [१५] जल [१६] चलना [१७] श्रेष्ठचाल [१८] मधुर [१९] उच्चारण करंणां ॥

(उत्तर) प्यारे मित्रों आंखे खोलकर गुरुमत के धर्म ग्रन्थों का देखो परमात्मा का जड वस्तुओं से प्रगट होना स्पष्ट प्रगट है ॥ यथा ॥

उक्त श्रीभाई गुरुदास जी की वार १० पौडी ११ और १३ उक्त परमाण में नाम देव और धन्ने को पत्थर की मूर्त्ति में पूजन करने से ईश्वर की प्राप्ती हुई और आद ग्रंथ साहिब जी थम्भे [जो पुख्ता मकानों में ईंट चुने धातु आदि से बने होते हैं] उससे ईश्वर का प्रगट होना कथन करता है ॥

[१] हरि तेरा कहा तुझ लए उबार खिनमाहि भिआनक रूप निकसिआ थम्भ उपाड [भैरों म० ३ श० २ तु० ४]

[२] थम्भ उपाडि हरि आप दिखाया। अहंकारीदैत्य मार पचाया [भैरों म० ३ श० १७१ तु० ९]

[३] प्रभथंभ ते निकस के बिसथार, हरनाखस छेदयो नख बिदार [बसंत कबीर श० ४ तु० ४]

[४] थम्भ फाड प्रगटिया नरसिंह रूप अपार श्री भाई गुरदासजी की वार १० पौडी २]

मित्रो ईश्वर सर्व व्यापक है जैसे दूध में घृत और काष्ट में अग्नि वैसेही परमात्मा व्यापक समझो ॥

[१] जिऊं वसंत्र १ काष्ट २ मझार ३ बिन संजम ४ नहीं कार्य ५ सार ।

[आद ग्रन्थ साहिब राग देवगंधारी महल्ला ५ शब्द ३४ तु. २]

(२) घिउ दूध विच जाणीयेको मरम न जाणी ॥ जिऊं बैसंतर काष्ट विच अलख वडाणी (श्रीभाई गुरु दासजी की वार २७ पौडी २२)

जिस विधि [युकती] से घृत और अग्नि प्रकटकर कार्य करलेते हैं वैसे ही मूर्ति पूजनादि प्रेम भगती से ईश्वर की प्राप्ती होसक्ती है । जहि२ संत अराधे ६ तहि२ प्रगटाथा ७ [आसा छंद म० ५ श्लोक ६]

मित्रो ग्रन्थ साहिब संत बेद और पुराण मानने वालों । [हिन्दुओं] को कथन करता है सन्त सभा मिल करहु व्याख्यान । स्मृति शास्त्र वेद पुराण ॥

[टिप्पणी] [१] अग्नि [२] लकडी (३) बीच (४) युक्ती अर्थात् तजवीज [५] काम [६] आराधना (७) प्रत्यक्ष ।

(श्री आद ग्रन्थसाहिब राग रामकली महल्ला ५ शब्द ५ तुक ४) सोई संत जी भावे राम (आद ग्रन्थ साहिब राग गौड महल्ला ५ शब्द १८ तुक १)

[नोट] संत [वेद पुराण] मानने वाले हिंदू मूर्ति में और मूर्ति से ईश्वर की पूजन द्वारा ईश्वर [अकालपुरुष] की प्राप्ती करसकते हैं जो उक्त गुरुमतके धर्म्म ग्रन्थों के प्रमाणोंसे प्रगट है ॥

क्या जप १ क्या तप २ क्या व्रत ३ पूजा ४ ॥ जाकें हृदै भाउ है दूजा ॥ १ ॥ रेजन मन माधव ५ स्यो लाइयै ॥ चतुराईन चतुर ६ भुज पाईयै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परिहारि लोभ ७ अरु लोकाचार ८ ॥ परिहारि काम क्रोध अहंकार ॥ २ ॥ कर्म करत बद्धे अहंमेव ९ ॥ मिल पत्थरकी करही सेव ॥ ३ ॥ कहु कबीर भगतीकर पाया । भोले भाइ मिले रघुराया १० ॥ ४ ॥

---

(१) ईश्वरका विशेष नाम जपना (२) जलधारा और पंच अग्न तितिक्षा (३) उपवास (४) मूर्तियों की पूजन (५) विष्णु (६) चरभुजा वाला (७) लालच (८) बनावटी दिखावा (९) अभिमान (१०) रामचन्द्रजी

श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग गौडी बाणी कबीर जी शब्द ६]

(भावार्थ) उक्त शब्दके अर्थ उलट पुलट करने में नवीनसिंह बडी कोशिस कर रहे हैं मगर (चतुराईन चतुर भुज पायैं) यह बडी भारी रुकावट पंडी हुई है जो मूर्त्ति-पूजन की सिद्धि से शब्दको विरुद्ध नहीं होने देती ॥

बारा वर्ष बालपनबीते । बीस वर्ष कुछ तप न कियो ॥
तीस वर्ष कुछ देवन पूजा । फिर पछताना बिरध भयो ॥

(श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग आशाबाणी कबीर भगत शब्द १९ तुक १)

[भावार्थ] उक्त शब्दों से मूर्त्ति पूजनादि का उपदेश स्पष्ट है ॥ इति ८ अध्याये ॥

अध्याये ९ ॥

दसों गुरु साहिबों के उत्पन्नहोने का कारण और सूक्ष्म जीवन चरित्र ।

यदा यदाहि धर्म्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थान मधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥(श्रीगीताजी अ०४ श्लोक७)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्म्मसंस्था पनार्थाय सम्भवामियुगेयुगे॥(श्रीगीताजी अ० ४ श्लोक ८)

इसी अंसके अनुसार पुराणों १. में श्री गुरु नानकदेवजी को अवतारता निरूपण की है ॥

एवं वैधर्म्म प्राचुर्य्यं भविष्यति यदा कलौ ॥ ३३ ॥
तदा वै लोक रक्षार्थं म्लेच्छानांनाश हेतवे । पश्चिमेतु शुभे देशे वेदी वंशेचनानकः ॥ ३४ ॥

(भविष्यतपुराण पूर्वभाग अध्याय २८श्लोक३३ और३४)

[भावार्थ] कलु में धर्म नास होनेपर रक्षा मलेक्षों के नास के लिये पश्चिम देश बेदी बंस में नानक जी उत्पन्नहोंगे ।

सतजुग तै मारयों २ छल्यो बालि बावनभायो॥ त्रेतै तैंमारयों रामरघुवंश कहायो॥द्वापुरि कृष्णमुरारि कंसकृतारथ कीयो ॥

टिप्पणी (१) बंबई के छपे भविष्यत पुराण में गुरू नानक जी की अवतारता के उक्त श्लोक नहीं है ॥ पड़ताल करने से पतालगा तो बनावटी साबित हुआ ॥

(२) इच्छा ।

उग्रसैणको राजु प्रभंजन भगतनदियो ॥ कलिजुग प्रमाण नानक गुरु अंगद अमर कहायो ॥ श्री गुरुराज अविचलु अटलु आदि पुरुष फुरमायो ॥

(श्री गुरु आदग्रन्थ साहिब सवैये महल्ला १ के सवैया ७)

मित्रो दसों गुरु एकरूप पूर्व अवतारोंकी तरह गुरुमत में अवतार हैं ॥

(प्रथम श्रीगुरुनानकजी का सूक्ष्म जीवन चरित्र)

गुरुनानकजी वेदीखत्री जन्म सम्वत१५२६ विक्रम कार्तिक सुदी १५ रोहणी नक्षत्र ॥ राये भोदी तलवण्डी में अवतार धारिआ ॥ पिताकालूजीमाता त्रिपदा धर्म्मपत्नी सुलखणी दूजानाम चोणी सन्तान । श्री चन्दजी जिस्से उदासी साधू चारधुणे चले और लक्ष्मीदास जिस्से वेदी वावे चले आयू ६९ वर्ष १० मास १० दिन छोटीउमरमें वैष्णवसाधूओंकी सेवाकर गुरयाइ प्राप्तकी बावर वादशाह के समिय इन के उपगुरु श्री वावा बुढा मृत्यु जोतीजोत समाये सं० १५९६ वि० असूवदी १० करतारपुर रावी नदी के समीप शरीरका वियोग हुआ जिनके पृथिवीभर में गुरद्वारे६४ है ॥

श्री गुरु नानक देवजी का मनो मई सिधान्त सनातन हिन्दू धर्म्मीओं जैसा है जो उन के श्री मुख बचन आदग्रंथ साहिबजी के शब्दों से प्रगट है ॥

आसाकी वार महाल्ला १. श्लोक ४

एक * कृष्णं सर्वदेवा । देव देवता आत्मा।आत्मा वासु देवसि जेको जाणै भेउ । नानक ताका दास है । सोई निरंजन देउ ॥ ४ ॥

नोट ॥ मित्रो गुरू साहिब भगवान श्रीकृष्णजी के हिन्दूओं की सद्रिस प्रेमीथे ।। उक्त हिंदूओं ऐसा कृष्ण है जो विंद्रावन में रास आदिक करनेवाला ॥ देखो आसाकी वार महाल्ला १. श्लोक १.३ गुरू नानकजी कथन करते हैं ॥

जुजमाहि * जोर छली चंद्रावलकान। कृष्ण दाजम भिआ पारजाज गोपी लैआया विन्द्रावन में रंग किया ॥ मित्रो येही कृष्ण वसुदेव का पुत्र है ॥

आदग्रंथ साहिब राग गौड़ी महाल्ला १ अष्टपदी शब्द १

अहै • गर्बु कीआ नहीं जानिआ॥ बेंदकी विपत्त पड़ी

* राजाहुं मैं कोंमका इन्द्र मेरा नाम ॥ इस धारणापरगाओ ॥

• वलोचा जालमा इस धारणापर गाओ ॥

पछुतानिआ ॥ जइ प्रभ सिमरे तही मन मानिया ॥ १ ॥
ऐसा गर्वुबुरा संसारे जिसु गुर मिलै तिसु गर्भ निवारै ॥ १
रहाउ॥ वलिराजा माया हंकारी। जगन करै वहुभार अफारी।
विन गुर पूछे जाए पयारी ॥ २ ॥ हरी चंदु दानकरै जसु
लेवै। विन गुर अंतन पाया भेवै। आपि भुलाइ आप मति
देवै ॥३॥ दुरमाति हरनाखसु दुराचारी। प्रभु नारायण गर्व
परहारी। प्रल्हाद उधारे किरपा धारी ॥ ४ ॥ भूलो रावण
मुगध अचेत ॥ लूटी लंका सीस समेत। गर्व गिआ विन
साति गुरहेत ॥ ५ ॥ सहसवाहु मधुकीट महिखासा। हरणा
खसुले नखहु विधासा ॥ दैत संघारै विन भगत्ति अभ्यासा
॥ ६ ॥ जरासिंधि कालजमन संघारे। रक्तवीजु कालनेमु
विदारे। दैत्त संघार संत निसतारे ॥ ७ ॥ अपे सतिगुर
शब्दु विचारे। दुजै भाइ दैत्त संघारे। गुरमुखि साच भगत
निसतारे ।८॥ वूडा दुरजोधन पतिखोई। राम न जानिआ
करता सोई। जनको दूख पचै दूख होई। जनमेजै गुर
शब्द जानिआ ॥ ९ ॥ किउ सुखपावै भ्रम भुलानिआ।
इकु तिलु भुले वहुर पछतानिआ ॥ १० ॥ कंस केस चंडूरन
कोइ। रामन चीनिआ अपनी पतखोई। विन जगदीसन

राखैकोई ॥ ११ ॥ विन गुर गवुंन भेटिआ जाइ । गुरमाति धर्म्मु धरिज हरि नाइ । नानक नाम मिलै गुण गाए ॥१२॥

(दुतीय गुरु अंगद जीका सूक्ष्म जीवन चरित्र)

अंगद जीका दुसरा नाम लेहणा तेहणखत्री जन्म सं० १५६१ वि० वैसाख सुदी १ भरणी नक्षत्र हीरे मते की सराय में उत्पन्न हुए । पिता फेरू माता रामो धर्म पत्नी खीवी संतान ४ दातू दासू बालक अमरो अणोखी कन्या । आयू ४७ वर्ष ११ महीने ८ दिन । हमायूं बादशाह के सामिय गुरयाइ मिलन सं० १५९६ वि० असुवदी ५ उपगुरू बावा बुढा ॥ जोतीजोत समावन [मृत्यु] सं० १६०९ वि० चैत्र शु० ४ खंडूर में शरीर का व्योग हुआ जिनके पृथवी भरमें गुर द्वारे ७ हैं ॥

श्री गुरु अंगद जीका मनोमई सिधान्त सनातन हिन्दू धर्म्मीओं जैसा है जो उनके श्रीमुखवचन आदग्रंथ साहिबजी के शब्दसे प्रगट है ॥ आदग्रंथ साहिब राग मल्हार की वार महाल्ला २ श्लोक ३ की पौड़ी ।

ब्रह्मा × विष्णु महेश देव उपाया ।·ब्रह्मे दिते वेद पूजा लाया । दस अवतारी राम राजा आया । दैता मारे धाए हुकम सवाया । इश महेसुर सेवतनी अंतुन पाया । सच्ची कीमत पाए तखत रचाया ॥ दुनीआं धंधे लाइ आप छपाया । धर्म्म कराए कर्म धुरहु फुरमाया ॥ ३ ॥

(तीसरे गुरू अमरदासजी का सूक्ष्म जीवन चरित्र)

गुरू अमरदास भल्ला खत्री जन्म सं० १५३६ वि० बैसाख शु० १४ नक्षत्र क्रितका वासूरके ग्रम में उतपन्न हुए पिता तेजा मातलक्ष्मी धर्म्मपत्नी रामों संतान ३ मोहण मोहरी [२] बालक विवी मानी कंन्या ॥ आयू ९५वर्ष ४मास १ दिन अकबर बादशाह के समें गुरयाई मिलन सं० १६०९ वि० चैत्र शु० १ उपगुरू बाबा बुढा ॥ जोतीजोत समावन [मृत्यु] सं० १६३१ वि० भाद्रो शु० १५ गोयंद वाल में शरीर का व्योग हुआ। जिनके पृथवीभरमें गुरुद्वारे ११ हैं ॥

[२] मोहरीका बेटा अरयाणी जी अरयाणी का बेटा सुन्दरजी वाणी सदंबे गुरु हुकम करता जो आद ग्रंथ साहिब राग रामकली में है ।

× भगती करो जन जन्म सुधारो इस वेहरपर गाओ ॥

श्री गुरू अमरदासजी का मनोंमई सिधान्त सनातन हिन्दू धर्म्मीओं जैसा है जो उनके श्री मुख बचन आदग्रंथ साहिवजी के शब्दों से प्रगट है ॥

आदग्रंथ साहिव राग भैरों अष्टपदी महाल्ला ३ शब्द ५९

नित* करते इक चलत उपाया। अनहद बाणी शब्द सुणाया। मन१ मुख भुले गुरमुख२ बुझाया। कारणकरता करदाआया ।१॥ गुरका शब्द मेरेअंतर ध्यान। हौं कवहूंन छोडू हरिका नाम ॥ १ रहाउ ॥ पिता प्रल्हाद पठन पठाया। लैपाटी पाधे के आया। नाम विना न पड़हु आचार। मेरी पटीआ लिख देहु गोविंद मुरार ॥ २ ॥ पुत्र प्रल्हादस्यों केहा माई। पर विरती न पड़हु रही समझाई। निरभे दाता हरि जिउ मेरे नालजे हरि छोडु तौ कुल लागे गाल ॥ ३ ॥ प्रल्हाद सभ चाटड़े३ विगारे। हमरा काहि न सुणै अपणे कारज सवारे ॥ सभ नगरी महिं भगति द्रिड़ाई। दुष्ट सभाका किछु न वसाई ॥४॥ संडै४ मरकै की पुकार। सभे दैत रहे

[१] नास्तक [२] आस्तक [३] विद्यार्थी [४] पध्यापक।

* जिसगाडी में चलनाध्यारे वोहगाडी अब त्यार है। इस धारणा पर गाओ ॥

झखमार। भगत जनाकी पति राखै सोई।कीतेकै कहिअै क्या होई ५॥किरत संजोगी दैतराजु चलाया। हरि न बुझै काल नेड़ै आया॥६॥प्रल्हाद कोठे विच.रखिया बाहिरदीआ ताला। निरभउ बालक मूलन डरई मेरेअंतरगुरू गोपाला। कीचाहोवै सरीकी करै अणहोदा नाउधराया। जो धुर लिख्या सो आइ पहुता [1] जन सिउ बाद रचाया। ७॥ पिता प्रल्हाद सिउ गुरज उठाई। कहां तुमारा जगदीश गुसाई। जगजीवन दाता अंतसखाई। जह देखा तह रहिया समाई ॥ ८ ॥ थंमु उपाड़ि हरि आप दिखाया। अहंकारी दैतु मारपचाया भगता मन अनंद बजी वधाई। अपने सेवकको देव डिआई ॥ ९ ॥ जमण मरण मोहु उपाया। आवण जाणाकरतै लिखाया। प्रल्हादके कारज आप दिखाया। भगतांकाबोल आगे आया ॥ १० ॥ देवकुली लखमी को करहिं जैकार। माता नरसिंहका रूप निवारू। लखमीभौकरै नसाकै जाइ। प्रल्हादजन चरणी लागाआए ॥ ११ ॥ सतिगुरु नाम निधान द्रिड़ाया। राज माल झुठी सबमाया। लोभी नर रहे लपटाए। हरि के नाम बिन दरगेह मिलै सजाइ१२

---

[१] पहुंचा ॥

कहु नानक सभको करे कराया । से परवाण जिनि हरसिउ चित लाया । भगताका अंगीकार करदा आया । करते अपणा रूप दिखाया ॥ १३ ॥

(चौथे गुरू रामदास जी का सूक्ष्म जिवन चरित्र)

गुरू रामदास जी सोढी खत्री जन्म सं० १५८७ वि० कार्तिकव०२ नक्षत्र चित्रा लहौर में उतपन्न हुए । पिता हरि दास माता दासी । धर्म्मपत्नी भानी जी संतान ३ पृथिआ । महादेव । गुरु अरजन । वालक ॥ आयू ५१ वर्ष १० मास १६ दिन जहांगीर वादशाह के समिय गुरुयाई मिलन सं० १६३१ वि० भाद्रों शु० १३ उपगुरु वावाबुढा जोती जोत समावन (मृत्यु) सं० १६३८ वि० भाद्रों शु० ३ गोयंद वालमें शरीरका ब्योगहुआ जिनके पृथ्वीभरमें गुरद्वारे ९ हैं श्री गुरू रामदास जी का मनों मई सिधान्त सनातन धर्म्मी हिन्दूओं जैसा है जो उनके श्री मुख वचन आद ग्रंथ साहिब जीके शब्दों से प्रगट है ॥

आद ग्रंथ साहिव राग मारू महल्ला ४ शब्द १

जपिओ * नाम शुक जनक गुर बचन हरि हरि सरणि

---

* पाछैरे अचद् हे मनवारा प्याला प्रेम हारेरसकार ॥ इसधारणापर ग.श्रो ।

परे। दाल दुभंज सुदा में मिल्यों भगती भाएतरे। भगति
वछल हरिनाम कृतार्थ गुरमुख कृपकरे ॥ १ ॥ मेरे मन नाम
जपत उधरे। ध्रू प्रल्हाद विदर दासी सुत गुरमुख नाम
नाम तरे ॥ १ रहाउ ॥ कलिजुग नाम प्रधान पदार्थ भगत
जना उधरे। नामा जैदेउ कबीरू त्रिलोचन साभि दोख गए
चमरे। गुरमुख नाम लगे से उधरे। सभ किल विख
पापटरे ॥ २ ॥ जोजो नाम जपै अपराधी सभि तिनके दोख
परहरे। वेस्वा रवत अजामल्लु उधरे ओ मुखबोलै नारायाण
नरहरे। नाम जपत उग्रसैण गत पाई। तोड़ वंधन मुक्ति
करे ॥ ३ ॥ जनको आप अनुग्रह कीआ हरि अंगीकारू
करे। सेवक पैज रक्खै मेरा गोविंद सरण परे उधरे। जन
नानक हरि कृपाधारी उरधरेओ नाम हरे ॥ ४ ॥

आद ग्रंथ साहिब राग सोरठ महाल्ला ४ शब्द ६

आपे ÷ सेवा लायदा प्यारा आपे भगत उमाहा। आपे गुण
गायदा प्यारा आपे शब्द समाहा। आपे लेखण आप
लिखारी आपे लेख लिखाहा ॥ १ ॥ मेरे मन जप राम नाम
ओमाहा ॥ १ रहाउ ॥ आपे गोपी कानु है प्यारा। बनि

÷ देखोरी इक बालायोग! दूरे मेरे आबारी ॥ इसधारणा पर गाओ ॥

आपे गऊ चराहा ॥ आपे सावल सुंद्र प्यारा आपे वंस वजाहा ॥ कुवलीआ पीड़ आपि मराएदा प्यारा कारि वेखै अअचो जाहा कर बालक रूप उपायदा प्यारा चंडूर कंस केसु मराहा ॥२॥ आपोहि बलु आपहै प्यारा वल भंनै मूरख मुग धाहा ॥ ३ ॥ सभु आपे जगत उपायदा प्यारा वस आपे जुगत इथाहा ॥ गलजेवड़ी आये पायदा प्यारा जिऊ प्रभु खिंचै तिऊं जाहा ॥ जो गर्वै सो पचसी प्यारे जपनानक भगत समाहा ॥ ४ ॥

आद ग्रंथ साहिब राग नटनारायन महाल्ला ४ अष्टपदी शब्द ३ तुक १ । २

संगतका ※ गुन बहुत अधिकाई । पड़ सूआ गनका उधारे परशन परस भए कुबजा को लै वैकुंठ सिधारे ॥ १ ॥ अजामरल भीत पुत्र माते कीनी कारि नारायण बोलारे ॥ मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी जमकंकर मार विदारे ॥ २ ॥

आद ग्रंथ साहिब राग बसंत हिंडोल महाल्ला ४ अष्टपदी शब्द ९ तुक ४

दीनद्याल ※ भए है जिउ कृष्ण विदर घरआया ॥ मिल्यो

※ पीकैर अबधू हामत वाळा ॥ इस धारना परगाओ ※ राजहुं मैं कांय का ॥ इस धारना परगाओ ॥

सुदामा भावनी धार सभ किछु आगै दाल कुभंज समाया ॥४॥

(पंजमे गुरू अरजन जी का सूक्ष्म जिवन चरित्र)

गुरु अरजन देवजी सोढी खत्री जन्म सं० १६१० वि० वैसाख शु० ७ नक्षत्र रोहणी गोयंदवाद में उत्पन्न हुए। पिता गुरु रामदास माता भानीजी धर्म्मपत्नी गंगा संतान १ गुरू हरगोविंद जी आयू ५३ वर्ष १ मास १३ दिन जहांगीर वादशाहके सामिय गुरयाई मिलन सं० १६३८ वि० भाद्रों शु० २ गुपगुरू वावा बुढा ॥ जोती जोत समावन (मृत्यु) सं० १६६३ वि० जेष्ठ शु० ४ लहौर में शरीर का व्योग हुआ जिन के पृथ्वी भर में गुरद्वारे ३३ हैं)

श्री गुरू अरजन देव जी का मनोमई सिधान्त सनातन हिन्दू धर्म्मीओं जैसा है जो उनके श्री मुख वचन आद ग्रंथ साहिब जी के शब्दों से प्रगट है ॥

आद ग्रंथ साहिब राग वसंत महाल्ला ५ अष्टपदी शब्द १

सुण*साखी मन जप प्यार॥अजामल्ल उधरिआ कहि एकवार ॥ वालमीकै होआ साध संग। ध्रू को मिलया

* कन कुड़े मनमत कुड़ देस विगाने जानाहै ॥ इस धारणापरगाओ ॥

हरि निसंग ॥ १ ॥ तेरिया संता जाचउ चरन रेन ॥
ले मस्तक लावउ करि कृप देन ॥ १रहाउ ॥गनका उधारी
हरिकहै तोत ॥ गज ईंद्र ध्याओ हरि कियो मोख ॥ विम
सुदामें दाल दुभंजरे मन तूंभी भजगोविंद ॥ २ ॥ वधकु
उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबजा उधारी अंगुष्ट धार ॥
बिद उधारिओ दासत भाय ॥ रेमनं तभी हरि ध्याये ॥ ३ ॥
प्रलहाद रक्खी हरि पैज आप ॥ वसत्र छीनत द्रोपती रक्खी
लाज ॥ जिन जित सेविआ अंतवार ॥ रेमन सेवत परहपार
॥ ४ ॥ धंनै सेविआ वाल १ बुद्ध ॥ त्रीलोचन गुर मिल
भई सिद्ध ॥ बेणी को गुर किया प्रगास ॥ रेमन तूभी हो-
हि दास ॥ ५ ॥ जैदेवति आज्ञो अहंमेव ॥ नाई उधरे
ओ सैन सेव ॥ मन डिग न डोलै कहुं जाइ ॥ मन तूभी
तरसह सरण पाए ॥ ६ ॥ जिहु अनुग्रह ठाकुर कीओ
आप सेतैं लीनें भगत राख ॥ तिनका गुण अवगुण न
विचारिओ कोइ ॥ इहाविधि देख पनु लागा सेव ॥ ७ ॥
कवीर ध्यायो एक रंग नामदेव हरि जीउ वसह संग ॥

---

(१) वक पुष्ट बुद्धी ॥

रविदास ध्यायो प्रभु अनूप ॥ गुरू नानक देव गोविंद रूप ॥ ८ ॥

आद ग्रंथ साहिब राग मारू महाल्ला ५ शब्द ३

पांच ※ वर्ष के अनाथ धू बारिकु हरि सिमृति अमर अटारे ॥ पुत्र हेत नारायण कहियो जमकंकर मार बिदारे ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर केते अगनित उधारे ॥ मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरण दुआरे ॥ १ रहाउ ॥ बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥ एक निमख मन माहि अराधिओ गजपति पार उतारे ॥ २ ॥ कीनी रखिआ भगत प्रल्हादै हरिनाखस नखहि बिदारे ॥ बिदुरू दासी सुत भयो पुनीता सगले कुल उज्यारे ॥ ३ ॥ कवन अपराध बतावउ अपने मिथ्या मोह मगनारे ॥ आयो साम नानक ओट हरिकी लीजै भुजा पसारे ॥ ४ ॥

[छेमें गुरु हरि गोविंदजी का सूक्ष्म जीवन चरित्र]

गुरु हरगोविंद सोढी खत्री जन्म सं० १६५२ वि० हाड़ व० १ नक्षत्र पुण्य वडाली ग्राम में उतपंन हुए ॥ पिता

※ पीलैरे अवधू होमतवारा प्याला प्रेम हरि रस करे ॥ इस धारना पर गाओ ॥

गुरु अरजन माता गंगा धर्म्म पत्नी ३ दामोदरी १ मरवाही २ नानकी ३ संतान ६ गुरदिता ※ १ सूर्य्यमल्ल ÷ २ अणीराय ३ अटलराय ४ गुरु तेगबहादर ५ बालक बीबी बिरो एक कन्या ६ आयू ४७ वर्ष ८ मास २ दिन जहांगीर बादसाह के साथ गुरयाई मिलन सं० १६६३ वि० जेष्ठव० ८ उपगुरु बाबा बुढा जोती जोत समावन (मृत्यु) सं० १७०१ वि० चैत्र शु० ५ कीरतपुर में शरीरका व्योग हुआ ॥ जिनके पृथ्वीभरमे गुरद्वारे १९ है ॥

श्री गुरु हरगोविंदजीका मनोमई सिधान्त सनातन हिन्दू धर्मीओं जैसाहै जो गुरमत इतांहास ग्रंथों से प्रगट है हिन्दू रीति अनुसार पिता के पश्चात अपने दो विवाह और अपने बालक कंन्याओं के विवाह और तीर्थों पर जाकर ब्राह्मणों को दान देना आदि से साबित है ॥ ग्रंथ साहिब में इनका कोइ शब्द नहीं ॥

(सत में गुरु हररायजीका सूक्ष्म जीवन चरित्र)

गुरु हररायजी सोढी खत्री जन्म सं० १६८६ वि०

※ बाबे गुरदिते से करतारपुरके सोढी बंसचला।

÷ सूर्य्यमलसे अनन्दपुर सोढी बंस चला॥

माघ व० १३ नक्षत्र भरणी कीरतपुरमें उतपंनहुए॥ पिता बाबा गुरदिता पिता सुकर्मभरी ॥ धर्मपत्नी ८ कृष्णी १ कोखी २ अणोखी ३ प्रेमो ४ लड्डीकी ५ रामो ६ चंदो ७ एक खत्री कन्या खवासन ८ ॥ संतान २ गुरु रामराय १ गुरु हरिकृष्ण २ बालक आयू ३१ वर्ष ८ मास २२ दिन उपगुरु बाबे बुढेका पुत्र भाई भंडाजी ॥ गुरयाई मिलन सं० १७०१ वि० चैत्र व० ११ औरंगजेब बादशाहके समय ॥ जोती जोत समावन (मृत्यु) सं० १७१८ कार्तिक व० ९ कीरतपुरमें शरीरका त्याग हुआ जिनके पृथीभ में गुरद्वारे बने।

श्री गुरु हररायजी का मतां ई सिखना सनातन हिन्दु धर्मीओं जैसा है जो गुरमत इतीहास ग्रंथों से प्रगट है। हिन्दु रीति अनुसार कुरुक्षेत्र और श्रीगंगाजी पर सर्वांव दान करने से साफ साबत है ॥ और उनका ग्रंथ साहिब में कोई शब्द नहीं।

(आठमें गुरु हरिकृष्ण जीका सूक्ष्म जीवन चरित्र)

गुरु हरिकृष्ण सोढी खत्री जन्म सं० १७१३ वि० सावन व० ९ नक्षत्र पुनर्वसु कीरतपुर में उतपंन हुए ॥ पिता गुरु हररायजी माता कृष्णी ॥ बाल्यअवस्था के कारण विवाह

और संतान नहीं हुई ॥ आयू ८ वर्ष ८ मास १९ दिन उप गुरु उक्त झंडा जी औरंगजेब बादशाहके समिय गुरयाइ मिलन सं० १७१८ वि० कार्तिक व० ८ जोती जोत समावन (मृत्यु) सं० १७२० चैत्र शु० १४ दिली में शरीरका वियोग हुआ जिनके पृथ्वी भरमें गुरद्वारे ५ हैं ॥

श्री गुरु हरि कृष्ण जीका मनोमई सिधान्त सनातन हिन्दूओं का ।। है सो गुरमत इतिहास ग्रंथों प्रगट है। जो हिन्दूओंको गाढ़े । श्रीमद् भागवत गीता जीका वाल्यवस्था मे कंठकर [illegible] साफ साबित है ॥ और इनका ग्रंथ साहिब में कोई शब्द नहीं ॥

(श्री गुरु तेग बहादुर जीका सूक्ष्म जीवन चरित्र)

गुरु तेगबहादुर सोढी खत्री जन्म सं० १६७८ वि० हाड़ व० १३ [illegible] अमृतसर में उत्पन्न हुए । पिता गुरु हरगोविंद [illegible] माता नानकी धर्मपत्नी गुजरी संतान (गोविंद-दासजी आयु [illegible] वर्ष ८ मास ४ दिन ॥ औरंगजेब बादशाह के समिय गुरयाई मिलन सं० १७२१ वि० चैत्र शु० १४ उपगुरु उक्त झंडाजी ॥ जोती जोत समावन (मृत्यु) सं० १७३२ वि० माघ शु० ५ दिल्ली चानणी चौक में (तिलक

यज्ञोपवीत (हिन्दू धर्म) की रक्षा खातिर) शरीरका व्योग हुआ ॥ जिनके पृथ्वीभरमें गुरद्वारे १०० हैं ॥

श्री गुरु तेगवहादुरजीका मनोमई सिधान्त सनातन हिंदू धर्म्मीओं जैसाहै जो उनके श्रीमुख वचन आदग्रंथ साहिवजी के शब्दों से प्रगट है ॥

(आदग्रंथ साहिव राग बिलावल महाल्ला ९ शब्द १)

दुख ※ हरता हरिनाम पछानो॥ अजामल्ल गनका जिह सिमरत मुक्ति भए नांअ जानों ॥१रहाउ॥ गजकी त्रास मिटी छिनहुं महि जवही राम वखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रू वारिक भजन माहि लपटानो ॥ अचल अमर निरभै पद पायो जगत जाए हैरानो ॥ नानक कहत भगत रछक हरि निकट ताहि तुम मानो २ ॥

आद ग्रंथ साहिव राग मारू महाल्ला ९ शब्द १

हरि ※ को नाम सदा सुखदाई ॥ जाको सिमर अजामल्लु उधारिओ गनकाहुं गत पाई ॥ १ रहाउ ॥ पंचाली

※ रथमें रघुनन्दन आवत हैं चलो सखी अब दर्शन करीये ॥ इस भजन पर गाओ ॥

※ रथमें रघुनन्दन आवत है इस भजनपर गाओ।

को राज सभामैं रामनाम सुधआई ॥ ताको दुख हरिओ करुणामैं अपनी पैज बढाई ॥ १ ॥ जिह नर जसु किरपा निधि गायो ताकों भियो सहाई ॥ कहु नानक मैं इही भरोसै गही आन सरनाई ॥ २ ॥

आद ग्रंथ साहिब राग गौड़ी महाल्ला ९ शब्द ५

साधो ※ गोबिंद के गुनगावो। मानस जन्म अमोलक पायो बिरथा काहि गवावहु ॥ १ रहाउ ॥ पतित पुनीत दीन बंध हरि सरन ताहि तुम आवो ॥ गजको त्रास मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावो ॥ १ ॥ तजि अभीमानु मोह माया फुनि भजन राम चित्त लावउ ॥ नानक कहत मुक्त पंथ इहु गुरमुख होइतु पावउ ॥ २ ॥

आद ग्रंथ साहिब राग सोरठ महाल्ला ९ शब्द ४

मनरे ÷ प्रभु की सरण बिचारो ॥ जिह सिमृत गनका सी उधरी ताको जस उरधारो ॥ १ रहाउ ॥ अटल भयो ध्रूअ जाकै सिमरनि अरु निरभै पद पायो ॥ दुखहरता इहि बिध को स्वामी तै काहे बिसरायो ॥ जबही सरन गही कृपा निध

※ रामायण पंजाबी तरज परगाओ यथा रामकहिआवा रामकहआव ।

÷ पंजाबी तरज रामायण पर गाओ ॥

गज ग्राहते छुटा। महिमा नामु कहालउ बरनउ रामकहत बंधन तिह तूटा। २ ॥ अज मइल पापी जगु जाने निमख माहि निस्त रा ॥ नानक कहत चेत चिन्ता मन तैं भी उतरत पारा ॥३॥ आदग्रन्थ साहिब राग रामकली महाल्ला ९ शब्द १ रेमन ÷ ओट लेहु हरि नाम। जाके सिमरन दुरमत नासै पावह पद निरबाना । १ रहाउ । वडभागी तिह जगको जानउ जो हरिके गुनगावै जन्म जन्मके पाप खोयके फुनि वैकुंठ सिधावै ॥ १ ॥ अजामल्ल कउ अंतकाल मैं नारायन सुधआई। ज ग ति को जोगीश्वर वाछत सोगाति छिन माहि पाई ॥ २ ॥ नाहन गुन नाहन कछु विद्या धर्म्म कान जगकाना ॥ नानक विरद रामका देखहु अभैदान तिह दीना ॥ ३ ॥

आद ग्रंथ साहिब श्लोक महाल्ला ९ श्लोक ४६

तीर्थ * बर्त अरु दान कारे मनमैं धरे गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनान ॥ ४६ ॥

उक्त पता श्लोक ५३

बल ※ छुटा किओ बंधन परे । कछु नहोत उपाए ॥ कहु

टिप्पणी ÷ पंजाबी तर्जरामायण की चौपाई परगाथा * राजाहुं मैं कोमका इसतरज परगाथा ※ राजाहुं मैं कोमका इस तरज परगाथा ॥

नानक अब ओट हरि गज जिऊं होए सहाए ॥ ५६ ॥

(दसम गुरु गोविंद सिंह जीका सूक्ष्म जिवन चारित्र)

गुरु गोबिंद सिंह जीका नाम दरअसलमें गोविंददास है जो सोढी खत्री जन्म सं० १७१३ वि० पोह शु० ७ नक्षत्र सतभिखां पटने शैहर में उतपंन हुए । पिता गुरुतेग बहादर माता गुजरी ॥ धर्मपत्नी ३ जीताजी१ सुंद्री२ साहिबदेई ३ संतान४ अजीतसिंह१ जुझार सिंह२ जोरावरसिंह३ फतेसिंह४ बालक आयू ४२ वर्ष १ मास २८ दिन औरंगजेब बादसाह के समिय गुरयाई मिलन सं० १७३२ वि० मघर शु० ३ उपगुरु बावे बुढेका पोता भाई रामकौर ॥ जोतीजोत समावन (मृत्यु) सं० १७६५ वि० कातिक शु० ५ अबचला नगर में शरीरका वियोग माहजांहा बादसाह के समिय हुआ । जिनके पूज्य धरमें गुरद्वारे १६७ हैं ॥

गुरु दसम जीका धर्मोपदेश सिधांन्त सनातन हिन्दू धर्म्मी ओं जैसा है जो उनके श्री मुख बचन दसम ग्रन्थ साहिबजीसे सपष्ट प्रगट है ॥

नवीन सिंहों के उतपंन होनेका मूल कारण ॥

दसम ग्रंथमें बचित्र नाटिक ग्रन्थ । अकाल पुरुष बाच चौपई ॥

मैं अपना सुत तोहि निवाजा पन्थ प्रचुर कर वे कहुसाजा ॥
इत्यादि ॥

नोट—नवीन सिंहोंके सिधान्त वरुध अकाल पुरुष वोलनेवाला शाकार साबित होताहै ॥ और उक्त ग्रन्थ में ऐसा अकाल पुरुष लिखा है ॥

उक्त बचित्र नाटिक ग्रन्थ अध्याये १ कवता अंक २

अथ श्रीअकालजीकी उस्तुति ॥

खग * खंड विहंडं खल दल खंडं अति रण मंडं वरवंडं ।
भुजदंड अखंड तेज प्रचंडं जोत अमंडं भान प्रभं ॥
सुख संता कारणं दुरमति दर्णं किल विखहरणं असि सरणं ।
जै जग कारण श्रिष्ट उवारण मम प्रति पारण जैतेगं ॥

उक्त ग्रन्थ अध्याये १ कवत्त अंक ४४

चतुर बाहु चारं । करीटं सुधारं । गदा संख चक्रं । दिपै क्रूरवक्रं ।

उक्त ग्रंथ अध्याये १ कवता अंक ६४ ।

मधुं कीटभं राछसो वलीअं । समै आपनी कालतेऊ दलीअं ।
भए सुंभ नै सुंभ औ श्रोण बीजं । तेऊकाल काने पुरेजे पुरेजं ।

उक्त ग्रन्थ अध्याये १ कवता अंक ९३ और ९४ ॥

---

* त्रीभंगी छन्द की धारणा है ॥

स्वैया॥ सुंभ निसुंभसे कोट निसाचर जाहि छिनेक विखै इन हारे॥ धूमर लोचन चंड औमुंड से माहिख से पल बीच निवारे॥ चामर से रण चिछरसे रक्त तिछरसे झट दै झझ कारे॥ ऐसो साहिब पाय कहा परवाह रही इह्दास तिहारे॥१३॥ मुंडहुसे मध कीटनसे मुरसे अघसे जिनकोट दले हैं॥ओट करी कबहूंन जिनै रण चोट परी पग द्वैन टलेहैं॥ सिंध विखै जिन बूडे निसाचर पावकबाण बहे न जलेहैं॥ ते असि तोर विलोक अलोक सुलाजको छोड़के भाजचलेहैं॥

मित्रों--दसम ग्रन्थ साहिब चंडी चरीत्रों और चंडीकी वार में श्रीगुरु गोविंद सिंहजी सुंभ निसुंभ आदिक दैंतोंके मान कथन करते हैं गुरुजी (श्रीदुर्गाजीको) अकाल पुरुष अपंना इष्ट मानते हैं।

और नवीन सिंहों के मूल ग्रंथ वचित्र नाटिक ग्रंथके अखीर अध्याये १४ कबता अंक १० और ११ चंडीजीके चरीत्र (लिलाओंको) खुद बनाने की सत्य प्रतिग्या कथन करते हैं॥ यथा॥:

प्रथमै देवी चरित्रको कहा।१०। पाहिले चंडी चरित्रबनायो।

छोर कथा तब प्रथम सुनाई । अब चाहत फिर करों बडाई ॥ सर्व कालकी बेनती बरननं नाम चौदसमो धिआइ समापंत ॥ इस सत्यप्रतिग्या द्वारा गुरूदसमजीने तीनपुस्तके चंडी चरित्र ५८०छंदों से श्रीदुर्गाजीकी उस्तुतिकी है और इन पुस्तकोंके अखीरसे गुरुसाहिबजी श्रीदेवी(चंडी) जीकी प्रार्थना करतेहैं॥

॥ यथा ॥ सवैया ॥ देह सिवाबर मोहिइहै सुभ करमनते कबहूं न टरो ॥ न डरों अरिसों जब जाइ लरों निश्चै कर अपनी जीत करों ॥ अर सिखहों अपने मनको एह लालच हौ गुन तौ उचरों ॥ जब आवकी औध निदान बनै अतही रनमैं तब रनमैं तब जुझमरों ॥ ३१ ॥ ग्रथ सातिमयाको करेओ जाम अपरन कोइ ॥ जिहनमित कविने कहिओ सुदेह चंडका सोइ ॥

(उक्त सवैया गुरु दसमजीकी प्रार्थना होनेमे सबूत)

(१) देखो दसन ग्रंथ साहिब सुधाई की रिपोट जो सोधक कमेटी दसम ग्रंथ साहिब अंमृतसर ९ कतक संमत १९५४ वि० दीनीऊ और जो गुरमुखी प्रेम अंमृतसर छपी के सुफे ७ सतर ११ उक्त सोयेको गुरु दसम जाकी बाणी नवीन सिंहोंकी कमेटीने माना है

॥ यथा ॥ चंडी चरित्र मैं अथ चंडी चरित्र उकत बिलास (आइस जगशोई) (देहु सिवा बरमोहि) बार श्री भगौतीकी पातसाही १०) आदिक पदोंसे।

(२) देखो नवीनसिंहों की पुस्तक गुरमत प्रभाकर खालसा प्रेस लाहौर की छपीके सुफे १८३ सत्तर १० से ११ उक्त स्वैयों के सादिस वाणी गुरु १० जीकी मानी है।

छत्रीको पूतहों बामनको नहीं कै तप आवत है जूकरो। अर और जंजार जितो ग्रिहको तुहि त्याग कहा चित तामैं धरों॥ अब रीझकै देहु वहै हमको जोऊहो बिनती कर जोर करों। जब आउकी औध निदान बनै अनही रनमैं तबजुझ मरों॥

॥ देखिये ॥ जह नमित कविने कहो ॥ वाणी सेभीगुरु दसमजी की वाणी साबित होती है ॥ क्यों दसम ग्रन्थ में गुरु दसमजी कवी अपने को कथन करते हैं॥

देखो उक्त बचित्रनाटिक ग्रन्थ अध्याये ७ कवता अंक १ अथकवी जन्म कथनं ॥ चपाई ॥ मुरपित पूर्व किय सप्याना भांत भांतके तीर्थ न्हाना ॥ जबही जात त्रीवेणी भए ॥ पुंन दान दिन करत बत्तए ॥ तही प्रकाश हमारा भियो। पटने शैहर विखे भवलेओ ॥

उक्त पता अध्याये ६ कवता अंक ८९ ॥ कवीवाच ।
दोहिरा। जो निज प्रभमोसों कहा सो कहिहों जगमाहि ।
जो प्रभुको धिआइ हैं अंत सुरगको जाहि ॥

दुसरे चंडी चरित्र के अखीर गुरु दसमजी अपने अकाल पुरुष (श्रीदुर्गा) प्रार्थना करते हुए उपदेश करते हैं ॥

दोहिरा ॥ जे जे तुमरे ध्यान को नित उठि ध्येहैं संत ।
अंत लहेंगे मुक्त फल पावेंहिंगे भगवंत ॥

तीसरी " श्री चंडी दीवार श्री मुख पातसाही १० ॥ इससे साफ प्रगट होग्या कि श्री दुर्गा जी की उस्तुति गुरु दसम जी की बनाई हुई है । और इसके अंतमें गुरु दसमजी अपने अकाल पुरुष (श्रीदुर्गाजी) की प्रार्थना करते हुए उपदेश करते हैं ।

दुर्गापाठ बणाया सभे पौड़ीआं ॥ फेरन जूनी आया जिन एह गाया ।

इत्यादि कारणों से सपष्ट प्रगट है कि गुरु दसम जी हिंदूओं से वड़कर पक्के हिन्दू होतेहुए श्री दुर्गा जीको अकाल पुरुष मानते हैं ॥ मित्रो श्री गुरु दसम जीका सिधान्त श्री गुरु नानक देवजी के आप अनकूल है ॥

देखो आद ग्रंथ साहिब राग गौड़ी महाल्ला १ अष्टपदी शब्द ९ तुक ६

सैहस बाहु मधु कीट महिखासा ॥ हरणाखस ले नखहु विधासा। दैत संघारे बिन भगत अभ्यासा ॥

(इकादस गुरु ग्रंथ साहिब जीका सूक्ष्म वृतान्त जिस्से ग्रंथ साहिब का सारभेद समझ में आजावे)

श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब का नाम दर असल में थाल ग्रंथ है क्योंकि ग्रंथ साहिब जीके अन्त (समाप्ती) पर गुरु मोहर मुन्दावणी जो संस्कृत का अपभ्रंश मुद्रित का वाचि कहै ॥ यथा ॥

थालविच तिन वस्तुपायोसत १ संतोख २ वीचारो ३ अम्मृत नाम ठाकुर का पायो जिसका सभ अधारो ॥ जेको जेको भूंचे ४ जिसका होए उधारो ॥ एहवस्तुतजी नहीं जाई नित नित रख उरधारो ५ ॥ तम ६ संसारु चर्णलग तरीये सभ नानक ब्रह्म पसारो ॥

(श्रीगुरु आदग्रन्थ साहिबजीकेअन्तमें मुन्दावणीमहल्ला ५)

(टिप्पणी) (१) श्रेष्ठ नियम (२) मनका न डुलाना (३) आसरा (४) भोग के सुखकी इच्छा (५, अंतर में धारना (६) अंधकार ॥

श्रीगुरु आदग्रन्थ साहिब तीन बीड (जिल्द) के नामसे मसहूर है ॥

(प्रथम) सम्बत् १६६१ वि० में श्रीगुरु अरजन देव पंचम पातसाही जीने श्रीभाई गुरुदास भल्ले सच्चे लिखारी से लिखवाया ग्रन्थ साहिब मिठी बीड (जिल्द) के नाम से प्रसिद्ध है ॥

(द्वितीय) सं १६६२ वि० में उक्त ग्रन्थ साहिब जी की उद्धृत (नक़ल) श्री भाई बन्नों जीने की और लिखा रियों से करवाई । कुछ उत्तम शब्द अपणी ओर से मिलाने के कारण खारी बीड (जिल्द) के नाम से गुरु २ जीने प्रसिद्ध की ॥

[तृतीय] संवत् १७६३ वि०में श्रीगुरु गोबिन्दसिंह १० पातशाहजी ने भाई गुरुदास का लिखा ग्रन्थ साहिब बीड (जिल्द) करतारपुर के सोढिआं से मांगा ॥ उन्होंने नहीं दिया और बोली (तनज) कीगुरु है तो अपणीकरा माय (कला) से नया ग्रन्थ साहिब रचलें ॥ गुरु १० जी ने अपणी करामात से ग्रन्थ साहिब रच लिया ॥ सिर्फ एक अक्षरका फर्करहा जकार की जगह चकार यहभी गुरु

१० जी ने पूर्वज गुरुवाणी की बराबरी [अदबो आदाब] के भय से किया ॥ और इस में श्रीगुरु तेगबहादुर जी के कथन शब्द दरज किये और दमदमें साहिबकी बीड़ के नाम से प्रसिद्ध हुई ॥

इस समय ग्रन्थ साहिब अणगिणत छपणे के कारणहैं। यहां तक गुरुमुखी । संस्कृतीयभाषा ॥ उर्दू ॥ अंग्रेजी । आदिक उक्त तीन प्रकार के ग्रन्थ साहिब गुरुमत में प्रमाणीक और एकही हैं सिर्फ नाम मात्र तीन हैं ॥

श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब जी को गुरुआई मिनल संबत १७६५ मि० कार्तिक शु० २ श्री गोबिन्द सिंहजी महाराज गुरुआई दे गए ॥

[ग्रंथ साहिब समझने की विधि]

[१] भाई गुरदास जी की बीड़ भिंडी में ३४ पुरुषों की वाणी है ॥ यथा ॥ श्रीगुरु नानकदेव जी ॥ १ ॥ गुरु अंगद ॥ २ ॥ गुरुअमरदास ॥ ३ ॥ गुरुरामदास ॥ ४ ॥ गु० अरजन ॥ ५ ॥ छंद पडोता गु० अमरदास वाणी सनका करता ॥ ६ ॥ भाई मरदाना श्रीगु० नानक देवजी का रबाबी ।७। सत्ता ।८। बलवण्ड९ गु० अरजनके रबाबी मूसन

। १० । सुंमन । ११ । गु०के सेवक । श्री भगत त्रिलोचन । १२ । रामानन्द । १३ । परमानन्द । १४ । जैदेव । १५ ॥ सूरदास । १६ । वेणी । १७ । भिखन । १८ । पिपा । १९ । सैंन नाई । २० । धन्नाजाट । २१ । नामदेव । २२ । कबीर । २३ । फरीद । २४ । सधना । २५ । रमदास । २६ । मथुरा भट्ट (१) । २७ । जालप [२] । २८ । बल (३) । २९ । हरबंस (४) । ३० । टल्य (५) । ३१ । सल्य [६] । ३२ । जल्प [७] । ३३ । सहभल्प [८] । ३४ । कलसहार [९] । ३५ । कल [१०] । ३६ । जल [११] । ३७ । नल [१२] । ३८ । सुरगंद सरूप [१३] । ३९ । कीरत [१४] । ४० । दास [१५] । ४१ । गयन्द [१६] । ४२ । सदरंग (१७) । ४३ । भीखा (१८) भट्टब्रह्माका अवतारूप सर्वत्र की वाणी । ४४ । की है ।

(२) भाई बंनो जीकी बीड खारी में उक्त ४४ पुरुषों की वाणीसे ज्यादा एक औरकी है ॥ ४५ ॥ मीराबाईका काशब्द रागमारू में ॥ १ ॥

(३) दमदमें साहिबकी बीड में ४८ की वाणी है उक्त पुरुषोंकी तीन औरकी । गुरु हरगोविन्दजी ने धुना

(मुरा) बीर रस मई और शोक रसमई १ । श्रीगुरु तेग बहादुरजी के शब्द । २ । श्रीगुरु गोविन्द सिंहजी का एक दोहे का उत्तर (वलछुटेओ बन्धनपरे कुछ न होत उपाए । कहु नानक अबओट हरि गजगींऊं होवै सहाए ॥ ३ ॥

उक्त ४८ पुरुषोंकी बाणी में २९ब्राह्मण १० खत्री २ वश्य १ शूद्र २ चमार ६ मुसलमान २ और हिन्दू जिनकी जाती नामालूम ॥ कुल ४८ हैं ।

[नोट] गुरुमत विद्वानों के उक्त लेखसे विरुद्ध २९ पुरुषोंकी बाणी ग्रंथ साहिबमें प्रतीत होती है देखो श्रीगुरु आदग्रंथ साहिब छोटा आकार टेप्र जो मुन्शी गुलाब सिंह जीके प्रेस मुफीद आंमलहौर सम्मत नानक साही ४२६ मेंछपे से २१ पुरुषों की वाणी प्रारम्भ होती है १६ भट्टों को एक शीखे का रूपजो एक २ वेद के चार चार भट्ट [ब्रह्माजी का अवतार ग्रन्थ साहिबजी की उत्थानका और इतिहासों से प्रगट है) और । श्रीगुरु हरगोबिन्द । श्रीगुरु गोविन्दसिंह । मीरावाई तीनों के शब्द हैहीनहीं ॥ और उक्त ४८ गणनामें एक २ पुरुष के दुवारे और तीवारे २ नाम भी आए हैं ॥

यथा । भीखम भीखा जल जाल्य जाल्प कल्ह और कल्सहार सल्य सहभल्य इत्यादि ॥

१६ भट्टों का भीखागुरु हरगोविंद और श्रीगुरु गोविंद सिंहजी और मीराबाई ॥ भिख और भीखन ॥ मुंमन मुमन एक नाम इत्यादि कारणों से गुरुग्रन्थ साहिब २५ पुरुषोंकीवाणी सिद्ध होती है ॥ दरअसल में एक पुरुष [गुरुअरजनदेवजी की वाणी ग्रन्थ साहिब है] जो भट्टों को एक से भिन्नमानताहै उनको चाहिये उक्त भट्टों के माता पिता और जन्मसंवतपृथक २ दिखलावैं ॥

श्रीगुरु आदग्रन्थ साहिबजी में प्रकरण रागोंपर हैं जो राग और उनमें शब्द यह हैं ॥

[नक्शा देखो]

नंबर	नामराग	शब्दसंख्या	नंबर	नाम राग	शब्दसंख्या	नंबर	नामराग	शब्दसंख्या	नंबर	नाम राग	शब्दसंख्या
१	जपजी	३८	१५	बैराडी	७	२९	मल्हार	१६१	४३	मुदावणी	२
२	रहःरासपे	७	१६	तिलंग	२०	३०	कानड़ा	११५			
३	श्रीराग	२११	१७	सूही	२०९	३१	कल्यान	२३	४४	रागमाला	१
४	मझ	१९४	१८	बिलावल	२५७	३२	प्रभाती	६७			
५	गौड़ी	८१४	१९	गौंड	४९	३३	जैजावंती	४			
६	आसा	५१०	२०	रामकली	४७४	३४	श्लोकसहसकिरतदोनो	७१			
७	गुजरी	१९४	२१	नटनारायन	२५	३५	गाथाश्लोक	२४			
८	देवगंधारी	४७	२२	मालीगौड़ा	१७	३६	फुनहेश्लोक	२३			
९	विहागड़ा	८१	२३	मारू	३२०	३७	चौबोले	११			
१०	वडहंस	१२०	२४	तुखरी	२७	३८	श्लोककबीरके	२४७			
११	सोरठा	२५९	२५	केदारा	२५	३९	श्लोकफ. रीदके	१३०			
१२	धनासरी	११९	२६	भैरों	१३२	४०	सवैये सर्वत्र	१२२			
१३	जैतश्री	९६	२७	बसंत	८९	४१	श्लोकवारातेवंधिक	२११			
१४	टोडी	३४	२८	सारंग	२८६	४२	श्लोकमहल्ला ९	५७			

(नोट) इन रागों में वाई रागों के साथ वाई वारा है जिनमें श्लोक और पौड़ियों में गुरबाणी है ।

श्री राग से जैजावंती रागतक रागों में सर्वत्र भगतों के शब्द ९१७ हैं और कुल शब्द ४९८७ हैं और भगतों के श्लोक सवैये ५०० और गुरु साहिबों के ३५० है।

मेरी गिंनती और पडताल में शब्द और श्लोकादि की समाप्ती पर जहां गुरु साहिबों का नाम अथवा भगतों के नाम पर समाप्ती है ॥ इस रीति अनुसार श्रीगुरु आदग्रंथ साहिब जीमें ६१८१ शब्दादि हैं ॥ ग्रंथ साहिब में अध्याय गुरुओं के महल्लेभगतों की बाणी से होते हैं ॥ यथा ॥ महल्ला १ गुरु नानक का कथन ॥ महल्ला २ गुरु अंगदका कथन महल्ला ३ गुरु अमरदास का कथन ॥ महल्ला ४ गुरु रामदास का कथन ॥ महल्ला ५ गुरु अरजनका कथन ॥ महल्ला ९ गुरु तेगबहादुर का कथन और भगतों के शब्द बाणी से होतेहैं ॥ यथा ॥ बाणी श्री कबीर भगत ॥ बाणी नामदेव ॥ बाणी त्रिलोचनादि ॥

ग्रंथ साहिब में शब्द बहुत प्रकारके हैं ॥ शब्द दोतुके और तीन तुके ॥ चार तुके ॥ पांच तुके । छे तुके ॥ सात तुके ॥ आठतुकों की अष्टपदी सोलातुकों का सोहिला ॥ तुक दोहिरे अर्ध भागको कहतेहैं ॥ श्लोक १ दोहे जितना

होना है पौडी और डखडा चौपाई जितने होते हैं और शब्दों के प्रथम घरहोते हैं ॥ यथा घर दो से बारांतक सां ताल समझने जो रागों में होने हैं ॥ छंतको छन्द समझना इत्यादि और देखने से पता लगजाता है ॥

गुरु साहिबों को जो बाणी स्वीकार थी वोही ग्रंथ साहिब में दर्ज की जो नहीं स्वीकार थी वोह नहीं दर्ज की ॥ यथा ॥

(१) कान्हा भगत जी की वाणी का प्रारंभ ॥

॥ मैं ओही कान्हा ओही ॥ जाको बेद पुराण यसगावें खोज खोगे मतकांई ॥

(२) छज्जू भगत जी की बाणी का प्रारंभ ॥

॥ कागद संदी पूतरी तउन त्रिया निहार ॥ ऐसे मार ले जाएगी। जिऊं बिलोचदी धाड़ ।

(३) पिलों भगत की बाणी का प्रारंभ ॥

असानालों सोभले जेहडे जंमदिआं मरे ओन चिकडे परनै वोडिआन अलूद भरे ॥

(४) शाह हुसैन भगतकी वाणी का प्रारंभ ॥

चुपवे अडआ चुप ॥ अन्थे बोलणदी नहीं जावे अडिका ॥

[नोट] मित्रों गुरू साहिब ने उक्त भगतों की बाणी को स्वीकार नहीं किया इसकारण श्री गुरू ग्रंथ साहिबजीमें दर्ज नहीं हुई जो वाणी गुरुग्रन्थ साहिब जीमें अथसे इति पर्यंत दर्ज है वोह मानने के लायक और प्रमाणीक है और आद ग्रन्थ साहिब को मैं अपने धर्म्म पुस्तकों के शब्दस भजन पुस्तक समझता हूं ॥ जोकर्म उपासना ज्ञान और भक्ती आदि का हिन्दू धर्म्म पुस्तकें [वेद पुराणों के] अनुसार उपदेश करता है ॥

फलकारण फूली वनराय। फललागा तब फूलवलाय।
ज्ञानहिं कारण कर्म अभ्यास। ज्ञानभ्या तो कर्महि नास॥

[श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग भैरों वाणी नामदेव शब्द १. तुक ५]

[नतीजा] जोगुरु मतावलंबी हिन्दू धर्म्म अनुसार व्यवहार करताहै वोह गुरुमुख [आस्तिक] जो हिन्दू धर्म्मसे विरुद्ध करता है वो मनमुख [नास्तिक] क्योंकि श्री भाई गुरुदास जी उपदेश करते हैं लोक व्यवहार औरवेदविचार [विधि सहित] कर्म करता हुआ और गुरके ज्ञान [उप देश) में सावधान रहे निश्चय करके उसकी सद्गतिहोगी।

लोकाचारी लोक विच । बेदविचारी कर्म करंदा ॥
सावधान गुरुज्ञान विच । जीवन मुक्त जुगत विचरंदा ॥
[श्री भाई गुरुदास जीकी वार १६पौडी ३]

गुरुदासजी के लिखे श्री गुरुआद ग्रन्थ साहिब जीके उपदेश का नमूना ॥

१. जबलग दुनीआ रहीये नानक कुछ सुणीये कुछ कहीये (राग धनासरी महल्ला १)

(२) जिथे बोलिआ पतगई ऐसो बोलिया परवाण [श्री राग म० १]

[३] वाद विवाद काहुंमोन कीजै [रागमाझकी वारम० १]

(४) पहलों दितैरिजक समाह ॥ पिछों देतै जंत उपाहा राग माझ म० ५]

(५) सिर उपर मात पिता गुरुदेव सफल मूर्ति जाकि निर्मल सेव (धनासरी म० ५)

(६] जेमां होवे जारनी किऊं पुत पतारे ॥ गांई माणक निगालिआ पेट पाडनमारे ॥ जे पिर बहुघर हडणा सत रखनारे [श्री भाई गुरदासजी की वार ३५ पौडी २०]

[७] पर धन परदारा हरीताकै निकट न वसै हरी. (भैरों वाणी नाम देव]

(८) लैके वडी देन उगाही दुरमतका गल फाहा है (राग मारू सोहिले म० १)

(९) लोक धीकार कहैं मागत जन ॥ मागत मानन पाया (राम कली म० १)

(१०) परदर्वहरणंवहु बिघनकरणं (श्लोकमहसक्रतीम०५)

(११) शर्म धर्म दुइनानका जे धन पलै हौए (मल्हार की वार म० १)

[१२] इक्क पराया नानका उस सुअर उस गाए [राग] माझकी वार म० १]

(१३) राजे धंर्म्म करें परथाए (मारू सोहिले म० १)

(१४) सूरा सो पहचानीये जो लरै दीन के हेत ॥ पुरजा पुरजा कट मरै कबीन छाडे खेत (मारू कवीरजी)

(१५) नहविलंव धर्म्म ॥ लिलंव पापं (श्लोक सहस्र किरती म० ५)

(१६) जौ गृहु कराहि धर्मकरू नहींतकरू बैराग [श्लोक २४३ कबीर जी]

सूचना.

हमारे गुरूमतावलंबी भाई चतुर वर्णों से हीन पुरुषों की संगत से अपने हिन्दू भाई (चारवर्णों के इको भाइयों) पर तर्क करते हुए गुरु रक्षक हिन्दू धर्म से पतित होरहे हैं इस कारण हमें बड़ा शोक है । ग्रंथ साहिब के शब्दों से हिन्दू धर्म के सिद्धान्त (ईश्वर अर्थात् अकाल पुरुषका राम कृष्णादि अवतार ! मूर्ति पूजन तीर्थ स्नान, व्रत, श्राद्ध, वर्णव्यवस्था, वेदका मानादि) को खण्डन कर रहे हैं हम उनहीं सिद्धान्तों को श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजीके शब्दों से मण्डन करते हैं " नतीजा ,, नवीन सिंहों की छेडछाड से उक्त खण्डन मण्डन के कारण श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी परस्पर विरोध में आकर झूठा सिद्ध होगा ।

(प्रश्न) नवीन सिंह इस पुस्तक द्वारा शिक्षा तो अवश्यमेव पाजाए अगर उन में यह हठधर्म्मी न हो यथा सिंह रहितवान (कछ कडा कंघा केस करद) धारण वाले का कहा सुनना और मानना औरों का नहीं ॥ दृष्टांत ॥

सोएहुए को जगाना आसान है जागते ही सोजाए उसका जगाना कठिन है ।

इस प्रकार नवीन सिंह जानते बूझते हुए गुरु साहिब के रक्षक हिन्दू धर्म से विरुद्ध हो मन मुखता को प्राप्त हो रहे हैं जो उनके बचावके लिये; इस पुस्तकमें शिक्षा पूर्णरीति से है यदि हठधर्म्मी न हो।

(उत्तर) मित्रो ? गुरु साहिब आदि ग्रंथ साहिब जी को गुरु स्थापित करगए ग्रंथ साहिब का वचन मानना गुरु साहिबों का हुकम है। सो आदि ग्रंथ साहिब में महात्मा की वाणी और हरेक से शिक्षा दायक गुण ग्रहण करने के लिये हुकम है॥ यथा॥

(१) महा पुरुष का बोलिया होवे किथे पर थाए (आदि गुरु ग्रंथ साहिब राग सूही महल्ला ३)

(२) परथाए साखी महा पुरुष बोलदे साझी सगल जहाने (आद ग्रंथ साहिब)

(३) वाणी महा पुरुषन की निज घर वासा होय (आद ग्रंथ साहिब)

(४) वाणी मंत्र महापुरुषन की (आद ग्रंथ साहिब)

मित्रो ? जब गुरु साहिब का उक्त वचनों द्वारा हर एक महात्मा के वचन मानने का हुकम है तो कछ, करद कंघा

केस कड़ा धारण वालों का ही कहा सुनना और मानने में नवीन सिक्खों की श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब जी से बिरुद्ध हठधर्म्मी साबित होती है।

गुणा की रास संग्रह अव गुणा कढे विडार (आद ग्रंथ साहिब राग मारू की बार महल्ला ३ श्लोक)

शिक्षा जो होतीहै सो गुणोंकी हुआकरती है हिन्दू धर्म्म गुणों की खान है जिसको सदैव दृढ रखने के लिये श्रीगुरु तेग बहादुर जी ने दिल्ली सिर दिया।

(प्रश्न) गुरु मतावलंबी नूतन पुरुष स्वामी दयानन्द जी के कल्पित मत की शिक्षा मान गुरु रक्षक धर्म्म की निन्दा करते हैं।

(उत्तर) मित्रो गुरु मतावलम्बियों को श्री स्वामी दयानन्दजी के कल्पित मतकी शिक्षा कदापि नहीं माननी चाहिये क्योंकि उक्त कल्पित मतका धर्म्म ग्रंथ गुरुसाहिबोंकी और ग्रथ साहिब की निन्दा करता है।

(१) नानकजीको कुछ अभिमानथा तो मान प्रतिष्ठा के लिले कुछ दंभभी कियाहोगा (सत्यार्थप्रकाश सं० १९४८ वि० अजमेरमें ४वार छपेकी पृष्ट ३५६पंक्ती २२और २३)

(समीक्षा) श्रीगुरु नानक देव जी को दंभी लिखाहै जिसका अर्थ झूठा ॥ फरेबी ॥ ठगादि हैं ॥ जो उक्त उपालंब श्रीगुरु नानक देवजी के व्यवहार और बाणी से गुरु नानक देवजी पर घटित नहीं हो सक्ते ॥

(२) हां उन ग्रामीणों के सामने कि जिन्होंने संस्कृत कभी सुना नहीं था संस्कृत बनाकर नानकजी पण्डित बनगए होंगे [उक्त सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ३५६ पंक्ती १८ और १९]

[सामीक्षा] उक्त लेख में गुरु संप्रदाय को ग्रामीण जिसका अर्थ मूर्ख है ऐसे लिखा सर्बथा अयोग्य है क्योंकि गुरुमत में अनेक बडे शहरों के पुरुष शिष्य थे ॥

[३] नानक जी के सामने कुछ उनका संप्रदाय व बहुत शिष्य नहीं हुएथे क्योंकि अविद्वानों में यह चाल है कि मरे पीछे उनको सिद्ध बना लेतेहैं [उक्तसत्यार्थप्रकाश पृ: ३५७ पंक्ती ९ और १०]

[समीक्षा] उक्त लेखमें गुरुमत को अबिद्वान् जिसका अर्थ मूर्ख है ऐसे लिखा जो सर्बथा अयोग्य है क्योंकि गुरुमत में बड़े २ विद्वान पूर्वज थे और अब हैं ॥

[४] छोटे कुलों में से शिवाजी गोविन्द सिंहजीने खडे होकर मुसलमानों के राज्य को छिन्न भिन्न करदिया [उक्त सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ २७६ पंक्ती १४ से १६)

(समीक्षा) उक्त लेख में श्रीगुरु गोविंद सिंहजी महा राजके कुलको हिकार्थकी नजर से छोटा लिखा जो सर्वथा अयोग्यहै क्योंकि गुरूकुल जगतमें पूज्य और सबसे वडाहै॥

(५) फिर आगे चला तो सबमत वालोंने अपने २ को सच्चा कहा कोई हमारा कवीर सच्चा ॥ कोई नानक ॥ कोई दादू ॥ कोई वल्लभादि इन में कोई गुरुकरने योग्य नहीं क्योंकि एक २ की झूठ में नौ सौ निन्न्यानवे गवाह होगए जैसे झूठे दुकानदार वा वेश्या जौर भडुआ आदि अपनी २ वस्तुकी वड़ाई दूसरे की वुराई करते हैं वैसेही यह जान [उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १८० पंक्ती २९ से पृष्ठ १८१ पंक्ती २ तक]

[समीक्षा] उक्तलेख में श्रीगुरु नानकादि मतोंकोझूठे दुकानदान और वेश्या भडुवों के शद्दस लिखा जो सर्वथा अयोग्य और लिखने वालेकी मूर्खता को प्रगट करता है क्योंकि श्रेष्ठ पुरुष ऐसे अपशब्द नहीं बोलाकरते ॥

[६) वेद पढ़तब्रह्मा मरे चारोंवेद कहानी ॥ सुखमनी पौडी चोपई८ [उक्त सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ३५६ पंक्ती२८]

[समीक्षा] उक्त लेख ग्रन्थ साहिबजी के नामसे शब्द भी झूठ और पताभी गलत क्योंकि सुखमनी साहिब में पौडी और चौपाई नहीं अष्टपदी और श्लोकहैं ॥ मित्रो उक्त कल्पित धर्म्म पुस्तक का अभिप्राय यह है कि गुरुमत में १० गुरु साहिबों के पश्चात् गुरुग्रन्थ साहिब है सो उस से भी लोगोंकी श्रद्धा हटाएं ॥

इत्यादि और अनेक लेख हैं सो अब सत्यार्थप्रकाश गुरुपुत्रोंमेंभी छपगयाहै गुरुमतानुलम्बी उसको देखकर उक्त कल्पितमतसे बचे जो गुरुमतसे "संधिविग्रह,, अर्थात् बाहरसे प्रीति अन्तःकरणसे वैरभाव इस रीतिसे वर्त्ताव करता है ॥

[प्रश्न] पण्डितजी इस पुस्तक "नवीन सिंह शिक्षा,, से गुरुमतावलम्बी गुरु मुखों को तो अवश्यमेव सिक्षाप्राप्त होगी ॥ जो लोग मनमुख कडाह प्रसाद (तिहौले) के चावमें उछल कूदरहे हैं वोह पुरुष गुरुमुखी ही जानते हैं इस कारण उनको कोई शिक्षा नहीं प्राप्त होसक्ती ॥

(उत्तर) प्यारेखालसा भाई आपका कथनयथार्थ और

सत्य है सो उक्त पुरुषों को शिक्षा पौंहचाने के लिये गुरु मुखी बाराखरी (पैंती) के साथ भाषा की बाराखरी (पैंती) लिख देताहूं जिसमे एक दिन में अभ्यास और परिश्रमकर इस पुस्तक (नवीन सिंह शिक्षा) का पठन पाठन कर शिक्षा पासकें ।

(मिश्रत बाराखरी)

उ अ इ स ह ॥ क ख ग घ ङ ॥ च छ ज झ ञ ॥

ट ठ ड ढ ण ॥ त थ द ध न ॥ प फ ब भ म ॥

य र ल व ड़ त्र ॥ अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः ॥

ा ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः ॥

म्र क्र स्र ट्र घ्र ॥ क्ष स्य प्य ह्ज ध्य ॥ प्र स्व क्व ॥

इत्यादि दुत्त समझना सो गुरमुखी में थोड़ेही होते हैं ॥

"इति ६ अध्याये,,

अध्याये १०

॥ इस अध्याये में धर्म्म रक्षार्थ देश दिशाओं में भ्रमण और नवीन सिंहों की दुरदसा और प्रशंसा पत्र हैं।

मित्रो जबसे मुझे श्री भारत धर्म्म महामण्डल उत्सव १२ दिल्ली १४ अगस्त सन१९००ई० से उपदेशक पदवी मिली है अनेक स्थानों में धर्म्म उपदेश किया ॥ यथा ॥

इन्द्र प्रस्त (दिल्ली)॥ १ खास दिल्ली उत्सव १२ श्रीभारत धर्म्म महामण्डल १४ अगस्त सन् १९०० ई० जिसमें मए राजगान सर्व देश दिसाओंके हिन्दू इकठे हुए थे।

जिला अम्बाला ॥ २ रोपड़ ३ घनौली ४ कुराली ५ मोरंडा ६लांडरे ७ वरामपुरबेट ८वहरामपुर नदमासां ९ अलीआं ॥ १० सुहाना।

जिला लुदेहांणां ॥ १० जगरामा ११ कमालपुर

जिला जालंधर ॥ १२ नभा शैहर १३ राहों१४ औढ़ १५ ब्यास पिंड १६ पधाना १७ वीका १८ मुकंदपुर १९ जगत पुर २० साहवा २१ खांनखाना ॥

जिला हुस्यारपुर ॥ २१ हुस्यारपुर २२ मंढ़ेदिवाला २३ अरगोवाल २४ पंजौहड़ा २५ व छोड़ीआं २६ साधड़े ।

जिला गुरदासपुर ॥ २७ गुरदासपुर २८ बहरामपुर २९ वटाला ३० श्री हरगोविंदपुर

जिला अमृतसर ॥ ३१ अमृतसर ३२ रयराम ३३ अजनाला ३४ छेहरठा ३५ तरनतारन ३६ नूरदी आदक पांचग्रांम ३७ झबाल ३८ पंजवड़ ३९ सोहल ४० नुशैहरा पुनूंआ ४१ कैरों ४२ सरआली ४३ खेरदा ४४ फतीआबाद ४५ गोयंदवाल ४६ जलालाबाद ४७ वेरका ४८ फतहगड़ चुड़ीआं ४९ जेठूवाल ५० मलणविंडी ५१ चवींडा ५२ कथूनंगल ५३ गुरुका जंडेआला ५४ गुनोवाल ५५ मजीआं ५६ तिमोंवाल ५७ छजलवधी ५८ वीसिफका ५९ खेरदा कोट ६० रशूलपुर ६१ छापा ६२ वला ६३ सुलतानविंड ६४ फतहपुर ६५ मांगना ६६ ठठगड़ ६७ जगतपुर ६८ वासरकी ६९ ढंड ७० कगेल ७१ भगना ७२ चिचा ७३ रणगड़ ७४ अटारी ७५ नेष्टा

(जिला लहौर)

७६ मुरसिंह ७७ पट्टी

(जिला फिरोजपुर). ७८ खास फिरोजपुर

(जिला गुज़रावाल) ७९ खास गुजरा वाला।

८० हाफजाबाद।

(जिला रावल पिंडी) ८१ रावलपिंडी ८२ गुजरखान ८३ गल्याना ८४ मुखो ८५ दुरताका ८६ घुघरीला ८७ हरनाल ८८ वशाली ८९ वंदा ९० ढला ९१ सागरी ९२ कलर ९३ कहुटा ९४ थोआ ९५ नारा ९६ दुधेरनी ९७ धमाली ९८ चोआभगता ९९ वंवल १०० देहरेआलो १०१ काजीआं १०२ धंगदेसेसरान १०३ अटक १०४ हसना अवदाल (पंजा साहिब) १०५ हजरो॥

(जिला पिशावर) १०६ पिशावर १०७ गढ़ी कपूरा १०८ छौनी मरदान १०९ छौनी नुशैहरा ११० लूंन खोर १११ नुशैहरा कलां ११२ होती ११३ मरदान विकट गंज॥

(जिला कुहाट) ११४ खास कुहाट

(रिआसत पटेआला) ११५ सनौर ११६ संघोल ११७ खमाणे ॥

(रिआसत नालागढ़) ११८ खास नालागढ़ इत्यादि १२० स्थान ॥

नोट मित्रो उक्त स्थानों में लोगोंके प्रेमसे एक २ जगह दस २ और पांचदिन लगातार उपदेश हुए और आर्या समाजीओं से वीस वाईस वार और नवीन सिंहों से साठ सत्तर वार शास्त्रार्थ हुआ जिनके सर्वत्र कागज़ात मेरे पास मौजूद हैं ॥ पुस्तक बड़ने के भियैसे नही लिखता तथापि प्रशंसापत्रों में अलप (तीस) प्रशंसा पत्र दिखलाता हुं।

(१) पुराचीन श्री भारतधर्म महामण्डल
का संस्कृत प्रशंसापत्र ॥

श्री भारत धर्म ॥ महामण्डलस्य प्रशंसा पत्रम् ॥ महामण्डल दिल्लीकी मोहर ॥ भारतवार्षीय सकल सनातन सद्धर्मसभा प्रति निधि भूतं भारत धर्म्म महामण्डलं रोपड़ वास्तव्यं श्री पृथ्वीचन्द पुत्रं सुखलाल शर्म्माणं सनातन

धर्मोपदेशक मालोक्य प्रसीदन्त, भारतं परमुप कुर्वन सनातन धर्म्मा ग्राहिणां मान्यो मिनि निश्चिनोति । तदेतत् प्रमाण यति नंबर २२ भादुवदी ४ संमत १९५७ ॥ अगस १४ सन १९००ई० ॥ दसखन दीनदयाल शर्म्मा महामंत्री ॥ और प्रशंपत्र के ऊपर अंग्रेजी में श्री महाराजा दुरभंगा जी के हस्ताक्षर ॥ १ ॥

रजीष्टरी सुदा श्री भारतधर्म्म महामण्डल के प्रशंसा पत्र

(२) श्री भारतधर्म्म महामण्डल प्रधान कार्यालिय मथुराके उपमन्त्रीका अंग्रेजीपत्र नंबर २८८४ तारीख ६-८ ०१ श्री भारतधर्म्म महामण्डल प्रधान कार्य्यालिय मथुरा ॥

प्यारे मित्र मुझे आपका ३ अगस्तका पत्र पहुंच गिया है आज आपका नाम फरहिस्त उपदेशक में दरज किया गिआ है आपका नाम १८ नंबर परहै ॥ पूरा पूरा जवाब अगर मनाशब ख्याल किया गिया तो पश्चात हिन्दी में भेजा जावेगा ॥ आपका शुभ चिन्तक ॥ उप मन्त्री श्याम शंकर ॥—२ ॥

(३) उक्त मंडलके मनेजर अमृतलाल शर्म्मा का भाषापत्र नं० ६४६ ता० २८—७—०३ श्री भारत धर्म्म महा मण्डल प्रधान कार्य्यालिय मथुरा ॥

पत्र के साथ श्री भारत धर्म्म महामण्डल के उपदेशकों की फहरिस्त है जिसमें नं० १६ पं० सुखलाल जी रोपड़ जिला अम्बाला उपदेशक ॥ येह लेख है ॥ ३ ॥

[४] श्रीभारत धर्म्म महामण्डलका इखबार भाषा ॥

श्री भारत धर्म्म महामण्डल का मासिक पत्र निगमागम चन्द्रिका भाग ९ संख्या ५ पृष्ठ १३२ पंक्ती २४ से ३१ तक ॥ पंजाब अम्बाले की धर्म्म सभा ने अपना छःमाही उत्सव बड़े ही उत्साह पुर्वक मनाया ॥ १ जनवरी सन १९०४ ई० की चिट्ठी से विदत होता है कि महामण्डल की इस शाखा सभाने अपने छः माही उत्सव में जैसा समारोह कियाथा बहुतेरी धर्म्म सभा अपने वार्षिकोत्सव में भी इस प्रकार धूम धाम करने में असमर्थ हैं ॥ उत्सब मे महामण्डल के उपदेशक पण्डित सुखलाल जी पण्डित वासदेव जी शर्म्मा तथा पण्डित हरिनारायणजी की प्रभाव शाली वक्तृताएं हुई धर्म्मोत्साहका पार नरहा ॥ सभा स्थल मेही महामंडल के कुछ साधारण में वरनने ॥ ४ ॥

(५) पंजाब मण्डल (लहौर) के सकटरी का उर्दू पत्र

नंबर १ पंडित सुखलाल जी महाराज उपदेशक जै

धर्म्म की आपका कृपा पत्र मए सनदात आया बाद मुला हाज़ा सनदात मुनासव जानकर आपकी सिफारिस की जावेगी ॥ न्याजमंद संतराम कलर्क ११ फरवरी सन १९०२ ई० वाई आडर डाक़टर बालकृष्ण साहिव कौल ॥ सैकटरी महामण्डल ॥

(६) पंजाव मराडल (लहौर) के अनरेरी मुहररका उड़दू पत्र ॥

१०-८--०५ अज लहौर मिनजानब कर्मचन्द शर्म्मा मुहरर श्री पंजाब महामराडल ॥ श्रीमान् पंडित सुखलाल साहिव उपदेशक भारत धर्म्म महामंडल जै श्री कृष्णजीकी आपको लिखाजाताहै कि आप लहौर में दफतर श्री पंजाव मराडल दरवाजह शाह आलमी मंद्र भाई नंदगोपाल में फोरन आजामें आपको पंजाव मराडलका उपदेशक १२) माहवार पर किया जावेगा ॥ खर्च रेल वगैरा का मंडल का होगा अगर कुछ फैसला करना होतो यहां आकर कर लेना मैंने आपकी सिफारिस की है और आपमेरे ख्यालमें लायकही है ॥

कर्म्मचन्द अज़ लहौर ॥ ६ ॥

श्री भारत धर्म्म महामण्डल पद्धारी उपदेष्टाओंके प्रशंसापत्र

(७) महामंडल के महा महोपदेशक श्रीमान् पंडित रघुबर द्याल वेदान्त भूषणजीका भाषापत्र ॥

श्रीमान् सुखलालजी उपदेशक भारत धर्म्म महामण्डल प्रणाम श्री जो आपने नवीनसिंह शिक्षा ग्रन्थ संग्रह कीया है इसको अवलोकन कर के मुझे यह निश्चित हुआ है कि यह ग्रन्थ यदि मुद्रित होजाए तो हिन्दू मात्रके सनातन धर्मकी रक्षा में पूर्ण उपयोगी होगा क्योंकि इस में दश बादशाही गुरु साहब पूर्ण वेद धर्म्म सनातन के अनुसरण शील दृष्ट पडते हैं क्योंकि अवतार का प्रयोजन धर्म्म रक्षा है सो वह गुरु साहबों के वाक्यों से सिद्ध होतीहै आपने परिश्रम तो महान् किया है परंच मेरी संमति यह है के यह ग्रन्थ मुद्रित होणा चाहिये मुद्रित होणे से अस्मदादि अनेक जीवों का उपकार होगा और भूले हुये जीव सीधे रस्ते पड जाएगे और जिन पुरुषों के ख्याल में यह भ्रांति है के गुरु साहबानों ने वेद धर्म्म से अतिरिक्त अपना धर्म्म प्रचार किया है वह भ्रांति उनकी भी दूर होजाएगी बलकि अब के समय में अल्पज्ञ पुरुष गुरु साहबों के वाक्यों का

वेद से भिन्न धर्म्म में अभिप्राय निकाल कर उनको खंडित करते हैं न के प्रशंसा करते हैं आप की सेवा में मूर्त्ति मार्त्तंड भेजाजाता है लाला शादीलाल साहिब को आशीर्बाद सं० १९५८ आश्विन व० १० गोस्वामि रघुवरदयालु कपूरथला ॥ १ ॥

(८) महामण्डलके महोपदेशक श्रीमान्

पण्डित गणेशदत्त शास्त्री जी का भाषा पत्र

श्री हरिः ता—२१—९—०४॥ नवीन सिंह शिक्षा नामक पुस्तक श्रीमान् पं० सुखलाल जी उपदेशक ने निर्माण करके समस्त भारत वासियों का अतुल उपकार किया है सिख संप्रदाय जो अपने ताईं हिन्दू नमानकर सिख जाति को हिंदूओंसे पृथक मानने लगे है उन के इस भ्रमको दूर कर ग्रंथ साहिब आदि १० गुरुओं के वाक्यों से अच्छे प्रकार हिन्दू साबित किया गया है येह पुस्तक परतेक पुरुष को उपयोगी और संग्रह करने योग है लिखने की शैली सुन्दर और युक्तियां उतम प्रकार से दिखलाई गई हैं॥ उक्त पंडित जी के इस परिश्रम को देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआहुं। क्योंकि श्री भारत धर्म्म महामण्डल के

१२ बाहरवें प्रस्ताव ईन्द्रप्रस्त (दिल्ली) की पूर्त्ति इस ग्रंथ द्वारा अच्छे प्रकारकी गई है इस से पंजाबकी बहुतेरी धर्म्म सभाओं का बहुत ऊपकार हुआ है इस परिश्रम के लिये श्री भारत महामण्डल पण्डित सुखलालजीका सनमान करना उचित प्रतीत होता है।

ह० गणेशदत्त महोपदेशक। श्री भा० ध० म० मंडल मथुरा ॥ मु० वहरामपुर जि० गुरदासपुर ॥ २ ॥

(२) महामंडल के महोपदेशक श्रीमान् पं० दुर्गादत्त पंतजी का भाषापत्र ॥ श्री सुखलालजी उपदेशक रोपड़ निवासीनें जो पुस्तक नवीनसिंह शिक्षा नामक मुझेदियाहै यथार्थ में आप नै वड़ा परिश्रम किया है। आप ने गुरुग्रंथ साहिब से मूर्त्तिपूजा ॥ श्राद्ध ॥ वेद माहिमा ॥ पुराण प्रतिपादन ॥ दान॥ ब्राह्मण महत्व ॥ तीर्थ प्रतिपादनादि विषय सिद्ध करके सिखोंको हिन्दू सिद्ध किया है आपको ग्रंथ साहिब का विषय अति उत्तम आताहै मेरे ध्यानमें अन्य कोई उपदेशक इस विषय को नहीं इतना जान सक्ता जितना उक्त महोदय को मालूम है ॥ इन्होंने श्री भारत धर्म्म महामण्डलें दिल्ली वाले महोत्सव के १२ मन्तव्य के उपर

यह ग्रन्थ निरमाण कियाहै इस हेतु मुझे हर्ष है महामण्डलके अधिकारीयों को अवश्य आपका सतकार करके आपको पुरस्कार देना उचित है जिससे आपका उत्साह बड़े । अलमिति । भाद्र शुक्ला १२ सं० १९५९ वि० ॥ दुर्गादत्त पंत महोपदेशक श्री भारतधर्म्म महामण्डल ॥ मु० राहों जि० जालंधर । ३ ॥

[१०] महामण्डल के उपदेशक श्रीमान् पं० सादी रामजी का भाषापत्र ॥ प्रशंसा पत्र मिदम् । श्रीमान् श्री ५ पंडित सुखलालजी महाराज आप ने गुरुओंके ग्रंथोंको बहुत अच्छीतरहसे परामर्श किया है और आप मेरी रायमें महोप देशक और उपदेशकोंमें एकमात्रहैं गुरु घरके ग्रंथ जानने में इस लिये मैं आपका धन्यवाद करता हुआ येह पत्र समरपण करताहुं ॥

ह० पं० सादीराम शर्म्मा उपदेशक महामण्डल मुकाम देहली मण्डप उत्सव १२ महामंडल ११ अगस्त सन १९०० ई० ॥ ४ ॥

[११] महामण्डल के उपदेशक श्री मान् पं० लज्जाराम जीका भाषा पत्र ॥

श्री मान् पंडित श्रेणीषु मान्यवर सुखलाल महोप देशक चर्ण कमल योः लब्धरामेण कृताः कोटिशः नतय सान्तु महाराज जी मैंने श्रवण कीया है के आपने पुस्तक नवीन सिंहशिक्षा का तय्यार कीयाहै आपने पत्र के देखते ही फिल फौर टिकट लगाकर पुस्तक भेज देणा निहायत तागीद है क्यों के मेरा शास्त्रार्थ हरदम नवीन पंथियों से रहता है आपका उपकार होगा मेरा पता येह है खास जलालपुर जट्टा जिला गुजरात सनातन धर्म्मोपदेशक लब्धराम। सं० १९६१ वै० २। ५।

(१२) महामण्डल के उपदेशक श्री मान् पं० हीरालाल जीका भाषा पत्र।

परम प्रिय धर्म्म परायण सज्जन गणाग्र गण्य पं० सुख लाल जी प्रणाम पूर्वक निवेदन है। हम यह जानते हैं आपके नवीन सिंह शिक्षा लेख से पंजाब प्रांत में भ्रान्त सिंहों के लिये पंडितो द्वारा उपकार की वहुत कुछ आशा करी जाती है क्योंकि नागरी में सनातन धर्म्म वोधक शब्द इस ढंगपर संग्रहित नाहिथे इस से विद्वान ग्रंथ साहिब के मर्म भूतधर्म्म वोधक शब्दों को यथा साध्य नहीं कहसक्ते थे पौषवदी १

सं० १९६० वि० आपका हीरालाल शर्म्म मंत्री सनातन धर्म्म सभा जालंधर ॥ ६ ॥

नोट ॥ इसी प्रकार महामण्डल के और उपदेशक पं० रामचन्द्र वेदान्ती दिल्ली श्री पं० ज्वालाप्रसादमिश्र मुरादाबाद ॥ श्रीमान् पं० गोपीनाथशर्म्मा लहौरादियों के पत्रहैं

❋ देस दिशाओं के पंडितों के प्रशंसापत्र ❋

(१२) श्रीमान पं० रामप्रसाद वैद्यराज उपदेशक सनातन धर्म्मसभा कालका।जी का संस्कृतश्लोक वध्यपत्र ॥

सत्यश्री गुरूग्रन्थेभ्यो गुरूवाक्य प्रदर्शयन् । नवीनसिंह शिक्षेत्ति ग्रन्थनिर्मापिनोयत्तः ॥ १ ॥ गुरूविद्यारत्नो उपाधि श्रीसुखलालशर्म्मणे । निवासिने रोपड़स्य अत्तोदत्ता सुसज्जनैः ॥ २ ॥ सर्व देशेषु वैपुसा सुपकारो महानयम् । जातःशङ्कार्णवेमग्नान जनानुद्धार यन्निव ॥ ३ ॥ एकोन विंशति शत द्विषष्टिमितवत्सरे । चैत्रशुक्लचतुर्दश्यां तथा च भौमवासरे ॥ ४ ॥ अस्य प्रशंसापत्राणी पश्यञ्चाद्यमहुर्महुः सियारामप्रसादेन पिण्डिस्थाने लिपिकृतम् ॥ ५ ॥

द० रामप्रसाद वैद्य ॥ उपदेशक सनातम धर्म्मसभा कालका जिला अम्बाला ॥ १ ॥

(१४) श्रीमान् पं० भाई मानसिंहजी अंमृतसर निवासीका भाषा पत्र ॥

स्वाति श्री गुणि गणाग्र मान्यवर महाशय श्री मच्छ्री सुखलाल शर्म्मन् प्रणामानंतर सविनय प्रार्थनाहै की आपका सुरचित "नवीन सिंह शिक्षा" पुस्तक देखकर श्री गुरु मत्सनात्तन धर्म्मका हृदय में अपूर्व अंकुरोत्पन्न करता है "अहह" जो भोले भाले सिंहोंनै एक मनमत्तीयों के फंदेमे फासकर श्रीगुरु धर्म्म को एक हिन्दू वैदिक धर्म्म से पृथक् जानने लगेहैं उनके अज्ञान अंधकार दूर करने को उनही १० दशगुरु महात्माओं के चरित और बचनोंरूपी दिवाकर है इस्से आपके परिश्रम का मैं अनेक शः धन्यवाद करताहुं ईश्वर आपको सदैव इस धार्मिक परोपकार में दृढ़ चित्तरक्खे । अलम् ॥

ह० भानुसिंह शर्म्मा श्रीअंमृतसरजी अषाड़ प्र० ११ सं. १९५९ वि० ॥ २ ॥

(१५) श्रीमान् पंडित गंडारामजी सावा जिला जालंधर निवासीका भाषापत्र ॥

स्वातिश्री सर्वोपमा योग्य धर्म्मोपदेशक श्रीयुत पण्डित

सुखलालजी लोष्यितो साहबे से पण्डितं गंडारामीयः कोटि शः तनयः संतुशुभम यत्र चास्ते अग्रे मनुज भाषायं द्दतमिदं बोध्यं।प्रथम तो मैं धन्यबाद करताहुं उस परमात्माका जिस अंतर्यामिने कृपा द्रष्टि से आपको हमारे नगरों में प्रेरके प्रेषित कीया ॥ द्वितीय धन्यबाद मैं भी आपका करताहुं जो हमारे बुलाबले से हमारे पधारे और सनातन धर्म्म कीजिय करके दखलादी नवीन सिंहों को निरूतर करके ॥ इस वास्ते मेरी दृष्टी में येह आया कि गुरुमत ग्रन्थों में आपका वहुत अच्छा अभ्यास कीया हुआहै हमने न किसी भाईजी ग्रंथीका और न किसी पंडितका अभ्यास देखा और जो आपन आउंदे तो साधडे़ नगर में बरयामसिंह और गुरबखस से जीतहोणी असंभवथी और जो आप नै नवीन सिंहशिक्षा पुस्तक रचाहै सो वहुत धर्म्मोपयोगी है हमारे जसे अनेक पंडित लोग नवीन सिंहोंको निरूतर करेंगे. ॥ सं० १९५९. आषाड़ प्र. ३

ह. पं. गंडाराम साहबा जिला जालंधर ॥ ३ ।

(१६) श्रीमान् पं. गोविंद राम शर्म्मा भडोग जिला अंबाला का भाषापत्र ॥

श्रीसर्वोपमा योग्य गुणागणालंकृत-पण्डित गोविंदराम का नमस्कार वाचना आप नवीन सिंहों के घेरेको नष्टकरने वाले ब्रह्म वंशमें उत्पन्न हुवे सूर्य्य रूपीहो श्रीमानूजी पुस्तक नवीन सिंहशिक्षा वीपी द्वारा भेजदेना पता भडोग जिला अम्बाला तशील नरायनगड़ ॥ गोविंदरामको मिले ॥ ४ ॥

नोट इत्यादि अनेक पण्डितों के और प्रतिष्ठत पुरुषों के प्रशंसा पत्र हैं जो पुस्तक बडनके भियसे नहीं लिखे जाते ॥

सनातन धर्म्म सभाओं के प्रशंसापत्र ॥

(१७) सनातन धर्म्म सभा रोपड़ का चार प्रकारकी भाषाओं में एक प्रशंसा पत्र है और उक्त सभा नियमा अनुसार कांम करने से अपने विर्षिकोत्सवपर एक महोपदेशक की भेटा देतीथी ॥ पण्डित सुखलाल जी को सनातन धर्म्म सभा रोपड़की तरफसे व तारीख यकम सितंबर सन१८९७ ई०को उपदेशक मुकर्र्रर किया गिया जो कि तमाम मजाहिब से बखूबी वकफयत रक्खते हैं और मद्राम (इलाके में दौरा किया करेंगे ॥ औहद्दे दारानके दसखत ॥ प्रेजीडंट जातीराम ॥ वायस प्रेज़ीडंट कृपाराम ॥ मंत्री पं०

लक्ष्मण दास जोयसी ॥ उपमंत्री उक्त उपदेशकजी थे खजानची पं० रामचन्द्र ॥ पुस्तकाध्यक्ष छजराम कलरक बिहारी लाल सेड ॥ अन्तरंग सभाके १३ पुरुषोंकी तसदीकी ॥

श्री मान चौधरी लाला जाती राम ॥ पं० लक्ष्मण दास ॥ श्रीराम पटवारी ॥ पं० कृपाराम ॥ हकीम चंदूलाल पं० रामचंद्र ॥ ला० हिरालाल सुनार ॥ पं० नरायणदास ॥ ला० अछरूमल्ल ॥ पं० नथूराम ॥ हकीम नानक चन्द ॥ श्री मान् चौधरी सादीराम। पं० तेलूराम ॥ ॥ १ ॥

(१८) सनातन धर्म्म सा मोरंडा का मित्र विलास में छपा प्रशंसा पत्र

देखो साप्ताहिकपत्र मित्रविलास खण्ड २१ संख्या ३८ अक्टूबर २० सन् १८९७ ई० कार्तिक प० ६ सं० १९५४ लहौर में छपी पृष्ठ ८ कालम २ पंक्ती ३२ से ३६ पुष्ठ ९ कालम १ पंक्ती १ से ५ तक ॥

सनातन धर्म्म सभा रोपड़के उपदेशक पण्डित मुख लालजी आचार्य ने अब मातिमास के अन्त में रोपडमात्र में धर्म्म रक्षार्थ बिना वेतन उपदेश देना स्वीकार किया है १४ आश्विन को उक्त पण्डित जी ने कुराली में उपदेश

दिया और १५ को अपनी प्रभावशाली वक्तृता से मोई में सभास्थापनकी ॥ जिस के लिये हम पण्डित जी को धन्य वाद देते हैं ॥ इसप्रकार यदि और प्रधान २ सभाए निज २ प्रान्त में अपने उपदेशकों द्वारा धर्म्म रक्षा करें तो बहुत कुछ उन्नतिकी आशा है ॥ २ ॥

सम्पादक मुकंदराम ॥

(१९) सनातन धर्म्म सभा (क्लब) अमृतसरका गुरुमुखी में प्रशंसापत्र।

श्रीगुरुमत घरमें दुर्गा पुजन पुस्तक गुरुमुखी अक्षर संवत १९५६ ई० आश्विन सुदी दुर्गा ८ पृष्ट ४० जो अपने पृयपुत्र दुर्गाप्रसाद जीके उतपंनहोन की खुशी में रचा छोटाआकार टैपमें छपवाकर सनातन धर्म्म कलबने धर्म्मार्थ बाटा। जिस के अन्त में उक्त धन्यबाद है ॥ जिस पुस्तकका नवीन सिंह अबतक कुछ उत्तर नहीं दे सके ॥

श्रीयुत पण्डित सुखलालजी रोपड निवासी का सनातन धर्म्मकलब श्री अमृतसरकी ओरसे धन्यवाद कियाजाता है के आपने वडी योग्यता और परिश्रम के साथ श्री मत गुरु ग्रंथ को देखकर श्री गुरुघर में दुर्गा पुजन नामक पुस्तक

तैयार कियाहै जिस के लिये कलब बडी कृतज्ञ है और आशा रखती है के आप ऐसेही इस क्लब पर दया दृष्टि रख कर सदाधन्यवादलेते रहाकरेंगे। गोस्वामी पण्डित हरसुख राया मंत्री मनेजींग कमेटी सनातन धर्म्म क्लब अमृतसर ॥ ३ ॥

(२०) सनातन धर्म्म सभा अमृतसरका भाषा प्रशंसा पत्र ॥

जिसने १५) मासिक पर उपदेशक नियत कर छ महीने अमृतसर जिले में धर्म्म उपदेश मेरे से कराया। श्री युत पं० सुखलाल जी उपदेशक श्रीभारत धर्म्म महामण्डल रोपड़ निवासीने श्री सनातनधर्म्मक्लब अमृतसर के उपदेशक नियत होकर ६ मासतक अमृतसर जिले में तथा अन्य सस्थानोंमें (जहां २ क्लबकी ओरसे भेजा गिया) उपदेश का कार्य बडी उत्तम रीति तथा प्रेम से किया इस अरसर में जहां २ उपदेशार्थ पधारे परशंसापाई जो उनकी बाबत वहां २ के श्रोताओं की लिखत सम्मातियों से प्रगटहै उक्त पण्डित जी पुत्र (१) मृत्यु शोक के कारण इसकार्य को छोड़कर अपने घरको जाते हैं। येह बड़े धर्म्मात्मा परिश्रमि श्रीगुरुमत ग्रन्थोंके तत्वबेत्ता और सनातन धर्म्मोंनति में वद्ध

(१) श्रीदुर्गाप्रसादजी ॥

परिकर है। एतएव इन के धर्म्म सम्बन्धी कार्य्यपर प्रसन्न होकर यह प्रशंसा पत्र दियाजाता है कि समय पर काम आवे॥ चैत्र प्र० ११ सं० १९५९ वि० ॥

ह० गोस्वामि हरसुखराय मन्त्री मनेजिंग कमेटी
सनातन धर्म्मसभा उक्त (क्लब) अमृतसर ॥४॥

[२१] सनातन धर्म्मसभा अमृतसरका भाषा में प्रशंसापत्र ॥

मित्रो इस सभा ने " नवीन सिंहशिक्षा पुस्तक उत्तम समझ ५० कापी मोलले धर्म्मार्थ बांटी ॥

गुरु विद्यारत्न श्री पं० सुखलालजी उपदेशक श्रीभारत धर्म्म महामण्डल कृत पुस्तक " नवीन सिंहशिक्षा " नागरी में बहुत उत्तम और उपयोगी समझ कर सनातन धर्म्म अमृतसर ने गत फालगुण प्रविष्टे १३ सं० १९६० वि० की मेनेजिंग कमेटी के पास किये रिजोलयूशन के अनुसार ५० कापी उक्त पुस्तक की धर्म्मार्थ बांटने के लिये मूल्य मंगवाई जो १२ वार्षिकोत्सव पर बांटी जावेगी पं० सुखलाल जीको परमोपयोगी परिश्रम के अर्थ हम हृदय से धन्यवाद देते हैं और आशा रखते हैं कि पंडित जी

इसी प्रकार और पुस्तक निरमाण कर धन्यवादई होंगे।
ह० गोस्वामि हरसुखराय यं० मने० क० सना
तन धर्म्म सभा अमृतसर ॥ ५ ॥

(२२) सनातन धर्म्म सभा शैहर रावलपिंडी का अंग्रेजी प्रशंसा पत्र ॥ इसभा में ६ मास धर्म्म उपदेश किया जो १६) रूप्ये से तरकी २०) तक हुई ॥

७—मई सन १९५ ई० तसदीक किया जाता है पंडित सुखलाल " गुरु विद्या रत्न " उपदेशक श्री भारत धर्म्म महामण्डल नै इस सभाके मुतैहत्त अरसा ६ माह तक उपदेशक का कांम किया जो सिखों के मुकदस किताबों से विलकुल वाकिफ हैं उन्हों ने अपने फरायज मनसवी (डिउटी) को वफादारी से ईंजांम दिया जिस से सभाकी पूरी २ तसफी हुई जो वोह मुन्सफ ध्यानतदार मुस्तकिल अपनी काररवाई में वतौर उपदेशक में (पुरा) था वोह वहमा सिफत मौसूम आदमी है जो तावेदार और हमेशह अपने फरायज़ मनसवीको ईंजांम देने के लिये त्यारथा ॥ जिन से वोह मिला उसकी निसवत हम को नेक राय मिली सभा का एक वहुत अच्छा और कीमती उपदेशक

जाता है ॥ जिसने वहुत फयदे मंद कांम पोठोवार में अपने रिहायशके दिनों में किया है । अपनी मुलाजमत इस वजह से छोड़ता है के इसके वायदे की मुदत पुरी होलीथी ॥

भगतराम पलीडर उपल सकटरी श्री सनातन धर्म्म सभा शैहर रावलपिंडी ॥ और उक्त सभाकी मोहर ॥
द० पंडित गुलावचन्द प्रेज़ीडंट ॥ ६ ॥

(२३) सनातन धर्म्म सभा फिरोज़पुर नै इखवार सनातन धर्म्म गज़ट में प्रार्थना छपवाई ॥ मेरे दरयाफके लिये और वोह पत्र व्यवहार से १५) मासकपर उपदेशक मुकर्रर करके अपनी दिहात में परचार कराना चाहते है ॥

इखवार उड़दू सनातन धर्म्म गज़ट लहौर जिलद १० नंवर ३५ अगस्त ३० सन १९०५ ई० पृष्ठ ८ कालम २ पंक्ती २४ से २९ तक ॥ इश तफशार (प्रार्थना) पंडित सुखलाल जी जो पैहले रावलपिंडी सभा में उपदेशक थे आजकल कहां हैं । अगर किसी साहिब को उनका पता मालूम होतो इतलादें उन से खतो किताबत कीजावे । पंडित सुखलाल जी इस विद्या में वहुत माहिर हैं ।

राकम ॥ बनवारीलाल उपमन्त्री सनातन धर्म्मसभा फिरोजपुर ॥ ७ ॥

(२४) सनातन धर्म्मसभा पिशवरका वड्डू प्रशंसापत्र। श्रीमान पंडित सुखलाल जी उपदेशक रावलपिंडी धर्म्मसभा १८ सालाना जलसा पिशावर पर तसरीफ लाकर पिशावर निवासीओं को गुरुमरयादा दिखलाने के लिये उन्होंने वोह अद्भुत और पुर असर मजमून पर अैसा दिलकश व्याख्यन दिया के हाजरीन अश २ करते थे और अैसा असर उन्हों के दिलोंमें हुआ के बेशक श्रीगुरुसाहिब श्री वेद और शास्त्रों के मुआफक तलीम देकर अपना जन्मपत्रीत्र करगए हैं और उन्हों ने जोकुछ के उपदेश किया है उसपर हमलोगों का पावंदहोनाही अैन धर्म्म है । इस विषे परपंडित जी से इसवास्ते व्याख्यान दलाया गिया है कि इस विषे पर व्याख्यान का कराया जाना मनाशवहालथा ॥ सनातन धर्म्मी मेंवर और सनातन धर्म्मसभा पिशावर रावलपिंडी सभाके निहैत ममनून और मशकूर हैं के जिन्हों ने अैसे लायक लैकचरार को मुकर्ररकरके लोगों के सुधार लिये रक्खा हुआ है ॥

जीवन मल्ल ककड़ मन्त्री सनातन धर्म्मसभा पिशावर
२६—४—१९०५ मोहर उक्त सभाकी ॥ ८ ॥

(२५) सनातन धर्म्म सभा गड़ीकपूरे का भाषा में प्रशंसा पत्र ॥ इस सभा नै रजत पदक दिया है रावलपिंडी सभा के नाम से ॥

श्री मान् धर्म्म रक्षक पण्डित सुखलाल जी जो अष्ट नियम आपने लिखे थे वोह धूर्त कुछ उत्तर नहीं दे सक्के काल व्यतीत करते हैं आलेटाले करके ॥ आपकी कृपासे हमकेशरी वत्त गर्जना करते हैं धूर्त पंथी (सिंहसभा) स्यार वत्त होगए हैं धन्यवाद है आपकी बुधी को प्रमात्मा इस्से भी अधक करे जिस्से धर्म्म की जिय अधक हो ॥

धनीराम और मीरचंद मंत्री ठाकुरदास प्रेजीडंट सनातन धर्म्मसभा गड़ीकपूरा जेठ २२ सं० १९६१ वि० ॥ ९ ॥

नोट इसी प्रकार और अनेक सनातन धर्म्म सभाओं के प्रशंसा पत्र हैं यथा ॥ कुहाट ॥ गुजरखान ॥ नुशैहा पुंनुआं ॥ अजनाला ॥ राहीं ॥ नमो शैहर ॥ जमरामा ॥ गुजरा वाला ॥ गुरदापुर ॥ वहरामपुर ॥ मुकेरीआ ॥ हुस्यारपुर ॥ अटक ॥ छौनी मरदाने ॥ छौनी नुशैहरा ॥ लूंनखोर ॥

अनेकस्थानोंकी पंचायतके प्रशंसापत्र ॥

(२६) जिला जालंधर ब्यासपिंडकी पंचायत
का भाषा प्रशंसा पत्र ॥

सं० १९५८ वैशाख प्रविष्टे ७ को ब्यासपिंड में धर्म्म सभाहुई उस में सुखलाल उपदेशक ने साधु हिरादास के कहने को झूठा सावित किया ॥ इसमें जालंधर के सभ पंडित उपस्थित सी हिरादास को पत्र लिखा गिया वोहनहीं आया बड़ीभारी सभाहुई जिसमें २००० पुरुष और रहीस भीथे ॥ हरी सिंह लंबरदार इत्यादि १२ पुरुषों के
हस्ताक्षर हैं ॥ १ ॥

(२७) जिला अम्बाला तहशील खरड़ मुकांम लांड़रे की पंचायत का भाषा प्रशंसा पत्र ॥ मुकांम लांडरे में गुरु विद्या रत्न पं० सुखलाल शर्म्म उपदेशक श्री भारत धर्म्म महामण्डल रोपड़ निवासी ने धर्म्म उपदेश दो दिन वहुत अच्छा किया और नवीन सिंहों के मन कलपत मत का खण्डन कर खूब शिक्षा पहुंचाई श्रोत्रा गण परशंन हुऐ ॥ सं० १९६० वैसाख शु० ५ से ७ तक

पं० हरीनारायन मुहाना ॥ दूला सिंह लंवरदार ॥ रामजी दासादि ॥ २ ॥

(२८) जिल्ला जालंधर औड़के समीप पधानों में शास्त्रार्थ दो विषोंपर मंगलसिंह और बरयामसिंह से हुआ और दोनों विषयों की बहस के मध्यस्थ श्री मान् गुरुकुल भूषण सोढी टीका रामनारायण सिंह जी वड़ी सरकार और श्रीमान् परोपकारी भाई सम्पूर्ण सिंहजी वैद्यराज महंत गुरद्वार श्री केसगड साहिब दोनों अनन्दपूरनिवासी थे उनके पास वैहसके पत्र भेजेगये ॥ जो वोहभी सनातन धर्म्म की सच्चाईके कायल होकर और नवीनसिंहोंकी पक्ष करतेहुए अबतक फैसला नहीं देसके ॥ जो उनके पोस्टकार्ड से जाहिर है ॥

चक्क नं० २३३ वराच जजीरा लैलपुर ॥ पण्डित सुखलाल साहिब आपकी मए दीगर साहिबानोंके कृपापत्र पहुँचे हाल मालूमहुआ हम चंद याम के लिये इस जगह अपने मरब्बे (१) जात में आएहुएहैं ॥ चिट्ठी भाई सम्पूर्ण सिंह जीके नाम भी है सो थोड़े यामतक आनन्दपुर पहुँचकर आपको जवाब लिखेंगे । लेकिन् चूंकि कारोवार ज्यादा है इस लिये कुछदेरबाद जवाब इरशाल कियाजावेगा आइन्दा को कारोवार इनसूरतसे खाना बाहिद ख्याल करके याद

टिपणी (१) बुलेकी वारमें जमीन को कहते हैं ।

शाद रहे ॥ इस मजमूनका खत दीगर साहिबानों को भी लिखा गया है ॥

ता ३—मा० ९—सन् १९०० ई० ॥

टीका रामनारायण सिंह साहिब आनरेरी मजिस्ट्रेट व सिविल जज्ज अनन्दपुर जिला हुस्यारपुर ॥

इसपर ओड़ की पंचायत का फैसला जो उर्दू में प्रशंसा पत्र है औं आज के रोज व मुकाम पधानानुतशिल कमवा ओड़ पण्डित सुखलालजी साहिब व मंगल सिंह जी व वरयाम सिंह जी का आपस में शास्त्रार्थ हुआ गुरु घर में देवीका पुजन और गुरुओं के वमूजब रवाजहाल वैदिकधर्म शादीका होना मजामीन थे ॥ अव्वल मजमूनपर पण्डितजी का मंगल सिंह जीसे शास्त्रार्थ हुआ पण्डित साहिब ने उसका मण्डन दसम ग्रंथ साहिब मे कर के हाजरीन को दिखाया जिसका खण्डन मंगल सिंहजीसे नहीं हुआ ॥

दूसरे मजमूनपर वरयामसिंहजी खडेहुए (येह वोह वरयामसिंहजी हैं जिन्होंने वहुत्तसे देहात में अपनी मन घडत बातों से सनातनधर्म्मके खिलाफ जोश फैलारक्खा था और इसी वजह से बहुत दिहातके लोग बहस के सुन ने को दूर २ से आए

हुएथे और बरयामसिंह जीकी बातपर यकीन कियेहुए थे) फेरोंका देना नवग्रह पूजनको मनमानी बातोंसे खण्डन किया लेकिन जब पंडितजी खडेहुए और गुरुओंकी ११ सादीओं मेंसे तीन सादीओंका प्रमाण गुरु तवारीख से देकर फेरोंका होना और नवग्रहकी पुजन को साबित कर दिखाया और आदग्रंथसेभी इसका मण्डन किया तब हाजरीनके दिलों में ऐसा असर पैदाहुआ की यातो आमलोग बरयामसिंह जीका दम माररहे थे फिर सनातन धर्म्मपर यकीन लाकर पण्डित साहिबकी लयाकतके सना रुवाहहुए आदमीही नहीं बल्कि सैकडों मस्तूरातभी जो सुननेके लिये आई हुईथी सनातधर्म्मकी सच्चाई की कायल होगई। गो हम हिन्दूलोग कसबाऔडके पहलेसे सनातनधर्म केहामीहैं लेकिनइरदागिरददिहातकेबरयामसिंहजीकीवजह से सनातनधर्म्मछोडनेसे कुढरहेथे॥इल्ला पंडितसाहिबकीतकरीर के असरने जब उनके दिलोंको धर्मकी तरफ फेरलिया तो हम लोगों कोभी शान्ती हुई ॥ इस लिये हम लोग पण्डितजी के शुक्रगुजारहोकर येह शुकरीये की यादास्त खुशीसे देते हैं और महामण्डल व सनातनधर्म सभा रोपडकेभी हदसे

ज्यादा शुकरगुजार हैं जिन्हों ने सनातनधर्म्मकी उन्नति के लिये ऐसे २ लाशानी पण्डित उपदेशक नियत कररक्खे हैं ॥ १८ सित्तंवर सन १९०० ई०

प्रभुदयालुडिपटी सुपरिंटेंडेंट रियासत बिकानेर औड निवासी	दयालदासभल्ला बाजार चौधरी	इत्यादिक औड की पंचायत के मुखिया पुरुषों के२०हस्ताक्षरहैं

[२९] जिला हुस्यारपुर गड़ दिवाला की पंचायत का उड़दू में प्रशंसा पत्र ॥

इस जगह हिरादास और हरनांम सिंहसे शास्त्रार्थहुआ हमारे प्रार्थना पत्र से सनातन धर्म्म क्लब अमृतसरने अपना उपदेशक पंडित सुखलाल उपदेशक श्री भारत धर्म्म महा मण्डल को भेज दिया जिससे हमारे नगर वाले बहुत प्रसंन हुए पंडितजी का दो रोज ३०वा३१ दिसंवर सन् १९०२ सिंहसभा गड़ दिवाला से सास्त्रार्थ हुआ येह पंडित जी का ही कामथा के जिनकी कृपा से बहुत लोगों के दिलों में

सनातन धर्म्म की सचाई कायम हो गई ॥ सिंहलोग अपनी मन मानी गुरमरयादा को पंडितजी के सामने गुरुमरयादा साबित्त नहीं करसके गुरुसाहिबोंकेविवाहादिपर वेदक मरयादा हुई जो पंडित्त जी ने ग्रंथ साहिबादि पुस्तकों से साबित कर दिखाथा ॥ इस लिये हम गड़ दिवाला पंचायत की तरफ से पदवी देते हैं कि पंडित साहिब हमारे हिंदुओं में "गुरु विद्यारत्न है,,

मुवरखा ५ जनवरी सन १९०३ ई० ॥ लाला वसंत राय प्रेज़ीडंट मुन्सपिल कमेटी इत्यादि २० पुरुषों के दसखत हैं ॥ ४ ॥

[३०] जिला रावलपिंडी मुकाम हजरों की पंचायत का उड़दू प्रशंसा पत्र ॥

आज हज़रों ५ अपरैल सन १९०५ ई० को श्रीमान् पंडित सुखलालजी उपदेशक हजरों में आए तारीख ५।६।७ सन मजकूरको उन्हों ने धर्म्म काव्याख्या किया ॥ जिसके सुननेसे अम लोगों को बड़ाभारी लाभहुआ ॥ मानो गुरु घरमें उपदेश करने वाला कोई ऐसा पंडित होगा ॥ गुरुघर

का उपदेश करने के वास्ते एक भुजा रूपहै अगर ऐसे उप देशक पंडित हमारे मुलक में होंमें तो उमैद है लोग पाखंडों से हटकर अपने असली सनातन धर्म्म में प्रविरत होजामेंगे ॥ उपदेश करनेका उनको आला किसम का ढंग आता है जिसके सुननेसे श्रोतओंका चित्त मोहित होजाताहै ॥ हम लोग इनकी प्रशंसा करनेके काबल नहीं हैं ॥ पंडित साहिब मौसूफका केवल धन्यवादही करते हैं श्रीमान् भगत विष्णु दासजी ने उनकी बनाई हुई पुस्तक मौसूमा "नवीनासिंह शिक्षा ,, के हजरों धर्म्मशाला में कथाकरीथी जिसके सुनने से सबश्रोता जनोंका इरादा था किहम पंडित मौसूफजीका दर्शन करें और व्याख्यानसुने "सो उन्होंने आनकर हमारी दोनों कामनां पूरण करदीं,, अपरैल सन १९०९ ई ॥ संत तेजासिंह ॥ बाबा हरासिंह ॥ किष्णासिंह ॥ जीतासिंह ॥ अमीरासिंह इत्यादि २० पुरुषों कें दसखत हैं ॥ ९ ॥

" इति १० अध्याये ,,

[अध्याये ११]

नवीन सिंहों की दुरदशा।

धर्म्म पर बली दान का समाचार ॥

निमंत्रन पत्र वास्ते धर्म्म उपदेश मुकाम बछोड़ीआ से उर्दू में आया श्री धर्म्म रक्षक जनाब पंडित सुखलाल उपदेशक श्री भारत महामण्डल बाद नमस्य कारके मालूम हो कि बछोड़ीआं में २१ जेठ को सिंह सभा का जलसा है और वोह आधर्म्मका परचार करते हुए सर्वत्र ब्राह्मणों को शास्त्रार्थ लिये चैलंज देते हैं हम ब्राह्मणों की रक्षा करना आपका पर्म धर्म्म है अगर आपन आए तो धर्म्म की हानी होगी ॥ जेठ २० सं० १९६० आपका दास गंडाराम पाधा बछोड़ीआं तहशील गढ़शंकर जिला हुश्यारपुर ॥ मित्रो सिंह सभा के जलसेके एक दिन प्रिथम मेरे ल्याने वास्ते अश्व (घोड़ा) रोपड़ भेज दिया और मै समिय नियत पर पहुंचगया दो दिन उपदेशादिहुए तिसरे दिन सिंह सभा बछौड़ीआं की ओरसे नोटिस निकला ॥ जिसका खुलासा

मजमून येह है जिसको शास्त्रार्थ की इच्छाहो आजही दुपैहरसे पेस्तर करले ॥

सनातन धर्म्मीओंके साथ हम बड़ी खुसी से गए तो नवीन सिंहों की सभा (लड़ाके दल) ने जान लिया कि हमारे झूठका प्रचार होना कठनहै इसकार्ण लड़ाई का क्रोध प्रगट किया और साथही लाठी ले और टाकुए लेकर मारने को आपड़े और सुनने मे येही आवे कि रोपड़ वाले पंडित को जानसे मारदो देखाजायगा जो होगा ॥ इत्यादि नवीन सिहोंका हमला और रोपड़ वाले पंडित का जानसे मारदो शब्द सुनतेही सर्वत्र लोगों में भाजड़ पडगई मेरे सिरमें (सुखलाल उप देशक के सिरमें) टाकुआ अथवा लाठी हिरासिंह ग्रंथी अनंदपुर उपदेशक सिंहसभाने मारी चोट शख्त आई जोडाकटर साहिब के मुहलाजेसे प्रगट है ॥

हसपताल वला चौर विमारी सिरमें चोट से जखम दो ईंच लंवा और डेढ ईंच गैहरा । तारीख मुआयना १५-६ १९०३ रजीष्टर नंबर ३५११ जात हिन्दू उमर ३२ साल ॥ मित्रो उक्त प्रकार से सैंकड़ों मत मतान्त्रों के उपदेशक मर चुके हैं एक दास ही सनातन हिन्दू धर्म्म की सेवालिये जिवत

मचा है और वछौडीआंनगर निवासी बड़ेही धर्म्म के प्रेमी गऊ ब्रह्मण के रक्षक हैं उन्होंनें धर्म्म की रक्षा वास्ते जोस प्रगट किया कि दावा जरूर करना है इस कार्णे हम हुस्यारपुर पहुंचे ॥

हीरासिंह ग्रंथी उपदेशक सिंह सभाने मए साथीओंके फौजदारी दावा करने से पहले मुआफी मांगली। और मुआफीनामेका इकरारनामा आठ आने के कागज़पर लिख दिया । जो इष्टांम खरीद की नकल येह है ॥

रजीष्टर नंबर ७०२ और १९ जून सन १९०३ ई० कागज़ आठआना बनाम हीरासिंह वलद देवासिंह जात खत्री शकनह अनंदपुर उमर ६० साल मौहका बरुलवा देहने वराए इकरारनामा। ठाकुरदास अष्टांम फिरोस कचैहरी हुस्यारपुर ॥

नकल मुआफी नामा ॥

मथांके गुपालसिंह वलद उत्तमासिंह जात जट शकनह बछोईआं व हीरासिंह वलद देवासिंह जात खत्री शकनह अनंदपुरके हैं जोके मौजा वछौडीआं में जलसा हुआथा अर उस जलसे में तनाजा होगिआ और बगरज दायर करने

इस्तगासा हायके पंडित सुखलाल शाकन रोपड़ और हम हुस्यारपुर में आगए और कचैहरी हुस्यापुरमें पंचायत होकर हमारा फैसला कराद्दिया कि इस्तगासाहाय बाहमी इदालतमें दायर करने अच्छे नहीं हैं॥मुझ हिरासिंहने हाथ सुखलालका पकड़ लिया और बाहमी फैसला होकर राज़ीनामा होग्या अबहम कोई इस्तगासा इदालत में दायर नहीं करेंगे ॥ हमने पंडित सुखलाल को मुआफी से खुशकर लिया है लिहाज़ा येह इकरारनामा लिखदिया की सनदहो ॥ १९ जून सन् १९०३ मोहर माधोराम अपलिनवीस रजिष्टर नं० ८१५

गवाहशुद	अलबद	अलबद	गवाहशुद
पंडितनीलकंठ वलद मुसदीराम जातब्राह्मण शाकनहटूटो मजारा ॥ दसखतभाषा	हिरासिंह दसखतगुरमुखी ॥	गोपालसिंह दसखतउड्डू	वीरवलमल्ल वलद गुजरमल्ल जातसूद शाकनहः बहादरपुर दसखतहिंदी

(नोट) मित्रो नवीन सिंहों के ग्रंथी उपदेशकादियों में इतनी तामसी है तो साधार्ण नवीनासिंहों में करोड़ा गुणा वड़कर होनी चाहिये मगर नाक घिसाकर पंचायत के सामने मिंनतदारी करते हुओंकी बड़ी दुरदशा होती है ॥ धिक्कार अैसी वहादरी पर ॥

दुरदशा नम्बर दो।

देखो नवीन सिंहोंका गुरमुखी मामक पत्र ॥ खालसा नो जुआन वहादर अंमृतसर जिलद १ नंवर ५ और ६ फरवरी सन १९०० ई० पृष्ठ ५ कालम ३ सतर २२ से पृष्ठ ६ कालम १ सतर १८ तक॥ चिट्ठी गुरद्वारा पटना साहिव॥

सरदार समुंदसिंह जी श्री वाहिगुरू जीकी फतेहै पत्र का पौची हाल मालूम होआ जिसका उत्तर लिखाजाता है खालसाजी इह सभमनमत्त है गुरू महाराज सच्चे पातिसाह जी की आग्या चार वर्नो को अंमृत छकाने कीहै मुसल मानको रलाने की आग्या कहीं नहीं ॥ यथा ॥ "तुर्क तुर्क नीसे वचो तुर्क न किजोसिख,, इत्यादिक अंमृत छकानेकी आग्या फिर कहा है ॥ जिस मुसल्मानी से युधकीए फिर

अमृत छकाया जांदा है ॥ इस वास्ते यिहसभ मनघृतहै झूठे झगड़े ग्यानसिंहने गय लगाई है अर दित्तसिंह चाहिताहै कि सिक्खोंकी बेअदबी होवे क्यों ओह खुदरमदासीआहै अर गुरूके हुकमसे वरुध करताहै दित्तसिंह आप रमदासिआ होनेके सबब घोल मसोल करके सिक्खों की नरादरी करानी चाहुताहै पहलेतो मुसलमान सिख होताही नहीं यह सभ अंधेर पंजाब में पड़रहा है दूसरे जो मुसलमान ऐसाहीप्रेमी होतो अमृत छकाकर मजबीओं में दाखल कीया जावे लेकन चार वर्ण में उसका खान पान नहीं होसकदा ॥ अर आरतीका हटा देनाभी अथवा वतीन जगौनी सभ मनमतहै

दसखत वावा सुमेरसिंह महंत पटना साहिब ॥

(नोट) मित्रो उक्त नवीन सिंह और सिंहसभा के उतपंन करताहैं जिनको सिहोंके मान नियस्थान के महंत साहिब लेख द्वारा पंथमें दुरदशा करते हैं ॥

दुरदशा नंबर तीन

देखो अखवारखालसा नौजुयानवहादुर मासकपत्र गुरमुखी मूल्यवर्ष १।) जिल्द १ नंबर ५ फरवरी तारीख ५

सन् १९००ई० को श्रीअकालबुंगा अमृतसर के पुजारियों की ओरसे चसमानूर प्रेस श्रीअमृतसर में छपे के पृष्ठ ७ में आमलोगों की हिदायतके लिये श्रीतखत अनंदपुर की पत्र का छपीहुई है ॥ यथा ॥ श्रीयुत सिरदार सगुंद सिंहजी श्री वाहिगुरूजीकी फते आपकी पत्रका पहुंची सभहाल मालूम हूआ आपके प्रश्नोंका उत्तर दिगाजाता है पहले जो आपने बाबत मुसलमान सिंह सजने (वनने) वा आरती जगानेके लिये पूछाहै अरसिंह सभावाले जैसेकि आजकल कररहेहैं यह सभदितासिंह रमदासीआके गुटके पडनेसे हिल जुल मचगई है याने मुसलमानोको सिंह सजाउणा(बनाउणा) और आरतीकी वत्तो न जगोना यह सभ मनमत्त है जिस साल सिंहसभा लहौर में दितासिंह रमदासीयेने मुसलमानों को रलौने लिये जिकर किअयाथा कि उसवक्त लाहौर में क्याहाल हुआ हम चारों तख्तों में तो इत्तफाक होना ही था मगर खास अच्छे अच्छे ल्याकतदार सिंहसभाके मेम्बर अलहदा होगए। उस दिन थों बडी अक्ल वाले दित सिंह की तरफ हो गए अरतेज अकलवाले उससे उलट हो गए इस से जादे उमदा सबूत क्या होने सकदाहै यह सभ उस

दित सिंहकी ही मनमत है उसी दिन से मन मत के किये हुए रसम नए२ होतेजातेहैं न यह सभगुरु मत विरुद्ध है यथा शशे के सींग अविद्यासे राजा आकाश के फूलबत कदाचित् नहीं होती इसतरह मुसलमान सिख नाहीं होने सकदे और यह नहीं समझना चाहिये कि दितसिंह की मनमत से मुसलमान सिंहों में सामल हो गए हैं बलकि बहु सिंह जिन्हों ने उनो के साथ खानपान किया है हमारी कौम में से मुसलमान हो गए हैं और उनो ने अपनी आस्तीनोंमें सांप डाललियेहैं दूसरे आरती के बाबत लिखा है कि सिंह सभावाले बत्ती नहीं जगाउं दे (जलाते) यह सभ दितसिंहकी मनमत है गुरु साहवान ने खुद अपने मुखारबिंद से उच्चारण किया है यथा गगन में थाल रविचंद दीपक बने तार मंडल जनक मोती आदिक इसका अर्थ इस तरह से है गगन थाल रूप मोती से जडत है चंदनके सुगंध से चंदन होता है सूर्य का काम रोशनी करना पवन का हमेशा चौर करती है बनासपती फूल चढाती है इस ज्योती के वास्ते किया सामग्री करेगा इत्यादिक इसके अर्थ दितसिंह और उसके मतवाले यह सोच करते हैंकि धूप घी बत्ती आदिक सभ कीमत से आती है

इसलिये बंद करनी चाहिये। इसे आप सोचो कि यह मनमत नहीं तो और क्या है जब गुरु महाराज ने खुद यह जगन्नाथ के पास उच्चारण कीती थी। और गुरु महाराज खास निरगुन उपासक थे निरगुनकी आरती हमेशा निर्गुण होती है। गुरु अंगद जी ने भी सगुण पूजा निर्गुण के वास्ते भाई बाले की जबानी जन्म साखी पैडे मोखे से लिखवाई फिर गुरु अरजनदेव जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीढ (जिल्द) बंदी और आज्ञा दई और आप खुद आरती की मरयाद करते रहे आदि तखत श्री अमृतसरजी में आज तक जारी है फिर दितसिंह और उसके उपासक मनमत से ही सभ मरयादा विरुद्ध कररहे हैं। नवा गुरुआं के मत से दसम गुरु की आज्ञा से किसी मुसलमान ने अमृत छक (भक्षन) कर नातां खान पान सिंहोंके साथ किया है और न गुरुआं का हुकम ही है इसवास्ते यह सभ मनमत के ही ढकोसले लगाये हो रहे हैं। क्योंकि आजकल पंजाब में नवे गुटके छपरहे हन जो सभ विरुद्ध हन और दितसिंह खुद प्रेस का मुखतारकार है जैसी दलील आती है अखबार गुटके छाप देता है। लेकिन सानूं आदि श्री गुरु ग्रंथ सा-

हिब भाई गुरदास जी दी वाणी अते भाई मनीसिंह व सूर्य्य प्रकाश की वाणीपर चलणा चाहिये इस से इलावा वाणी सभ विरूद्ध है लेकिन क्याकरो जबतक राजगांन तखत साहिबांन की छापे व मोहरे न लगजावें तबतक यह काम जो सिंह सभावाले कररहेहैं न झूठ पर झूठहै। इहसाडी पत्र: का सभसजनानूं सुणादेणी दिवालीदे मेलेपर ताके इनमनमतो के कामों से बचेरहे फकत। दसखत सोढीबे अंतसिंह ॥ हरीसिंह अकाल बुंगेवाला ॥ संतासिंह ॥ कृपालसिंहखजा. नची ॥ बलवंतसिंह अनंदपुरसाहिब ॥

नोट॥ मित्रो उक्त नवीन सिंह और सिंहसभा के उत्पंन्न करताहैं जिन को सिंहों के माननीय स्थान के मुखिया पुरुष लेखद्वारा पंथमें दुरदशा करते हैं।

दुरदशा नंबर ४

देखो सिंहोंका इखबार गुरमत प्रचार लहौर १ जून सन१९०२ ई० सुफा ६ सतर ३३ से ३६तक और सुफा७ सतर १ से ४ तक प्रेतकी जदआर्सी श्री हजूर अबचला नगर साहिब सचखण्ड दी यात्रानूं गएतां जिस वक्त पहले

अरदासा सुधाण लई हजूर हाजार होए । लदहोर कुरैहतादी पूछदे नाल एहभी साडे तो पुछिया गियासी "कितुसी सिंह सभी येतां नहीं„ इसपर असानैं नहीं केहाचद साडा अर दासा सोधण होया अर तखत साहिब दे अंद्रदी भकरमा करनी मिलीसी । साडेतो पहिला भाई मेंहरसिंहजी चावले लहौर निवासी देना नालवड़ी तंगी होई सी ॥ इकरार नामा लैके तनखाह (सजा) लगाके अरदासा सोधियासी

छपवाने वाला संत खाल्सा भाई अवतार सिंह वहीरीआ ॥

(नोट) मित्रो दसम गुरुजीका मुख्य स्थान के महंत सिंह सभीयों को सजा देकर कैसी दुरदशा करतेहैं ॥

नवीन सिंहोंकी दुरदशा नं० ५

इखबार सनातन धर्म्म गजट लहौर १६ अगस्त सन १९०५ ई० जिलद १ नंबर ३३ सुफा ३ कालम २ से ३ सतर २४ तक ॥ हजूर अबचला नगर साहिब की चिट्ठीजो अकाल बुंगे अमृत सरमें आई ॥

श्री वाहेगुरू जीकी फते ॥ नानक गुरू गुर्विंदसिंहजी

पूरन गुरु अवतार ॥ जगमग जोत वराज रही श्री अवचल नगर अपार रच्यो पंथ जिन खालसा लिहो सकल अवतार जगत जोत जगमात जाहिर जगत मझार तखत साहिव अब चल नगर सच खंड दरबार ॥ लिखतम हजूर साहिव सचे खंडजी दे दरवार से श्री महंत मानसिंहजी पुजारी ते पुजारी नारायण सिंहजी वा ग्रंथी हजूरा सिंहजी ग्रंथी मानासिंह जी ते आयासिंहजीते होर सर्वत्त संवूह खालसा जीने श्री वाहे गुरूजीकी फते गमाई है तुमा गजात्र नीजी ॥ यहां सुख आनंदहै आपकी सुख आनंद श्री कलगी धर जीसे हमेशह रोज चाहितेहैंजी श्री अकाल तखतके पुजारी ते होर हरमंद्र जीदे पुजारी ग्रंथी मलताना सिंह जीत्ते होर सरवत्त पुजारी ग्रंथी हरनाम सिंह जीत्ते भाई प्रताप सिंह जत्ते होर सरत्रत खालसाजी को हाल मालूम होवे ॥ जो गुरु दसों पातसाहीओंके प्रेमी शब्द बानी के नेमी वीच दिवान के पढ़ कर सुनादेना जी हजूर सचखंड दरवार मे केस गड़ साहिव वा अनंदपुर साहिव पटना साहिव जी कोभी लिखा है धर्म्म के रखने लिये जो गुरु जीके सिंह प्रेमी शब्द बानी के नेमी सो दसों पादसाहीओंको और

दसों पादसाहीओंकी वानी ग्रंथ साहिव जी को अकाल पुरुष का सरूप जानदेहैं तिनादे साथ वरताओ रखनेका गुरु जी का हुकम है ॥

जेसौ चंदा उगमें सूर्य चड़े हजार ।
एत्ते चानण हुदेआ गुर विनघोर अंधार ॥

जो निरमले साधू हैं सो खालसा जीने छेके होएहै जो सिंह सभा में भ्रमी छेके और परपंची पाखंडी चुहड़े चमार मुसलमानों नूं मिलाने वाले और दसवे पादशाही जीके गुरु ग्रंथ साहिव जीकी निंद्या करने वाले हैं ॥ या करदेहैं तिनाद साथ वरताओ नहीं रखना उनांनू खाल से जीने छेक दिया है उनादे जोड़ मेल में जाना नहीं और ना उनानूं जोड़ मेल में मिलाना ॥ जो दरवार साहिव जीके तावह गुरू दरबार हैं सारे अरदासा लिख भेजो

घर घर होए बैठेगे रामा ।
तिनते सरेन कोउ कामा ॥

सुखम लिखिआ वहुत कर जाननाजी
दसखत ॥ मान सिंह पुजारी ॥

नोट मित्रो दशम गुरु जीका मुख्य स्थान महंत और कुलीय पुरुष सिंह सभीयों को गुरु घरसे छेकते (परी त्याग करते) हुए लेख द्वारा श्री तखत अनंद पुर साहिब श्री तखत पटना साहिब श्री तखत अमृतसर साहिबमें और सर्वत्र देस दिसाओं में लेखद्वारा दुरदशा करते हैं ॥

नवीनासिंहोंकी दुरदशा नंबर ६

एक गुरमुखी इस्तहार जो अँगलो गुरमुखी प्रेसमें छपा ११ ॥ इंच लंबा ८॥ इंच चौड़ा विज्ञापन है ॥ उक्त विज्ञापन की सतर १० से १२ तक येह लेखहै ॥

किसी जवान के मिठे सिंह सभी येनें भुले में नामक रूप कुंजीसे अजब प्रकार से जंद्रा खोला है ॥ सो ३८९ सिंह सभीओंनें अपना आप ५ मुसलमानोंके साथ खानपान कर बहुत अच्छी तरहसे रोशन करलिया है काहेते तिस भुलेमें नामक किताबमें येह लिखा है दसवे पादशाह कृत श्री गुरू ग्रंथ साहिब जीकी जो बाणी है सो अपवित्र है पुनः जिलद दसम ग्रन्थ की तोड़ देनी चाहिये पुनः आदि

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जीके बराबर मंझीपर प्रकाशना नहीं चाहिये ॥ ३ ॥ जिस सिंह सभीयेने ऐसे मंदे लफज कहेहैं उससे हम कहते हैं आदि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब वो सेहज धारी मतोंको लेकर कियाहै सो नाम धरीक सिंह सभीयेको पूछा जाताहै कि तुमारा गुरू कौन हैं सो आदि श्री गुरूग्रन्थ साहिब जीमें तो दसम गुरूजीका नाम नहीं है और दसम गुरू ग्रन्थ साहिब जी की बाणी आपके कथना अनुसार अपवित्र है आपका धर्म्म पुस्तक कौन है पुनः गुरूकौन है इनदोनों प्रश्नोंका उत्तर लिखके प्रगट करना चाहता है ॥ मि० ४३६ नानक साही ॥

पत्र प्रचार्क
पंडित गुरमुख सिंहजी
श्री गुरमत सिधान्त प्रकाशिक
मुकाम लंमीये जगीर जिला लहौर
तहशील चूनीआं डाकखाना भाई फेरू

[नोट] मित्रो उक्त विज्ञापन प्रचार करता नवीन सिंहों पर दो प्रश्नों से साफ कहताहै कि नवीन सिंहों का न कोई गुरू है और न कोई धर्म्म ग्रंथ है ॥ ॥ इत्यादि लेखसे बड़ी दुरदसाहुई जो उक्त हुकमनामा अत्रचला नगर साहिब का निकला॥।जिससें सिंह सभीये पंथसे छेके हुएसाफ साबितहैं ॥

नवीन सिंहों से शास्त्रार्थ के नियम ॥

(१) नवीन सिंह और सिंहसभा धर्म्म ग्रंथ किन २ ग्रंथों को मानती है विस्तार पूर्वक सर्वत्रका नाम पृथक २ लिखना होगा ॥

(२) नवीन सिंह और सिंहसभा जिन २ ग्रंथों को धर्म्म ग्रंथमानेगी उनको पूरण रीति से मानना होगा और उन ग्रंथों के किसी खास प्रसंग और परमाण को अपरमाणीक (रद्दी) नहीं कहनाहोगा ॥

(३) नवीन सिंह और सिंह सभाजिन २ ग्रंथों को धर्म्मग्रंथ मानेगी उनही ग्रंथों से अपना मत और व्यवहार (धार्मिक और व्यवहारक चाल चलन) सिद्ध करनाहोगा॥

(४) नवीनसिंह और सिंहसभा अपने धर्म्म के ग्रंथों

के अर्थ किसी सच्चेपुरुषके लेखसे अथवा मन कल्पित (मन के ढकौशलों से) करेगी ॥

(५) नवीनसिंह और सिंहसभा के धर्म्म पुस्तक [ग्रंथसाहिवादि] जिन २ ग्रंथोंको धर्म्म ग्रंथ मानलेवे उन ग्रंथों के परमाणको शास्त्रार्थ परमाणीक माननाहोगा ॥

(६) नवीनसिंह और सिंह सभाके साथ शास्त्रार्थमें नवीनसिंहों का धर्म्मग्रंथ परसपर विरोध [हलफ दिरोगी] में आजाएगा तो उस ग्रंथको झूठा समझकर लेख देनाहोगा कि अमक ग्रंथ झूठा है ।

(७) नवीनसिंह और सिंहसभाको शास्त्रार्थ में मध्यस्त (फैसला देनेवाला प्रेजीडंड) आपत वकता [सच्च बोल्ने वाला] जरूर करना होगा ॥

(८) नवीनसिंह और सिंहसभा । गुरु रख्यकसनातन हिन्दधर्म्म के जिस विषपर शास्त्रार्थ करना चाहें करले लेखिक [तहरीरी] सनमुख [तकरीरी] हम [सुखलाल उपदेशक रोपड़ निवासी] गुरुमत धर्म्मग्रंथ और गुरु व्यवहार से सवित करने को त्यारहैं ॥ तथापि उक्त नंबर १ के अनुसार प्रिथम अपनी पृक्षा जरूर देनी होगी ॥

(९) नवीनसिंह और सिंहसभा को शास्त्रार्थ में फिसादादिक प्रबंध (बंदोबस्त) और समिय नियत [वक्तमुकर्रर] करके हमको खबर देनीहोगी मएस्थान के॥

(१०) उपरले शास्त्रार्थ के नियम (अपूरूलों) को मनजूर करके शास्त्रार्थ करने वालों को अपनी सभा के प्रेजीडंट अथवा लंबरदार के दसखत कराकर शिघ्र भेजदें॥ ताके शास्त्रार्थ प्रारंभ होजाए॥

(नोट) अबहम देखतेहैं कौन २ धर्म्म निरालिपका प्रेमी नवीन सिंह शास्त्रार्थ लिये मैदानमें उतरता है॥

हस्ताक्षर " गुरु विद्या रत्न "
सुखलाल उपदेशक
श्री भारत धर्म्म महामण्डल
रोपड़ जिला, अम्बाला निवासी
" गुर सिख मीत चलो गुर चाली "

" इती नवीन सिंह शिक्षा "

धन्यवाद

(१) श्रीयुत सनातन धर्म्म सभा भारोपई का धन्यवाद है जिसने नवीन सिंहशिक्षा निःपक्ष छपने में २०) सहायता दी ॥

(२) सनातन धर्म्म सभा अमृतसर का धन्यवाद है जिसने नवीन सिंहशिक्षा ५० पुस्तक मूल्य लेकर अपने उत्सव पर धर्म्मार्थ बांटी ॥

(३) इन समाचार पत्रों (१ सनातन धर्म्म गजट लाहौर ॥ २ ब्राह्मण सर्वस्व इटावा ॥ ३ भारत प्रताप कांगड़ ४ सनातन धर्म्म पताका मुरादाबाद ॥ ५ भारतमित्र कलकत्ता ॥ ६ भारतजीवन बनारस ॥ ७ श्री वेंकटेश्वर बंबई ॥ ८ बंगवासी कलकत्ता ॥ ९ सत्यधर्म्म प्रचारक जालंधर निगमागम चंद्रिका मथुरा) के सम्पादकों का धन्यवाद है जिन्हों ने अपने २ उक्त समाचार पत्रों में नवीन सिंहशिक्षा की समालोचना छापकर पुस्तक की परतिष्ठा बढ़ाई । और देश दिशाओं में परसिधी कराई ॥

(४) शोक है सनातन धर्म्मसभा जगरामा के मंत्री पं० छजूराम पर जिसने बहुतसी पुस्तकें नवीन सिंह शिक्षा मंगवाकर थोड़ीसी पुस्तकों के मूल्य में बेइमानी की जो अब तक नहीं देसके ॥ इस पुस्तक रचयिता

नवीनसिंहों से प्रश्न ॥

खालसाजी आपके इखवार (खालसा इखवार लहौर नं० ११ जिल्द ११ हाड़ १७ साल नानक ४३४ आदियों में श्रीमान् मैम मकालफ साहिब बहादुर ने जो ग्रंथसाहिबका अंग्रेजी तरजमा किया है उसकी और शिमले के लेकचरों की बड़ी तारीफ की है और इन्हीं शिमलेकेलैकचरों में मकालफ साहिब ने कहा है कि सिखों के धर्म्म ग्रंथ (श्री गुरू आद और दसम ग्रंथसाहिब श्रीभाई गुरदासजीकी वाणी) में सिखां को गोमांस भक्षनकी मुमानियत नहीं है हिन्दूओं की देखा देखी लकीरके फकीर बन बैठे हैं ॥ अगर मुकालफ साहिब का कथन सच्चहै तो

मित्रो इन गुरुके शब्दों का अर्थ क्या है ॥

आसा की वार महल्ला १ श्लोक १६

गऊ ब्राह्मण को करलगावहु गोवर तरनन जाई ॥

श्लोक कराने बधीक महाला १ श्लोक ४

ब्राह्मण कैली घातं कंज्ञका अनाचारी का धान ॥

भैरो नामदेव १० तुक शब्द १२

काजी मुल्लां किनती फुरमाए, बखसी हिन्दू मैं तेरी गाए ॥

श्री भाई गुरदासजीकी वार १ पौड़ी २०

ठाकुरद्वारे ढाहि के तिह ठौड़ी मसीत उसारा ॥ मारन गऊ गरीबनूं धरती उपर पाप बियारा पापेदा वरतिआ वरतारा ॥

श्री भाई गुरदास जीकी वार ४ पौड़ी ८

गाई गरीव पर उपकारा ॥

श्री भाई गुरदास जीकी वार १७ पौड़ी १७

ब्राह्मण गाई वंसघात लाइत्त वार असामी ॥

श्री भाई गुरदास जीकी वार ३४ पौड़ी १९

ब्राह्मण गाई वंसघात अपराध करारे

श्री भाई गुरदास जीकी वार ३५ पौड़ी २०

जे मां होवै जारनी क्यों पुत्त पत्तारे ॥ गाई माणक निगलिआ पेटपाड़ नमारे ॥ जे पिर बहुघर हंडणा सत्त रखेनारे अमर चलावे चंमदे चाकर पिचारे ॥

श्री मुख वाक पातसाही १० छकोंमें

मिटे कष्ट गऊन छुटै खेदभारी ॥ असुर मार रख गऊ न करीजै ॥ और ॥ येही देह आज्ञा तुर्क को खपाऊ ॥ गो घातका दुख जगतसे हटाऊ ॥ मुकाकफ साहिब का कथन

उक्त शब्दों द्वारा सरासर झूठा है तो बताओ ? उनका अंग्रेज़ी तरजमा ग्रंथ साहिब का कैसे सच्चा होसक्ता है ॥ और पुरातीन सिहों में मकालफ साहिब के कथनसे दरुद्ध गऊ रक्षा में गुरू हुकमा अनुसार क्यों लिखा था " यथा ॥ देखो गुरमुखी रिसाला " सिखहिन्दू हैन " जो नवीन सिंहों के रिसाले " हम हिन्दू नहीं " का मुंहतोड़ उत्तर ॥ मुसन्फा बाबा नारायणसिंह वकील साहिब जो सम्मत १९५६ विक्रम (सन १८८९ ई०) मतवा कानूनी हिन्दू प्रेस अमृतसर छपे के सुफे २६ सत्तर ७ से १७ तक ॥ महाराजा रणजीत सिंहजी देवेले इक सिखदे पुत्रने नेजा (बरछा) मार के साहन (नंदीगन) नूं मारदित्ता । ते सिखाने फरयाद कीती जो महाराज फलाने (अमक) सिखदे पुत्रने साहन (नंदीगन) नूं मारदित्ता है ॥ तांकारदार। ने केहा ओह सिखदा पुत्र नही है ॥ उसदी मानूं बुलाके पुछजाओहतां मुकर गई हुकम किता इसनूं सजादिओ ते अकल्ले होके पुछजाता उसने किहा महाराज चूहड़े (भंगी) ने जबरदस्ती डाल्यामी(जबर जनाही कितीसी) ते मैं डरदा ते नहींदस्यामी सो ओह मार नाल । ... ... ॥ (...)

(इस्तहार)

(१) इस पुस्तक "नवीनसिंहशिक्षा,, के उलथा करने और छपवाने का सवाए पुस्तक रचता के और किसी को अधिकार नहीं जो कोई उलथा कर छपवाने से लाभका परिश्रम करेगा बजाए लाभ के नुकसान उठाएगा और जिस पुस्तक पर पुस्तक रचता के हस्ताक्षर और मोहर न होगी वोह पुस्तक चोरी की समझी जाएगी ॥

(२) मेरी रचत पुस्तकें येह और छपने वाली हैं

(१) श्रीगुरमत व्यवहार भानू

(२) सिंहसभाके अमृत संस्कारपर संदेह

(३) गुरूमत विवाह संस्कार

(४) गुरूमत मृतक संस्कार
(५) नवीनसिंह शिक्षा गुरमुखी
(६) श्रीगुरूघर में दुर्गापुजन द्वारेकेपेगी
(७) श्री गुरूमत दिवाकर
(८) श्री भाई गुरदासजी की १० वार ग्रंथ साहिव से मंडल
(९) एक खालसा के ५०० भूठे लालच में उत्तर पर उत्तर
(१०) आर्य्यासमाज में पोप लिला
(११) इसाईयों की बायबल का खंडन पुर्वार्ध और उत्रार्ध

(गहिर गंभीर मतके ढोल का पोल जिस में स्वामी विष्णूदासजी के जतीपने आदक भूठ का खुब प्रकाश किया गिया है ।।

ह० पुस्तकरचता

ज्ञानी नवीन सिंहसिखा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	वणशंकर	वर्णसंकर
,,	८	रत्न	रतन
,,	९	महमण्डल	महामण्डल
,,	१८	पढ़	पढ़े
२	८	पात	प्रात
४	८	हा	हम
५	५	उपाट	उपाड़े
५	६	थोटी	थोड़ी
७	५	यहातक ाक	यहानक कि
७	८	मत	मता
७	११	ाकयाकरते	कियाकरते
९	५	जिनसन	जिनसुन.
१०	१८	तंवहादुर	तेगबहादुर
,,	१९	ाववाह	विवाह
,,	१९	जीकं	जीके
,,	२०	कन्य कं	कन्याके
,,	२१	ःावताकिये	सावताकिये
११	४	रथाला	स्थाली
,,	७	गगाजीआर	गंगाजीओर
,,	९	गुरू ४ कं	गुरू ४ कं
,,	१९	साप	सेपाप
,,	२१	आर	और
१२	२	कर ेहैं	करतेहैं
,,	१५	जवन	जीवन
१२	१९-२०	साहव	साहिब
१३	५	सदैन	सदैव
१३	९	रोपट	रोपद
१६	३	माबित	साबित
१६	३	देखा	देखो
१७	८	किमतरा	किसतरा
१७	११	छक	छके
१७	१२	(नोट)	[नोट]
१७	१२	गोविंद्मिंह	गोविंदसिंह
१७	१४	पुररग	पुरश्चरण
१८	८	जगं	जगे
१८	९	हिन्दूक	हिन्दुक
१९	६	राचओं	रचिओ
१९	११	गायत्रीसं	गायत्रीसे
१९	१५	दष्टिगोचर	दृष्टिगोचर
२०	१	इकठंहैंक	इकठेहैंके
२०	३	कोअगदंत	कोजगदंत
२०	४	हांवाभेद	गुरुहोवाभेद
२०	८	निरकै	निराले
२०	८	हमरीकरां	हमरीकरो
२०	९	विधेही	विषेही
२०	१२	भंज्यों	भेज्यों
२०	१३	देइनसंग	देहमेंसंग
२१	७	केहीं	केहीं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	११	वंदरीति	वेदरीति
२१	१४	मैंमुद्दलं	नेमुद्दाले
२१	१५	मुद्दइयोंकं	मुद्दईयोंके
२२	१	पठ	पठे
२२	८	हुइगयां	हुइगयो
२२	९	कोश्रां	करेश्रो
२३	३	कंश्वसर	केसश्वर
२३	४	प्रामसं	प्रामसे
२३	७	लियाकं	लियाके
२३	९	श्रपन	श्रपने
२३	१२	उसकां	उसको
२३	१३	श्रष्टत।	श्रेष्टता
२४	९	कलकं	कलके
२४	९	धर्म्मसं	धर्म्मसे
२४	११	यांकं	यांके
२४	१३	वननकंवास्त	वननेकेवास्ते
२४	१५	सिखोंनं	सिखोंने
२५	२	पासहांचुका	पासहोचुका
२५	७	नालयंहां	नालयेहीं
२५	९	महाराजं	महाराजे
२५	१४	वडंकाट	वडकाट
२५	१८	कांशिशका	कोशिशकी
२५	१८	कंकिन	लेकिन
२६	१०	अभेदकातेहैं	अभेदकरतेहैं
२६	१३	रोशन	रोशन
२६	१५	करामत	करामत
२६	१५	सिखोंको	सिखोंको
२७	१	श्रौसं	श्रौसे
२७	७	आदेवोंक	आदेयोंके
,,	१०	सहजाद	सहजादे
,,	१३	जांनर	जोनर
,,	,,	सांमेरंहिरदं	सोमेरेहिरदे
,,	१६	जांसमसर२	जो समसर१
,,	१८	तक लेखहै	
२८	३	चोमी !	इसकी टिपणी पृष्ठ ५७ पं क्ती २५ वा षी से आगे देखो ॥
,,	८	(नोट)	[नोट]
,,	९	इकाईहै	इकोईहै
,,	११	रसालं	रसाले
,,	१२	दियाहैजा	दियाहैजो
,,	१४	छटेसेरिसाल	छोटसे रिसाले
,,	१५	देकरसाविन	देकरसाविन
,,	,,	जानवीन	जो नवीन
,,	१६	दनंके	देनेके
,,	,,	सारकं चणं	सारके चणे
,,	१७	[नोट]	[नोट]
२९	१	हातेहैं	होतेहैं
,,	३	कं	के
,,	५	हांतेहुए	होतेहुए
,,	८	हांतेहैं	होतेहैं
,,	८	मदं	मदे
३०	२	सिंहमानासिंह	सिंहमानसिंह
३०	३	हिन्दुहै	सिख हिन्दूहै

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०	५	(रांटमाड)	(रोडमाड)
३०	८	कंस	केस
३०	१७	(नांट)	(नोट)
३१	४	स्त्रीआदिकं	स्त्रीआदिके
३१	४	खातेहैं	खाते हैं
३१	६	नहींखातं	नहीखाते
३१	७	(नांट)	(नोट)
३१	७	लडकं	लडके
३१	१४	हातीहै	होती है
३१	१६	ऊंचं	ऊचे
३१	१७	हातीहै इस्से	होतीहै।इस्से
३२	१	हांकर	होकर
३२	१२	बाजे गाजं	बाजे गाजे
३३	४	लंना	लेना
३३	६	(नांट)	(नोट)
३३	५	समझतं	समझते
३३	६	लंना	लेना
३३	७	समझतं	समझते
३३	८	मारदंका	मारदेको
३३	८	दबादंतहै	दबादेते हैं
३३	११	दंतहैं	देते हैं
३३	१२	हिंदू	हिन्दू है
३३	१४	नथान	नथाग
३४	१	कर्मांकं	कर्म्मोंके
,,	३	कर्म्मोंके	इनकी टिपणी पृष्ठ ३३ पंक्ती १६ मेंआगई है

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	४	मानतंहै	मानते हैं
,,	६	वामनमान	वामनमाने
,,	७	मिश्रेश्रीसिद्धों	मिश्रश्रीसिद्धोंके
,,	१३	हिन्दुहैं	हिन्दूहैं
,,	१६	कांई	कोई
३५	२	आदग्रथ	आदग्रन्थ
,,	१०	सम	सभ
३६	१	सांई	सोई
,,	१०	दह	देह
,,	११	श्लांक	श्लोक
,,	१७	नामदंव	नामदेव
३७	२	सरण	सरणं
,,	४	कं	के
,,	,,	खरबुसाकं	खरबुसाके
,,	५	पूतहांय	पूतहोय
,,	,,	बालकवालं	बालक वाले
,,	८	सिलातरी	सिलातरीपर
,,	९	ततकाल	ततकाले
३८	३	उपदेष	उपदेश
,,	४	गुरुसे बमुख	गुरुसे वेमुख
,,	५	आग्या	आज्ञा
,,	,,	करनेवाल	करनेवाले
३८	८	सं उपदेश	से उपदेश
,,	१०	त्यागी	त्यागी
,,	१३	करतेहै	करतेहैं
,,	१६	व्यांहारा	व्यौहारा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९	६	जेनी	जोता
,,	७	वखाणांश्र	वखाणांश्रे
,,	११	पछानं	पछाने
,,	१४	छिद्रां	छिद्रो
,,	,,	कुंभअ ल	कुंभजल
,,	,,	अभागिअंभ	अंभइअंभ
४०	४	सगपानी	संगपानी
,,	७	मिळन	मिळत
,,	१४	ईश्वरकां	ईश्वरको
४१	२	पडैगा	पड़ेगा
,,	८	देखा	देखो
,,	११	वर्लन	वर्णन
,,	१३	शामिलहै	शांमिलहै
४२	३	जनेऊ	जनेऊ
,,	३	पांडघन	पांडेघन
,,	४	उपरक	उपाले
,,	५	जनेऊ	जनऊ
,,	७	रूपींगठ	रूपींगाठ
,,	१०	तेरपाम	तेरेगाम
,,	१२	करतेहै	करतेहैं
,,	१२	सचसून	सचमुत
,,	१३	समका	समको
,,	१४	हुकमसं	हुकमसे
४३	१	पांस	पास
४३	२	छाडादेआ	छांड़िदेआ
,,	४	आंस	आंखे
,,	५	सासोंअंभ	सासोंअंमें
,,	६	छेहतेहै	छे हतेहै
,,	,,	झगडं	झगडे
,,	१०	जैस	जैसे
,,	११	तहैंबांह	तहैं बांह
४४	२	जनेऊ देखो	जनेऊथादेख
४४	३	लाला	लाला
४४	५	देखेना	देखेना
४४	५	ताजेहाहै	ताजेहां
४४	८	आंखआ	आंखि
४४	८	लगां	लगे
४४	१०	करां	करो
४४	१२	वाला	वोलो
४४	१३	अथहो	अथहै
४४	१६	(जनऊका	(जनेउका
४५	१	कां, कातं	के, कानें
४५	३	यज्ञोपवीत	यज्ञोपवीत
४५	६	भमभए	भमभ
४५	९	पांडछड	पोड़ेकेड
४५	१०	छांडो	छेड़ा
४५	१२	दरबअमए	दरवेसभेर
४६	२	जैसे	जैसे
४६	२	धोती	धोती
४६	३	हूं	हैं
४६	४	तेरा	तेरा
४६	७	समजत	समझते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६	८	धोखांदंद	धोखांदेने	५९	५	नानकदयमी	नानकदेवजी
४६	९	यज्ञपवीन	यज्ञोपवीत	४९	६	नंग	लेग
४६	११	धाना	धोना	४९	८	मानंन	मानने
४६	१५	अपगजनेऊ	अपरजनेऊक	४९	९	उनकं यः	उनके यः
४६	,,	ताज्ञापको	तोज्ञापकयों	४९	१०	निचं	निचे
४७	१	जनेऊ	जनेऊ	४९	१०	जनऊक	जनेऊका
४७	२	अाना	अपना	४९	१३	सांढो	सेढो
४७	२	हिन्दओं	हिन्दो	४९	१५	देखीयं	देखीके
४७	५	साधन	साधन	४९	१५	रोपड़	रोपड़
४७	७	लिख	लिखा	४९	१७	का	को
४८	१	मिश्रां	मिश्रो	५०	३	पोथी	पोथी
४८	२	अानेसं	अानेसे	५०	३	भट	भड
४८	३	अनेऊ:	जनेऊ	५१	६	कुलरन	कुलरत
४८	३	दीदेश्वर	दोदेश्वर	,,	८	पढ़गुन	पढ़गुने
४८	४	परमेश्वरउनक	परमेश्वरउनके	,,	११	वंद	वेद
४८	५	हंत	हैत	,	१४	मंद	मेदा
४८	६	कुपरं	कुसेः	५२	५	नंको	नेको
४८	७	कं	के	,,	४	पुकारं	पुकारे
४८	७	समाचारका	समाचारको	५३	३	मझमको	मझके
४८	७	कहनंवालंहैं	कहनेवालेहैं	५३	६	पुराना	पुराणा
४८	८	जीकातिलक	जाके तिलक	५३	७	कंसोगोपाल	केसोगोपाल
४८	९	प्रवेश्वन	प्रवेश्वाने	५३	८	पुराना	पुराणा
४८	१०	पहलें	पहले	५३	९	कद	सद
४८	११	होताहैं	होता	,,	१०	साहिब	साहिले
४८	१६	बड	बडे	,,	११	वचकहंहु	वच कहे
४९	५	मिश्रों	मिश्रों	,,	१२	रूक	रूक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५३	१६	वंद धर्म्म	वेद धर्म्म
५४	६	सांहिला	सांहिल
५४	९	वंदपुराण	वेदपुरान
५४	१०	कोर उपदश	कोउपदेश
५४	,,	उसपांडत	उसपंडित
५४	११	अदेश	आदेश
५४	१७	सुनं वहु	सुनंबहु
५४	१८	श्लांक	श्लाक
५५	१	कहंदं	कहंदे
५५	७	बदह	नेदह
५६	१३	पक्षो	पक्षो
५७	१	परमश्वर	प्रमेश्वर
५७	८	पुराण	पुराण
५७	११	कहतहोता	कहके कयों
५७	१४	काछ	काछ
	१५	दंव	देव
५८	७	गांविन्द	गोविन्द
५८	८	कातंकुए	कानेकुए
	९	कुर्श	कष्टुसे
	९	सार्डे	मंडी
	९	वत न्त है	वतलाने हैं
५८	१४	अन्धक	अंन्धकार
	१५	संच स है	सचसाई
५९	१	तातांम.।	तांनमधु
	२	तुनय	तुमीय
	२	तातों	ताते
५९	५	प्रकारस	प्रकासं
,,	८	विमे प	विवेःपु
,,	८	चलाया	चलया
,,	१०	निनमस	तिनमम
,,	,,	दसरथको	दसरथको
,,	११	होतमया	होतभेया
,,	,,	त्रिश्रानवरांग्रह	श्रीरामविष्णु
,,	१२	मथम	प्रथम
,,	१३	सुरपुहि	सुरपुरह
,,	१४	उनहांको	उनहीको
,,	१५	दसरंथाज	देसरथराज
,,	१६	थायंद्रु	थायेदु
६०	१	कमयां	कयाया
६०	२	पुत्र पंत्र	पुत्र पौत्र
६०	२	अगकोमरा	अगको अध
,,	५	नगरकोछांड	नगरकोछोड
,,	७	बनश्रआपुत्र	बनपुत्र
,,	८	दंसत	देसत
,,	९	ंसहन	सिहने
,,	१०	कस	कैस
,,	,,	किया	किये
,,	१७	अउम	ओउम
६१	१	जोतं	जोतं
,,	,,	वर्ण	वर्ण
,,	३	का	को
,,	४	बंदी	वेदी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६१	५	किया	क्रियो
		धनंवर्षकीनं	धनंवर्षकीनो
		नहाहिः निषाम	तहाहीनिवासं
,,	६	धर्म्मकं	धर्म्मके
,,	८	आसनानं	आ संतान
,,	९	वैर	वैर
,,	१०	मेत्रा	मत्रा
,,	१२	स्त्रांरि	कांसि
,,	,,	मंदम.कं	मदमाके
,,	१३	सुनाम	सुनायं
,,	१५	वद	वेद
,,	१६	वंद	वेद
,,	१७	तते	तासे
६२	१	वेदपाठिवे	वेदपाठयं
,,	४	वंद	वेद
,,	५	राजाार	राजपट
,,	५	वंदी	वेदी
,,	९	हार	होर
,,	१०	पार्व	पावे
,,	१२	कं	के
,,	१३	मैं	मैं
,,	१५	वद	देह
,,	१८	देव	देवो
६३	१	दंत	वेत
,,	२	मधा	मेधा
,,	३	में	में
६४	४	कं	के
,,	५	मा तै	मं तै
,,	६	कां	को
,,	८	अठकं	अठके
,,	१०	का	को
,,	११	पस	प्रेस
,,	१३	सलिया	सेलिया
,,	१४	मैनरिमां	जैनमों
,,	१५	ज्ञां	जो
,,	१६	स्वितात्र	सतात्र
,,	,,	लिकेजां	लियेजो
,,	१७	नजरसं	नजरसे
,,	१८	हमसद	समसद
६५	१	नाट	नोट
६५	३	हिन्दूओं मंही	हिन्दूओं में हैं
६५	४	अठाक	अठके
६५	५	तां खडनक	तो खंडनेक
६५	६	कान	कोन
६५	६	समाकर में	समकर में
६५	८	शब्दसं	शब्द से
,,	८	धर्मं	धर्म
,,	९	हवन दि	हवनादि
,,	९	करतहै	करतेहै
,,	१०	कां वं विरून	के विरूनसे
६५	१२	होह	होहे
६५	१३	असनावं वंजे	असत मेजे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६५	११	सुकं	गुके
६६	१	देते हैं	देने हैं
६६	१	से अवकाई	से अवकोई
६६	५	वेदी	वेदो
६६	६	मल्कं	मल्के
६६	६	मिल्लं	मिल्ले
६६	८	खुल ७ चोंग	खुले ७ चोंग
६६	८	सखडो	सेखडो
६६	१०	सर्वत्र कं	सर्वत्र के
६६	११	नेकं भयसं	नेके भयसे
६६	,,	करककते	कर्मकना
६६	१२	हूजो	हूजो
६६	१३	रीति भे	रीति में
६७	१	धर्म्मं की	धर्म्मे को
६७	४	धंत	धेते
६७	६	तवं हैहों	वते हैहो
६७	७	हुनी	हुनी
६७	८	ठेहुने	ठेहते
६७	१२	मात्र	गोत्र
६७	१३	मुलेका	मुलेको
६७	१३	वंदक	वेदक
६७	१४	हाखं	हाखें
६८	३	स	सें
६८	४	लिखंहैं	लिखेहैं
६८	७	देवकी	प्रकाशमें
६८	८	वेदीभ	देवीके
६८	८	औदंभिरावंदी	औदंभरावंदी
६८	८	जहंगे	जहगे
६८	९	आसिमकं	आसिमको
६८	११	बंद	बेद
६८	११	नैनवंने	नैनवने
६८	१४	मवाणिहेर	मवाणिहेर
६९	२	हिरदं	हिरदे
६९	३	जिउ तेउ	जिउतेउ
६९	८	देहजोंने	देहजीने
६९	९	वंदक	वेदक
६९	१३	सगेकं	सगेको
६९	१४	निपचार	निपचार
६९	१४	तवलाग	तवलेग
७०	२	फरकर फो	फेरकरके
७०	३	हरख	हरखे
७०	४	साखांचार	साखोचार
७०	४	सुन्मों	सुन्यो
७०	५	वांचवद	वांचवेद
७०	६	उठ	उठे
७०	९	जकं	जके
७०	९	(वंदेक)	[वेदक]
७०	१३	जातजान	जातीजान
७०	४	उठ	उठे
७१	५	कंम ति	किम ति
७१	५	करी	नेरी
७१	६	आरते	औरते

पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
७१	८	फेंरं	फेरे
७१	१२	[नाट] तह	[नोट] येह
७२	६	वंदीं	वेदी
७२	७	गजरीका	गुजरीको
७२	९	फैरे	फेरे
७२	१०	वंरं	वेरे
७२	१०	जथा	जथो
७२	११	डंरं	डेरे
७२	१४	लिकदर्क	जिलदके
७२	१४	रस्न	इस्से
७३	४	त्यागी	त्यारी
७३	१०	मण्डपभैं	मण्डपमैं
७४	४	दूलह	दूलह
७४	५	विधिटेरं	विधिटेरे
७४	१०	विक्रमी	विक्रमी
७४	११	सुफं	सुफे
७४	११	दुाजी	दुरजी
७४	१२	नार	नोट
७४	,,	चिवाह	विव'ह
७४	१३	गीति	रीति
७४	१५	ाहदू जो	हिन्दू रीतिजो
७४	,,	नांकंविवाहा	वोकेविवाहो
७५	३	गाविंद	गोविंद
७५	१०	फिखाए	फिरबाए
७६	,,	प्रंथ	पंथ
७७	१	भंदाभी	भेदाकी
७७	४	वोंका	वोंको
७७	५	नेंलेंले	नैलेलो
७७	६	कियाहा	कियाहो
७७	७	वातश्रा	वताश्रो
७७	१०	ाहन्दू वंदक	हिन्दू (वेदक)
७७	११	संहीसमझा	सेहीसमझो
७८	१	गया	गयो
७८	२	धर्मे?सायकहन	धर्म्मे१साथ
७८	२	धिया	भियो
७८	३	हकां	हकारे
७८	३	डेकात्यारी	ल्हेकारत्यारी
७८	६	नवग्रहका	नवग्रहको
७८	७	अभिसंचन	अभिसेचन
७८	७	फंर	फेर
७८	८	फंरनि	फेरेन
७८	८	आज्ञात्तं	आज्ञासे
७८	८	वंदी	वेदी
७८	९	विखं	विखै
७८	११	दूला डंरेगया	दूलोडेरेगयो
७९	२	आदके	आदिके
७९	३	तांहम	जोहम
७९	४	वेवजीकं	देवजीके
७९	५	निवासीनं	निवासीने
७९	६	तरस्वारकं	तरखाणके
७९	९	फर	फेरे
७९	१०	सूर्यनकाश	सूर्यप्रकाश

पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
७९	११	साहिवकां	साहिवको	,,	७	छदश	छंतशब्द
७९	१३	मनजाएग	मानजाएगे	,,	८	नांट	नाट
७९	१६	रीतिकं	रीतिका	,,	९	पढने जिसमे	पढनेजिसमे
७९	१७	कन्यावाल	कन्यावाले	,,	९	ब्रह्मवंद	ब्रह्मवंद
८०	३	मंगइकत्रकर	संगइकत्रका	,,	११	लेतहै॥जां	लेतहै॥जो
८०	३	वालकरां	वालककरो	८३	१२	स्त्रे यां	स्त्रीओं
८०	३	लध सुजान	लेवेसुजान	८३	१३	(विम्र ददद	(दयाद्दद)
८०	५	छतशब्द	छंतशब्द	८३	१३	दर्गनीहै	देखनीहै
८०	७	हिन्दूओंकं	हिन्दूओंके	८३	१५	टांईओं	छांडआ
८०	८	वैंमही	वैसेही	८३	१८	कं मत्रो मे	केवलमत्रोमे
८०	९	आमाहिया	अमोहिया	८३	१८	पुरुषका	पुरुषको
८०	९	वालराप	बलिराम	८४	२	कौरकां	कौरको
८०	१३	सर्म पर्यल	समीपतेल	८४	६	स्त्रीकां	स्त्रीको
८१	१४	घांडीआं	घोडीआं	८४	७	कांपरमश्वर	कोपरमेश्वर
८२	१	करत्तहै	करते हैं	८४	९	भैकामग	भैकामण
८२	२	वेदी रचल	वेदीरचले	८४	१०	करैभांग	करैभेग
,,	,,	कवीरजीपर	कवीरजीने	८४	१३	कनीनार	कतीनार
,,	८	प्राहित	प्रोहित	८४	१७	डाए	होए
,,	८	वंद	वेद	८४	१७	अगनर्क	आगनर्क
,,	९	वैसही	वैसेही	८४	१८	गरदासजां	गुरदासजी
,,	११	मांपर	मोपर	८५	४	हिन्दूओकं	हिन्दूओंके
,,	१५	हिन्दूओवे	हिन्दूओके	८५	५	पुरुषहा	पुरुषहो
,,	१५	फंरेहांतहै	फेरहोतेहैं	८५	६	जिस्म	जिस्से
,,	१७	दिवाए	दिवाए	८५	७	झाई	भाई
८३	१	भिवाह	विवाह	८५	८	पत्रकडखर	पेत्रकेडघर
,	३	नहांगा	नहीं होता	८५	८	भाऊापंऊ	भाऊमिऊ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८५	१२	भांजन	भोजन
८५	१२	लाकवंद	लोकवेद
८५	१५	हिन्दूओकं	हिन्दुओके
८६	५	काढंकी	काढंकी
८६	९	भिअमंरी	भियामेरी
८६	१०	रागरवन	रागरतन
८६	११	शब्दांत	शब्दोत
८७	२	समग	समय
८७	२	वर्योंाक	क्योंकि
८७	३	अनंद	अनद
८७	६	वोपुरुष	तोपुरुष
८७	८	भेंघ टितहां	मेघटिनहो
८७	९	समझां	समझो
८७	११	कग्व	कंवे
८७	१२	वनत है	वनेतहै
८७	१३	वाज २ पुरुष	वाजे२पुरुष
८७	१३	पट तहै	पड़ तहै
८७	१५	वार्णाव्रह्म	वाणीव्रह्म
८७	१७	सभिाकिन्नाविष	सर्भाकक्नविष
८८	१४	नानकवांल	नानकवोले
८९	८	हरिांलवलाई	हरिलिवलाई
८९	८	जीकीकांही	जीकीकोही
८९	९	उपदश	उपदेश
८९	९	परविरी	परविरती
८९	१२	वंद वाणीकं	बेदवार्णाके
८९	१२	भिलना	मिलना

पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
८९	१३	परमार्थकं	परमार्थके
८९	१३	उपदश है	उपदेशहै
८९	१५	रीतिसं	रीतिसे
८९	,,	दृष्टिगोचा	दृष्टिगाचर
८९	१७	कारनसांहै	कारजसेहै
९०	१	ल म१भं	लांम१में
९०	१	अराधासेभ	अराधोमन
९०	३	(नांट)	(नेट)
९०	३	पुरुपकं	पुरुषके
९०	४	मस्त्रिकालये	मस्त्रोकेलिये
९०	५	लामरभं	लांमरमे
९०	६	एकां स्वा ?	एकोस्वामी
९०	७	(नांट)	(नोट)
९०	८	कां नईाजां	कोईनहींजो
९०	८	उनकं	उनके
९०	१२	पुरुपक	पुरुषके
९०	१३	हांमक्की	हासर्का
९०	१४	लाम४मं	छांम४मे
९०	१६	पभु	प्रभु
९०	१७	दांनाहीं	दोनोही
९०	१८	खाचि‍ता कार्य	खाचितकार्य
९१	१	कारणांसं	कारणों मे
,,	२	पोसं गुठका	मोसे गुरुका
,,	३	महारातन	महाराजने
,,	४	जाउक्त	जोउक्त
,,	५	स जाहिर है	सेजाहिरहै

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	८	(फंरं)लेतंहैं	(फेरे) लेतेहैं
,,	८	चिरकाकसं	चिरकाल से
,,	९	हुआएकां	हुआएको
,,	९	दुनारे ग्रंथ	दुवारेग्रंथ
,,	९	जीसं	जीसे
,,	१०	करतं हैं और कहतं हैयेह	करते है और कहते हैं येह
,,	११	अपनीगय	अपनीराय
,,	१२	क्योंाक	क्योंके
,,	१२	उनही भैसे	उनहींमेंसे
,,	१४	देखां	देखो
,,	१४	सुचारतरूदी	सुधारतरूदी
,,	१५	प्रंस विख	प्रेस विच
,,	१६	सुफं	सुफे
९२	१	किअपणे	कि अपणे
९२	१	गतविच्च	मतविच्च
९२	२	[फंरे]	[फेरे]
,,	४	तेजेकर	तेजेकर
,,	५	कांई	कोई
,,	५	होयाहांवे	होयाहोवे
,,	६	पंपदं	पंथदे
,,	६	त्रिचार	विचार
,,	७	हांवे	होवे
,,	७	अतसारं	अतेसारे
,,	७	लांका	लोका
,	८	अग्गीदं	अग्गीदे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	११	आचाली	ओचाली
,,	११	हामगं	होनगे
,,	१२	दिआलती	विआलजी
,,	१४	दंहैंन	देहैंन
,,	१४	कीशीहांई	कीनीहोई
९२	१५	ममाण	प्रमाण
९२	१६	पांथी	पोथी
९२	१६	अठमीसची	अठमीसंची
९२	१७	होकं	होके
९३	१	टलट	उलट
९३	२	मकरमां	प्रकरमां
९३	४	वक्तपाथी	उक्तपोथी
९३	५	सुफं	सुफे
९३	५	सत्तर ११सं	सत्तर११ से
९३	६	साहिबजीदं	साहिबजदे
९३	७	तेजकह	तेजेकरो
९३	१०	इहाक	इहाके
९३	११	मलक्	मलक
९३	१३	रिस्तेगडजाण	रिस्तेगढभोग
९३	१४	होदंहैन	होंदेहैंन
९३	१४	दंरिस्तं	देरिस्ते
९३	१४	जांदहैन	जांदेहैन
९३	१५	धम्र्मदा दर्भ	धर्म्मदा धर्म
९३	१५	धम्र्मदमरा	धर्म्मदेमरा
९३	१६	धर्म्म दें	धर्म्मदे
९३	१८	मंनहैन	मंनआदेहैंन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९४	३	सतो गह	संजोगहै
१४	३	चित्र सतान	विचसंतान
९४	४	कानीअने	कानी अंत
९४	५	संजांग	संजे ग
९४	६	मांपितापुत्री	मांपितापुत्री
९४	१०	पड़दं	पडदे
९४	११	उसत्वेका	उसवेके
९४	११	उच्चरण	उच्चारण
९४	,,	हांवप्रजहै	होवेअंजेहै
९४	१४	नाताइनहै	जायज समकोई
९४	१५	भेग भप	भैगमरा
९४	१६	हांव	होवे
९४	१७	संनोगदा	संजोगदा
९५	१	नांट ।। इमगर	नोट।इसपर
९५	१	पड़नं	पड़ने
९५	२	वालावचार	वालविचार
९५	४	जांसं	जोसे
,,	४	लंतेहुप	लेतहुए
९५	४	अमली	असली
,,	४	गुमरयाद	गुमरयादा
,,	४	वतलातेहं	वतलातेहैं
,,	५	मौर	और
,,	६	मिहोक	सिंहों के
,,	७	पटआल	पट्टेआला
,,	८	जांअमृत	जोअमृत
,,	८	गुरुगाविद	गुरुगोविंद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	९	सांढ	सोढ
,,	११	गांविंद सिंह	गोविंद सह
,,	१२	दंईकी	देईकी
,,	१२	अनदपुर	अनंदपुर
,,	१४	देखां	देखो
,,	१५	दंईका	देईका
,,	१५	टईका	देईका
९५	१६	दानोंका	दोनोंका
९५	१६	पुरकं	पुरुषोंका
९६	५	पापकं	पापके
९६	५	उपदशका	उपदेशकर
९७	२	पांहद्दिन	पोहदिन
९७	३	लंख	लेख
९७	४	आंराह	जोराह
९७	५	अमृ—'सह	अमृतसर
९७	६	जां नवीन	जो नवीन
९७	८	[नैसां]	[नैसो]
९७	१६	वाहंजकिं	वाहेजीके
९७	१७	वकत दे।	वकतदा
९८	१	शादंकं	शादोंके
९८	३	इकरार	इकरार
,,	६	लकन	लेकन
,,	७	बगर	वंगगा
,,	८	च हीये	चाईये
,,	९	जिवनमिह	जिवन सिंह
,,	११	दुदस	दुरदसा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९९	४	शरीरलग	शरीर लगे
,,	१०	वाचें	वावे
,,	१३	वालंकी	वालेकी
,,	१४	सुफ	सुफ़
१००	४	इसामकार	इसीप्रकार
१००	६	मानीआ	मानीओ
१००	९	न नफ	नानक
१००	९	अध्यय	अध्याये
,,	९	कवनाअक	कवनांअंक
,,	१३	मलक है	मलकेहै
,,	१३	।उकर	निऊकर
,,	१६	धम्भें	धर्म्मे
,,	१७	।धमो	विचमो
१०१	४	५मं८तक	५ से८तक
,,	५	जां_।जोत	जोतीजोत
,,	६	आपकंकें	केपश्चात
१०१	७	कुळक	कुलके
१०१	८	मु-।तमांहरा	गुनतमोहरी
,,	८	आपुस	आयुस
,,	९	मापाद	मरियाद
,,	१२	दंत्ते	देते
,,	,,	कत है	करते है
,,	१४	दंने	देने
,,	१५	सगसर	सुरसर
१०२	१	स्र्यप्रक.श	सूर्यप्रकाश
,,	८	कोवडं	के वडे
,,	१२	रनान	सनान
,,	१५	रीतिस	रीतिसे
१०३	१	मृत्य	मृत्यु
,,	३	किया	क्रिया
,,	६	घृ-।	घृत
,,	९	आजत	अरजन
,,	९	उठजो	उठजो
१०३	१०	हर पिपामा	हेरपिपासा
,,	१२	पितकां	पितको
,,	१४	तिसस	तिससे
,,	१५	अमका हरे	को हरे
१०४	१	वांनं	वीने
,,	३	गस २	राम २
,,	४	अरजन दंत्र	अरजनदेव
,,	८	दंवजी	देवजी
,,	८	अनाकी	आनाकी
,,	९	कं मंहरवान	केमेहरवान
,,	१२	अई	अई
,,	१४	संत नों	गुरुसंतानो
,,	१४	जोतीजांत	जोती जोती
१०५	३	जोतीं जांत	जोती जोत
,,	५	सुचारं	सुधारे
,,	६	अनं	आने
,,	८	रिहचारी	तिहचारी
,,	१०	जं सिख	जे सिख
,,	,,	शांक	शोक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	११	करताभिश्रा	करत भिश्रो
,,	१५	जांग	जोग
१०६	६	रक्ष कं	रक्षांक
,,	८	साहव	साहिव
,,	९	लिखतं हैं	लिखते हैं
,,	९	प्रभनांका	प्रभुतांका
,,	१०	यहम का	महसाका
,,	११	फार प मिर	फारससि
,,	१३	आनं पर	आने परर
,,	१३	गां जानं	गो जीने
,,	,,	हिंदू	हिन्दू
,,	१४	मृरक	मृतक
,,	१६	बांयो	बायो
१०७	१	सहमीती	सहप्रीती
,,	२	मवत	संवत
,,	२	प्रंस	प्रेस
,,	५	दंखो	देखो
,,	५	जांरसांर	जोरसोर
,,	७	जिमका	जिसको
,,	७	मत ठंके	सिंहठेकेदार
,,	९	लंहीर भे	लहौरमें
,,	९	बाटी जा	बाटी जो
,,	१०	जिसक	जिसके
,,	११	भूमिका	भूमिका
,,	,,	जी कं	जी के
,,	१५	तंग	तेग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०८	१	कप	कथा
,,	३	जलरो	जलसा
,,	४	बैठेहने	बैठेहुते
,,	६	देवी दाम	देवीदास
,,	६	तरहमां	तेगहिमो
,,	७	धर्म	धर्म्म
,,	७	ब्रह्मभांज	ब्रह्मभोज
,,	८	[नांट] भिश्रो	[नोट]मिश्रो
,,	१०	चउवाल	चउवोले
१०८	१०	धर्म्म में	धर्म्ममे
,,	११	कंमे	कैमे
,,	१४	गंडनमत्रं—।	मंडन अंते
,,	१५	कंशागांपाल	केशोगोपाल
,,	,,	पाण्ड—।	पण्डित
१०९	१	वेवाण	बेवाग
,,	३	वांलिआ	वोलिया
,,	६	वांलिअ	वोलिआ
,,	७	जातजातमावन	जोतीजोत
,,	८	केरनलग	करनेलगे
,,	९	कंसोगांपाल	केसोगोपाल
,,	१०	[केशांगोपालसज्ञक	[केशोगोपाल संज्ञक
,,	१०	पांठ—।	पठित
,,	११	[जांगरूड	जोगरूड
११०	१	मरघटो भें	मरघटों मे
,,	२	करतं	करते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	४	पावीयं	पावीये	११२	१०	बंटे	बेटे
,,	५	दंनं	देने	,,	१२	पुस्तकं	पुस्तके
,,	७	मिलिआ	मिलिआ	,,	१४	गायंदवाल	गोयंदवाल
,,	११	वरह	तरह	,,	१६	केशां	केशो
१११	१	(सतूसगत)	(सतसंगत	११३	८	सुफं	सुफे
,,	१	म ति	प्रति	,,	९	स्पष	स्पष्ट
,,	२	करतेथ	करते थे	,,	१०	अफाल	अकाल
,,	४	प्रसंग भें	प्रसंग में	,,	१६	भं	में
,,	६	जीकं किया	जीकेकिया	११४	६	को हरनें	कोहरने
,,	७	करताथा।	करताथा॥	,,	१२	श्रां गुरु	श्रीगुरु
,,	७	विमालू	बिसालू	,,	,,	कांश	कोश
,,	८	गांपाल	गोपाल	,,	,,	तार।	तारासिंह
,,	१७	गापाल	गोपाल	११५	५	लिख	लिखे
,,	,,	अर्थ	अर्थ	११५	११	श्लांक	श्लोक
११२	२	कंशो गंपाल का वालीक	केशोगोपा लकाबाल मीक	,,	१४	दंगए	देगए
				११६	३	आंना	आना
				,,	४	मांए	मोए
,,	२	रथमल	नथमल्ल	११७	३	सुफं	सफे
,,	३	र । र	त । त	,,	५	मत्त	प्रेत
,,	३	चारवेटं	चारवेटे	,,	१४	अंतकालजा	अंतकालजो
,,	४	ताका	तारेका	,,	१६	गुजगी	गुजरी
,,	५	सैहतुका	सैहजूका	,,	१७	दूमरंकां	दूसरेको
,,	५	जाध	जोध	११९	५	कंसंबंधी	केसंबंधी
,,	५	दंवदित	देवीदित	,,	५	करनेको	करतेको
,,	७	बेटं	बेटे	,,	१२	जोन्हावे	जोन्हावे
,,	९	बंटं गांविंद	बेटे गोविंद	१२०	१५	मांहाका	मोहाका

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२०	१६	चार करेइ	चोरकरेइ	१२९	८	हांवे।	होवे।
१२१	२	घालेर दंइ	घालेरदेइ	,,	९	हांम	होम
,,	७	करंगा	करेगा	,,	११	जंसिर खुथं	जेसिरखुथे
,,	९	टूसरे	दूसरे	१३०	२	रांवालं	रोवाले
,,	१०	अर्थातनंकं	अर्थातनेके	,,	३	धमं	धर्म
,,	११	पहंचं	पहुंचे	,,	४	नमं	धर्म
१२२	१	गांविंद	गोविंद	,,	४	करतं हैं	करते हैं
,,	२	वालं	वाले	,,	६	अधं	धर्म
,,	५	अमेत	अमेत	,,	१२	कुलखक	कुलखेत
,,	७	हां	हो	१३१	४	हामक्तां	होसके
,,	७	कां	को	,,	१५	स्वंकार	स्वीकार
,,	११	लांग पितर	लोगपित्तर	१३२	११	मुकं	सुफे
१२४	१	हांआ	होआ	१३३	१	अष्टकर्भ	अष्टकर्म
,,	७	लहजांवे	लहजावे	,,	७	कुन्चर	कुंन्चर
,,	८	श्लांक	श्लोक	,,	८	श्लेक	श्लोक
,,	१५	कंस्नान सं	केस्नान से	१३३	१०	नंमकिये तं	नेमकियेत्ते
,,	,,	(मांक्ष)हाना	(मोक्ष)होना	,,	११	श्लांक	श्लोक
,,	१७	वढ़करहै	वढ़कर हैं	,,	१५	तिन	जिन
१२५	२	गतहांवे	गतहोवे	१३४	१०	जारे	जात्ते
,,	८	करणं	करणे	,,	१२	विवंक	विवेक
१२६	५	सेवंओ	सेवेओ	,,	१३	छेहरए	छेहरटा
,,	३	देवतंआ	देवतेआ	,,	१५	दिये	दिजीये
,,	९	देतंहैं	देतेहैं	,,	,,	साहिवों	साहिवों
१२८	२	फाल	फोल	,,	१६	करकंकं	करकेके
,,	६	ढांई	ढोई	१३५	८	गनरवांधे	मन (२)वोने
,,	१०	नाआंई	नाओइ	,,	९	वंद	वेद
,,	११	वगांए	वगोए	,,	१०	उपदंश	उपदेश
,,	१२	हुतं	हुते	,,	१४	करनं	करने

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	८	जिसमैं	जिसमें
,,	१२	तांडहावै	तोडहोवै
,,	१३	सांई	सोई
,,	१९	जांहे	त्ताहें
१३७	२	मानतं	मानते
,,	३	तंहै संतां	तहैं संतो
,,	७	जां	जो
,,	८	कर्मकरं	कर्मकरे
,,	८	कर्भ	कर्म
,,	१४	नंसंविम	नेसेविम
,,	१५	वांह	वोह्
,,	१६	वैसंही	वैसेही
१३८	८	श्लांकवरातं	श्लोकवारांते
,,	१२	भांजनादि	भोजनादि
,,	१४	गुरु ५ कां	गुरु ५ के
,,	१६	पददंश	उपदेश
,,	,,	गुरदासजा	गुरुदासजी
,,	१८	वैठ	वैठे
१३९	३	वंसघाट	वंसघात
,,	,,	असाभी	असामी
,,	,,	भाई	भाईगु
,,	५	भें	में
,,	६	दरवंस	दरवेस
,,	१२	त्रिवणी	त्रिवेणी
,,	१४	करतंथे	करतेथे
,,	१७	दानदंना	दानदेना
१४०	१	कर्भों	कर्मों
,,	२	सांखत्री	सोखत्री
,,	३	लांभजे	लेभजे
,,	४	श्लांक	श्लोक
,,	९	कां दंवे	को देवे
,,	१४	पुत्ताकी	पूजाकी
,,	१७	कं	के
१४१	१	भेरं	भेरे
,,	२	गं सं तरा	गे से तेरा
,,	१	जांई	जोई
,,	२	वाही	ताही
,,	३	दंसासिंह	देसासिंह
,,	२	जांकं	जांके
१४२	६	मरवानेकं	मरवानेके
,,	७	देनंकं	देनेके
१४३	१	जांनं	जाने
,,	२	देनंसमं	देनेसमें
,,	८	कंहींतंचम	केहींपंचम
,,	९	दंवो	देखो
,,	१०	छंवी	छेवी
,,	१४	कं	के
,,	१७	नांट	नोट
१४४	२	गांत्र	गोत्र
,,	२	चाहियं	चाहिये
,,	६	दां वालक	दोवालक
,,	१३	तिसने	जिसने
,,	१४	प्यारं	प्यारे
,,	,,	तांहै	तोहै
,,	१५	दंखना	देखना
१४५	१	वांलते	बोलते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	२	जां	जो
,,	७	मंरेचार	मरंचार
,,	७	दियहैं	दियेहैं
,,	१४	सदूगाति	सदुगति
१४६	४	जसलंवै	असलवै
१४६	६	लांचन	लोचन
१४७	१२	खांजहेत	खोजकेहेत
१४८	६	देतंहै	देनेहैं
१४८	१०	नाभेदिये	नामेदिये
१४९	२	हुएनं	हुएने
,,	१२	जुँदू	जुँद्र
१५०	२	इनहीकां	इनही को
,,	११	दंनेका	देनेका
,,	१२	मिलनंकं	मिलनेके
१५१	५	कँरते हैं	करतेहैं
,,	११	महाराजनं	महाराजने
,,	,,	सुति से	स्तुति से
,,	१२	अत्रीनगी	अधीनगी
,,	,,	ब्राह्मणनं	ब्राह्मणने
,,	१३	नत्तीजं से	नत्तीजेसे
,,	,,	तांगुरू	तोगुरु
,,	१४	बालं	वाले
,,	१६	मोस	मोसे
,,	,,	चेलोकं	चेलोके
१५२	२	चलतै	चलत
,	३	उमकं	उसके
,	१०	संदां	संदो
,	१३	म्यैयांसं	सैवयों से
,,	१६	कं निशंधकं	केनिशेधके
,,	१७	जां	जो
,,	,,	वाहचार	वहचार
१५३	५	दंसका	देसका
,,	६	करनंवाला	करनेवाला
१५४	४	रावंदास	रविदास
,,	९	मेरा	मेरी
,,	१०	फथं	फथे
,,	११	दातामेरं	दातामेरे
,,	१२	गमनकरं	गमनकरे
,,	१३	रहाउ॥माना उपदंश	रहाउमाना उपदेशह
,,	१४	लेहु	लेहु
१५५	३	चाटडंविगडं	चाटडेविगड
,,	४	धषा	धाया
,,	६	गिथायंभु	सियाथंभु
,,	१२	भूल	भूले
,,	१३	अत्तर	अंतरं
,,	१४	नान	नाम
,,	१५	लैपापीपाधं	लैपाटीपाधे
,,	१६	अचारं मरी	अचारमेरी
,,	,,	लिखदंहु	लिखदेहु
१५६	३	लागं	लागे
,,	६	कंकी	केकी
,,	६	पन	पत
,,	७	किरतंके	करते के
,,	८	घलाई	चलाई
,,	९	स्योंवार	स्योंवाद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१०	कांवेविच	कोठेविच
१५८	३	देआं	देओ
,,	४	मरकं	मरके
,,	५	बुलाआं	बुलाओ
,,	६	छांडवान	छोडवान
,,	८	मांकोघार	मोकोघार
,,	११	हारांमांहे	हारोमांहे
,,	१३	भगतंहत	भगतहेह
,,	१६	पुकारं	पुकारं
१५९	२	राममाम	रामनाम
,,	५	घनेरां	घनेरां
,,	१४	गांव	गावे
,,	१५	दांखी	दोखी
१६०	१	बरताद	उस्ताद
,,	९	रडिआं	रडिओ
,,	१४	मुडचलं	मुहडचले
,,	१५	उबारनकं	उवारनको
,,	,,	चौंपरह	चौंपरहे
१६२	८	हए	होए
,,	१०	हांएकं	होएके
,,	,,	करांअढा	करोअढा
,,	११	मंगीपिछां	मंगीपिछो
,,	१६	वालिपांता	वलिपोता
१६३	३	सुहुकभी	सुहुकर्मी
,,	६	ठानिआं	ठानिओ
,,	१४	भंद	भेद
१६४	१	पजाने	पछानों
,,	३	निरखलांग	निरखलोग
,,	४	छुयां	छुयो
१६५	५	भजंओन	भजेओन
१६६	७	रलीआलं	रलीआले
,,	८	आलंखरं	आलेखरं
१६७	१५	अवभै	अवमैं
१६८	६	नंसधुण	नेस धुणं
१६९	१४	चंद्रावलकाव	चंद्रावलकान
,,	१५	गांपी	गोपी
,,	,,	विंद्रावन मे	विन्द्रावनमें
१७०	१	सगलां	सगलो
,,	२	पेखंभांगन	पेखेभोगन
,,	७	कांटसन	कोटसन
,,	१२	अगमखंल	अगमखेल
,,	,,	उछाण	उछाहि
१७१	३	दंव दंवता	देव देवता
,,	४	वासदंव	वासदेव
,,	८	गावरधन	गोवरधन
,,	९	सांहिलं	सोहिल
,,	१२	मांहल	मोहन
१७२	३	भंटिआ	भेटिआ
१७३	२	मंगारांमा	मेघारोमा
,,	८	दंव	देव
१७४	२	जपत मे	जपतमै
,,	४	आछं	आछे
,,	६	हरिकं	हरिके
,,	७	पंख	पेख
,,	१४	करजांग	करजोग
१७५	१	विसंखै	विसेखै

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	४	हांएसुटांटी	होएसटोटी
१७७	६	चिततमें	चितसमैं
१७८	१२	गोविद	गोविंद
,,	१३	जांदसम	जोदसम
१७९	१	गोविदांसेह	गोविंदसिंह
,,	२	तुर्कं	तुर्के
,,	२	दांनोंका	दोनो
,,	५	मखमांगवर	मुखमांगवर
१८०	४	धर्मराजकं	धर्मराजके
,,	८	मानभांग	मानभोग
,,	१७	स्त्रीयां स	स्त्रीयो से
		भाग	भोग
१८२	१	गाविन्द	गोविद
,,	६	हंतअधित	हेतअधिक
,,	७	कामातुरह	आमातुरहै
,,	७	नरकं	नरके
,,	९	कहत है	कहतेहैं
,,	१०	रमियां	रमियां
,,	१३	टंह	देह
१८३	५	मरजा	मर्रग्या
,,	१२	दुजन	तुजन
१८४	१४	गुरुगोविद	गुरुगोविंद
१८४	१५	जन्मखासी	जन्मसखा
,,	,,	जांभ	जंमे
१८५	२	मित्रां	मित्रो
	२	प्रथमे	प्रथम
,,	४	८मटा	८मेटा
,,	५	दंवी	देवा
,,	८	दवी	देवी
,,	११	प्रथमैं	प्रथमै
,,	१७	प्रचण्ड	प्रचण्डे
,,	,,	उदण्ड	उदण्डे
१८६	२	छितं	छिते
,,	६	निवारन	निवारन
,,	१०	वांधे	वांधे
,,	१५	जांव	जोव
१८७	१	मथं	मथे
,,	७	करं	करे
,,	९	फकारण	दुंकरण
,,	११	हांसी	हांसी
,,	१४	जांग	जोग
,,	१५	कर्मे	कर्मे
,,	,,	प्रतं	प्रते
,,	१६	धुज	धजे
१८८	३	प्रवाह	प्रवाहे
,,	४	हांसी	होसी
,,	७	कुमार	कुमारे
,,	७	उचार	उचारे
,,	८	मांहण	मोहण
,,	९	हासी	सोसी
,,	९	दाण	वाण
,,	१०	अनल	अनले
,,	११	तवं	तत्र
,,	१२	कुकारंनिवारं	कुठारंनिवारे
१८९	१	लंकं	लंक
	४	निकांचन	दिलचन
	६	वद	वद
	१६	मत्तं	मत्त

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१७	(२)	(१)
,,	१८	[१]	[२]
१९०	१	हासी	होसी
,,	४	तंज	तेज
,,	६	जैजें	जैजै
,,	४०	तलं	तले
,,	१०	वाल	वाल
,,	१४	गाहं	गाहे
,,	१५	दांखहर	दोखहरे
१९१	३	दमंके	दमके
,,	३	सुद्धगत्तं	सुद्धगत्ते
,,	९	मये	मथ
,,	२	थंजा	थेजो
,,	२	स्तुतिकं	स्तुतिके
,,	३	कं	के
,,	७	लंखक	लेखक
,,	९	कं	के
१९२	१४	कहं	कहे
,,	१५	स्तुति	स्तुति
,,	१६	जांआधार	जीआधार
१९३	२	विखे	विखै
,,	१०	जांतनया	जातनया
१९४	१	वानवं	वानवे
१९५	६	मग	मम
,,	१२	गांविंद	गोविंद
,,	,,	पने	पते
,,	१५	कथा	अबमैंअपनीकथा
१९६	१२	डढ	डेढ
१९७	१५	हकूमत	हकूमत
,,	१६	सायचलो	साथचलो
,,	१७	पूतकर	पूतकर
१९७	१८	मं चलो	में चलो
१९८	५	दादं	दादे
१९९	२	वैठं	वैठे
२००	२	लिख्यतं	लिख्यते
,,	६	करनं	करने
,,	६	कौनयी	कौनथा
,,	७	चंत	चेत
,,	१०	भयां	भयो
,,	१२	पंथकं	पंथके
,,	,,	उठावणं	उठावणे
२०१	४	मारगमें	मारगमैं
,,	५	छांटे छांटे	छोटे छोटे
,,	५	भांग	भोग
२०२	९	नचिंको	नीचको
,,	,,	मूर्तिकं	मूर्तिके
,,	१३	महालं	महाले
२०३	१	पावं	पावे
,,	५	तूरूठं	तूरूठे
,,	८	दूधकटोरे	दूधकटोरे
,,	९	दूधपिआं	दूधपिओ
,,	१२	नाभे	नामे
,,	१०	कंभ कितं	कंम किते
२०४	३	कं	के
,,	१०	प्रगटहे	प्रगटहै
,,	१४	जेआंहु	जेआहु

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	८	करतंहै	करतेहैं
२०५	१०	तेग	तेरा
२०६	१	लांयण	लोयण
,,	६	सुह'नी	मह'वी
,,	११	ह;ना	होना
२०७	१	ग्रथाकां	ग्रन्थाको
,,	६	कारनं से	कारनसे
,,	८	उसमे	उमसे
२०८	१	दूधभें	दूधमें
,,	१४	बंद	तदं
,,	१५	भिल	मिल
२०९	८	जाकं	जाकें
२१०	५	भुजपायं	भुजपाये
२११	१७	साबितहुआ	साबितहुए
२१३	१५	रागगोडी	रागगौडी
२१४	११	कालतमन	कालजमन
२१५	१०	जातेजिते	जोतेजोत
,,	१३	सिधःन्त	सिधान्त
२१६	९	मातलक्ष्मी	मातालक्ष्मी
,,	१५	मोहरकावंटा	मोहरीकावेटा
,,	१६	गुरुहुकम	गुरुहुकम
२१९	१८	अवदहं	अवदूहो
२२०	२	कुपकरे	कुपाकरे
,,	६	।वस	बिस
,,	८	वेस्वाखत	वेस्वारवात
,,	१०	जनकोआप	जनकोआपि
,,	१६	।लख	लिख
,,	,,	भेरे	मेरे
,,	१८	द्वारेमरे	द्वारेमेरे
२२१	२	अग्रवोजाह	चोजाहा
,,	६	अयेपायदा	आपेपायदा
२२२	६	हरगांविद	हरगोविद
२२३	६	रमनंतभां	रमनतुभी
२२४	४	वर्षके	वर्षको
,,	१२	आया	आयो
,,	६	मोहिदनि	गोहिदीन
,,	१८	हरिरभकर	हरिरसकरि
२२६	२	पिताभरी	माताभरी
२२७	७	हिन्दओ	हिन्दूओ
२२८	५	कंशान्दो	केशव्दो
,,	७	तां	जी
२२९	२	जमुाक	जमुकि
,,	४	सनूनई	सरनाई
२३०	५	हरिनाम	हरिनामा
,,	१०	कांनकाना	कौनकीना
,,	१२	श्लांक	श्लोक
,,	१३	वतं	वर्त्त
२३१	२	दशमगांविद	दसमेगोविद
,,	३	दरअसलने	दरअसलमें
,,	१८	चांपाई	चोपाई
२३२	९	जोतअभंड	जोतअभंड
,,	१५	सधुकीटभं	मधुकीटभं
,,	१६	नैपुंभ	नैसुभ
,,	१	कांनेपुरजे	कौनेपुरजे
२३३	११	मानकथन	मारनाकथन
,,	२	चौदसमां	चौदसमो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
"	७	नडणां	नडरां
"	१०	अनहींभरों	अनींहींमरां
"	१६	ऑगलो	ऑंगलो
"	१७	स्वेयेको	स्वैयेको
"	"	जाकीवागी	जीकीवाणी
२३५	११	जहमंमिन	जहनामिन
२३६	५	(श्रीदुर्गा)	(श्रीदुर्गाकी
२३६	१८	आपअनकूल	अनकूलहे
२३७	१२	जेका	खविजेको
२३९	२	जकिं	जीके
२३९	६	अंग्रेजां	अंग्रेजी
२३९	१५	गुरमनदास	गुरुरामदास
२३९	१६	सनका	सदका
२४०	१	गु० के	गु० ५ के
२४३	३	रहःरसप	रहःरास
२४३	४	मझ	माझ
"	१३	सांरठ	सोरठ
"	१७	तेवंधकि	तेवर्धाक
२४४	"	सोहिल	सोहिला
२४५	१०	मतकांई	मतकोई
"	१८	अडंआ	अडेआ
२४७	८	सोवांलिया	सोवोलिया
"	१०	कहुमोन	काहुसोन
२४८	३	फाहाहे	फाहाहे
२५१	५	राग मारुकां	रागमारूकी
२५२	१०	जिमका	जिसका
२५५	२	वासखरी	बराखरी
२५६	५	मिलो	मिलो
२५७	१०	गेयंदवाल	गोयंदवाल
"	१७	करेल	कमेल
२७०	४	अंतपंमो	अंतरयामी
"	११	गुखत्रस	गुरबखनसिंह
२७२	२	छजराम	छजूराम
२७९	१	भागा	भाग
"	१४	गाहीं	राहीं
२८३	१८	केहांमाहे	केहोमाहे
२८९	१०	हिरसिंह	हिरासिंह
२९३	"	मत्रगंई	मत्तगंई
२९३	११	मननन	मनमन
		रलोने	रलोने
"	१३	उमबखत	उमवखत
"	१४	इतकाक	इतफाक
"	१६	अझल	अकल
२९४	११	साहवाननं	साहिबानने
२९५	४	खान	खास
"	४	गुमकी	गुनकी
"	७	जांनं	जीन
"	८	वंदां	वंधी
"	१२	नं	ने
२९९	४	जेमो	जेसो
३०४	४	(अपूल)	[अमूलों]
"	९	लिये	लिये

॥ सम्पूर्णम् ॥

नवीन सिंह शिक्षाका शुद्धाशुद्ध पत्रम्

पाठकोंकी सेवामें बेनती है कि संस्कृत के लेखानुसार गुरमुखी में अशुद्धी रहाही करती है क्योंकि गुरमुखी का कोई व्याकर्ण नहीं एक पंजाबी बोली है जिस्रो पंजाबीको भाषामें उलथा करने में अनेक अशुद्धीआं रहजाया करती हैं और खासकर हिन्दुस्तान (मुरादाबाद) छपने और बोली भेद के कारण अशुद्धीआं होगई हैं और अक्षर कहीं कहीं ठीक नहीं छपे इस्से भी शुद्ध करके पढ़ें ।

छापने वालोंकी गलती से ए मात्राकी बिंदी जैसी छपगई है ॥

पाठकों की सेवा में जरूरी

(विज्ञापन)

मित्रो इस पुस्तक " नवीन सिंह शिक्षा " में छापेकी खराबी से बहुत अशुद्धयें होगई हैं अर्थात १२२० जो टैप की खराबी से अशुद्धीयें हैं जिसमें ९९ अशुद्धों में अक्षर बदलगए हैं जो पंजाबी बोली की पुस्तक हिन्दुस्तान में छापने के कारण हुई ।

पाठकों से प्रार्थना है इस पुस्तक (नवीन सिंहशिक्षा) पठन पाठन से प्रथम शुद्धाशुद्ध पत्र दवारा शुद्ध कर पढ़ो नहीं लोगों में सरमिंदगी (नदामत) उठानी पड़ेगी क्योंकि उपदेशकी जगहः उपदंश छप गिया है इत्यादि ॥ मित्रो दकाकर की बिन्दी से लग े मात्रा बनालेना इसी प्रकार सर्व पुस्तक शुद्ध कर पढ़ो तो आपको लाभ और मेरा परीश्रम सफल होगा ॥

(२) इस पुस्तक " नवीन सिंहशिक्षा " की पृष्ट २६५ पर भाषाकी दराखरी (पैंती) लिखीहै गुरमुखी को साथ लिख अथवा पिखवालेना जरूर

द० सुखनाथ उपदेशक

ਏਕ ਏਕ ਐਸੋ ਮਤ ਕੈ ਹੈ।

ਜਾਤੇ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸੂਦ੍ਰਤਾ ਹੂਇ ਹੈ। ਦਸਮਗ੍ਰੰਥ

ਖਾਲਸਾ ਕੁਰੀਤੀ ਨਿਵਾਰਣ

(ਅਰਥਾਤ)

ਬਾਬੂ ਬਚਨਸਿੰਘ ਬਕੀਲ ਲੁਦੇਹਾਨਾਂ ਨਿਵਾਸੀ
ਦੇ ਇਸਤਹਾਰ ਦਾ ਉਤ੍ਰ

(ਜਿਸਮੇਂ)

ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਔਰ ਕੇਸੋਂਕੇ ਅਭਿ-
ਮਾਨ ਕੋ ਦੂਰ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਗੁਰੂ ਹੁਕਮ ਔਰ
ਬਿਵਾਹ ਮੇਂ ਸਚੀ ਗੁਰ ਮਰਯਾਦਾ ਵੈਦਿਕ ਹਿੰਦੂ
ਰੀਤਿ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਜੀਦੇ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਦ੍ਵਾਰਾ
ਸਿਧ ਕੀ ਗਈ ਹੈ।

(ਜਿਸਨੂੰ)

ਸੁਖਲਾਲ ਉਪਦੇਸ਼ਕ ਸ੍ਰੀਭਾਰਤ ਧਰਮ ਮਹਾਂ
ਮੰਡਲ ਰੋਪੜ ਨਿਵਾਸੀ ਨੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕਿਯਾ

ਨੈਸ਼ਨਲ ਪ੍ਰੇਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਮੇਂ ਛਪਵਾਯਾ

ਭੂਮਿਕਾ

ਪਜਾਰੇ ਧਰਮਾਤਮਾ ਪੁਰਖੋਂ ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ਬਾਬੂ ਬਚਨ ਸਿੰਘ ਪਲੀਡਰ ਲੁਦੇਹਾਨਾ ਦੀ ਤਾਰੀਖ ੨੭ ਮਾਹ ਸਤੰਬਰ ਸਨ ੧੯੦੫ ਈ੦ ਪ੍ਰਾਨੀਅਰ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਅਖਬਾਰਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ੧੦੯ ਹਜ਼ੂਰ ਮਹਾਰਾਜਾ *ਨਾਭਾਨ੍ਰੇਸ਼ ਕੀ ਸਪੁਤ੍ਰੀ ਔਰ ਸ੍ਰੀ੧੦੯ ਹਜ਼ੂਰ ਮਹਾਂਰਾਨਾ ਧੌਲਪੁਰ ਕੀ ਸ਼ਾਦੀ ਕੇ ਬਰਖਲਾਫ ਗੁਰੂ ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਓਟ ਮੇਂ ਹਜਾਰ ਰੁਪਜਾ ਇਨਾਮ ਦੇਨੇ ਕਾ ਇਸ਼ਤਹਾਰ ਲਿਖਾ ਹੈ ॥

---

* ਪਾਠਕ ਗਣੋਂ ਸ੍ਰੀ ੧੦੯ ਮਹਾਰਾਜਾ ਨਾਭਾ ਨਰੇਸ਼ ਜੀ ਕਾ ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਮੇਂ ਜਹਾਂ ਨਾਮ ਆਵੇ ਐਸੇ ਪਦਵੀ (ਖਿਤਾਵ) ਸੈਹਤਨਾਮ ਸਮਝਨਾ ॥ ਸ੍ਰੀ ੧੦੯ ਮਾਨ ਮਹਾਰਾਜਾ ਬਹਾਦੁਰ ਜਨਰਲ ਸਰ ਹੀਰਾ ਸਿੰਘ ਜੀ੦ ਸੀ੦ ਏਸ੦ ਆਈ੦ ਜੀ੦ ਸੀ੦ ਆਈ੦ ਈ੦ ॥

ਹਮੇਂ ਉਤ੍ਰ ਦੇਨੇ ਕੀ ਕੁਛ ਜਰੂਰ ਤ ਨ ਥੀ ਔਰ ਨਾ ਹੀ ਹਮੇਂ ਹਜਾਰ ਰੁਪਯੇ ਕਾ ਲੋਭ ਹੈ ਮਿਤ੍ਰੋ 'ਉਤ੍ਰ ਦੇਨਾ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਜਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਓਟ ਮੇਂ ਅਧਰਮ ਨ ਫੈਲ ਜਾਏ ਕਯੋਂਕਿ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਚਾਰ ਬਰਣੋ ਕਾ ਸਾਝਾ ਹੈ ਯਥਾ ॥ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਰਾਗ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੫ ਸਬਦ ੫੦ ਤੁਕ ੪

ਖਤ੍ਰੀ ਬ੍ਰਾਹਮਨ ਸੂਦ ਵੈਸ ਉਪਦੇਸ਼ ਚਹੁ ਵਰਨਾ ਕਉ ਸਾਝਾ।

ਮਿਤ੍ਰੋ ਇਧਰ ਰਾਜਾ ਮਹਾਰਾਜਾ ਹੈਂ ਉਧਰ ਜੋਸ਼ੀਲੇ ਬਾਬੂ ਬਚਨ ਸਿੰਘ ਪਲੀਡਰ ਹੈਂ ਜੋ ਰੋਪੜ ਮੇਂ ਦੇਰ ਤਕ ਰੈਹ ਚੁਕੇ ਹੈਂ ਜਿਨ ਕਾ ਜੋਸੀਲਾਪਨ ਰੋਪੜ ਕੇ ਗੁਰਮੁਖੀ ਅਖਵਾਰ ਮੇਂ ਛਪ ਚੁਕਾ ਹੈ ਯਥਾ॥ ਦੇਖੋ ਸ੍ਰੀਗਹਿਰ ਗੰਭੀਰ ਗਜਟ ਰੋਪੜ ਮਘਰ ਪੂਰਨ ਮਾਸੀ ਸੰਮਤ ੧੯੬੦ ਬਿ॰ ਭਾਗ ੧ ਸੰਖਯਾ ੪ ਸਫਾ ੧ ਕਾਲਮ ੧ ਸਤਰ ੭ ਸੇ ੧੨ ਤਕ

ਪਾਠਕੋਂ ਪ੍ਰਤੀ ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਲੇਖ ਕੋ ਪਲੀਡਰ ਔਰ ਉਤ੍ਰ ਮੇਂ ਉਤ੍ਰ ਇਸ ਪ੍ਰ-ਕਾਰ ਪ੍ਰਸਨ ਉਤ੍ਰ ਸੇ ਲੇਖ ਹੋਗਾ ਮਿਤ੍ਰੋ ਹਠ ਕੋ ਛੋਡ ਕਰ ਬਿਚਾਰੀਏ ਜਿਸ ਸੇ ਮੇਰਾ ਪਰੀਸ਼੍ਰਮ ਸੁਫਲ ਹੋ।

ਸੰਮਤ ੧੯੬੩ ਫਗਣ ਹੋਲਾਸਟਕ

ਹ੦ਸੁਖ ਲਾਲ ਉਪਦੇਸ਼ਕ ਰੋਪੜ ਨਿਵਾਸੀ

੧ੳ

"ਅਬ ਹਜਾਰ ਰੁਪਯੇ ਇਨਾਮ ਵਾਲੇ ਇਸਤਹਾਰ ਕਾ ਪੋਲ"

ਪਲੀਡਰ—ਪ੍ਰੇਮ ਸੁਮਾਰਗ ਔਰ ਰਹਤਨਾਮਾ ਭਾਈ ਚੋਪਾ ਸਿੰਘ ਮੇਂ ਲਿਖਾ ਹੈ ਕਿ ਸਿੰਘ ਕੀ ਲੜਕੀ ਸਿੰਘ ਕੋ ਦੇਨੀ ਉਚਿਤ ਹੈ।

ਉਤ੍ਰ—ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ (ਗੁਰਬਾਣੀ) ਕੇ ਮਾਨਨੇ ਮੇਂ ਤੋ ਕੋਈ ਅੰਤਰ ਲਾਪ ਕਾ ਔਰ ਬਾਹਿਰ ਲਾਪ ਕਾ ਔਰ ਕੋਈ ਸਿਧਾਂਤਬਾਦ, ਅਨੂਬਾਦ, ਖੰਡਨਬਾਦ ਅਰਥੋਂ ਮੇਂ ਹੀਲੇਸਾਜ਼ੀ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ? ਖਾਸ ਕਰ ਭਗਤ ਬਾਣੀ ਨਹੀਂ ਮਾਨਤੇ ਨਮੂਨੇ ਕੇ ਤੌਰ ਪਰ ਦੇਖ ਲੋ ਭਾਈ ਕਾਨਸਿੰਘ ਜੀ ਕਾ ਰਚਾ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਜੋ ਉਕਤ ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਭਗਤ ਬਾਣੀ ਕੋ ਗੁਰ ਬਾਣੀ ਸੇ ਨੀਚੇ ਗਿਰਾਕਰ ਅਪਨੀ ਕਪੋਲ ਕਲਪਤ ਬਾਣੀ ਕੇ ਬਰਾਬਰ ਲਿਖਾ ਹੈ ਔਰ ਚੀਫ

ਖਾਲਸਾ ਦੀਵਾਨ ਕੀ ਪਰਧਾਨ ਸਭਾ ਕੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਨੇ **ਸ੍ਰੀ ਦਸਮ** ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀ ਕੋ ਭੁਲੇਖੇ ਨਾਮਕ ਕਿਤਾਬ ਮੇਂ ਅਪਵਿਤਰ ਔਰ ਜਿਲਦ ਤੋੜ ਦੇਨੀ ਆਦ ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੇ ਬ-ਰਾਬਰ ਜਗਹ ਨਹੀਂ ਦੇਨੀ ਚਾਹੀਏ ਇਤਆਦਿ ਲੇਖ ਲਿਖੇ ਹੈਂ ਕਯੋਂਕਿ ਕਵੀ ਕ੍ਰਿਤ ਹੈਂ॥ ਮਿਤਰੋ ਪ੍ਰੇਮ ਸੁਮਾਰਗ ਕਾ ਕਰਤਾ ਔਰ ਭਾਈ ਚੋਪਾਸਿੰਘ ਕਿਆ ਕਵੀ ਨ ਥੇ ਬਲਕਿ ਯਿਹ ੫੨ ਕਬੀਯੋਂ ਮੇਂ ਭੀ ਨਹੀਂ ਥੇ। ਉਨ ਕਾ ਕਹਿਨਾ ਕਯੋਂ ਸਵੀਕਾਰ ਕਰਲੀਆ ਕਯਾ ਉਨ ਕੀ ਬਾਣੀ ਗੁਰੂ ਬਾਨੀ ਸੇ ਬੜਕਰ ਪਰ-ਮਾਨਿਕ ਹੈ ਕਯਾ ਪ੍ਰੇਮਸੁਮਾਰਗ ਵੁਹੀ ਪੋਥੀ ਤੋ ਨਹੀਂ ਜਿਸ ਮੇਂ ਮੁਸਲਮਾਨੀ ਔਰਤ ਸੇ ਭੋਗ ਔਰ ਹਲਾਲ (ਮਾਂਸ) ਖਾਨਾ ਲਿਖਾ ਹੈ। ਦੇਖੋ ਪ੍ਰੇਮਸੁਮਾ-ਰਗ ਅਧਿਯਾਇ ੧੪ ਬਚਨ ੧੫ ਕੀ ਪੌੜੀ ਯਦਿ ਵੁਹੀ ਹੈ ਤੋ ਉਸ ਕੀ ਸਮਗ੍ਰ ਆਗਿਆ ਪਾਲਨ ਯੋਗਯ ਹੈ ਯਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਗੁਰੂ ਮਤ ਕੇ ਬਿਦ੍ਵਾਨ ਪੰਡਿਤ

ਤਾਰਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅਪਨੇ ਰਚੇ ਗਰੰਥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਤ ਨਿਰਨੇ ਸਾਗਰ ਸਫਾ ੬੦੯ ਸਤਰ ੧ ਪ੍ਰੇਮਸੁਮਾਰਗ ਭੀ ਮਾਯਾਬੀ ਪ੍ਰੇਮੀ ਕਾਹੇ ਔਰ ਸਫਾ ੬੧੦ ਸਤਰ ੨ ਜਿਸ ਕਾ ਹਲਾਲ ਖਾਨੇ ਔਰ ਮੁਸਲਮਾਨੀ ਵਰਤਨੇ ਮੇਂ ਅਧਕ ਪ੍ਰੇਮ ਥਾ ਐਸੇ ਲਿਖਾ ਹੈ ਅਬ ਭੀ ਪ੍ਰੇਮਸੁ-ਮਾਰਗ ਪਰਮਾਨਿਕ ਹੋ ਸਕਤਾ ਹੈ ॥

ਪਲੀਡਰ—ਰੈਹਤਨਾਮਾ ਭਾਈ ਦਿਆਸਿੰਘ ਮੇਂ ਲਿਖਾ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਲੜਕੀ ਕੋ ਮਾਰਤਾ ਹੈ ਯਾ ਮੋਨੇ ਸੇ ਬਯਾਹਤਾ ਹੈ ਵਹ ਨਰਕ ਮੇਂ ਪੜਤਾ ਹੈ ਸਿੰਘਕੀ ਲੜਕੀ ਸਿੰਘ ਸੇ ਬਿਯਾਹਨਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ-ਸੇ ਮਿਲਾਨਾ ਹੈ । ਮੋਨੇਸੇ ਬਯਾਹਨਾ ਅੰਮਰਿਤ ਕੋ ਸਾਂਪ ਕੇ ਮੂੰਹ ਮੇਂ ਡਾਲਨਾ ਹੈ ॥

ਉਤ੍ਰ—ਚੋਪਾਸਿੰਘ ਦਿਆਸਿੰਘ ਆਦਿ ਕਾ ਕਥਨ ਤੋ ਆਪ ਕੋ ਅਕਾਸ ਬਾਣੀ ਸਦ੍ਰਿਸ਼ ਸ੍ਵੀਕਾਰ ਹੈ ਆਦਿ ਔਰ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਗੁਰਬਿਲਾਸ ਸੂਰਜ ਪਰਕਾਸ਼ ਆਦਿ ਸਰਬ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਗਰੰਥ ਬਜ

ਰਬ ਸਮਬਲੀਯੇ ਜਿਨ ਮੇਂ ਸਰਬਤ੍ਰ ਕੰਨਯਾ ਮੋਨੋਂ ਕੋ ਦੇਨੀ ਔਰ ਬਜਾਹ ਹਿੰਦੂ ਰੀਤੀ (ਜੈਸੇ ਮਹਾਰਾਜਾ ਨਾਭਾ ਨੇ ਅਪਨੀ ਸਪੁਤ੍ਰੀ ਕਾ ਕਿਯਾ ਹੈ) ਐਸੇ ਲਿਖੇ ਹੈਂ ਅਗਰ ਸਰਬ ਕਾ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਲਿਖਾ ਜਾਇ ਤੋ ਇਕ ਪੁਸਤਕ ਜਿਤਨਾ ਲੇਖ ਬੜ੍ਹਜਾਏਗਾ ਨਮੂਨੇ ਕੇ ਤੌਰ ਪਰ ਦੇਖੋ ਮੇਰੀ ਬਨਾਈ "ਨਵੀਨਸਿੰਘ ਸਿਖਯਾ "ਅਧਯਾਯੇ ੪ ॥ ਮਿਤ੍ਰ ਦਯਾਸਿੰਘ ਚੌਪਾਸਿੰਘ ਕਾ ਕਥਨ ਸ੍ਵਤਹ ਪਰਮਾਣ ਹੈ ਅਥਵਾ ਪਰਤਹ ਯਦੀ ਪ੍ਰਥਮ ਬਾਤ ਹੈ ਤੋ ਕਯਾ ਦਲੀਲ ਹੈ। ਯਦੀ ਦ੍ਵਿਤੀਯ ਬਾਤ ਹੈ ਤੋ ਉਸ ਗਰੀਬ ਕਾ ਨਾਮ ਲਿਖੋ। ਮਿਤ੍ਰ ਜਬ ਸੰਸਾਰਮੇਂ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਾ ਹੂਆਥਾ ਉਸ ਵਕਤ ਲੜਕੀ ਰੂਪੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕੋ ਸਿੰਘ ਸਾਂਪੋਂ ਕੇ ਮੂੰਹ ਮੇਂ ਨਹੀ ਗਿਰਾਤੇ ਥੇ ਤੋ ਕਹਾਂ ਡਾਲਤੇਥੇ ਔਰ ਨਰਕ ਸ੍ਵਰਗ ਕੇ ਭੁੱਤਖਾਲਸਾ ਮਾਨਤਾਹੀ ਨਹੀਂ ਮੋਨੋਂ ਕੋ ਸਾਂਪ ਕਹਿਤੇ ਹੋ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਸਾਂਪੋਂ ਮੇਂ ਰਹਿਤੇ ਹੋ ਦੇਖਨਾ ਕਹੀਂ ਕੋਈ ਸਾਂਪ ਡੰਕ ਮਾਰਕਰ ਕਾਂਮ ਤਮਾਂਮ ਨ ਕਰਦੇ। ਮਹਾਂਰਾਜ ਜੀ ਮੋਨੇ ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਇਸਾਈ

ਸਰਬਹੀ ਹੈਂ ਸਬ ਸੇ ਬਚ ਕੇ ਰਹਿਨਾ ਔਰ ਯਿਹ ਬੀ ਬਤਾਨਾ ਚਾਹੀਏ ਕਿਤਨੇ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਰੰਨਾਂ ਸੋਨੋਂ ਕੀ ਜਹਿਰ ਸੇ ਮਰਗਈ ਔਰ ਕੋਈ ਮੋਨਾ ਸਿੰਘ ਹੋ ਜਾਏ ਤੋ ਉਸ ਕੀ ਜਹਿਰ ਕਹਾਂ ਚਲੀਜਾਤੀ ਹੈ ਯਦਿ ਕਹੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸੇ ਤੋ ਕਿਸੀ ਸਾਂਪ ਡਸੇ ਕੋ ਅਪਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸੇ ਰਾਜੀ ਕਰ ਕੇ ਦਿਖਾਓ । ਸਿਤ੍ਰੂ ਆਦ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਮੇਂ ਮਿੱਠੇ ਕੇ ਸ਼ਰਬਤ ਕਾ ਨਾਮ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਹੀਂ ਲਿਖਾ ਬਲਕਿ ਪਰਮੇਸ੍ਵਰ ਕੇ ਭਜਨ ਕੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਹਾ ਹੈ ਯਥਾ ਬਿਹਾਗੜਾ ਮ ੦ ੪ ਛੰਤ ਸਬਦ ੨ ਤੁਕ ੧ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਹੈ ॥ ਆਸਾ ਮ ੦ ੫ ਸ ੦ ੪੭ ਤੁਕ ੧ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤਨਾਮ ਤੁਮਾਰਾ ॥ ਆਸ ਮ ੦ ੫ ਸ ੦ ੧੧੪ ਤੁਕ ॥ ਮੈ ਤਾਂ ਨਾਮਨਿਧਾਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਚਾਖੀਐ ॥ ਆਸਾ ਮ ੦ ੧ ਅੰਮ੍ਰਿਤਨਾਮ ਨਿਰੰਜਨ ਪਾਯਾ ॥ ਮੁੰਦਾਵਣੀ ਮ ੦ ੫ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਨਾਮ ਠਾਕੁਰ ਕਾ ਪਾਯੋ ॥

ਪਲੀਤਰ—ਪੁਰਾਨੇ ਜਮਾਨੇ ਮੇਂ ਤਮਾਮ ਸਿਖ ਸਖੱ ਸੇ ਬਜਾਹਤੇ ਰਹੇ ਉਸ ਵਕਤ ਕੀ ਇਸ ਕੇ ਬਰਧ

ਕੋਈ ਭੀ ਨਜੀਰ ਨਹੀਂ ॥

ਉਤ੍ਰ—ਮਿਤ੍ਰ ਯੇਹ ਬਿਵਾਹ ਕੇਵਲ ਨਾਭਾ ਨ-
ਰੇਸ਼ ਜੀਨੇਹੀ ਨਹੀਂ ਕੀਯਾ ਬਲਕਿ ਰਾਨਾ ਸਾਹਿਬ ਕੇ
ਪਿਤਾਮਹ (ਦਾਦਾ) ਕੇ ਸ਼ਹੀਨ ਹੋਨੇ ਪਰ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮
ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਪਟਿਯਾਲਾ ਕੇ ਬਜਾਹੇਥੇ ਔਰ ਰਾਨਾ ਸਾ-
ਹਿਬ ਕੇ ਪਿਤਾ ਬਰੇਲੀ ਸ਼ੈਹਰ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਮਹਾਂ-
ਰਾਜਾ ਸੇਰਸਿੰਘ ਜੀ ਕੇ ਘਰਾਨੇ ਮੇਂ ਬਜਾਹੇਥੇ ? ਕਜਾ
ਵਹ ਆਪਕੇ ਕਥਨਾ ਅਨਸਾਰ ਸਿੱਖਨਥੇ ਯਦੀਥੇ ਤੋ
ਯਿਹ ਰਾਨਾ ਸਾਹਿਬਭੀ ਉਨਹੀ ਕੇ ਪ੍ਰਤ੍ਰ ਪੌਤ੍ਰ ਸੋਨੇ ਹੈਂ
ਔਰ ਲੀਜੀਯੇ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਫਰੀਦ-
ਕੋਟ ਨੇ ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਹੁਈ ਅਪਨੀ ਪੁਤ੍ਰੀ ਸੋਨੇ ਕੇ ਹੀ
ਕੁਟੰਬ ਮੇਂ ਦੀਥੀ ॥ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ
ਸੰਗਰੂਰ ਕੀ ਭਗਨੀ (ਭੈਣ) ਕੀ ਸ਼ਾਦੀ ਭੀ ਕੇਸ-
ਧਾਰੀ ਸਿੰਘ ਸੇ ਨਹੀਂ ਹੁਈ ਕਜਾ ਇਤਨੀ ਪੁਰਾਚੀਨ
ਨਜੀਰੇ ਹੈਂ ਯਾ ਨਹੀਂ ॥ ਸੱਚ ਤੋ ਯੇਹ ਹੈ ਤਤਖਾਲਸਾ
ਕੇ ਢਾਈ ਚੌਲਕੀ ਖਿਚੜੀ ਗੁਰਮਰਯਾਦਾਕੇ ਨਾਮਸੇ ਨ

ਗਲੀ ਜਿਸ ਸੇ ਕੁਛ ਕੜਾਹ ਪ੍ਰਸਾਦ ਕੇ ਗੱਫੇ ਔਰ ਅਰਦਾਸੇ ਕਾਫੀ ਮਿਲਤੇ ॥ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪਨੇ ਕਾਨੂਨੀ ਕਿਤਾਬੇਂ ਦੇਖੀ ਹੈਂ ਆਪ ਧਾਰਮਕ ਕਿਤਾਬੇਂ ਭੀ ਦੇਖੀਯੇ ਤੋ ਫਿਰ ਕਹਿਨਾ। ਮਿਤ੍ਰ ਪੁਰਾਨੇ ਜਮਾਨੇ ਕੋ ਜਾਨੇ ਦੋ ਅਬਹੀ ਦੇਖੋ ਗੁਰੂ ਸੈਤਾਨ। ਬੇਦੀ ਤੇਹਣ। ਭੱਲੇ ਸੋਢੀ। ਔਰ ਹਰੇਕ ਸਿਖ ਸੇਵਕ ਗੁਰਮਤ ਮੇਂ ਸਿਖੋਂ ਕੀ ਕੰਨਯਾਓਂ ਕੇ ਬਿਵਾਹ ਸੰਬੰਧ ਮੋਨੇ ਸੇ ਹੋਤੇ ਹੈਂ ਔਰ ਹੋਤੇ ਥੇ।

ਪਲੀਡਰ—ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਬਿਰੋਧੀ ਅਖਬਾਰ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਨਾਭਾ ਕੇ ਕਾਂਮ ਕੋ ਸਹੀ ਕਰਨੇ ਕੇ ਵਾਸਤੇ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨਰੇਂਦ੍ਰ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਬਹਾਦੁਰ ਪਟੇਆਲਾ ਪਤੀ ਕਾ ਦ੍ਰਿਸਟਾਂਤ ਦੀਆ ਹੈ।

ਉਤ੍ਰ—ਮਿਤ੍ਰ ਜਬ ਖਾਲਸਾ ਬਹਾਦੁਰ ਅਖਬਾਰ ਕੋ ਸਿੰਘੋਂ ਕਾ ਬਿਰੋਧੀ ਬਤਲਾਤੇ ਹੋ ਤੋ ਫਿਰ ਆਪ ਖਾਲਸਾ ਕੈਸੇ। ਸੱਚ ਤੋ ਯੇਹ ਹੈ ਆਪਨੇ ਯਿਹ ਚੋਟ ਬਾਬੂ ਰਾਜੇਂਦ੍ਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਮਰਹੂਮ ਪਰ ਚਲਾਈ ਹੈ ਜੋ

ਅਖਬਾਰ ਖ਼ਾਲਸਾ ਬਹਾਦੁਰ ਲਹੌਰ ਕੇ ਮਾਲਿਕ ਥੇ ਬਾਸਤਬ ਮੇਂ ਵਹ ਗੁਰੂ ਕੇ ਸੱਚੇ ਸਿੰਘ ਥੇ। ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਬਿਰੋਧੀ ਤੋ ਵੋਹ ਹੈਂ ਜੋ ਪੁਰਾਚੀਨ ਮਰਯਾਦਾ (ਗੁਰੂ-ਆਗਯਾ) ਕੋ ਉਲੰਘਨ ਕਰਕੇ ਮਨਮਤ ਚਲਾ ਰਹੇ ਹੈਂ ਵੋਹ ਮਨਮੁਖੀ ਬਾਤੋਂ ਕਾ ਖ਼ੂਬ ਖੰਡਨ ਕੀਯਾ ਕਰਤੇ ਥੇ ਮਹਾਰਾਜਾ ਪਟੇਯਾਲਾ ਨਰੇਸ਼ ਕਾ ਕ੍ਰਿਤ ਬੇਸ਼ੱਕ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਹੈ ਵਹ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਿੱਖੀ ਮਤ ਕੇ ਪੂਰਣ ਸਹਕਾਰੀ ਥੇ ਉਨ ਕੇ ਉਦਯੋਗ ਸੇ ਪੰਜਾਬ ਕੀ ਸਬ ਰਿਯਾਸਤੇਂ ਕਾਇਮ ਹੈਂ। ਸੰਮਤ ੧੯੧੫ ਬਿਕ੍ਰਮ ਮੇਂ ਉਨਹੀ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨੇ ਕਲਕੱਤੇ ਜਾਕਰ ਗਵਰਮਿੰਟ ਸੇ ਅਹਦਨਾਮਾ ਕਰਾਯਾ ਥਾ ਜਿਸ ਕੀ ਬਦੌਲਤ ਸਿੱਖੀ ਰਿਯਾਸਤੇਂ ਕਾਇਮ ਹੈਂ ਉਨ ਸੇ ਪਹਿਲੇ ਕਿਤਨੀ ਸਿੱਖੀ ਰਿਆਸਤੇਂ ਪੰਜਾਬ ਸੇ ਜਾਤੀ ਰਹੀਂ ਉਸ ਵਕਤ ਤੱਤਖਾਲਸਾ ਕਹਾਂ ਥਾ। ਮਿਤ੍ਰੋ ਇਨਹੀ ਰਿਯਾਸਤੋਂ ਕੀ ਬਦੌਲਤ ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ ਬਨਗਿਆ ਔਰ ਇਨਹੀ ਕੇ ਤੁਫ਼ੈਲ ਸੇ ਸਿੱਖੀ ਕਾ ਬੋਲ ਬਾਲਾ ਹੈ ਨਹੀਂ ਤੋ ਸੈਂਕੜੋਂ ਤੱਤਖਾਲਸਾ ਮਿਲਕਰ ਭੀ ਕੁਛ ਨਾਹੀ ਕਰ

ਸਕਤੇ ਥੇ ।

ਪਲੀਡਰ—ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨਰੇਂਦ੍ਰਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਬਹਾਦਰ ਕਾ ਯਿਹ ਕਾਂਮ ਕਿ ਉਨਹੋਂ ਨੇ ਅਪਨੀ ਪੁਤ੍ਰੀ ਕਾ ਬ੍ਯਾਹ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਧੌਲਪੁਰ ਸੇ ਕੀਯਾ ਥਾ ਸਿੱਖੋਂ ਪਰ ਮਾਨਨੀਯ ਨਹੀਂ ।

ਉਤ੍ਰ—ਮਿਤ੍ਰ ਜ਼ਰੂਰ ਮਾਨਨੀਯਹੈ ਕ੍ਯੋਂਕਿ ਦ-ਸਮ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਜੀਨੇ ਆਪਨਾ ਹੁਕਮਨਾਮਾਂ ਜੋ ਬੈ-ਰਾੜ ਬੰਸਾਂ ਅਵਤੰਸ ਰਾਮਸਿੰਘ ਤ੍ਰਲੋਕਸਿੰਘ ਜੀ ਕੇ ਨਾਮ ਲਿਖਾਥਾ ਉਸ ਮੇਂ ਦਰਜ ਹੈ ਕਿ "ਤੇਰਾ ਘਰ ਸੋ ਮੇਰਾ ਘਰ" ਜਬ ਕੀ ਯਿਹ ਤੀਨ ਰਿਯਾਸਤੇਂ ਗੁਰੂ ਕਾ ਘਰ ਹੈਂ ਫਿਰ ਇਨ ਪਰ ਇਤਰਾਜ ਕਰਨੇ ਗੁਰੂ ਕੇ ਸਿੱਖੋਂ ਕਾ ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਪਜਾਰੇਓ ਉਕਤ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਂ-ਰਾਜਾ ਕੇ ਬ੍ਯਾਹ ਰੀਤ ਕੋ ਸਬ ਸਿੱਖ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ਕ੍ਯੋਂ ਕਿ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵਜੀ ਸੇ ਲੇਕਰ ਸ੍ਰੀ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਤਕ ਸਰਬਤ੍ਰ ਗੁਰੂ ਔਰ ਗੁਰੂ ਕੀ ਸੰਤਾਨ ਸਿੱਖ ਸੇਵਕੋਂ ਕੇ ਬਿਵਾਹ ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੂਏ ਜੋ ਕਿ ਅਵਸਰ ਮਾ-

ਨਨੀਯ ਹੈਂ ਏਕ ਪੁਰਖ ਨ ਮਾਨੇ ਤੋ ਬੜੀ ਬਾਤ ਨਹੀਂ ਕਯੋਂਕਿ ਕਲੂ ਮੇਂ ਤੋ ਵੋਹ ਲੋਖ ਮਾਨੇ ਜਾਏਂਗੇ ਜੋ ਸਭ ਕੋ ਬਰਣ ਸੰਕਰ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਹੋਂ ॥

ਪਲੀਤਰ—ਦੋ ਕਾਲੇ ਮਿਲਕਰ ਏਕ, ਗੋਰਾ ਨਹੀਂ ਹੋਤਾ ॥

ਉਤ੍ਰ—ਯੇਹ ਇਸਾਰਾ ਦੋ ਮਹਾਰਾਜਾਓਂ ਪਰ ਹੈ ਪਲੀਤਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪ ਕੇ ਕਥਨ ਅਨੁਸਾਰ ਤੋ ਅਬ ਕਈ ਕਾਲੇ ਮਿਲ ਗਏ ਜਿਨਕਾ ਪ੍ਰਮਾਨ ਉਕਤ ਦੇ ਚੁਕਾ ਹੂੰ (ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜ ਪਟਿਯਾਲਾ ॥ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸੰਗਰੂਰ ॥ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜਾ ਫਰੀਦ ਕੋਟ ॥ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸ਼ੇਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਕਾ ਖਾਨਦਾਨ) ਮਿਤ੍ਰ ਅਬ ਭੀ ਏਕ ਗੋਰਾ ਹੂਆ ਯਾ ਨਹੀਂ ਦੋ ਮਾਰਾਜਾਓਂ ਕੋ ਕਾਲੇ ਕੈਹਨਾ ਕਯਾ ਅਨੁਚਿਤ ਨਹੀਂ ਮਹਾਂਰਾਜ ਜੀ ਹਿੰਦੋਸਤਾਨ ਕੇ ਜਿਤਨੇ ਮਨੁਖਯ ਹੈਂ ਬਲੈਤ ਮੇਂ ਸਬ ਕਾਲੇ ਕਹਿਲਾਤੇ ਹੈਂ ।

ਪਲੀਡਰ— ਯਦੀ ਕੋਈ ਰਾਜਾ ਹੁਕਾਂ ਪੀਨੇ ਲਗਜਾਵੇ ਉਸ ਸੇ ਹਮ ਯਿਹ ਨਤੀਜਾ ਨਿਕਾਲਲਂ ਕਿ ਹਰ ਇਕ ਸਿੱਖ ਕੋ ਐਸਾ ਕਰਨਾ ਯੋਗਜ ਹੈ ਯਿਹ ਬੌਹੁਤ ਬੇਹੂਦਾ ਹੈ।

ਉਤ੍ਰ— ਹਾਥੀ ਕੇ ਪੈਰ ਮੇਂ ਸਬਕਾ ਪੈਰ ਹੋਤਾ ਹੈ ਯਦਿ ਕੋਈ ਰਾਜਾ ਹੁੱਕਾ ਪੀਨੇ ਲਗ ਜਾਏ ਤੋ ਸਮਗ੍ਰ ਲੋਗ ਜ਼ਰੂਰ ਅਪਨੇ ਆਪ ਪੀਨੇ ਲਗਜਾਏਂਗੇ ਯਥਾਰਾਜਾ ਤਥਾ ਪਰਜਾ ਜੈਸੇ ਅਬ ਅਕਸਰ ਲੋਗ ਖਾਨ ਪੈਹਰਾਨ ਮੇਂ ਅੰਗ੍ਰੇਜੋਂ ਕੀ ਚਾਲ ਚਲਤੇ ਹੈਂ ਔਰ ਕੈਹਤੇ ਹੈਂ ਚੁਰਟ ਹੁੱਕੇ ਤਮਾਕੂ ਮੇਂ ਬੁਰਾਈਹੀ ਕਜਾਹੈ ਏਕ ਜੰਗਲੀ ਗੁਣਕਾਰਕ ਬੂਟੀ ਹੈ। ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪਕਾ ਝੂਠਾ ਹਠ ਹਟਾਨੇ ਕੇ ਲੀਏ ਖਾਲਸਾ ਮਤ ਮੇਂ ਪਰਮ ਬਿਦ੍ਵਾਨ ਕੇ ਲੇਖ ਸੇ ਦਿਖਲਾਤਾ ਹੂੰ ਸ੍ਰੀ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਜੀਨੇ ਅਪਨੇ ਹੁਕਮ ਨਾਮੇ ਕੇ ਜ਼ਰੀਏ ਹੁੱਕੇ ਮਗਵਾਏ ਯਥਾ ਦੇਖੋ ਪੁਸਤਕ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੀਰਥ ਸੰਗ੍ਰਹ ਪੰਡਤ ਤਾਰਾਸਿੰਗ ਰਚਿਤ ਜੋ ਸੰਮਤ

੧੯੪੧ ਕੈਂਪ ਅੰਬਾਲਾ ਟੈਂਪਲ ਪ੍ਰੇਸ ਮੇਂ ਛਪੀ ਕੇ ਸਫੇ ੧੦੬ ਪਰ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਜੀ ਕਾ ਜਨਮ ਸਥਾਨ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ਗੁਰਦੁਵਾਰਾ ਔਰ ਉਸ ਮੇਂ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਜੀ ਕੇ ਹਾਥ ਕੀ ਪਵਿਤ੍ਰ ੯ ਬਸਤੁ ਲਿਖੀ ਹੈਂ ਜਿਸ ਮੇਂ ਨੌਮੀ ਬਸਤੁ ਹੁਕਮਨਾਮੇਓਂ ਕੀ ਪੋਥੀ ਹੈ ਜਿਸ ਮੇਂ ਹੁੱਕੇ ਮੁਗਵਾਨੇ ਵਾਲਾ ਹੁਕਮਨਾਮਾ ਦਰਜ ਹੈ ਯਥਾ ਉਕਤ ਤੀਰਥ ਸੰਗ੍ਰਹ ਸਫੇ ੧੦੬ ਸਤਰ ੧੯ ਔਰ ੨੦ ਏਕ ਸੌ ਆਠ ਹੁਕਮ ਨਾਮਜੋਂ ਕੀ ਪੋਥੀ. ਜਿਸ ਮੇਂ ਏਕ ਹੁਕਮ ਨਾਮੇ ਮੇਂ ਕਈ ਹੁੱਕੇ ਮਗਾਵਾਏ ਲਿਖੇ ਹੈਂ ਮਿਤ੍ਰ ਮੇਰਾ ਯੇਹ ਅਭਿਪ੍ਰਾਯ ਨਹੀਂ ਕਿ ਹੁਕੱਾ ਪੀਨਾ ਸਿਧ ਕੀਯਾ ਜਾਵੇ।

ਪਲੀਡਰ—ਜੋ ਆਦਮੀਂ ਗੁਮਰਾਹ ਹੈ ਉਸਕੇ ਪਿੱਛੇ ਲਗਕਰ ਅਪਨੀ ਇੱਜਤ ਖੋਨੀ ਹੈ ਔਰ ਨਕੋਈ ਅੰਤਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਆਦਮੀ ਐਸੇ ਆਦਮੀ ਕੀ ਇੱਜਤ ਕਰਤਾ ਹੈ।

ਉਤ੍ਰ—ਪਲੀਡਰੀਪਨ ਕੈਸੀ ਅਬਾਦੀ ਹੈ ਜਿਸ

ਕੇ ਜੋ ਚਾਹੋ ਸੋ ਕਹਵੋ ਕਜਾ ਸਬ ਰਾਜਗਾਨ ਪੰਜਾਬ ਆਪਕੇ ਸਮੀਪ ਗੁਮਰਾਹ ਹੋ ਸਕਤੇ ਹੈਂ ਅੰਤਸ ਕਰਨ ਭੀ ਕੋਈ ਪੁਰਖ ਹੋਤਾ ਹੈ ਯਿਹ ਕੈਸੀ ਬੇ ਬੁਨਿਆਦ ਤਹਰੀਰ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਅੰਤਸ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਆਦਮੀ ਐਸੇ ਆਦਮੀ ਕੀ ਇੱਜ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕਰਤਾ।

ਪਲੀਡਰ—ਕਈ ਰਾਜ ਪੁਤ੍ਰੋਂ ਨੇ ਅਪਨੀ ਲੜਕੀਯਾਂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਪਾਦਸਾਹੋਂ ਕੋ ਬਜਾਹੀਂ ਇਸ ਸੇ ਯਿਹ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਤਾ ਕਿ ਤਮਾਮ ਹਿੰਦੂ ਐਸਾ ਕਰੇਂ ਜੋ ਐਸਾ ਕਹੇ ਵੁਹ ਮੂਰਖ ਹੈ।

ਉਤ੍ਰ—ਕਿਸੀ ਰਾਜਪੂਤਨੇ ਅਪਨੀ ਲੜਕੀ ਪਾਦਸ਼ਾਹ ਕੋ ਨਹੀਂ ਬਜਾਹੀ ਬਾਜੇ ਬਾਜੇ ਰਾਜਪੂਤੋਂ ਨੇ ਖੌਫ ਕੇ ਮਾਰੇ ਲੌਂਡੀਓਂ ਕੀ ਲੜਕੀਏਂ ਦੀਹੈਂ ਪੰਤੂ ਬਜਾਹ ਨਹੀਂ ਕੀਯਾ ਵੈਸੇਹੀ ਛੋਕਰੀ ਫਿਰ ਉਨਸੇ ਨਾਤਾ ਰਿਸਤਾ ਨਹੀਂ ਰੱਖਾ। ਅੱਲਬੱਤਾ ਜਾਟੋਂ ਨੇ ਅਪਨੀ ਲੜਕੀਆਂ ਦੀਹੈਂ ਔਰ ਉਸ ਕੇ ਬਦਲੇ ਮਹਾਰਾਜੇ ਕਾ ਖਿਤਾਬ ਹਾਸਲ ਕਰ ਰਾਜਪੂਤੋਂ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਸਰ-

ਮਿੰਦਾ ਹੋਤੇ ਰਹੇ । ਆਪਨੇ ਸੈਦ ਜੈਮਲ ਛੱਤੇ ਕਾ ਇ-
ਤੀਹਾਸ ਦੇਖਾ ਹੋਗਾ ਕੈਸੇ ਦਾਂਤੋਂ ਚਨੇ ਚਬਾਏਥੇ । ਤਥਾਪੀ
ਲੜਕੀ ਨਹੀਂ ਦੀ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪ ਕੋ ਤੋ
ਐਸੀ ਬਾਤ ਲਿਖਨੀ ਯੋਗ ਨਹੀਂ ਕਯੋਂਕਿ ਤੱਤ ਖਾਲਸਾ
ਸਬਜਾਤ ਕੋ ਮਿਲਾਕਰ ਉਨ ਸੇ ਨਾਤੇ ਨਿਸਬਤ ਕਰ-
ਲੇਨੇ ਕੋ ਤਯਾਰ ਹੈ ।

ਪਲੀਡਰ—ਸਿਖੋਂ ਕੇ ਬਿਰੋਧੀ ਅਖਬਾਰ ਕੋ
ਮਾਲੂਮ ਹੈ ਕਿ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਂਰਾਜ ਪਟਿਯਾਲਾ ਅਪਨੇ
ਇਸ ਕਾਂਮ ਕੇ ਪਿੱਛੇ ਸੇ ਸੰਕੁਚਤ ਹੂਏਥੇ ॥

ਉਤ੍ਰ—ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਕੋ ਬਿਦਤ ਹੋ ਕਿ
ਮਹਾਰਾਜ ਪਟਿਯਾਲਾ ਕਦਾਪੀ ਨਰਾਜ ਨਹੀਂ ਹੂਏ
ਬਲਕਿ ਖੁਸ ਰਹੇ ਜੋ ਸੰਮਤ ੧੯੬੧ ਬਿ੦ਮੇਂ ਬੜੀ
ਸਪੁਤ੍ਰੀ ਕਾ ਬ੍ਯਾਹ ਧੌਲਪੁਰ ਕੀਯਾਥਾ । ਉਸ ਕੇ
ਚਾਰ ਸਾਲ ਬਾਦ ਦੂਸਰੀ ਛੋਟੀ ਸਪੁਤ੍ਰੀ ਕਾ ਬ੍ਯਾਹ
ਭਰਤਪੁਰ ਕੀਯਾ ਹੈ ਸੋ ਦੁਹਣੀ ਕੇਸਧਾਰੀ ਨਥੇ । ਫਿਰ
ਦੁਰਾ ਗਾਮਨਾਦਿ (ਮੁਕਲਾਵਾ) ਹਿੰਦੂ ਰੀਤੀ ਅਨੁਸਾਰ

ਕਰਤੇ ਰਹੇ । ਜਿਤ੍ਰੋ ਪ੍ਰਿਥਮ ਬਿਵਾਹ ਸੇ ਨਰਾਜ ਰਹਤੇ ਤੋ ਦੂਸਰਾ ਬਿਵਾਹ ਵੈਸੇਹੀ ਕਯੋਂ ਕਰਤੇ ਉਨ ਕਾ ਨ-ਰਾਜ ਹੋਨਾ ਤੋ ਕਹਾਂ ਆਜ ਤਕ ਭੀ ਰੋਂਬੀ ਪ੍ਰਸ਼ਤ ਹੈ ਕਭੀ ਇਸ ਬਾਤ ਕਾ ਜ਼ਿਕਰ ਭੀ ਨਹੀਂ ਆਪਕੋ ਬਹੁਤ ਬਰਸ ਪਿਛੋ ਕੌਨਸਾ ਸ਼ਹੀਦ ਬਤਲਾਗਿਯਾ ਅਬ ਆਪ ਕੋ ਯੋਗਯ ਹੈ ਕਿ ਅਪਨਾ ਕਥਨ ਸਤਯ ਕਰ ਕੇ ਦਿਖਾਵੇਂ ।

ਪਲੀਡਰ—ਮਹਾਂਰਾਜਾਨੇ ਪੰਥ ਸੇ ਮਾਫ਼ੀ ਚਾਹੀ ਕਿ ਮੈਨੇ ਸਿੱਖੀ ਮਤ ਸੇ ਯਿਹ ਬਰੁਧ ਕਾਮ ਕੀਯਾ ਹੈ ਪੰਥਨੇ ਅਨੰਦਪੁਰ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਮੇਂ ਉਨ ਸੇ ਤਨਖਾਹ ਲਈ ।

ਉਤਰ—ਯਿਹ ਕਥਨ ਅਸਤਯ ਔਰ ਅਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਬੰਧਯਾ ਕੇ ਪੁਤ੍ਰ ਕੀ ਸਮਾਨ ਹੈ ਕਯੋਂਕਿ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਮਹਾਂਰਾਜ ਪਟਿਆਲਾਨੇ ਪਹਿਲੇ ਬੜੀ ਰੰਕਨਾ ਕਾ ਬਿਵਾਹ ਸੰ ੦ ੧੯੧੧ ਬਿ ੦ ਮੇਂ ਕੀਯਾਥਾ ਯਦ ਬੁਰਾ ਸਮਝਤੇ ਤੋ ਚਾਰਸਾਲ ਬਾਦ ਛੋਟੀ ਲੜਕੀ ਕ

ਬਿਵਾਹ ਕੈਸੇ ਕਰੇਂ ਅਰਤੇ ਕਜਾ ਮਹਾਂਰਾਜਾਧੀਰਾਜ ਕੋ ਇਤਨੀ ਬੁਧੀਨਥੀ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਬਤਲਾਈਏ ਕਿ ॥ ੧ ॥ ਪਹਿਲੇ ਬਿਵਾਹ ਪਰ ਕਜਾ ਤਨਖਾਹ †ਲੀਗਈਥੀ ॥ ੨ ॥ ਦੂਸਰੇ ਬਿਵਾਹ ਪਰ ਕਜਾ ਤਨਖਾਹ ਲੀਗਈਥੀ ॥ ੩ ॥ ਅਨੰਦ ਪੁਰ ਕੇ ਕੌਨਸੇ ਗੁਰਦਵਾਰੇ ਮੇਂ ਲੀਗਈ ॥ ੪ ॥ ਕੌਨਸਾ ਸਾਲਥਾ ॥੫॥ ਸਾਤਸੋਢੀ ਸਰਕਾਰੋਂ ਮੇਂ ਸੇ ਕੌਨਸੇ ਸੋਢੀ ਸਾਹਿਬ ਔਰ ਮੁਖੀਆ ਪੁਰਖ ਮੌਜੂਦ ਥੇ ॥੬॥ ਤਨਖਾਹ ਕਾ ਖਰਚ ਮਹਾਰਾਜ ਕੇ ਕੌਨਸੇ ਦਫਤਰ ਮੇਂ ਦਰਜ ਹੈ ਉਸ ਕੀ ਨੱਕਲ ਆਦਿ ਸਰਬ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਪ੍ਰਮਾਣਿਕ ਸਬੂਤ ਦੀਜੀਏ ਨਹੀਂ ਤੋ ਆਪ ਕੇ ਹਜਾਰ ਰੁਪਯੇ ਇਨਾਮ ਵਾਲੇ ਇਸਤਹਾਰ ਕੀ ਸੇਖੀ ਝੂਠੀ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਮਿਤ੍ਰ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਹਜੂਰ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਨਰੇਂਦ੍ਰਸਿੰਘ ਬਹਾਦੁਰ ਜੀ ਪੱਕੇ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮਾਂਬਲੰਬੀਥੇ ॥ ਯਥਾ ॥ ੧ ॥ ਸ੍ਰੀਗੰਗਾ ਸਨਾਨ ਬਹੁਤਬਾਰ ਕੀਆ ॥ ੨ ॥ ਬਦ੍ਰੀਨਾਰਾਯਣ

† ਧਾਰਮਕ ਖ੍ਯਾਹ ਚਿੱਤ ਕੇ ਲੀਏ ਸਜਾ।

ਜੀਕੇ ਦਰਸ਼ਨੋਂ ਕੋ ਸਬ ਸਵਾਰੀਓਂ ਸਾਥ ਹੋਤੇ ਹੂਏ ਨੰਗੇਪਾਓਂ ਗਏ ॥ ੩ ॥ ॥ ੪ ॥ ਕੇਵਲ ਦਰਸ਼ਨ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਲਕੇ ਸ੍ਰੀ ਬਦ੍ਰੀ ਨਾਰਾਯਣ ਜੀਕਾ ਮੰਦਰ ਪ-ਟਿਯਾਲੇ ਬਹਾਦਰ ਗੜ੍ਹਕੇ ਬੀਚ ਮੇਂ ਕਿਦਾਰਨਾਥ ਆਦਿ ਤੀਨ ਮੰਦਰ ਬਨਵਾਏ ਅਬਤਕ ਬੈਸਾਖ ਮੇਂ ਉਨ ਕਾ ਵਹਾਂ ਮੇਲਾ ਹੋਤਾ ਹੈ ॥੫॥ ਸ੍ਰੀ ਜ੍ਵਾਲਾ ਜੀ ਕੇ ਦ-ਰਸ਼ਨੋਂ ਕੋ ਗਏ ਵਹਾਂ ਸੇ ਲਾਟ ਲਾਕਰ ਸ਼ੇਰਾਂਵਾਲੇ ਦਰਵਾਜੇ ਪਟਿਯਾਲੇ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾਜੀ ਕਾ ਮੰਦਰ ਬਨਵਾਯਾ ॥ ੬ ॥ ਕਲਕੱਤੇ ਗਏ ਵਹਾਂ ਸੇ ਕਾਲੀਦੇਵੀ ਜੀਕੀ ਮੂਰਤੀ ਲਾਕਰ ਸੇਰਾਂ ਵਾਲੇ ਦਰਵਾਜੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁ-ਰਗਾ ਜੀਕੇ ਮੰਦਰ ਦੇ ਸਮੀਪ ਮੰਦਰ ਬਨਵਾਯਾ ॥੭॥ ਕ਼ਿਲੇ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਪੱਥਰ ਕੀ ਬਾਰਾਂਦਰੀ ਬਨਵਾਕਰ ਉਸ ਮੇਂ ਨਿਤ੍ਯ ਪੁਰਾਨਕ ਕਥਾ ਹੂਆ ਕਰਤੀ ਥੀ ਔਰ ਮੋਤੀ ਬਾਗਕੇ ਸਾਮਨੇ ਖਾਸ ਗੁਰਦਵਾਰੇ ਮੇਂ ਨਿਤ੍ਯ ਪੁਰਾਣ ਕਥਾ ਹੂਆ ਕਰਤੀ ਥੀ ਚਤੁਰਮਾਸ ਮੇਂ ਹਜ਼ਾਰੋਂ ਸਾਧੂ ਔਰ ਪੰਡਤੋਂ ਕੋ ਅੰਨ ਔਰ ਬਸਤ੍ਰ ਮਿਲਤਾਥਾ ਐਸਾ ਹੋਤੀ ਥੀ ਚਾਤੁਰ ਮਾਸ ਮੇਂ ਜਿਤਨੀ ਪਟਿਲਾਯ

ਸੋਹਰ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਮਤ ਭਾਗਵਤ ਸਪਤਾਹ ਕਥਾ ਹੂਆ
ਕਰਤੀ ਥੀ ਸਬ ਕੋਂ ਪੱਚੀ ਪੱਚੀ ਰੁਪਏ ਪੂਜਾ ਮਿਲਤੀ
ਥੀ ਸਬ ਹਿੰਦੂ ਤਯੋਹਾਰ ਅਪਨੇ ਕਰਕੇ ਮਾਨੇਜਾਤੇ ਥੇ
੯॥ ਨਿਤਨ ਬਰਨੀ ਪਾਠ ਹੋਤਾਥਾ ਕਹਾ ੨ ਬਤਲਾਊਂ
ਸਮਗ੍ਰ ਸਾਸਤ੍ਰੋਕਤ ਅਸਲ ਗੁਰਮਰਯਾਦਾ ਹੋਤੀਥੀ
ਔਰ ਅਬਤਕ ਹੋਤੀ ਹੈ ਕਿਸ ੨ ਕਾਮ (ਮਰਯਾਦਾ)
ਕੀ ਆਪ ਤਨਖਾਹ ਦੇਨੀ ਸਿੱਧ ਕਰੋਗੇ ਏਕ ਰਾਜਾ
ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਪਰ ਕਹਾ ਹੈ ਸਰਬਤ੍ਰ ਗੁਰੂ ਔਰ ਗੁਰੂ-
ਘਰਕੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਅਬਤਾਰ ਹਿੰਦੂ ਰੀਤੀ ਪਰ ਚਲਤੇ ਹੈਂ
ਮਿਤ੍ਰ ਥੋੜੇ ਪੁਰਖ ਅੰਗਰੇਜੀ ਤਾਲੀਮ ਕੇ ਕਾਰਣ ਧ-
ਰਮ ਸੇ ਗਿਰਗਏ ਤੋ ਕਯਾ ਹੂਆ।

ਪਲੀਡਰ—ਸਿੱਖੋਂ ਕੋ ਇਸ ਸੇ ਕੁਛ ਵਾਸਤਾ
ਨਹੀਂ ਜੋ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨਾਭਾਨੇ ਕਿਯਾ ਉਨ ਕੋ ਘਰ ਕਾ
ਇਖਤਿਯਾਰ ਥਾ।

ਉਤਰ—ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਅਗਰ ਸਿੱਖੋਂ ਕੋ
ਕੁਛ ਵਾਸਤਾ ਨਹੀਂ ਤੋ ਕਯਾ ਆਪਸਿਖ ਨਹੀਂ ਜੋ ਆ-

ਪਕੋ ਵਾਸਤਾ ਹੂਆ ਔਰ ਅੰਗਰੇਜੀ ਪਾਓਨੀਯਰ ਅਖ-
ਬਾਰ ਤਕ ਸ਼ੋਰ ਮਚਾਯਾ।

ਪਲੀਡਰ—ਯਿਹ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਕਹਿਤਾ ਕਿ
ਉਨ ਕਾ ਯਿਹ ਕਾਮ ਸਿਖੀ ਮਤ ਕੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੈ।

ਉਤਰ—ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪ ਜੈਸੇ ਏਕ
ਦੋ ਪੁਰਖੋਂ ਕੋ ਸਬਾਇ ਬਰੁਧਭੀ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਔਰ ਸ੍ਰੀ
੧੦੯ ਹਜੂਰ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨਾਭਾ ਨਰੇਸ਼ ਜੀਨੇ ਜੋ ਕੀਯਾ
ਹੈਪੁਰਾਚੀਨ ਗੁਰਮਰਜਾਦਾ ਕੇਅਨੁਸਾਰ ਕੀਆ ਹੈ।

ਪਲੀਡਰ—ਸਿਖ ਉਨ ਕੀਵੁਹ ਕਦਰ ਛੋੜ
ਗਏ ਜੋ ਪਹਿਲੇ ਕਰਤੇ ਥੇ॥

ਉਤ੍ਰ—ਯੇਹ ਮੰਤਕ ਹਮਾਰੀ ਸਮਝ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਆ-
ਤਾ ਕਿ ਸਿਖ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਕੈਸੇ ਕਦਰ ਛੋੜ
ਗਏ ਮਿਤਰੋ ਪਹਿਲੇ ਭੀ ਸਿਖ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਸੇ
ਚੰਦ੍ਹਾ ਮਾਂਗਤੇ ਥੇ ਅਬ ਭੀ ਮਾਂਗਤੇ ਹੈਂ ਔਰ ਆਗੇ ਕੋ
ਭੀ ਮਾਂਗੇਗੇ ਫਿਰ ਕੈਸੇ ਕਦਰ ਛੋਡ ਗਏ ਗੁਰੂ ਕੇ ਸਰੇ

ਸਿਖ ਤੋ ਉਨ ਕੋ ਤਮਾਮ ਮੁਲਕੋਂ ਮੇਂ ਧਰਮ ਕੀ ਧ੍ਵਜਾ ਸਮਝਤੇ ਹੈਂ ਔਰ ਉਨ ਕੇ ਦਰਸ਼ਨੋਂ ਕੋ ਪਾਪ ਮੋਚਨ ਜਾਨਤੇ ਹੈਂ ਸਿਖੀ ਮਤ ਕੇ ਉਪਕਾਰ ਕੀ ਜੋ ਬਾਤ ਹੋ-ਤੀ ਹੈ ਪਹਿਲੇ ਉਨ ਸੇ ਸੰਮਤੀ ਲੀ ਜਾਤੀ ਹੈ ਪਲੀ-ਡਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪ ਕੀ ਸਦ੍ਰਿਸ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਕੇ ਐਡੀਟਰ ਭਾਈ ਵਜੀਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਕੁਛ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਸ਼ਾਨ ਮੇਂ ਲਿਖਾ ਥਾ ਜਿਸ ਕੇ ਸਬਬ ਸਿਖਾਂਨ ਚੀਨਨੇ ਉਸਕਾ ਅਖਬਾਰ ਬੰਦ ਕਰ ਸ਼ਕਲ ਦੇਖਨੀ ਮਨਹੂਸ ਸਮਝ ਲੀ ਸਿਖੀ ਸੇ ਖਾਰਜ ਕਰ ਦੀਆ ॥ ਯਥਾ ॥ ਦੇਖੋ ਸਿ ਖਾਨ ਚੀਨ ਕੀ ਚਿਠੀ ਜੋ ਉਰਦੂ ਅਖਬਾਰ ਖਾਲਸਾ ਬਹਾਦੁਰ ਲਾਹੌਰ ਜਿਲਦ ੧੪ ਨੰਬਰ ੭ ਔਰ ੮ ਬ-ਰੋਜ ਸੋਮਵਾਰ ਮੁਵਰਖਾ ੧੬ ਵਾ ੧੯ ਸਤੰਬਰ ਸਨ ੧੯੦੫ ਈ० ਸਫਾ ੮ ਕਾਲਮ ਦੋ ਸਤਰ ੪ ਸੇ ੩੫ ਤਕ ॥ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸਿਖੀ ਸੇ ਖਾਰਜ ਇਸ ਹੈਡੰਗ ਸੇ ਲੇਖ ਹੈ ॥ ਯਥਾ ॥ ਜਨਾਬ ਐਡੀਟਰ ਸਾਹਿਬ ਖਾਲਸਾ ਬਹਾਦੁਰ ਲਾਹੌਰ ਸ੍ਰੀ ਵਾ

ਹੈਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤੇ ਹੈ ਬਰਾਏ ਮੇਹਰਬਾਨੀ ਜੈਲ ਕਾ
ਮਜਮੂਨ ਦਰਜ ਅਖਬਾਰ ਕਰਕੇ ਕਿਰਤਾਰਥ ਕਰੋ
ਤਾਰੀਖ ੧੦ ਮਾਹ ਅਗਸਤ ਸਨ ੧੯੦੫ ਈ੦ ਕੋ
ਬਵਕਤ ੪ ਬਜੇ ਦਿਨ ਕੇ ਟੀਡਸਨ (ਚੀਨ) ਮੇਂ ਸਿਖੋਂ
ਕਾ ਏਕ ਖਾਸ ਜਲਸਾ ਹੁਆ ਜਿਸ ਮੇਂ ਖਾਲਸਾ ਸ-
ਮਾਚਾਰ ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ ਕੇ ੧੨ ਜੁਲਾਈ ਸਨ ੧੯੦੫
ਈ: ਕੇ ਪਰਚੇ ਕੇ ਸਾਥ ਜੋ † ਜਮੀਮਾ ਸ੍ਰੀ ਹਜੂਰ ਮ-
ਹਾਰਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨਾਭਾ ਕੇ ਬਰਖਿਲਾਫ ਨਿਕਾਲਾ ਹੈ
ਇਸ ਪਰ ਇਜਹਾਰ ਅਫਸੋਸ ਕਿਆ ਗਿਆ ਖਾਲਸਾ
ਸਮਾਚਾਰ ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ ਨੇ ਜੇਹ ਜਮੀਮਾਂ ਨਿਕਾਲ ਕਰ
ਦਰਹਕੀਕਤ ਸ੍ਰੀ ਹਜੂਰ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਸਰਤਾਜ
ਖਾਲਸਾ ਕੌਮ ਕੀ ਗੁਸਤਾਖੀ ਕੀ ਹੈ ਮਜਕੂਰਾ ਬਾਲਾ
ਜਮੀਮਹ 'ਤੇਸ ਇਸਤਹਾਰ ਕਾ ਜਵਾਬ ਕਹਾ ਜਾਤਾ
ਹੈ ਜੋ ਸ੍ਰੀ ਹਜੂਰ ਨਾਭਾ ਨੇ ਹਿੰਦੂਓਂ ਕੇ ਜੋਸ਼ ਕੋ ਜੋ ਸ੍ਰੀ

---

† ਯੇਹ ਜਮੀਮਾ ਸਰਦਾਰ ਰੌਦਾ ਸਿੰਘ ਪਲੀ-
ਡਰ ਕੇ ਨਾਮ ਸੇ ਹੈ ।

ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਸੇ ਬੁਤ ਉਠਾਏ ਜਾਨੇ ਪਰ ਬਜ਼ੂਤਾ ਸਾ ਰਹਾ ਥਾ ਮਿਟਾਨੇ ਕੇ ਲੀਏ ਨਿਕਾਲਾ ਥਾ ਏਕ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਖੜੇ ਹੋਕਰ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਕੀ ਸਬ ਚਾਲਾਕੀਓਂ ਕਾ ਮੁਫਸੱਲ ਜਿਕਰ ਕਿਆ ਔਰ ਆਖਰ ਮੇਂ ਜੈਲ ਕੇ ਰਜ਼ੂਲੇਸ਼ਨ ਪਾਸ ਹੋਕਰ ਜਲਸਾ ਬਰਖਾਸਤ ਹੂਆ।

(੧) ਯੇਹ ਜਲਸਾ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ ਕੇ ਸ੍ਰੀ ਹਜ਼ੂਰ ਮਹਾਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਨਾਭਾ ਕੇ ਬਰਖਲਾਫ † ਜਮੀਮਾਂ ਨਿਕਾਲਨੇ ਪਰ ਅਸਹਦ ਅਫਸੋਸ ਕਰਤਾ ਹੈ।

(੨) ਇਤਫਾਕ ਰਾਇ ਸੇ ਪਾਸ ਹੁਆ ਕੇ ਆਇੰਦਾ ਕੋਈ ਗੁਰੂ ਕਾ ਸਿਖ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਕਾ ਮੂੰਹ ਨ ਦੇਖੇ ਜਬ ਤਕ ਕੇ ਭਾਈ ਵਜੀਰਸਿੰਘ ਐਡੀਟਰ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਸ੍ਰੀ ਹਜ਼ੂਰ ਸੇ ਮੁਆਫੀ ਨ ਮਾਂਗਲੇ॥

(੩) ਇਤਫਾਕ ਰਾਇ ਸੇ ਪਾਸ ਹੁਆ ਕਿ ਆਜ ਸੇ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਸਿਖੋਂ ਸੇ ਖਾਰਜ ਸਮਝ

ਨਾ ਚਾਹੀਏ।

(੪) ਸਬ ਕੀ ਰਾਇ ਸੇ ਪਾਸ ਹੁਆ ਕਿ ਇਸ ਜ-ਲਸੇ ਕੀ ਕਾਰਰਵਾਈ ਹਿੰਦੂਸਤਾਨ ਕੇ ਸਬ ਅਖਬਾਰੋਂ ਮੇਂ ਜਾਨੀ ਚਾਹੀਏ।

ਅਲਰਾਕਮ ॥ ਲਛਮਨ ਸਿੰਘ ਸਕਤ੍ਰ ਜਲਸਾ ਮੁਵਰਖਾ ੧੧ ਅਗਸਤ ਸਨ ੧੯੦੫ ਈਃ ॥

ਮਿਤਰੋ ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਸਿਖੋਂ ਮੇਂ ਮਹਾਰਾਜ ਕੀ ਇੱਜਤ ਕਾ ਕਥਨਹੀ ਕਯਾ ਹੈ ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ ਕੇ ਪਰੇਜੀਡੈਂਟ ਹੋਨਾ ਆਦਿਕ ਅਨੇਕ ਸਬੂਤ ਹੈਂ ਜਿਨ-ਮੇਂਸੇ ਏਕ ਦਿਖਲਾਤਾ ਹੂੰ ਦੇਖੋ ਜਮੀਮਾ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾ-ਚਾਰ ੧੨ ਜੁਲਾਈ ਸਨ ੧੯੦੫ ਜੋ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਹਮ ਖਿਯਾਲ ਸਰਦਾਰ ਚੰਦਾਸਿੰਘ ਪਲੀਡਰ ਫੀ-ਰੋਜਪੁਰੀ ਕੇ ਨਾਮ ਸੇ ਤਕਸੀਮ ਹੂਏ ਕੇ ਸਫੇ ੧੬ ਸ-ਤਰ ੧੯ ਔਰ ੨੦ ਪਰ ॥ ਯਥਾ ॥ ਇਸਤਹਾਰ ਹਰ-ਗਿਜ ਸਾਡੇ ਬਜੁਰਗ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨਾਭਾ ਵਲੋਂ ਨਹੀਂ ਕਯੋਂ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਅਬ ਤੋ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਬਹਾਦੁਰ ਨਾਭਾ ਨਰੇਸ ਜੀ ਕੀ ਕਦਰ ਮਾਲੂਮ ਹੁਈ

ਸ਼ਾਹੀ ਰਾਜ ਦਰਬਾਰ ਮੇਂ ਜੋ ਇੱਜ਼ਤ ਹੋਤੀ ਹੈ ਸੋ ਆਫ-ਤਾਬ ਕੀ ਤਰਹ ਰੋਸ਼ਨ ਹੈ ਨਮੂਨੇ ਕੇ ਤੌਰ ਪਰ ਦੇਖੋ ਦਿੱਲੀ ਦਰਬਾਰ ਔਰ ਆਗਰਾ ਦਰਬਾਰ ਮੇਂ ਸਬਰਾਜ ਗਾਨ ਸੇ ਪਹਿਲੇ ਦਾਹਿਨੀ ਤਰਫ ਕੁਰਸੀ ਮਿਲਨਾ।

ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਅਬ ਆਪਕੇ ਹਮ ਖਿਆਲ ਤੱਤਖਾਲਸਾ (ਸਿੰਘ ਸਭੀਓਂ) ਕੀ ਕਦਰ ਸੁਨੀਏ ਤੱਤਖਾਲਸਾ ਕੇ ਸਿਰੋਮਣੀ ਸ੍ਰੀ ਮਾਨਭਾਈ ਸਰਦੂਲ-ਸਿੰਘ ਗਿਆਨੀ ਜੀ ਕੀ ਆਪ ਕੇ ਤੱਤਖਾਲਸਾ ਮੇਂ ਮਿਲਨੇ ਸੇ ਕੈਸੀ ਦੁਰਦਸਾ ਹੂਈ ਦੇਖੋ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਗਜਟ ਲਹੌਰ ਰੋਜ਼ਰੋਜ ਕੇ ਲੀਏ ਰੋਜਾਨਾ ਸੁਕ੍ਰਵਾਰ ੧੩ ਅਪਰੈਲ ਸਨ ੧੯੦੬ ਸਫਾ ੩ ਕਾਲਮ ੩ ਸਤਰ ੨੪ ਸੇ ੩੯ ਤਕ ॥ ਖਾਲਸਾ ਨੇ ਮੁਆਫੀ ਮਾਂਗੀ ॥ ਅਰੋੜਵੰਸ ਗਜਟ ਕੇ ਹਵਾਲੇ ਸੇ ਲਿਖਤਾ ਹੈ ॥ ਸਾਬਾ ॥ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਝਗੜੇ ਕੇ ਬਾਨੀ ਮੁਬਾਨੀ ਸਰਦਾਰ ਰੂੜਸਿੰਘ ਕੇ ਹਮ ਖਜਾਲੋਂ ਕਾ ਮਜਮਾ ਖੁਦ ਬਖੁਦ ਪਸਤ ਹੋਰਹਾਹੈ ॥ ਯੇਹ ਹਜਰਤ ਅਰਕਮੋਂ ਕੀ ਰੋਜ਼ ਰੋਜ ਕੀ ਅਨੈਤੇਪਰ ਮਸਤਹੋ ਕਰ

ਹਿੰਦੂ ਬਨਨੇ ਸੇ ਇਨਕਾਰ ਕਰਤੇ ਥੇ ਮਗਰ ਅਬਦੇ-
ਖੀਜੇ ਕਹਾ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਕਯੋਂਕਿ ਘਰਹੀਮੇਂ ਆਗ
ਲਗ ਗਈ॥ ਬਕੌਲ ਅਰੋੜ ਬੰਸ ਗਜਟ ਭਾਈ
ਸਰਦੂਲਸਿੰਘ ਸਾਹਬ ਗਯਾਨੀ ਲੀਡਰਾਨ (ਮੁਖੀਆ)
ਤਤਖਾਲਸਾ ਮੇਸੇ ਏਕ ਹੈਂ। ਖੈਰਸੇ ਸ੍ਰੀ ਹਜੂਰ ਸਾਹਿਬ
(ਅਵਚਲ ਨਗਰ) ਅਰਦਾਸ ਕਰਾਨੇ ਗਏਥੇ। ਮਗਰ
ਵਹਾਂ ਤੀਨ ਦਿਨ ਕੀ ਮਾਯੂਸੀ ਕੇ ਬਾਦ ਆਪ ਕੋ ਹੁ-
ਕਮ ਹੂਆ ਕਿ ਆਪ ਜਦੀਦ (ਨਏ) ਖਯਾਲਾਤ ਕੋ
ਅਗਰ ਤਰਕ ਕਰਕੇ ਪੁਰਾਨੇ ਖਿਯਾਲਾਤ ਕੇ ਪਾਬੰਦ
ਹੋ ਤੋ ਅਰਦਾਸ ਮਨਜੂਰ ਹੋ ਸਕਤੀ ਹੈ॥ ਆਖਰਕਾਰ
ਆਪਨੇ ਮੁਆਫੀ ਮਾਂਗੀ ਅਰਦਾਸ ਮਨਜੂਰ ਹੂਈ
ਮਿਤ੍ਰ ਇਨਹੀ ਗਯਾਨੀ ਸਾਹਿਬਨੇ ਹਜੂਰ ਅਵਚਲ
ਨਗਰ ਜੀ ਸੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਬਾਪਸ ਆਕਰ ਗੁਰਮਤ
ਪ੍ਰੇਸ ਲਹੌਰ ਮੇਂ ਏਕ ਇਸਤਹਾਰ ਮੇਂ ਚਿੱਠੀ ਹਜੂਰ
ਅਵਚਲ ਨਗਰ ਚੇਤ੍ਰ ੩ ਸੰਮਤ ੧੯੬੨ ਕੀ ਛਪਵਾਈ
ਜੋ ਸੈਂਕੜੋਂ ਜਗਹ ਬਾਂਟਾ ਗਿਯਾ ਜਿਸ ਮੇਂ।

ਸੱਚ ਖੰਡ ਸ੍ਰੀ ਹਜੂਰ ਅਵਚਲ ਨਗਰ ਸਾਹਿਬ

ਜੀ ਦੇ ਪੁਜਾਰੀ ਅਤੇ ਮਹੰਤ ਆਦੀਓਂ ਨੇ ਸਿੰਘ ਸਭੀਏ ਛੇਕ ਦੀਏ ਹੈਂ ਸਬਬ ਯਿਹ ਲਿਖੇ ਹੈਂ ॥ਯਥਾ॥ (੧) ਧੂਪ ਦੀਪ ਆਰਤੀ ਆਦਿ ਰੀਤੀਆਂ ਤੋੜ ਕੇ ਜੋ ਗੁਰੂ ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੀ ਬੇਅਦਬੀ ਕਰਨ।

(੨) ਜੋ ਰਹਰਾਸ ਦਾ ਪਾਠ ਘਟਾਉਣ ਅਰ ਰਾਗਮਾਲਾ ਨ ਪੜ੍ਹਨ।

(੩) ਜੋ ਤਖਤਾਂ ਦੀ ਆਗਯਾ ਲਏ ਬਿਨਾ ਨੀਚ ਜਾਤੀਆਂ ਨਾਲ ਮੇਲ ਕਰਲੈਣ।

(੪) ਜੋ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਨੂੰ ਕਵੀ ਉਕਤ ਕਹਿਣ ਅਰ ਨਮੰਨਣ।

(੫) ਜੋ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਨੂੰ ਖੰਡੇਦਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਛਕੌਣ।

(੬) ਜੋ ਉਪਰਲੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨਾਲ ਮੇਲ ਰਖਣ ਸੋ. ਇਹ ਗੁਰਮਤ ਤੇ ਬੇਮੁਖ ਗੁਰਦੁਆਰੇਆਂ ਦੀ ਬੇ ਅਦਬੀ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਮਝ ਕੇ ਪੰਥ ਤੋ ਖਾਰਜ ਕੀਤੇ ਜਾਣਗੇ।

ਲੇਖਿਕ ॥ ਬੰਦਹ ਸਰਦੂਲਸਿੰਘ ਗਿਯਾਨੀ
ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ।

ਮਿਤ੍ਰ ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਸਰਬਤ੍ਰ ਸਿੰਘ ਸਭੀਏ ਸ੍ਰੀ ਹਜੂਰ ਅਵਚਲ ਨਗਰ ਕੇ ਪਾਂਚਹਾਂ ਹੁਕਮੋਂ ਸੇ ਬਰੁਧ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਜਿਨ ਕੀ ਸ੍ਰੀ ਤਖਤ ਸਾਹਿਬੋਂ ਪਰ ਬੇਇੱ-ਜਤੀ ਹੋਤੀ ਹੈ ਜੋ ਸੈਂਕੜੋਂ ਲੇਖ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਮੌਜੂਦ ਹੈਂ ਪੁਸਤਕ ਬੜ੍ਹਨੇ ਕੇ ਭੈ ਸੇ ਨਹੀਂ ਲਿਖਤਾ ਨਮੂਨੇ ਕੇ ਤੌਰ ਪਰ ਦੇਖੋ ਮੇਰੀ ਬਨਾਈ ਨਵੀਨਸਿੰਘ ਸਿਖੜਾ ਮੇਂ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਦੁਰਦਸਾ। ਕਿਨੇਂ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪਨੇ ਤੱਤਖਾਲਸਾ ਕੀ ਕਦਰ ਦੇਖਲੀ।

ਪਲੀਡਰ–ਹਰ ਏਕ ਸੱਚਾ ਸਿੱਖ ਮਹਾਂ-ਰਾਜਾ ਕੇ ਇਸ ਕਾਮ ਸੇ ਨਰਾਜ ਹੈ।

ਉਤਰ–ਸਮਗ੍ਰ ਸੱਚੇ ਸਿੱਖ ਅਤਯੰਤ ਖੁਸ਼ ਹੈ ਆਪ ਜੈਸੇ ਦੋ ਏਕ ਪੁਰਖ ਨਾ ਖੁਸ਼ ਹੋਤੇ ਹੌਂ।

ਪਲੀਡਰ–ਟਿਕਾ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਬਹਾਦੁਰ ਇਸ ਕਿ

ਵਾਹ ਸੇਂ ਇਸੀ ਕਾਰਨ ਸਰੀਕ ਨਹੀਂ ਹੂਏ । ਤਮਾਮ ਸਿਖ ਕੌਮ ਕੋ ਉਨ ਪਰ ਇਲਜਾਮ ਲਗਾਨੇ ਕੀ ਜ-ਗਹ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦੇਨੀ ਯੋਗਯ ਹੈ ਕਿ ਸਿਖੀ ਮਤ ਮੇਂ ਪੂਰੇ ਉਤਰੇ ॥

ਉਤ੍ਰ—ਸ੍ਰੀ ਟਿਕਾ ਸਾਹਿਬ ਪਕੇ ਪੁਰਾਚੀਨ ਧਰਮੀ ਹੈਂ ਕਯੋਂਕਿ ਸੁਨਾ ਹੈ ਤੀਨ ਚਾਰ ਸਾਲ ਹੂਏ ਜਬ ਉਨ ਕਾ ਬਿਵਾਹ ਹੂਆ ਥਾ ਆਦਯੋਪਾਂਤ ਸਮਗ੍ਰ ਸਾਸਤ੍ਰ ਰੀਤਿ ਕਰਵਾਈ ਥੀ ॥ ਯਥਾ ॥ ਸਾਂਤੀ ਕਰਵਾਈ ਕੰਗ-ਨਾ ਬਾਂਧਾ ਗ੍ਰਹ ਪੂਜਨ ਕੀਆ ਪੀੜ ਮੰਞੀ ਜੇ ਵਤਨ ਫਰਮਾਈ ॥ ਸੁਨੈਹਰੀ ਦਸਤਾਰ ਪਰ ਸੇਹਰਾ ਬਾਂਧਾ ਔਰ ਜੇਠ ਮਹੀਨੇ ਕੀ ਗਰਮ ਰਾਤ ਕੋ ਤੀਨ ਘੰਟੇ ਤਕ ਬਿਧੀ ਪੂਰਬਕ ਗ੍ਰਹ ਪੂਜਨ ਔਰ ਫੇਰੇ ਕਰਵਾਏ ਕੁਛ ਨਹੀ ਘਬਰਾਏ ਫੇਰੋਂ ਸੇ ਪ੍ਰਥਮ ਕਈ ਕਟਰ ਭਾਈ ਜੀਓਂ ਨੇ ਉਨ ਕੋ ਆਨੰਦ ਕੀ ਰਾਏ ਦੀ ਥੀ ਪਰੰਤੂ ਉਨੋ ਨੇ ਏਕ ਨਹੀਂ ਮਾਨੀ ਔਰ ਫਰਮਾਯਾ ਜਬ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ ਸੇ ਲੇਕਰ ਆਜ ਤਕ ਸਬ ਰਾਜਾਓਂ ਕੇ ਫੇਰੇ ਹੋਤੇ ਹੈਂ ਔਰ ਤੁਮਾਰੇ ਭੀ ਫੇਰੇ ਹੀ ਹੁਏ ਹੈਂ । ਫਿਰ ਹ-

ਮਾਰੇ ਬਾਸਤੇ ਆਜ ਕੌਨਸੀ ਨਵੀਨ ਗੁਰੂ ਆਗਜਾਂ ਕੀ ਪੋਥੀ ਨਿਕਲ ਆਈ ਇਤਯਾਦੀ ਉੱਦਾ ਨੇ ਸਿਕਨ ਜੁੱਬਾਬ ਦੀਏ ॥ ਮਿਤ੍ਰੋ ਟਿੱਕਾ ਸਾਹਿਬ ਉਸ ਬਕਤ ੨੦ ਬਰਸ ਕੇ ਪੂਰੇ ਬਿਦਵਾਨ ਔਰ ਗੁਰੂ ਘਰਕੇ ਇਤੀ-ਹਾਸੋਂ ਕੋ ਜਾਨਨੇ ਵਾਲੇ ਥੇ ਅਪਨੀ ਸਾਦੀ ਪੁਰਾਚੀਨ ਮਰਯਾਦਾ ਸੇ ਕਰਵਾਈ ਤੋ ਫਿਰ ਅਪਨੀ ਹਮਸੀਰਾ ਕੀ ਸਾਦੀ ਸੇ ਕਹੋਂ ਕਰ ਨਰਾਜ ਹੋ ਸਕਤੇ ਥੇ।

ਸ੍ਰੀ ਟਿੱਕਾ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕਾ ਸਾਦੀ ਮੇਂ ਸ਼ਾਮਿਲ ਨਾ ਹੋਨੇ ਕਾ ਕਾਰਣ ਔਰ ਹੀ ਥਾਂ ਰਿਯਾਸਤੋਂ ਮੇਂ ਹ-ਜ਼ਾਰੋਂ ਮਾਮਲੇ ਹੋਤੇ ਹੈਂ ਫਿਰ ਕਿਸੀ ਮੌਕੇ ਪਰ ਲਿ-ਖੇਂਗੇ ਯਦੀ ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪ ਕੇ ਕਥਨ ਅਨੁ-ਸਾਰ ਟਿੱਕਾ ਜੀ ਬਿਵਾਹ ਸੇ ਨਾਰਾਜ਼ ਹੋ ਕਰ ਚਲੇ-ਗਏ ਤੋ ਕੁਛ ਪਿਤਾਜੀਸੇ ਝਗੜਾ ਹੂਆ ਹੋਗਾ ਜੋ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਜੀਕੀ ਆਗਯਾ ਅਨੁਸਾਰ ਪਾਪ ਹੈ ॥ ਯਥਾ ॥ ਸਾਰੰਗ ਮ ੦ ੪ ਸਬਦ ੭ ਤੁਕ ੧ ਕਾਹੇ ਪੂਤ ਝਗਰਤ ਹਉ ਸੰਗਿ ਬਾਪ ॥ ਜਿਨ ਕੇ ਜਣੇ ਬਡੀਰੇ ਤੁਮ ਹਉ ਤਿਨ ਸਿਉ ਝਗਰਤ ਪਾਪ ।

ਮਿਤ੍ਰੋ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਹਜ਼ੂਰ ਟਿੱਕਾ ਸਾਹਿਬ ਬੜੇ ਦਾਨਾ ਹੈ

ਉਨ ਪਰ ਪਿਤਾ ਸੇ ਝਗਰਨ ਕਾ ਕਾਲਾ ਦਾਗ ਨਾ ਲਗਾਓ।

ਪਲੀਡਰ—ਜਦੀ ਕੋਈ ਮਨੁਖਜ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸੇ ਸਿੱਧ ਕਰਦੇ ਕਿ ਸਿਖ ਕੀ ਲੜਕੀ ਮੋਨੇ ਕੋ ਦੇਨੀ ਦਰੁਸਤ ਹੈ ਤੋ ਮੈਂ ਉਸ ਕੋ ਹਜਾਰ ਰੁਪਯਾ ਦੂੰਗਾ।

ਉਤਰ—ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਪ੍ਰਥਮ ਆਪ ਕੋਈ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਕਾ ਪ੍ਰਮਾਣ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕੇ ੧ ਜਿਸ ਸੇ ਸਿਖ ਕੀ ਲੜਕੀ ਮੋਨੇ ਕੋ ਦੇਨੀ ਪਾਪ ਹੈ ॥ ਦੂਸਰੇ॥ ਮੋਨਾ ਅਰਥਾਤ ਕੇਸ ਰਹਿਤ ਹੋਨੇ ਮੇਂ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਕੋਈ ਮੁਮਾਨਯਤ ਨਹੀ ॥ ਯਥਾ ॥।

(੧) ਆਦ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਸਲੋਕ ੨੫ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਮਹੱਲਾ ੫ ਭਾਵੇ ਲਾਂਬੇ ਕੇਸ ਕਰ ਭਾਵੇ ਘਰਿਰ ਮੁੜਾਇ।

(੨) ਆਦ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਬੀੜਭਾਈ ਬੰਨੋਂ- ਰਾਗ ਰਾਮਕਲੀ ਮ ੦ ੫ ਛੰਦ ਸਬਦ ੫ ਤੁਕ ੩।

ਭਦੱਣ ਉਨੇਤ ਕਰਾਯਾ ਗੁਰ ਗਿਆਨ ਜਪਾਈ।

(੩) ਸਿਖੋਂ ਕੇ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਗ੍ਰੰਥ ਸੂਰਜ ਪਰਕਾਸ਼ ਰਾਸ ਏਕ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਜੀਨੇ ਅਪਨੇ

ਸਿਖ ਸਿਹੇ ਉਪਲ ਖਤ੍ਰੀ ਕੇ ਪੁਤ੍ਰ ਕਾ ਮੁੰਡਨ ਸੰਸਕਾਰ ਅਪਨੇ ਹੁਕਮ ਸੇ ਅਪਨੇ ਸਾਮਨੇ ਕਰਾਯਾ॥ ਯਥਾ॥ ਸਿਹਕੀ ਬੇਨਤੀ॥ ਮੋਹੇ ਪੁਤ੍ਰ ਕੋ ਮੁੰਡਨ ਅਹ ਹੈਂ ਬਡ-ਉਤਸਾਹ ਕਰਜੇ ਮਮ ਚਹ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਜੀ ਕੀ ਆਗਯਾ॥ ਹਮਾਰੇ ਆਗੇ ਮੁੰਡਨ ਕਰੋ ਉਰ ਕੇ ਭਰਮ ਸਰਬ ਪਰ ਹਰੋ ਇਤਯਾਦ ਪ੍ਰਸੰਗ ਰਾਸ ੧ ਮੇਂ।

(੪ ਸ੍ਰੀ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਜੀ ਕੀ ਵਾਰ ੩੬ ਪੌੜੀ ੧੪।

ਬਾਲ ਬਧਾਈਏ ਪਾਈਏ ਬੜ ਜਟਾ ਪਲਾਸੀ।

(੫) ਸ੍ਰੀ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਜੀ ਕੀ ਬਾਰ ੨੫ ਪੌੜੀ ੧੨।

ਦਾਹੜੀ ਮੁਛਾ ਕਰ ਮੂੰਹ ਕਾਲਾ।

(੬) ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅਕਾਲ ਉਸਤਤ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੨੫੧ ਦੇਸ ਫਿਰਿਓ ਕਰ ਭੇਸ ਤਪੋਧਨ ਕੇਸ ਧਰੇ ਨਾ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਪਿਆਰੇ॥ ਮਿਤ੍ਰ ਉਕਤ ਸਬਦ ਕੇ ਅਰਥੋਂ ਪਰ ਅਨੇਕ ਸਿੰਘ ਝਗੜਾ ਕੀਆ ਕਰਤੇ ਹੂਏ ਕਹਿਤੇ ਹੈਂ ਕਿ ਸਧਰੇ ਪਦਕਾ ਅਰਥ ਖ-ਜਾਨਾ ਔਰ ਧਨ ਹੈ ਸੋ ਉਨ ਕਾ ਝੂਠਾ ਹਠ ਹੈ ਕਯੋਂਕਿ ਸਧਰੇ ਪਦਕਾ ਅਰਥ ਖਜਾਨਾ ਔਰ ਧਨ ਕਿਸੀ ਕੋਸ਼

(ਲੁਗਾਤ) ਔਰ ਜਬਾਨ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ॥ ਮਿਤ੍ਰ ਸਧਰੇ ਪਾਠ ਜੁਦਾ ਕਰਨੇ ਸੇ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਕ-ਬਤਾ ਮੇਂ ਫਰਕ ਆਤਾ ਹੈ ॥ ਕੂੜ ਨਖੁਟੇ ਨਾਨਕਾ ਓੜਕ ਸਚ ਰਹੀ ॥ ਦੇਖੋ ਗੁਰਮਤ ਸੁਧਾਰਕ ਸਫਾ ੪੬ ਸਤ੍ਰ ੧੬ ਸੇ ੧੯ ਤਕ ॥ ਤਤਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੇ ਅਗ੍ਰ-ਣੀ ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹਸਿੰਘ ਜੀਨੇ ਸਧਰੇ (ਖਜ਼ਾਨੇ) ਸੇ ਬਰੁਧ ਕੇਸੋਂ ਪਰਹੀ ਕਰਬ ਕੀਆ ਹੈ ॥ ਯਥਾ ॥ ਸਧਰੇ ਪਦਕਾ ਅਰਥ ਜਮਾ ਕਰਨਾ ਔਰ ਸੁਧਾਰਨਾ (ਸਾਧਨਾ) ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਪਰਸੰਗ ਅਨੁਸਾਰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਸਿ-ਧਾਂਤ ਯਿਹਹੈ ਕਿ ਕੇਵਲ ॥ ਕੇਸ਼ ॥ ਧਾਰਨ ਕਰਨੇ ਮਾਤ੍ਰ ਸੇ ਹੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਨਹੀਂ ਹੋਤੀ ਇਤਯਾਦੀ ।

(੭) ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖਵਾਕ ਪਾਦਸਾਹੀ ੧੦ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਗ੍ਰੰਥ ਅਧਯਾਇ ੧੩ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧੯

ਮੂੜ੍ਹ ਭਾਰ ਤਿਨ ਸੀਸ ਮੁੰਡਾਏ ।

(੮) ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕ੍ਰਿਸਨਾ ਅਵਤਾਰ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖਵਾਕ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧੯੬੩ ਕੇਸ ਬਡੇ ਸਿਰ-ਕੇਸਬੁਰੇ ਅਰ ਦੇਹ ਮੇਂ ਰੋਮ ਬਡੇ ਜਿਨਕੇ ॥ ਮੁਖਤੇ ਨਰਹਾੜਨ ਕਾਪਤ ਹੈਂ ॥ ਪੁਨਹ ਦਾਂਤ ਸੇਂ ਦਤ ਬਡੇ

ਤਿਲਕੇ। ਸਰ ਸੈਨਤ ਕੀ ਅਖੀਆਂ ਜਿਨਕੀ ਸੀਸ ਕੇਸ ਫਿਰੇ ਬਲਕੈ ਇਨ ਕੇ। ਸਰਚਾਪ ਚੜਾਏ ਕੇ ਹੈਨਫਿਰੇ ਸਬ ਕਾਮ ਕਰੇ ਨਿਤ ਪਾਪਨ ਕੇ।

(੯) ਖਾਲਸਾ ਜੀਕਾ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਐਂਗਰੇਜੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਕਾ ਅਖਬਾਰ ਖਾਲਸਾ ਐਡਬੋਕੇਟ ੧੦ ਮਾਰਚ ਸਨ ੧੯੦੬ ਈ० ਮੇਂ ਪਾਂਚ ਕਕਾਰੋਂ ਕਾ ਖੰਡਨ ਕਰਤਾ ਹੂਆ ਖਾਸ ਕਰ ਕੇਸੋਂ ਕੀ ਜਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਸਮਝਤਾ ॥ ਯਥਾ ॥ ਦੇਖੋ ਗੁਰਮੁਖੀ ਮਾਸਕ ਪਤ੍ਰ ਖਾਲਸਾ ਸੇਵਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ॥ ਜਿਲਦ ੪ ਨੰਬਰ ੩ ਚੇਤ੍ਰ ਸੰ० ੪੩੭ ਨਾ० ਅਪ੍ਰੈਲ ਸਨ ੧੯੦੬ ਈ० ਸਫਾ ੧੫ ਕਾਲਮ ੨ ਸਤਰ ੨੭ ਉਕਤ ਐਡਬੋਕੇਟ ਕੇ ਲੇਖ ਕੀ ਨਕਲ ਛਪੀ ਹੈ ॥ ਯਥਾ ॥ ਕਿ ਅਸੀਂ ਫੇਰ ਉਸੇ ਹਨੇਰੀ ਖਡ ਵਿਚ ਤਿਲਕਕੇ ਡਿਗ ਰਹੇ ਹਾਂ ਜਿਸ ਵਿਚੋਂ ਸਾਡੇ ਮਹਾਨ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਂਨ ਨੇ ਸਾਨੂੰ ਕਢਿਆ ਸੀ। ਕਿ ਇਹ ਵਚਾਰ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਹਿਤ ਦੀ ਖਡ ਜਿਸਨੂੰ ਗੁਰੂਆਂ ਨੇ ਧਰਮ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਤ ਹੋਯਾ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਨਾ ਖਡਾਂ ਵਿਚੋਂ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸਾਡੀ ਬੇਸਮਝੀ ਨੇ ਸਾਨੂੰ ਰਸਤੇ

ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਕੁਰਸਤੇ ਪਾਯਾ ਹੈ ? ਕਿ ਮੈਂ ਇਸਗਲ- ਦੇ ਦਸਨ ਵਿਚ ਭੁਲ ਤਾਂ ਨਹੀ ਕਰ ਰਿਆ ਕਿ ਧਰਮ ਦੇ ਕੋਈ ਪ੍ਰਮਾਨੀਕ ਗਰੰਥ ਅਜੇਹੇ ਨਹੀਂ ਹਨ ਜਿਨ- ਹਾਂ ਵਿਚ ਰਹਿਤ ਦੀ ਬਾਬਤ ਕੋਈ ਪਕੇ ਹੁਕਮ ਹੋਨ ਸਾਨੂ ਅਜੇਹੇ ਕਮਜੋਰ ਅਤੇ ਬੇ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਹੋਨਾ ਚਾਹੀਏ ਕਿ ਕਿਸੇ ਰਸਮ ਦੇ ਕੇਵਲ ਪੁਰਾਨੀ ਹੋਨੇ ਦੇ ਕਾਰਨ ਉਸਦੇ ਮਗਰ ਲਗ ਪਈਏ ਇਸ ਦੀ ਵਡੀ- ਆਈ ਭਾਈ ਚਾਰਕ ਹੈ ਜੈਸਾ ਕਿ ਮੈਨੂ ਬਿਸਵਾਸ ਹੈ ਤਾਂ ਕੀ ਅਸੀ ਇਹ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸਚਾਈ ਪਰ ਨਹੀਂ ਹਾਂ ਕਿ ਅਜੇਹੇ ਕਿਸੇ (ਕਹਾਨੀਆਂ) ਸਾਡੇ ਦਿ- ਲਾਂਪਰ ਐਸਾ ਪਕਾ ਅਸਰ ਕਾਇਮ ਨਹੀਂ ਰਖ ਸਕਦੇ ਕਿ ਜੋ ਹਿਲ ਹੀ ਨਾ ਸਕੇਂ ਸਿਯਾਨੇ ਲੋਗ ਸੈਮਤੀ ਰਖਦੇ ਹਨ ਕਿ ਰਹਿਤ ਭਾਵੇ ਕਿਸੇ ਮਜਬ ਦੀਆਂ ਹੋਨ ਸੋ ਕਿਸੇ ਸਤਕਾਰ ਦੇ ਯੋਗਯ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀਆਂ। ਅਜ ਕਲ ਸਾਡੇ ਲੰਮੇ ਦਾਹੜੇ ਅਤੇ ਲੰਮੇ ਕੇਸ ਸਿਖੀ ਦੇ ਚਿਹਨ ਹਨ ਪਰੰਤੂ ਸਿਖਾਂ ਦੀ ਅਸਲੀ ਰੂਹ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਵਿਚ ਇਹ ਚਿਨਹ ਤੁਛ ਹਨ ਅਸੀ ਉਸ ਆਦਮੀ ਨੂ ਕਜੋਂ ਬੁਰਾ ਕੈਂਹਦੇ ਹਾਂ ਜੋ ਸਫਾਈ ਅਤੇ ਅਰਾਮਦੀ ਖਾਤਰ

ਅਪਨੇ ਕੇਸ਼ਾਂ ਨੂ ਦੂਰ ਕਰ ਦੇਵੇ ਅਜੇਹੀ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਜਦ ਕਿ ਉਸ ਆਦਮੀ ਦਾ ਕੋਈ ਖਯਾਲ ਨਹੀਂ ਕੀ-ਤਾ ਜਾਂਦਾ ਜੋ ਅਸੂਲਾਂ ਨੂ ਤਾਂ ਧਾਰਨ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ਪਰੰਤੂ ਬਾਹਰਦੀ ਰਹਿਤ ਵਿਚ ਪੱਕਾ ਹੈ।

ਲਾਹੌਰ ੧੯ ਫਰਬਰੀ ਸਨ ੧੯੦੬

ਈ੦ ਆਪਦਾ ਬੀ੦ ਐਚ

ਦੇਖੋ ਉਕਤ ਅਖਬਾਰ ਖਾਲਸਾ ਸੇਵਕ ਸਫਾ ੧੬ ਕਾਲਮ ੨ ਸਤਰ ੧੩ ਸੇ ੩੦ ਤਕ। ਹੁਨ ਅਸੀ ਖਾਲਸਾ ਐਡਵੋਕੇਟ ਸੇ ਔਰ ਲਾਇਕ ਐਡੀਟਰ ਨੂ ਪੂਛਨੇ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਸਾ ਪੰਥਕ ਅਖਬਾਰ ਵਿਚ ਅਜੇਹੀ ਬੇਹੂਦਾ ਅਤੇ ਸਿਖਾਂ ਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਤੋਲ ਦੇਨ ਵਾਲੀ ਚਿਠੀ ਕਯੋਂ ਛਾਪੀ ਕਯੋਂ ਨਾ ਇਸ ਨੂ ਤੀਲੀ (ਦੀਏ ਸਲਾਈ) ਲਾਕੇ ਫੂਕ ਦਿਤਾ ਯਾ ਪੜ੍ਹਕੇ ਰਦੀ ਦੀ ਟੋਕਰੀ ਵਿਚ ਸਿਰ ਦਿਤਾ ਜੇਕਰ ਜਰੂਰੀ ਛਾਪਨੀ ਸੀ ਤਾਂ ਇਸ ਚਿਠੀ ਦੇ ਹੇਠਾਂ ਆਪਨਾ ਨੋਟ ਕਯੋਂ ਨਾ ਦਿ-ਤਾ ਜੇ ਕਰ ਕਹੋ ਭੁਲੇਖੇ ਨਾਲ ਛਪ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਨੋਟ ਯਾਦ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਏਹ ਗਲਤ ਹੈ ਕਯੋਂ ਜੋ ਇਹ ਚਿਠੀ ੧੯ ਫਰਬਰੀ ਦੀ ਆਈ ਹੋਈ ੧੦ ਮਾ-

ਰਥ ਨੂ ਛਾਪੀ ਗਈ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਕਾਹਲ ਵਿਚ ਛਾਪੀ ਵੀ ਨਹੀਂ ਮਾਲੂਮ ਹੁੰਦੀ ਇਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਅਸੀ ਪਕੀ ਖਬਰ ਸੁਨ ਚੁਕੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਚਿਠੀ ਪਰ ਬਰਾਬਰ ਤੀਨ ਹਫਤੇ ਵਿਚਾਰ ਹੁੰਦੀ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਫੇਰ ਛਾਪੀ ਗਈ ਹੈ ॥

ਕਯੋਂ 'ਪਲੀ ਛੂਸਾਹਿਬ ਅਬਭੀ ਮੋਨੋਂ ਕੇ ਲਿਏ ਬਯਾ ਬੀ ਰੁਕਾਵਟ ਹੋ ਸਕਤੀ ਹੈ ਜਬ ਕਿ ਆਪ ਕੇ ਪਰਮਾ ਨੀਕ ਲੇਖੋਂ ਸੇ ਕੇਸ ਕਟਾਨੇਕੀ ਕੋਈ ਮੁਮਾਨੀਯਤ ਨਹੀਂ।

ਤਿਸਰੇ ਸਿਖ ਕੀ ਲੜਕੀ ਮੋਨੇ ਕੋ ਬਯਾਹ ਦੇਨੀ ਗੁਰੂ ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸੇ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਜਰੂ-ਰੀ ਹੈ ਕਿ ਜਿਸ ਰੀਤੀ ਸੇ ਮੋਨੇਓਂ ਕੇ ਬਿਵਾਹ ਹੋਤਾ ਹੈ ਉਸੀ ਰੀਤਿ ਕੋ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਸ੍ਰੀਕਾਰ ਕਰ ਰੂਪਕ ਅਲੰਕਾਰ ਕੇ ਜਰੀਏ ਗਯਾਨ ਮੇਂ ਕਥਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਯਥਾ ॥ ਦੇਖੋ ਆਦ ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਰਾਗ ਸੂਹੀ ਮਹ-ਲਾ ੪ ਛੰਦ ਸਬਦ ੧ ਤੁਕ ੪ ਆਯਾ ਲਗਨ ਗਨਾ-ਯਾ ਹਿਰਦੇ ਧਨਓ ਮਾਹੀਆ ਬਲ ਰਾਮਜੀ ਓੁ ਪੰਡਿਤੁ ਪਾਂਧੇ ਆਨ ਪਤੀ ਬਿਵਾਹ ਚਾਯਾ ਬਲ ਰਾਮ ਜੀਉ ।

ਮਿਤਰੋ ਉਕਤ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਬਚਨ ਸੇ ਮੋਨੇਓਂ ਕੀ

ਸਦ੍ਰਿਸ਼ ਸਹਾਂ ਸੁਧਾਨਾ ਔਰ ਪੰਡਿਤ ਪਾਂਧੋਂ ਸੇ ਬਿਵਾਹ ਕਰਵਾਨੇ ਕਾ ਸਪਸਟ ਹੁਕਮ ਹੈ ਆਦ ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਰਾਗ ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੪ ਸਬਦ ੨ ਤੁਕ ੧ ॥

ਹਰਿ ਪਹਿਲੜੀ ਲਾਂਵ ਪਰ ਵਿਰਤੀ ਕਰਮ ਦ੍ਰਿੜਾ-ਇਆ ਬਲਰਾਮਜੀਉ । ਬਾਣੀ ਬ੍ਰਹਮਾ † ਵੇਦ ਧਰਮ ਦ੍ਰਿੜਹੁ ਪਾਪ ਤਜਾਇਆ ਬਲਿ ਰਾਮ ਜੀਉ ॥ ਮਿਤ੍ਰੋ ਉਕਤ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਬਚਨ ਸੇ ਮੋਨੇਓਂ ਕੇ ਸਦ੍ਰਿਸ ਬ੍ਰਹਮਾ ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀ ਵੇਦ ਕੋ ਹੀ ਧਰਮ ਸਮਝ ਉਸ ਪਰ

---

† ਜੋ ਵੇਦ ਪਦ ਕਾ ਅਰਥ ਗਜਾਨ ਕਰਤੇ ਹੈ ਸੋ ਮਹਾਨ ਧੋਖਾ ਦੇਤੇ ਹੈਂ ਕਯੋਂਕਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ ਵੇਦ ਪੁਸਤਕੋਂ ਕੇ ਹੀ ਨਾਮ ਕਥਨ ਕਿਏ ਹੈਂ ॥ ਯਥਾ ਦੇਖੋ ਮਾਰੂ ਸੋਹਿਲੇ ਮ: ੧ ਸਬਦ ੧੭ ਤੁਕ ੯ ।

ਸਾਮ ਵੇਦ ਰਿਗੁ ਜੁਜਰ ਅਥਰਵਣਸ੍ਰੀਮੁਖ ਵਾਕ ਹੈਂ । ਦ੍ਰਿੜ ਹੋਨੇ ਕੇ ਲੀਏ ਸਪਸਟ ਹੁਕਮ ਹੈ ਜਿਸ ਬਾਨੀ ਸੇ ਬਿਵਾਹ ਮੇਂ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ (ਤਤ ਖਾਲਸਾ) ਲਾਂਮਾਂ ਕਰਾਤ ਹੈਂ ਆਦ ਗਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਆਸਾ ਬਾਣੀ ਸ੍ਰੀ ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਸਬਦ ੨੪ ਮਹਾਲਾ ੫ ॥ ਤਨਰੈਣੀਮਨ ਪੁਨਰਪਿ ਕਰਿਹਉ ਪਾਟਉ ਤਤਬਰਾਤੀ ॥ ਰਾਮ ਗਛੇ

ਸਿਉ ਭਾਬ ਰਿਲੇਹਉ ਆਤਮ ਤਿਹ ਰੰਗਰਾਤੀ ॥ ੧ ॥
ਗਾਉ ਗਾਉਰੀ ਦੁਲਹਨੀ ਮੰਗਲ ਚਾਰਾ ਮੇਰੇ ਗ੍ਰਿਹ ਆਏ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਭਤਾਰਾ ॥ ੧ ॥
ਰਹਾਉ ॥ ਨਾਭਕ ਮਲਮਹਿ ਬੇਦੀ ਰਚਿਲੈ ਬ੍ਰਹਮ ਗਜਾਨ ਉਚਾਰਾ ॥ ਰਾਮ ਰਾਇ ਸੋ ਦੂਲਹੁ ਪਾਯੋ ਅਸ ਬਡ ਭਾਗ ਹਮਾਰਾ । ੨ ॥ ਸੁਰ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਕੌਤਕ ਆਏ ਕੋਟ ਤੇਤੀ ਸਹੁਜਾਨਾ ॥ ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮੋਹਿ ਬਿਆਹ ਚਲੇ ਹੈਂ ਪੁਰਖ ਏਕ ਭਗਵਾਨਾ ॥ ੩ ॥
ਮਿਤਰੋ ਸੋਨਿਓਂ ਕੇ ਬਿਵਾਹ ਕੀ ਸਮਗ੍ਰ ਰੀਤਿ ਕਾ ਰੂਪ ਕਾ ਅਲੰਕਾਰ ਸੇ ਸਪਸਟ ਹੁਕਮ ਹੈ ॥

ਦਸਮ ਪਾਤਸਾਹੀ ਕਾ ਬਿਵਾਹ ਹਿੰਦੂ ਬੈਦਕ ਰੀਤੀ ਅਨੁਸਾਨ ਸਾਰ ਹੁਕਮ ਹੈ ਦੇ ਸਾਖੀ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਜੀ ਕੀ ਵਾਰ ੧੧ ਟੀਕਾ ਭਾਈ ਮਨੀਸਿੰਘ ਜੋ ਦਿਵਾਨ ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਆਫਤਾਬ ਪੰਜਾਬ ਪ੍ਰੇਸ ਲਾਹੋਰ ਸੰਮਤ ੧੯੫੦ਮੇਂ ਛਪੀਕੇ ਪਤ੍ਰੇ ੧੭੩ ਸਤਰ ੩ ਸੇ ੭ ॥ ਬਾਜ ਬੁਲਅਰਜ਼ਾ ਪ੍ਰਸਨ ੧ ਕੇ ਉਤਰ ਬਿਵਾਹੰ ਕੇ ਲਿਏ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਜੀ ਕਾ ਹੁਕਮ ॥ ਯਥਾ ॥ ਤੇ ਹੁਣ ਸਿਖ ਕੈਹਦੇ ਹੈਨ ਤੁਸੀ ਅਨੰਦ ਪੜ ਕੇ ਵਿਵਾਹ

ਕਰੋ ॥ ਬ੍ਰਾਮਣਾ ਨੂੰ ਨਾ ਬੁਲਾਵਹੁ ॥ ਸਰੋਪਾਤਸ਼ਾ ਸਾ-
ਹਿਬ ਜਿਵੇ ਹੁਕਮ ਹੋਵੇ ॥ ਦਸਖਤ ਖਾਸ ਹੋਏ ਪਹਿਲੇ
ਅਨੰਤਪਕ੍ਰਨਾ ਅਰਦਾਸ ਕਰਨੀ ॥ ਪਿਛੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾ ਬੀ
ਹਮੇਸ਼ਾ ਜਿਸਤਰਾਂ ਪੜ੍ਹਾਵਦੇ ਆਏਹੋ ਤਿਵੇ ਪੜ੍ਹਾਵਣਾ
ਮੈਸਾ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ।

ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਅਬ ਹਜ਼ਰ ਰੁਪੈਯਾ ਕਿਸੀ
ਧਰਮ ਕਾਰਜ ਪਰ ਲਗਾਦੀਜੀਏ ਤਾਕਿ ਈਸ੍ਵਰ ਕੇ
ਸਨਮੁਖ ਆਪ ਸੱਚੇ ਰਹੇਂ ਨਹੀਂ ਤੋ ਮਿਤ੍ਰ ਪੰਜਾਬੀ
ਕਹਾਵਤ ਸੈਦ ਸੱਚੀ ॥ ਹਾਥੀ ਕੇ ਦਾਂਤ ਖਾਨੇ ਕੇ ਔਰ
ਦਿਖਾਨੇ ਕੇ ਔਰ ਹਆ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ॥ ਇਤੀ ਪੋਲ।

ਮਿਤ੍ਰੋ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਮੇਂ ਸਬ ਜਗੇ ਖਾਸਕਰ
ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਕੌਨ ਐਸਾ ਮਨੁਖ ਹੈ ਜੋ ਸ੍ਰੀ ੧੦੯ ਹਜ਼ੂਰ
ਮਹਾਰਾਨਾ ਧੋਲਪੁਰ ਔਰ ਸਪੁਤ੍ਰੀ ਸ੍ਰੀ ੧੦੯ ਹਜ਼ੂਰ
ਮਹਾਰਾਜਾ ਨਾਭਾ ਕੇ ਬਿਵਾਹ ਸੇ ਪ੍ਰਸੰਨ ਨਾ ਹੁਏ ਹੋਂ
ਦੂਲਹਾ ਕੀ ਮੋਹਨੀ ਮੂਰਤੀ ਦੇਖ ਕਰ ਪਰਸੰਸਾ ਨਾ ਕੀ
ਹੋ ਧਰੀਤੂ ਕੁਛਕ ਭਤਖਾਲਸਾ ਲੋਗ ਨਰਾਜ ਔਰ ਦੁਖੀ
ਹੋਕਰ ਘਰਕੀ ਅੰਧੇਰੀ ਕੋਠੜੀਮੇਂ ਹੀ ਰਹੇ ਜੋ ਬ੍ਰਾਤਕੀ
ਧੂਮਧਾਮ ਮਾਨੋ ਸੂਰਜਕੀ ਰੌਸ਼ਨੀਕੇ ਚਮਕਾਰੇ ਸੇ ਬਚ ਰਹੇ।

ਬਿਵਾਹ ਪੂਰਣ ਹਿੰਦੂ ਵੈਦਕ ਰੀਤੀ ਸੇ ਹੂਆ ਜੈਸੇ ਦਸੋਂ ਗੁਰੂ ਔਰ ਰਾਜਾ ਮਹਾਂਰਾਜਾਓਂ ਕੇ ਹੋਤੇ ਰਹੇ ਹੈਂ। ਦਾਜ ਦਹੇਜ ਕੀ ਬਾਬਤ ਕਯਾ ਕਹਿਨਾ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨਾਭਾ ਹਰੀਸਚੰਦ੍ਰ ਕੀ ਸਦ੍ਰਿਸ ਦਾਨੀ ਮਸਹੂਰ ਹੈਂ ਯਹਾਂਤਕ ਸ੍ਰੀ ੧੦੯ ਮਹਾਂਰਾਨਾ ਧੌਲਪੁਰ ਕੇ ਸਾਥ ਭਗਵਾਨ ਨਰਸਿੰਘ ਜੀ ਕੀ ਮੂਰਤੀ ਥੀ। ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਨਾਭਾ ਨੇ ਉਸ ਕਾ ਬਿਵਾਹ ਤੁਲਸੀ ਜੀ ਸੇ ਕਰ ਬੇਸੁਮਾਰ (ਅਤੁਟ) ਪੁਨਯ ਹਾਸਲ ਕੀਯਾ। ਮਿਤ੍ਰੋ ਜਿਸ ਭਗਵਾਨ ਨਰਸਿੰਘ ਜੀ ਕੀ ਮਹਾਤਮਤਾ ਕੇ ਸ਼ਬਦ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਮੇਂ ਅਨੇਕ ਹੈਂ ਅਸਥਾਲੀ ਪੁਲਾਕ ਨਯਾਇ ਸੇ ਏਕ ਸਬਦ ਦਿਖਲਾਤਾ ਹੂੰ।

ਯਥਾ॥ ਰਾਗ ਭੈਰੋਂ ਮਹਲਾ ੩ ਸਬਦ ੨੦ ॥ ਮੇਰੀ ਪਟੀਆ ਲਿਖਹੁ ਹਰ ਗੋਬਿੰਦ ਗੋਪਾਲਾ ਦੂਜੇ ਭਾਇ ਫਾਥੇ ਜਮ ਜਾਲਾ॥ ਸਤ ਗੁਰੂ ਕਰੇ ਪ੍ਰਿਤਿਪਾਲਾ ਹਰਿ ਸੁਖਦਾਤਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲਾ॥ ੧। ਗੁਰੁਉਪਦੇਸਿ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਹਰਿ ਉਚਰੈ ਸਾਸਨਾਤੇ ਬਾਲਕ ਗਮਨ ਕਰੇ ॥ ੧ ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਾਤਾ ਉਪਦੇਸਹ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਪਜਾਰੇ ਪੁਤਰ ਰਾਮ ਨਾਮ ਛੋਡਹੁ ਜੀਆ ਲੇਹੁ ਉਬਾਰੇ ॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦ

ਕਹਿ ਸੁਨਹੁ ਮੇਰੀ ਮਾਏ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਾ ਛੋਡਾ ਗੁਰ ਦਿਆ ਬੁਝਾਈ ॥ ੨ ॥ ਸੰਡੇ ਮਰਕਾ ਸਭ ਜਾਏ ਪੁਕਾਰੇ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਆਪ ਬਿਗੜਿਆ ਸਭ ਚਾਟੜੇ ਬਿਗਾੜੇ ਦੁਸਟ ਸਭਾ ਮੇਂ ਮੰਤ੍ਰ ਪਕਾਇਆ । ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਕਾ ਰਾ-ਖਾ ਹੋਇ ਰਘੁਰਾਇਆ ॥ ੩ ॥ ਹਾਥ ਖੜਗ ਕਰਧਾਯਾ ਅਤਿ ਅਹੰਕਾਰੀ ॥ ਹਰਿ ਤੇਰਾ ਕਹਾਂ ਤੁਝੇ ਲਏ ਉਬਾਰੀ ॥ ਖਿਨ ਮੇਂ ਭਯਾਨਕ ਰੂਪ ਨਿਕਸਿਆ ਥੰਮ ਉਪਾੜ ॥ ਹਰਨਾਕਸ ਨਖ ਬਿਦਾਰਿਆ ॥ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਲਿਆ ਉਬਾਰ ॥ ਸੰਤਜਨਾ ਕੇ ਹਰਿਜੀਉ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰੇ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਕੇ ਇੱਕੀ ਕੁਲ ਉਧਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦ ਹਉਮੈਂ ਬਿਖ ਮਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮ ਨਿਸਤਾਰੇ ੫

(ਪਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਸੇ ਪ੍ਰਸਨ)

ਸ੍ਰੀਮਾਨ ਬਾਬੂ ਬਚਨਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਪਲੀਡਰ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਹਜ਼ੂਰ ਮਹਾਂਰਾਜਾ ਸਾਹਿਬ ਬਹਾਦਰ ਨਾਭਾ ਜੀ ਕੀ ਸਪੁਤ੍ਰੀ ਕਾ ਬਿਵਾਹ ਆਪਕੀ ਮਨਮਤੀ ਅਰਜੀ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਨਹੀਂ ਹੂਆ ਕਿਉਂ ਜੋ ਤਤਖਾਲਸਾ ਬਿਵਾਹ ਪਰ ਰੀਤੀ ਕਰਤੇ ਹੈਂ

ਉਸ ਕੋ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸੇ ਸਿਧ ਕਰਦੇਨੇ ਪਰ ਮੈਂ ਖ਼ਰਚ ਰਖਕਰ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਛੋਡਕਰ ਤਤਖਾਲਸਾ ਬ-ਨਨੇ ਕੇ ਲੀਏ ਤਿਆਰ ਹੂੰ।

ਜੋ ਤਤਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੀ ਰੀਤੀ ਕਾ ਨਮੂਨਾ ਯਿਹ ਹੈ॥ ਦੇਖੋ ਗੁਰਮੁਖੀ ਅਖਬਾਰ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜਿਲਦ ੫ ਨੰਬਰ ੪੪ ਅਕਤੂਬਰ ੫ ਸਨ ੧੯੦੪ ਕੇ ਛਪੇ ਕਾ ਸਫ਼ਾ ੧੧ ਕਾਲਮ ੩ ਸਤਰ ੧੪ ਸੇ ੨੯ ਤਕ॥ ਵਰਲਈ ਕੰਨਜਾਦੀ ਲੋੜ॥ ਮੈਂ ਜਾ-ਤਦਾ ਖਤ੍ਰੀ (ਚੱਡਹ) ਹਾਂ ਉਮਰ ੨੧-੨੨ ਸਾਲ ਲਾਇਲ ਪੁਰਦੇ ਇਲਾਕੇ ਵਿਚ ਪਟਵਾਰੀ ਹਾਂ। ਦੋ ਸਾਲ ਤੋਂ ਮੇਰੀ ਸਿੰਘਣੀ ਚਲਾਣਾ ਕਰ ਗਈ ਹੈ। ਹੁਣ ਮੈਂ ਸ਼ਾਦੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ। ਕਿਸੇ ਸਿੱਖ ਦੀ ਲੜ-ਕੀ ਉਮਰ ੧੬-੨੦ ਸਾਲ ਦੇ ਦਰਮਿਯਾਨ ਗੁਰਮੁਖੀ ਜਾਣਦੀ ਹੋਵੇ ਬਿਧਵਾ ਹੋਵੇ ਯਾ ਕੰਵਾਰੀ ਜਾਤਪਾਤ ਦਾ ਕੋਈ ਲਿਹਾਜ ਨਹੀਂ ਸ਼ਾਦੀ ਗੁਰਮਤ ਅਨੁਸਾਰ ਹੋਵੇਗੀ। ਲਿਖਤ ਪੜਤ ਇਸ ਪਤੇ ਤੇ ਹੋਵੇ। ਸ: ਸ: ਮਾਰਫਤ ਦਫਤਰ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ॥ ਲੋੜ ਹੈ॥ ਭਾਈ ਗੋਕਲ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪੁਤ੍ਰ ਭਾਈ

ਨਿਹਾਲਸਿੰਘ ਜੀ ਅਪਨਾ ਵਿਵਾਹ ਪੂਰਨ ਗੁਰਮਤ ਅਨੁਸਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇਹਨ। ਉਮਰ ੧੯-੨੦ ਬ-ਰਸ ਕਹੁਟੇ ਵਿੱਚ ਦੁਕਾਨ ਹੈ ਨਿਰਬਾਹ ਅੱਛਾ ਹੈ ਅਨੰਦ ਜਾਤਪਾਤਦੇਬੰਧਨਤੋਂ ਛੁਟਕੇ ਹੋਵੇਗਾ ਲੜਕੀ ਗੁਰਮੁਖੀ ਪੜ੍ਹੀ ਹੋਈ ਗੁਰਮਤ ਤੋਂ ਵਾਕਫ ਤੇ ਧਰਮਵਿੱਚ ਤ੍ਯਾਰ ਬਰ ਤ੍ਯਾਰ ਹੋਵੇ ਹੋਰ ਪਤ੍ਰ ਵਿਵਹਾਰ ਇਸ ਪਤੇ ਪਰ ਹੋਵੇ ਭਾਈ ਆਸਾਸਿੰਘ ਕਹੁਟਾ ਜਿਲਾ ਰਾਵਲਪਿੰਡੀ

ਬੇਨਤੀ-ਮਿਤ੍ਰ ਅਪਨੀ ਉਕਤ ਮਨਮੁਖ ਮਰ-ਯਾਦਾ ਕੇ ਅਨੇਕ ਲੇਖੋਂ ਕੋ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸੇ ਸਿਧ੍ਯ ਸਿਧੱ ਕਰੋ ਤਾ ਕਿ ਏਕ ਤਿਜਾਰ ਬਰਤ-ਜਾਰ ਉਪਦੇਸ਼ਕ ਆਪਕੀ ਆਗਿਯਾ ਮੇਂ ਚਲਨੇ ਕੇ ਲੀਯੇ ਤਯਾਰ ਹੈ ॥

(ਏਕ ਧਰਮ ਰਖ੍ਯਕ ਮਹਾਤਮਾ ਜੀ ਕਾ ਉਪਦੇਸ਼)।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵਜੀ ਕੀ ਸੰਤਾਨ ਬੇਦੀ ਬੰਸ ਅਵਤੰਸ ਆਨਰੇਬਲ ਬਾਬਾ ਖੇਮ ਸਿੰਘ ਜੀ-ਸੀ

ਆਈ–ਈ। ਬੰਗਬਾਸੀ ਅਖਬਾਰ ਮੈਂ ਸ਼ਾਂਤੀ ਫੈਲਾ-
ਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਉਪਦੇਸ਼ ਔਰ ਸਿਖਯਾ ਪਰਕਾਸ਼ਿਤ
ਕਰਤੇ ਹੈਂ ॥ ਯਥਾ ॥ ਹਿੰਦੂਓ ਤੁਮ ਜਿਨ ਸਿਖੋਂ
ਕੋ ਤੁਮ ਸੱਚਾ ਸਿਖ ਸਮਜਤੇ ਹੋ ਬੇਸ਼ੂਠੇ ਬਾਬੂ ਸਿਖਹੈਂ
ਵੇ ਨਈ ਰੋਸ਼ਨੀਕੇ ਚਮਗਾਦੜ ਹੈਂ ਵੈਸੇ ਲੋਗ ਸਭ
ਸਮਾਜੋਂ ਮੇਂ ਪੈਦਾ ਹੋਗਏਹੈਂ ਸਿਖੋਂ ਮੇਹੀ ਕਯੋਂ ਨਹੋਂ
ਉਨਕੀ ਬਾਤ ਕਾ ਬੁਰਾ ਨਾ ਮਾਨਨਾ। ਸੱਚਾ ਸਿਖ ਔਰ
ਹਿੰਦੂ ਦੋਨੋ ਏਕ ਪਰਾਨ ਔਰ ਦੋ ਦੇਹ ਹੈਂ ਅਬ ਸੇ ਹਿੰਦੂ
ਹ੍ਰਿਦਾ ਬੇਧਨੇਵਾਲੇ ਸਿਖੋਂ ਕੋ ਜਾਤੀਯ ਦੰਡ ਦਿਆ ਜਾਵੇਗਾ
੩੦ ਜਨਵਰੀ ਸ ੧੯੬੬ ਈ੦ ਬੰਗਬਾਸੀ ਅਖਬਾਰ

ਅੰਤਮ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ॥ ਮਿਤ੍ਰ ਉੱਤਰ ਮੇਂ ਦੇਰੀਕਾ
ਕਾਰਣ ਯਿਹ ਹੈ ਕਿ ਮੈਂ ਧਰਮ ਉਪਦੇਸ਼ ਕੇ ਲੀਏ
ਦੇਸ ਦਿਸਾਂਤਰੋਂ ਮੇਂ ਭ੍ਰਮਣ ਅਰਥ ਪਰਦੇਸ ਮੇਂ ਥਾ
ਇਸਤਹਾਰ ਅੰਗਰੇਜੀ ਜੋ ਮੁਝੇ ਤਰਜਮਾ ਹੋਕਰ ਅਬੀ
ਮਿਲਾ ਹੈ ਸੋ ਸੈਤੜਾ ਸਭ ਕੇ ਨਿਰਣੇ ਲੀਏ ਏਕ ਲਾ-
ਇਕ ਵਕੀਲ ਕੋ ਦਿਖਾਕਰ ਉੱਤਰ ਛਪਵਾਦੀਯਾ ਹੈ।

ਆਪਕਾ ਸ਼ੁਭ ਚਿੰਤਕ ਸੁਖਲਾਲ ਉਪਦੇਸ਼ਕ
ਰੋਪੜ ਨਿਵਾਸੀ।

ਮਹਾ ਮਨਹਿ ਚੰ ਸ੍ਰੀਭਗੌਤੀ ਮਨਾਈ॥ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀਕਾ ਬਚਨ ੧

ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਘਰ ਮੇਂ ਦੁਰਗਾ ਪੂਜਨ

ਨੰਬਰ ੨

ਅਰਥਾਤ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੋ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੀ
ਨਿੰਦਾ ਰੂਪੀ ਪਾਪ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖਵਾਕੋਂ ਦਵਾਰਾ
ਬਚਾਯਾ ਹੈ

ਪੰ: ਸੁਖ ਲਾਲ ਉਪਦੇਸ਼ਕ

ਸ੍ਰੀਭਾਰਤਧਰਮ ਮਹਾਮੰਡਲ ਰੋਪੜਨਿਵਾਸੀਨੇ
ਰਚਕੇ ਛਪਵਾਯਾ
ਸੰਨ ੧੯੦੯

ਭਾਈ ਬੁਧ ਸਿੰਘ ਮੈਨੇਜਰ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਾਲ
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੁਮਤ ਪ੍ਰੇਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿਚ ਛਪਾ

ਪੈਹਲੀ ਵਾਰ ੧੦੦੦ ਮੁਲ ਦੋ ਆਨੇ

ਭੂਮਿਕਾ

ਪਿਆਰੇ ਧਰਮਾਤਮਾ ਪੁਰਖੋ ਕਲੀਕਾਲ ਕਰਾਲਕੇ ਕੌਤਕੀ ਪੁਰਖੋਂ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਮਿਥਿਆ ਨਿੰਦਾ ਕਰ ਤੀਨ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਾ ਪਾਪ ਸਿਰ ਲੀਆ ਹੈ "ਪਾਪ ਬੁਰਾ ਪਾਪੀ ਕਉ ਪਿਆਰਾ" ਪ੍ਰਥਮ ਨਿੰਦਾ ਕਾ ਪਾਪ। ਦੂਸਰੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਰੂਪ ਗੁਰੂ ਬਾਣੀਕੋ ਅਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਕੈਹ ਕਰ ਨਿਰਾਦਰੀ ਕਰਨੇ ਕਾ ਪਾਪ। ਤੀਸਰੇ ਅਨੇਕ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੇ ਭਗਤੋਂ ਕਾ ਮਨ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਸੁਨਾਕਰ ਦੁਖਤ ਕਰਨੇ ਕਾ ਪਾਪ। ਜੋ ਨਵੀਨਸਿੰਘ ਅਪਨੇ ਲੇਖੋਂ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੋ ਈਰਾਨਕੇ ਰਾਜਾ ਕੀ ਇਸਤ੍ਰੀ ਔਰ ਉਸਕਾ ਨਾਕ ਸਿਖੋਂਨੇ ਕਾਟਦੀਆ ਇਤਜਾਦਿ ਅਸਤਜ ਲੇਖ ਲਿਖੇ ਹੈਂ। ਮਿਤਰੋ। ਐਸੇ ਉਕਤ ਮਿਥਿਆ ਲੇਖਕ ਅਗਿਆਨਤਾਸੇ ਨਰਕਾਗਾਰਮੇਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਨੇ ਵਾਲੇ ਭਾਈਓਂ ਕੋ ਪਾਪ ਸੇ ਬਚਾਨੇ ਲੀਏ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੋ ਕੱਤਕ ਸੰ: ੧੯੫੨ ਮੇਂ ਐਂਗਲੋ ਸੈਂਸਕ੍ਰਿਤਪ੍ਰੇਸ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਛਪਾ ਔਰ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਪੁਸਤਕ ਸੌ ਸਾਖੀ ਜੋ ਵਜੀਰਹਿੰਦ ਪ੍ਰੇਸ ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ ਮੇ ਛਪੀ ਔਰ ਭਗਤ ਰਤਨਾਵਲੀ ਸਾਖੀ ਭਾਈਮਨੀਸਿੰਘਜੀ

ਜੋ ਸਾਖੀ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਵਾਰ ੧੧ ਟਿਕਾ ਕੇ ਨਾਮਸੇ ਆਫ ਤਾਬ ਪ੍ਰੇਸ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਛਪੀ ਔਰ ਗੁਰਬਿਲਾਸ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਜੋ ਸੰਮਤ ੧੯੫੨ ਮੇਂ ਐਂਗਲੋ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰੇਸ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਛਪਾ (ਬਾਕੀ ਪੁਸਤਕ) ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੀਰਥ ਸੰਗ੍ਰਹ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਲੀਲਾ। ਰਿਪੋਟ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸੁਧਾਈ ਛਕੇ ਛੰਦ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਆਦਿ ਕੇ ਛਪਨੇ ਕਾ ਪਤਾ ਸਾਥ ਹੀ ਲਿਖ ਦੀਆ ਹੈ। ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਇਤਯਾਦਿ ਪੁਸਤਕੋਂ ਕੇ ੨੨ ਪ੍ਰਬਲ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਦ੍ਵਾਰਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਘਰਮੇਂ ਦੁਰਗਾ ਪੂਜਨ ਸਿਧ ਕਰ ਦਿਖਾਈ ਹੈ। ਜਿਸਕਾ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਕੁਛ ਉਤਰ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕੇਂਗੇ ॥

ਸੰ: ੧੯੬੫ ਬਿ:
ਫਗਣ ੨੦

ਹ: ਸੁਖਲਾਲ ਉਪਦੇਸ਼ਕ
ਸ੍ਰੀ ਭਾਰਤ ਧਰਮ ਮਹਾਂ ਮੰਡਲ
ਰੋਪੜ ਨਿਵਾਸੀ

੧ ੴ ਸਤਿਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਦਸਮਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤ "ਅਕਾਲ ਉਸਤਤ"

(੧) ਅਨਹਦ ਰੂਪ ਅਨਾਹਦ ਬਾਨੀ। ਚਰਨ ਸਰਨ ਜਿਹ ਬਸਤ ਭਵਾਨੀ (ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਅਕਾਲ ਉਸਤਤ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੫) ॥

ਨੋਟ--ਮਿਤ੍ਰੋ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਸੇ ਈਸ਼੍ਵਰ ਸਾਕਾਰ ਸਿਧ ਹੋਤਾ ਹੈ ਜੋ ਭਲੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਅਰਥ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨੇਪਰ ਬਿਸ਼ਨੂੰ ਲੱਛਮੀ (ਦੁਰਗਾ ਸ਼ਕਤੀ) ਕੀ ਉਸਤਤ ਹੈ ॥

(੨) ਕਹੂੰ ਦੇਵਬਾਨੀ ਕਹੂੰ ਸਾਰਦਾਭਵਾਨੀ ਕਹੂੰਮੰਗਲਾ ਮਿੜਾਨੀ ਕਹੂੰ ਸਿਆਮ ਕਹੂੰ ਸੇਤ ਹੋ (ਸ੍ਰੀਗੁਰੂਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅ: ਉ: ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧੪) ॥

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰੋ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੇ ਭਿੰਨ ੨ ਰੂਪ ਸਾਰਦਾ ਭਵਾਨੀ ਆਦਿਕ ਪ੍ਰਥਮ ਕਾਲਸੇ ਹੀ ਚਲੇ ਆਏ ਹੈਂ ॥

(੩) ਕਹੂੰ ਜ੍ਵਾਲਾ ਸੀ ਜਗਤ ਹੋ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅ: ਉ: ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੨੦) ॥

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰੋ ਮਾਯਾ ਸਬਲ ਦੀਪਕ ਜ੍ਵਾਲਾ (ਲਾਟਾਂ ਵਾਲੀ) ਕੀ ਜੋਤ ਸੇ ਜਗਮਗਾ ਰਹਾ ਹੈ ॥

(੪) ਕਈ ਦੇਵੀ ਆਦਿ ਕੁਮਾਰ ' ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅਕਾਲ ਉਸਤਤ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੨੮) ॥

ਨੋਟ--ਮਿਤਰੋ ! ਅਨੇਕ ਦੇਵੀ ਆਦਿ ਕੁਆਰੀ (ਜਤੇਂਦ੍ਰੀ) ਹੈਂ ॥

(੫) ਕਹੂੰ ਅੱਛਰਾ ਪੱਛਰਾ ਮੱਛਰਾ ਹੋ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅਕਾਲ ਉਸਤਤ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧੧੯) ॥

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰੋ ਅੱਛਰਾ ਆਦਿਕ ਸ੍ਰੀ ਦੇਵੀਜੀਕੇ ਨਾਮ ਹੈਂ ਜਿਨਕੋਗੁਰੂ੧੦ਜੀਅਕਾਲਪੁਰਖਸਾਕਾਰਰੂਪਮਾਨਤੇਹੈਂ॥

(੬) ਦੁਰਜਨ ਦਲਦੰਡਣ ਅਸੁਰ ਬਿਹੰਡਣ ਦੁਸਟ ਨਿਕੰਦਨ ਆਦਿ ਬ੍ਰਿਤੇ । ਚਛਰਾ ਸੁਰ ਮਾਰਨ ਪਤਿਤਉਧਾਰਨ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰਨ ਗੂੜ੍ਹਗਤੇ। ਅਛੈ ਅਖੰਡੇ ਤੇਜਪ੍ਰਚੰਡੇ ਖੰਡ ਉਦੰਡੇ ਅਲਖਮਤੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰਮਰਦਨ ਰੰਮਕ ਪਰਦਨ ਛੱਤ੍ਰ ਛਿਤੇ॥ ੨੧੧ ॥ ਆਸੁਰੀ ਬਿਹੰਡਣ ਦੁਸਟ ਨਿਕੰਦਨ ਪੁਸਟ ਉਦੰਡਣ ਰੂਪ ਅਤੇ । ਚੰਡਾਸੁਰ ਚੰਡਣ ਮੁੰਡ ਬਿਹੰਡਣ ਧੂਮ੍ਰ ਬਿਧੁੰਸਣ ਮਹਖਮਥੇ। ਦਾਨਵ ਪ੍ਰਹਾਰਨ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰਣ ਅਧਮਉਧਾਰਣ ਉਰਧਅਧੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਰੰਮਕ ਪਰਦਨ ਆਦਿ ਬ੍ਰਿਤੇ ॥ ੨੧੨ ॥ ਡਾਵਰੂ ਡਵੰਕੇ ਬਬਰ ਬਵੰਕੇ ਭੁਜਾਫਰੰਕੇ ਤੇਜ ਬਰੰ। ਲੰਕੁੜੀਆ ਫਾਧੇ ਆਯੁਧ ਬਾਧੇ ਸੈਨ ਬਿਮਰ.

ਦਨ ਕਾਲ ਅਸੁਰੰ। ਅਸਟਾਯੁਧ ਚਮਕੈ ਭੂਖਣ ਦਮਕੈ ਅਤਸਿਤ ਝਮਕੈ ਫੁੰਕ ਫਨੰ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਰੰਮਕ ਪਰਦਨ ਦੈਤ ਜਿਣੰ॥ ੨੧੩ ॥ ਚੰਡਾਸੁਰ ਚੰਡਣ ਮੁੰਡ ਬਿਮੁੰਡਣ ਖੰਡ ਅਖੰਡਣ ਖੂਨ ਖਿਤੇ। ਦਾਮਣੀ ਦਮੰਕਣ ਧੁਜਾ ਫਰੰਕਣ ਫਣੀਅਰ ਫੁਕਾਰਣ ਜੋਧ ਜਿਤੇ। ਸਰਧਾਰ ਬਿਬਰਖਣ ਦੁਸਟ ਪ੍ਰਕਰਖਣ ਪੁਸਟ ਪ੍ਰਹਰਖਣ ਦੁਸਟ ਮਥੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਭੂਮਅਕਾਸ ਤਲ ਉਰਧ ਅਤੇ॥ ੨੧੪ ॥ ਦਾਮਨੀ ਪ੍ਰਹਾਸਨ ਸੁਛਬਿ ਨਿਵਾਸਨ ਸ੍ਰਿਸਟ ਪ੍ਰਕਾਸਨ ਗੂੜਗਤੇ। ਰਕਤਾਸੁਰ ਆਚਨ ਜੁੱਧ ਪ੍ਰਮਾਚਨ ਨਿਰਭੈ ਨਿਰਾਚਨ ਧਰਮ ਬ੍ਰਿਤੇ। ਸ੍ਰੋਣਤ ਅਚਿੰਤੀ ਅਨਲ ਬਿਵੰਤੀ ਜੋਗ ਜਯੰਤੀ ਖੜਗ ਧਰੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਪਾਪਬਿਨਾਸਨ ਧਰਮ ਕਰੇ॥ ੨੧੫ ॥ ਅਘ ਓਘ ਨਿਵਾਰਨ ਦੁਸਟ ਪ੍ਰਜਾਰਨ ਸ੍ਰਿਸਟ ਉਬਾਰਨ ਸੁੱਧਮਤੇ। ਫਣੀਅਰ ਫੁੰਕਾਰਣ ਬਾਘ ਬਕਾਰਣ ਸਸਤ੍ਰ ਪ੍ਰਹਾਰਣ ਸਾਧਮਤੇ। ਸੈਹਥੀ ਸਨਾਹਣ ਅਸਟ ਪ੍ਰਬਾਹਣ ਬੋਲ ਨਿਬਾਹਨ ਤੇਜ ਅਤੁਲੰ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਭੂਮਿ ਅਕਾਸ ਪਤਾਲ ਜਲੰ॥੨੧੬॥ ਚਾਚਰ ਚਮਕਾਰਨ ਚਿੱਛੁਰ ਹਾਰਨ ਧੂਮ੍ਰ ਧੁੰਕਾਰਨ ਦ੍ਰਪ ਮਥੇ। ਦਾੜਵੀ ਪ੍ਰਦੰਤੇ ਜੋਗ ਜਯੰਤੇ ਮਨੁਜ ਮਥੰਤੇ ਗੂੜਕਥੇ। ਕਰਮ ਪ੍ਰਣਾਸਨ ਚੰਦ ਪ੍ਰਕਾਸਨ ਸੂਰਜਪ੍ਰਤੇਜਨ ਅਸਟ ਭੁਜੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਭ੍ਰਮਬਿਨਾਸਨ ਧਰਮ ਧੁਜੇ

॥ ੨੧੭ ॥ ਘੁਘਰੂ ਘਮੰਕਣ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਝਮੰਕਣ ਫਣੀਅਰ ਫੁੰਕਾਰਣ ਧਰਮਧੁਜੇ। ਅਸ਼ਟਾਟ ਪ੍ਰਹਾਸਨ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟ ਨਿਵਾਸਨ ਦੁਸ਼ਟ ਪ੍ਰਣਾਸਨ ਚਕ੍ਰਗਤੇ। ਕੇਸਰੀ ਪ੍ਰਵਾਹੇ ਸੁੱਧ ਸਨਾਹੇ ਅਗਮ ਅਥਾਹੇ ਏਕ ਬ੍ਰਿਤੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਆਦਕੁਮਾਰ ਅਗਾਧ ਬ੍ਰਿਤੇ। ੨੧੮ ॥ ਸੁਰਨਰ ਮੁਨਿ ਬੰਦਨ ਦੁਸ਼ਟ ਨਿਕੰਦਨ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਬਿਨਾਸਨ ਮ੍ਰਿਤ ਮਥੇ। ਕਾਵਰੂ ਕੁਮਾਰੇ ਅਧਮ ਉਧਾਰੇ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੇ ਆਦਿ ਕਥੇ। ਕਿੰਕਣੀ ਪ੍ਰਸੋਹਣ ਸੁਰਨਰ ਮੋਹਣ ਸਿੰਘਾਰੋਹਣ ਬਿਤਲ ਤਲੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਸਬ ਠੌਰ ਨਿਵਾਸਣ ਬਾਇ ਪਤਾਲ ਅਕਾਸ਼ ਅਨਲੇ ॥੨੧੯॥ ਸੰਕਟੀ ਨਿਵਾਰਨ ਅਧਮ ਉਧਾਰਨ ਤੇਜ ਪ੍ਰਕਰਖਣ ਤੁੰਦ ਤਬੇ। ਦੁਖ ਦੋਖ ਦਹੰਤੀ ਜ੍ਵਾਲ ਜਯੰਤੀ ਆਦਿ ਅਨਾਦਿ ਅਗਾਧ ਅਛੇ। ਸੁਧਤਾ ਸਮਰਪਣ ਤਰਕ ਬਿਤਰਕਣ ਤਪਤ ਪ੍ਰਤਾਪਣ ਜਪਤ ਜਿਵੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਸਭ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਪ੍ਰਕਰਖਣ ਆਦਿ ਅਨੀਲ ਅਗਾਧ ਅਭੇ ॥ ੨੨੦ ॥ ਚੰਚਲਾ ਚਖੰਗੀ ਅਲਕ ਭੁਜੰਗੀ ਤੁੰਦ ਤੁਰੰਗਣ ਤਿੱਛਸਰੇ। ਕਰਕਸਾ ਕੁਠਾਰੇ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੇ ਅਧਮ ਉਧਾਰੇ ਤੂਰ ਭੁਜੇ। ਦਾਮਨੀ ਦਮੰਕੇ ਕੇਹਰ ਲੰਕੇ ਆਦਿ ਅਤੰਕੇ ਕ੍ਰੂਰ ਕਥੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਰਕਤਾਸੁਰ ਖੰਡਣ ਸੁੰਭ ਚਕਰਦਨ ਸੁੰਭ ਮਥੇ ॥੨੨੧॥ ਬਾਰਜ ਬਿਲੋਚਨ ਬ੍ਰਿਤ ਬਿਮੋਚਨ ਸੋਚ ਬਿਸੋਚਨ ਕਉਚ ਕਸੇ। ਦਾਮਨੀ ਪ੍ਰਹਾਸੇ ਸੁਕ ਸਰਨਾਸੇ ਸੁਬ੍ਰਿਤ ਸੁਬਾਸੇ ਦੁਸ਼ਟ ਗ੍ਰਸੇ। ਚੰਚਲਾ

੍ਰਸੰਗੀ ਬੇਦ ਪ੍ਰਸੰਗੀ ਤੇਜ ਤੁਰੰਗੀ ਖੰਡ ਸੁਰੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਆਦਿ ਅਨਾਦਿ ਅਗਾਧ ਉਰਧੰ ॥ ੨੨੨ ॥ ਘੰਟਕਾ ਬਿਰਾਜੈ ਰੁਣ ਝੁਣ ਬਾਜੈ ਭ੍ਰਮਭੇ ਭਾਜੈ ਨਿਰਤ ਸੁਰੰ। ਕੋਕਲ ਸੁਨਲਾਜੈ ਕਿਲ ਬਿਖ ਭਾਜੈ ਸੁਖ ਉਪਜਾਜੈ ਮੱਧ ਉਰੰ। ਦੁਰਜਨ ਦਲ ਦੱਝੈ ਮਨ ਤਨ ਰਿੱਝੈ ਸਭੈ ਭੱਜੈ ਰੋਹ ਰਣੰ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਚੰਡ ਚਕਰਦਨ ਆਦਿ ਗੁਰੰ ॥ ੨੨੩ ॥ ਚਾਚਰੀ ਪ੍ਰਜੋਧਨ ਦੁਸ਼ਟ ਬਿਰੋਧਨ ਰੋਸ ਅਰੋਧਨ ਕ੍ਰੂਰ ਬ੍ਰਿਤੇ। ਧੁਮ੍ਰਾਛ ਬਿਧੁੰਸਨ ਪ੍ਰਲੈ ਪ੍ਰਜੁੰਸਨ ਜਗ ਬਿਧੁੰਸਨ ਸੁੱਧਮਤੇ। ਜਾਲੰਪਾ ਜਯੰਤੀ ਸੱਤ੍ਰੁ ਮਥੰਤੀ ਦੁਸ਼ਟ ਪ੍ਰਦਾਹਨ ਗਾੜ੍ਹਮਤੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਅਗਾਧਗਤੇ ॥੨੨੪॥ ਖਤ੍ਰੀਆਨਿ ਖਤੰਗੀ ਅਭੈ ਅਭੰਗੀ ਆਦਿ ਅਨੰਗੀ ਅਗਾਧ ਗਤੇ। ਬ੍ਰਿੜਲਾਛ ਬਿਹੰਡਣ ਚਛਰਾ ਦੰਡਣ ਤੇਜ ਪ੍ਰਚੰਡਣ ਆਦਿ ਬ੍ਰਿਤੇ। ਸੁਰਨਰ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰਣ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਦੁਸ਼ਟ ਨਿਵਾਰਣ ਦੋਖਹਰੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਬਿਸੁ ਬਿਧੁੰਸਨ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟਿ ਕਰੇ ॥ ੨੨੫॥ ਦਾਮਨੀ ਪ੍ਰਕਾਸੇ ਉਨਤਨ ਨਾਸੇ ਜੋਤਿ ਪ੍ਰਕਾਸੇ ਅਤੁਲ ਬਲੇ। ਦਾਮਨੀ ਪ੍ਰਕਰਖਣ ਸਰਵਰ ਵਰਖਨ ਦੁਸ਼ਟ ਪ੍ਰਧਰਖਣ ਬ੍ਰਿਤਲ ਥਲੇ। ਅਸ਼ਟਾਇਣ ਬਾਹਣ ਬੋਲ ਨਿਬਾਹਣ ਸੰਤ ਪਨਾਹਣ ਗੂੜ੍ਹ ਗਤੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਆਦਿ ਅਨਾਦਿ ਅਗਾਧ ਬ੍ਰਿਤੇ ॥ ੨੨੬ ॥ ਦੁਖ ਦੋਖ ਪ੍ਰਭੱਛਣ ਸੇ

ਬਕ ਰੱਛਣ ਸੰਤ ਪ੍ਰਤੱਛਣ ਸੁਧਸਰੇ ।ਸਾਰੰਗਸਨਾਹੇ ਦੁਸ਼ਟ ਪ੍ਰਦਾਹੇ ਅਰਿਦਲਗਾਹੇ ਦੋਖ ਹਰੇ। ਗੰਜਨ ਗੁਮਾਨੇ ਅਤੁਲ ਪ੍ਰਵਾਨੇ ਸੰਤ ਜ਼ਮਾਨੇ ਆਦਿ ਅੰਤੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਸਾਧ ਪ੍ਰਦੱਛਣ ਦੁਸ਼ਟ ਹਤੇ ॥੨੨੭॥ ਕਾਰਣ ਕਰੀਲੀ ਗਰਬ ਗਹੀਲੀ ਜੋਤ ਜਤੀਲੀ ਤੁੰਦ ਮਤੇ। ਅਸ਼ਟਾ ਯੁੱਧ ਚਮਕਣ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਝਮਕਣ ਦਾਮਨਦਮਕਣਆਦਿ ਬ੍ਰਿਤੇ। ਡੁਕ ਡੁਕੀ ਦਮੰਕੈ ਬਾਘ ਬਬੰਕੈ ਭੁਜਾ ਫਰੰਕੈ ਸੁਧ ਗਤੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਅਨਾਦ ਮਤੇ॥੨੨੯। ਚਛਰਾਸੁਰ ਮਾਰਣ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰਨ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਣ ਏਕ ਭਟੇ। ਪਾਪਾਨ ਬਿਹੰਡਣ ਦੁਸ਼ਟ ਪ੍ਰਚੰਡਣ ਖੰਡ ਅਖੰਡਣ ਕਾਲਕਟੇ। ਚੰਦ੍ਰਾਨਨਚਾਰੇ ਨਰਕ ਨਿਵਾਰੇ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰੇ ਮੁੰਡ ਮਥੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਧੂਮ੍ਰ ਬਿਧੁੰਸਨ ਆਦਿ ਕਥੇ ॥੨੨੯॥ ਰਕਤਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਚੰਡ ਚਕਰਦਨ ਦਾਨਵ ਅਰਦਨ ਬਿੜਾਲ ਬਧੇ। ਸਰਧਾਰ ਬਿਬਰਖਣ ਦੁਰਜਨ ਧਰਖਣ ਅਤੁਲ ਅਮਰਖਣ ਧਰਮ ਧੁਜੇ। ਧੂਮ੍ਰਾਛ ਬਿਧੁੰਸਨ ਸ੍ਰੋਣਤ ਚੂਸਨ ਸੁੰਭ ਨਪਾਤਿ ਨਿਸੁੰਭਮਥੇ। ਜੈ ਜੈ ਹੋਸੀ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਮਰਦਨ ਆਦਿ ਅਨੀਲ ਅਗਾਧ ਕਥੇ ॥ ੨੩੦ ॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅ: ਉ: ਕ: ਅੰਕ੨੧੧ਸੇ੨੩੦ਤਕ)

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰੋ ਇਨ ਪ੍ਰਬਲ ੨੦ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਦੁਆਰਾ ਗੁਰੂ ੧੦ਜੀਕਾ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੋ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਮਾਨਨਾ

ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ਕੇ ਸਰਬ ਸ਼ਕਤੀਮਾਨ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨਿਰਾ ਕਾਰ ਰੂਪ ਬਿਆਪਕ ਸਾਕਾਰ ਰੂਪ ਅਸ਼ਟ ਭੁਜੀ ਸਿੰਘ ਕੀ ਸਵਾਰੀ ਲੈਕਰ੍ਹੀਯੇ ਵਾਰੀ ਜਿਸਨੇ ਚੰਡ ਔਰ ਮੰਡ ਮੇਹ-ਖਾਸੁਰ ਧੂਮਰ ਰਕਤਾਸੁਰ ਆਦਿਕ ਅਨੇਕ ਦੈਤੋਂ ਕੋ ਨਸ਼ਟ ਕੀਆ ਜਿਸਕੀ ਭਗਤੀ ਕਰਨੇ ਪਰ ਹਰੇਕ ਪੁਰਖ ਕੀ ਸਦ ਗਤੀ ਹੋ ਸਕਤੀ ਹੈ ਇਤਿਆਦਿਕ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਮੇਂ ਗੁਰੂ ਦਸਵੇਂ ਜੀ ਕਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਹੈ॥

ਬਚਿੱਤ੍ਰ ਨਾਟਿਕ

(੭)ਨਮਸਕਾਰਸ੍ਰੀਖੜਗਕੋ ਕਰੋ ਸੁ ਹਿਤਚਿਤਲਾਇ। ਪੂਰਨ ਕਰੋ ਗ੍ਰੰਥ ਇਹੁ ਤੁਮ ਮੁਹਿ ਕਰਹੁ ਸਹਾਇ॥੧॥ ਖਗ ਖੰਡ ਬਿਹੰਡੰ ਖਲ ਦਲ ਖੰਡੰ ਅਤਿ ਰਣ ਮੰਡੰ ਬਰ ਬੰਡੰ। ਭੁਜ ਦੰਡ ਅਖੰਡੰ ਤੇਜ ਪ੍ਰਚੰਡੰ ਜੋਤਿ ਅਮੰਡੰ ਭਾਨ ਪ੍ਰਭੰ। ਸੁਖ ਸੰਤਾ ਕਰਣੰ ਦੁਰਮਤਿ ਦਰਣੰ ਕਿਲ ਬਿਖ ਹਰਣੰ ਅਸ ਸਰਣੰ। ਜੈ ਜੈ ਜਗ ਕਾਰਣ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟ ਉਬਾਰਣ ਮਮ ਪ੍ਰਤਿ ਪਾਰਣ ਜੈ ਤੇਗੰ॥੨॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਿਕ ਗ੍ਰੰਥ ਅਧਜਾਏ੧ ਕਬਿਤਾਅੰਕ੧ ਔਰ ੨ ਸ੍ਰੀ ਕਾਲ ਕੀ ਉਸਤਤ)॥

ਨੋਟ–ਮਿਤ੍ਰੋ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਪੂਜਨ ਖੜਗ (ਤਲਵਾਰ) ਪਰ ਹੀ ਸਦੈਵ ਸੇ ਹੋਤੀ ਹੈ ਇਸ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਪੂਜਨ ਸਮਝੋ ਤੋ ਠੀਕ ਹੈ

ਨਹੀਂ ਨਵੀਨਸਿੰਘ ਜਬ ਲੋਹੇ ਸੇ ਬਨੀ ਤਲਵਾਰ (ਜਬ) ਕੇ ਪੂਜਕ ਸਿਧ ਹੋਜਾਇੰਗੇ ॥

(੮)ਮਧੁ ਕੀਟਭੰ ਰਾਛਸੇਸੇ ਬਲੀਅੰ। ਸਮੇਂ ਆਪਨੀ ਕਾਲ ਤੇਊ ਦਲੀਅੰ। ਭਏ ਸੁੰਭ ਨੈਸੁੰਭ ਸ੍ਰੋਣਤ ਬੀਜੰ। ਤੇਊ ਕਾਲ ਕੀਨੇ ਪੁਰੇਜੇ ਪੁਰੇਜੰ। (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਅ: ੧ ਕ: ੬੪)

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰ ਮਧੁ ਕੈਟਭ ਔਰ ਸੁੰਭ ਨਿਸੁੰਭ ਸ੍ਰੋਣਤ ਆਦਿ ਰਾਖਸ਼ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਨੇ ਹੀ ਮਾਰੇ ਹੈਂ ਜਿਸਕੋ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਾਲ ਰੂਪ (ਕੇਵਲ ਕਾਲ ਹੀ ਕਰਤਾਰ) ਸ੍ਰੀ ਦੇਵੀ ਜੀ ਕੋ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ॥

(੯)ਸੁੰਭ ਨਿਸੁੰਭ ਸੇ ਕੋਟ ਨਿਸਾਚਰ ਜਾਹਿ ਛਿਨੇਕ ਬਿਖੇ ਹਨਡਾਰੇ। ਧੂਮਰ ਲੋਚਨ ਚੰਡ ਔ ਮੁੰਡ ਸੇ ਮਾਹਿਖ ਸੇ ਪਲ ਬੀਚ ਨਿਵਾਰੇ। ਚਾਮਰ ਸੇ ਰਣ ਚਿਛਰਸੇ ਰਕਤਿਛਰ ਸੇ ਝਟ ਦੇ ਝਝਕਾਰੇ। ਐਸੋ ਸੁ ਸਾਹਿਬ ਪਾਇ ਕਹਾ ਪਰਵਾਹ ਰਹੀ ਇਹ ਦਾਸ ਤਿਹਾਰੇ ॥ ੯੩ ॥ ਮੁੰਡਹੁ ਸੇ ਮਧੁ ਕੀਟਭ ਸੇ ਮੁਰਸੇ ਅਘਸੇ ਜਿਨ ਕੋਟ ਦਲੇ ਹੈਂ। ਓਟ ਕਰੀ ਕਬਹੂੰ ਨ ਜਿਨੈ ਰਣ ਚੋਟ ਪਰੀ ਪਗ ਦ੍ਵੈ ਨ ਟਲੇ ਹੈਂ। ਸਿੰਧ ਬਿਖੇ ਜਿਨ ਬੂਡੇ ਨਿਸਾਚਰ ਪਾਵਕ ਬਾਣ ਬਹੇ ਨ ਜਲੇ ਹੈਂ। ਤੇ ਅਸਿ ਤੋਰ ਬਿਲੋਕ ਅਲੋਕ ਸੁ ਲਾਜ ਕੋ ਛਾਡਿਕੇ ਭਾਜਿ ਚਲੈ ਹੈਂ। (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੁਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥਸਾਹਿਬ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਿਕ ਅਧਯਾਇ ੧ ਕਵਿਤਾ ਅੰਕ ੯੩ ਸੇ ੯੪)

ਨੋਟ–ਮਿਤ੍ਰੋ ਉਕਤ ਪਰਮਾਣੋਂ ਸੇ ਸਾਫ਼ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਦਸਵੇਂ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ॥

(੧੦) ਗਜੇ ਗੌਣ ਕਾਲੀ। ਹਸੀ ਖਪ੍ਰਾਲੀ। ਜਗੈ ਗੌਣ ਦੇਵੀ। ਮਹਾਂ ਅੰਸ ਭੇਵੀ। (ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਅ ੩ ਕ: ਅੰਕ ੨੬ ਔਰ ੩੧)

ਨੋਟ–ਮਿਤ੍ਰੋ ਗੁਰੂ ਦਸਵੇਂ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੋ ਤ੍ਰੇਤਾ ਮੇਂ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਨੀ ਲਵੂ ਕੁਸ਼ੂ ਜੁਧ ਮੇਂ ਆਪਨੇ ਕੁਸ਼ੂ ਬੰਸ ਕੀ ਸਵੈਵ ਸੇ ਸਹਾਯਕ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ॥

(੧੧) ਅਬ ਮੈਂ ਅਪਨੀ ਕਥਾ ਬਖਾਨੋ। ਤਪ ਸਾਧਤ ਜਿਹ ਬਿਧ ਮੁਹਿ ਆਨੋ। ਹੇਮ ਕੁੰਟ ਪਰਬਤ ਹੈ ਜਹਾਂ। ਸਪਤ ਸ੍ਰਿੰਗ ਸੋਭਤ ਹੈ ਤਹਾਂ ॥ ੧ ॥ ਸਪਤ ਸ੍ਰਿੰਗ ਤਿਹਨਾਮ ਕਹਾਵਾ। ਪੰਡ ਰਾਜ ਜਹਿ ਜੋਗ ਕਮਾਵਾ। ਤਹਹਮ ਅਧਕ ਤਪਸਿਆ ਸਾਧੀ। ਮਹਾਂ ਕਾਲ ਕਾਲਕਾ ਅਰਾਧੀ ॥ ੨ ॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਅ: ੬ ਕਵਿਤਾ ਅੰਕ ੧ ਔਰ ੨)

ਨੋਟ–ਮਿਤ੍ਰੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਆਪਨੀ ਪੂਰਬ ਜਨਮ ਮੇਂ ਮਹਾਂਕਾਲ ਔਰ ਕਾਲਕਾ (ਦੁਰਗਾ) ਜੀ ਕੀ ਪੂਜਨ ਕਰਨਾ ਸਪਸ਼ਟ ਸ੍ਰੀਮੁਖ ਸੇ ਕਥਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ। ਜਿਸਕੋ ਗੁਰੂ ਮਤ ਕੇ ਵਿਦਵਾਨ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਕੋਸ਼ ਰਚਤਾ ਪੰਡਿਤ ਤਾਰਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਆਪਨੀ ਰਚਤ "ਗੁਰੂ ਤੀਰਥ

ਸੈਲ੍ਹ" ਜੋ ਸੰਮਤ ੧੯੪੧ ਕੈਂਪ ਅੰਬਾਲਾ ਵੈਂਪਲਪ੍ਰੇਸ ਮੇਂ ਛਪੀ ਕੇ ਸਫਾ੯੨ ਪਰ ਲਿਖਤੇ ਹੈਂ; ਯਥਾ—ਲੋਹਪਾਲ ਮੇਂ ਜਲ ਕਾ ਤਲਾਵ ਹੈ ਸੋ ਸਵਾ ਸੈ ਕਦਮ ਚੌੜਾ ਹੈ। ਆਧ ਕੋਸ ਪੱਕਿ ਕਾ ਲੰਬਾ ਹੈ। ਤਲਾਵ ਕੇ ਪਛਮ ਪਾਸੇ ਦੋ ਮੰਦਰ ਹੈਂ। ਏਕ ਮਹਾਂ ਕਾਲ ਕਾ ਦੂਸਰਾ ਮਹਾਂ ਕਾਲੀ ਕਾ। ਮਹਾਂਕਾਲ ਕਾ ਮੰਦਰ ਏਕ ਗਜ ਊਚਾ ਹੈ ਮਹਾਂ ਕਾਲੀ ਕਾ ਪੌਨਾ ਗਜ ਊਚਾ ਹੈ। ਮੂਰਤੀਆਂ ਦੋਨੋ ਮੇਂ ਧਾਤੂ ਕੀ ਹੈਂ। ਮੂਰਤੀ ਮਹਾਂਕਾਲੀ ਕੀ ਇਕ ਗਲਿਸਤ ਕੀ ਦੋ ਭੁਜ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਕਾਲੀ ਕੀ ਪੌਨ ਗਲਿਸਤ ਕੀ ਚਾਰ ਭੁਜ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਛੋਕ ਦੋਨੋ ਕੋ ਕੜਾਹ ਕਾ ਲਗਤਾ ਹੈ। ਇਤਯਾਦਿ॥

ਸਫਾ੯੭ ਸਤਰ੧੨ਸੇ ੨੨ਤਕ। ਮਹਾਂਮੰਦਰ ਪਰਬਤ ਕੇ ਸਿਖਰ ਪੇ ਲੋਹ ਪਾਲ ਤੀਰਥ ਹੈ ਇਸਕਾ ਚਿਤ੍ਰ ਭਾਵ ਨਕਸ਼ਾ ਯਾਕੇ ਆਗੇ ਸਮੀਪ ਹੀ ਲਿਖਾ ਹੈ ਤੀਰਥ ਯਾਤ੍ਰਾ ਕੇ ਪ੍ਰੇਮ ਵਾਲੇ ਪੁਰਖੋਂ ਨੇ ਪ੍ਰੇਮ ਸੇ ਦੇਖ ਲੇਨਾ ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਗੁਰੂ ਕਾ ਪਿਆਰਾ ਰਾਜਾ ਬਾਬੂ ਸਿਖ ਪਾਂਚ ਸਾਤ ਹਜਾਰ ਰੁਪਯਾ ਲਗਾਕਰ ਪੰਡਕੇਸਰ ਕੇ ਉਰਲੇ ਪੁਲ ਸੇ ਸੜਕ ਬਨਵਾਯ ਮਹਾਂਕਾਲ ਮਹਾਂਕਾਲੀ ਕੇ ਮੰਦਰੋਂ ਸਮੀਪ "ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੇ ਤਪਸੀ ਭੇਖ ਵਾਲਾ।" ਮੰਦਰ ਬਨਵਾਵੇ ਤਬ ਨਿਸਚੇ ਹੈ ਮਹਾਂਕਾਲ ਮਹਾਂਕਾਲੀ ਕੇ ਪੂਰੂ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੇ ਸਮੀਪ ਵਡੀ ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਠਾ ਪਾਵੇ॥ ਇਤਯਾਦਿ॥

ਔਰ ਐਸੇ ਹੀ ਗੁਰਮਤ ਕੇ ਅਨੇਕ ਵਿਦਵਾਨੋਂ ਕੀ ਰਾਏ

ਉਕਤ ਜੈਸੀ ਹੈ ਔਰ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖਵਾਕ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ੧੦ ਸ਼ਸਤ੍ਰਮਾਲਾ ਅਧਜਾਇ੧ਕਵਿਤਾ ਅੰਕ੫ਮੇਂ ਕਾਲ ਔਰ ਕਾਲੀਕੋ ਏਕ ਰੂਪ ਮਾਨਤੇਹੈਂ॥ ਯਥਾ-"ਕਾਲ ਤੂਹੀਂ ਕਾਲੀ ਤੂਹੀਂ"

(੧੨) ਸਰਬ ਕਾਲ ਹੈ ਪਿਤਾ ਅਪਾਰਾ। ਦੇਬਿਕਾਲ ਕਾ ਮਾਤ ਹਮਾਰਾ। (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਿਕ ਅ: ੧੪ ਕਵਿਤਾ ਅੰਕ ੫)

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰੋ ਗੁਰੂਦਸਮ ਜੀ ਸਰਬ ਕਾਲ ਕੋ ਪਿਤਾ ਔਰ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੋ ਮਾਤਾ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਸੇ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਮੂਰਖਤਾ ਸੇ ਨਿੰਦਾ ਕਰਤੇ ਹੈਂ॥

(੧੩) ਪ੍ਰਥਮੇ ਦੇਬਿ ਚਰਿਤ੍ਰਕੋ ਕਹਾ॥ ਪਹਿਲੇ ਚੰਡੀ ਚਰਿਤ੍ਰ ਬਨਾਯੋ। ਨਖ ਸਿਖ ਤੇ ਕ੍ਰਮ ਭਾਖ ਸੁਨਾਯੋ। ਛੋਰ ਕਥਾ ਤਬ ਪ੍ਰਥਮ ਸੁਨਾਈ। ਅਬ ਚਾਹਤ ਫਿਰ ਕਰੋ ਬਡਾ- ਈ॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਿਕ ਅ: ੧੪ ਕਵਿਤਾ ਅੰਕ ੧੦ ਔਰ ੧੧)॥

ਨੋਟ-ਮਿਤਰੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਆਪਨੇ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਜੀਵਨ ਚਰਿਤ੍ਰ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੇ ਚਰਿਤ੍ਰ (ਕਥਾਓਂ) ਕੋ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਸੇ ਬਨਾਈ ਕਥਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਤਰਜਮਾ ਕੇਹਨੇ ਵਾਲੇ ਸੱਚੇ ਕਿ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਸੱਚੇ? ਔਰ ਇਸ ਸਤਜ ਪ੍ਰਤਿਗਜਾ ਕੇ ਅਨੁਸਾਰ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ

ਕੀ ਤੀਨ ਪੁਸਤਕੋਂ ਦੁਵਾਰਾ ੪੫੦ ਭਿੰਨ ੨ ਪ੍ਰਕਾਰਕੇ ਛੰਦੋਂ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਔਰ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀ ਹੈ ਜੋ ਅਸਥਾਲੀਪੁਲਾਕ ਨਿਆਇ ਅਨੁਸਾਰ ਉਨ ਪੁਸਤਕੋਂ ਕੇ ਅੰਤ ਸੇ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰ ਦਿਖਲਾਤਾ ਹੂੰ ॥

ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ

ਚੰਡੀ ਚਰਿਤ੍ਰ ਉਕਤ ਬਿਲਾਸ ਕੇ ਅੰਤ ਮੇਂ

ਦੇਹਿ ਸਿਵਾ ਬਰ ਮੋਹਿ ਇਹੈ ਸੁਭ ਕਰਮਨ ਤੇ ਕਬਹੂੰ ਨ ਟਰੋਂ। ਨ ਡਰੋਂ ਅਰਿਸੋਂ ਜਬ ਜਾਇ ਲਰੋਂ ਨਿਸਚੈ ਕਰ ਅਪਨੀ ਜੀਤ ਕਰੋਂ। ਅਰ ਸਿਖ ਹੋ ਆਪਨੇ ਹੀ ਮਨ ਕੋ ਇਹ ਲਾਲਚ ਹਉ ਗੁਨ ਤੌ ਉਚਰੋਂ। ਜਬ ਆਵ ਕੀ ਅਉਧ ਨਿਦਾਨ ਬਨੈ ਅਤਹੀ ਰਨਮੈਂ ਤਬਜੂਝਮਰੋਂ॥੨੩੧

ਮਿਤਰੋ ਐਸੀ ਹੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਕੀ ਦਸਮ ਪਾਦਸ਼ਾਹੀ ਗ੍ਰੰਥ ਮੇਂ ਔਰ ਜਗਹ ਹੈ ਜਿਸ ਸੇ ਸਾਫ਼ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਏਗਾ ਕਿ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਸੇ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਕੀ ਹੈ ॥ ਯਥਾ:-

ਛਤ੍ਰੀਕੋ ਪੂਤ ਹੋਂ ਬਾਮਨ ਕੋ ਨਹੀਂ ਕੈ ਤਪ ਆਵਤ ਹੈਜੁ ਕਰੋ ॥ ਅਰ ਔਰ ਜੰਜਾਰ ਜਿਤੋ ਗ੍ਰਿਹ ਕੋ ਤੁਹਿ ਤਯਾਗ ਕਹਾ ਚਿਤ ਤਾਂ ਮੈਂ ਧਰੋਂ। ਅਬ ਰੀਝਕੇ ਦੇਹੁ ਵਹੈ ਹਮ ਕੋ ਜੋਊ ਹੋਂ ਬਿਨਤੀਕਰ ਜੋਰ ਕਰੋਂ। ਜਬ ਆਉਕੀ ਔਧ ਨਿਦਾਨ ਬਨੈ ਅਤ ਹੀ ਰਨ ਮੈਂ ਤਬ ਜੂਝ ਮਰੋਂ ॥

ਚੰਡਿ ਚਰਿਤ੍ਰ ਕਵਿਤਨ ਮੈਂ ਬਰਨਿਓ ਸਭ ਹੀ ਰਸ ਰੁੱਦ੍ਰਮਈ ਹੈ। ਏਕਤੇ ਏਕ ਰਸਾਲ ਭਇਓ ਨਖ ਤੇ ਸਿਖ ਲਉ ਉਪਮਾ ਸੁਨਈ ਹੈ। ਕਉਤਕ ਹੇਤ ਕਰੀ ਕਵਿ ਨੇ ਸਤਸੈਕੀ ਕਥਾ ਇਹ ਪੂਰੀ ਭਈ ਹੈ। ਜਾਹਿ ਨਮਿਤ ਪੜੈ ਸੁਨਿਹੈ ਨਰ ਸੋ ਨਿਸਚੈ ਕਰ ਤਾਹਿ ਦਈ ਹੈ ॥ ੨੩੨ ॥

ਮਿਤ੍ਰੋ! ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਚੰਡਿ (ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ) ਜੀ ਕਾ ਚਰਿਤ੍ਰ ਜੋ ਅਤੀ ਸ੍ਰੇਸ਼ਟ ਹੈ ਕਥਨ ਕਰਨਾ ਮਾਨਤੇਹੈਂ ਔਰ ਖਾਸਕਰ ਜੋ ਪ੍ਰਤਿਗਜਾ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਅਧਾਇ ੧੪ ਕ: ਅੰਕ ੧੧ ਮੇਂ (ਪੈਹਲੇ ਚੰਡੀ ਚਰਿਤ੍ਰ ਬਨਾਯੋ। ਨਖ ਸਿਖ ਤੇ ਕ੍ਰਮ ਭਾਖ ਸੁਨਾਯੋ) ਸੋਈ ਇਸ ਉਕਤਬਿਲਾਸਮੇਂ (ਨਖ ਤੇ ਸਿਖ ਲਉ ਉਪਮਾ ਸੁਨਈਹੈ) ਉਸਤਤੀ ਲਿਖੀ ਹੈ।

ਗ੍ਰੰਥ ਸਤਿਸਯਾ ਕੋ ਕਰਿਓ ਜਾਸਮ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥
ਜਿਹ ਨਮਿਤ ਕਵਿਨੇ ਕਹਿਓ ਸੁ ਦੇਹ ਚੰਡਕਾ ਸੋਇ ॥੨੩੩॥

ਮਿੱਤ੍ਰੋ ੧੦ ਗੁਰੂ ਜੀ ਇਸ ਗ੍ਰੰਥ ਕੋ ਸਤਸਯਾ ਅਰਥਾਤ ਨਿਸਚੇ ਸੱਚਾ ਜਿਸਕੇ ਬਰਾਬਰ ਦੂਸਰਾ ਸਚਾ ਨਹੀਂ ਐਸਿ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੀ ਉਸਤਤੀ ਕਰਤੇ ਹੁਏ ਕਵਿ ਰੂਪਸੇ ਪ੍ਰਾ- ਰਥਨਾ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਕਿਉਂ ਕਿ ਕਵਿ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕਗ੍ਰੰਥ ਅਧਜਾਇ ੭ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧ ਮੇਂ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਆਪਨੇ ਆਪਕੋ ਹੀ ਬਤਲਾਤੇ ਹੈਂ ॥ ਯਥਾ-

ਅਥ ਕਬਿ ਜਨਮ ਕਥਨੰ ॥ ਚੌਪਈ ॥ ਮੁਰਪਿਤ ਪੂਰਬ ਕਿਯਸਿ ਪਯਾਨਾ। ਭਾਂਤ ਭਾਂਤ ਕੇ ਤੀਰਥ ਨਾਨਾ॥ ਜਬਹੀ

ਸਾਤ ਤ੍ਰਿਬੇਣੀ ਭਏ। ਪੁੰਨਦਾਨ ਦਿਨ ਕਰਤ ਬਿਤਏ॥ ਤਹੀ ਪ੍ਰਕਾਸ ਹਮਾਰਾ ਭਯੋ। ਪਟਨੇ ਸ਼ਹਿਰ ਬਿਖੇ ਭਵ ਲਯੋ॥

ਚੰਡੀ ਚਰਿੱਤ੍ਰ ਕੇ ਅੰਤ ਮੇਂ

ਜੇ ਜੇ ਤੁਮਰੇ ਧਿਆਨ ਕੋ ਨਿਤ ਉਠਿ ਧਿਐ ਹੈਂ ਸੰਤ॥ ਅੰਤ ਲਹੈਂਗੇ ਮੁਕਤਿ ਫਲੁ ਪਾਵਹਿੰਗੇ ਭਗਵੰਤ॥ ੨੬੨॥

ਮਿਤ੍ਰੋ ਗੁਰੂ ੧੦ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੇ ਧਿਆਨਾਦਿ ਪੂਜਨ ਸੇ ਮੁਕਤਿਫਲ ਮਿਲਨੇਕਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਕਰਤੇ ਹੈਂ॥

ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗਉਤੀ ਜੀ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਕੇ ਅੰਤ ਮੇਂ

ਦੁਰਗਾ ਪਾਠ ਬਣਾਇਆ ਸਭੇ ਪਉੜੀਆਂ॥ ਫੇਰ ਨ ਜੂਨੀ ਆਇਆ ਜਿਨ ਇਹ ਗਾਇਆ॥ ੫੫॥

ਮਿਤ੍ਰੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੀ ਉਸਤਤੀ ਪ੍ਰਾ-ਰਥਨਾ ਕਾ ਪਾਠ ਬਣਾਇਆ ਤਰਜਮੇਂ ਸੇ ਵਿਰੁਧ ਕਥਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਜਿਸਕੇ ਪਾਠ ਕਰਨੇ ਸੇ ਜਨਮ ਮਰਨ ਰੂਪੀ ਦੁਖ ਨਸ਼ਟ ਹੋਨੇਕਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਹੈ॥

(੧੪)ਨੇਤ੍ਰ ਤੁੰਗਕੇ ਚਰਨਤਰ ਸਤਦ੍ਰਵ ਤੀਰ ਤਰੰਗ। ਸ੍ਰੀ ਭਗਵਤ ਪੂਰਨ ਕੀਯੋ ਰਘੁਬਰ ਕਥਾ ਪ੍ਰਸੰਗ॥ (ਜਿਸ ਮੇਂ ਰਾਮਾ ਅਵਤਾਰ ਅੰਤਮੇਂ ਕਵਿਤਾ ਅੰਕ ੮੬੧)॥

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰੋ ਜੈਸੇ ਅਨੇਕ ਪਰਖ ਅਪਨੇ ੨ ਇਸ਼ਟ ਔਰ ਭੱਦ੍ਰ ਪੁਰਸ਼ੋਂ ਕੇ ਸੰਬੰਧ ਮੇਂ ਬੜੇ ਨਿਮ੍ਰਭਾਵ ਸੇ

ਬਾਰਤਾ ਲਾਪ ਕੀਆ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਵੈਸੇ ਹੀ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੋ ਆਪਨਾ ਇਸ਼ਟ ਸਮਝਤੇ ਹੂਏ ਨਿਮ੍ਰਭਾਵ ਸੇ ਲਿਖਤੇ ਹੈਂ "ਨੈਤ੍ਰ ਤੁੰਗਕੇ ਚਰਨਤਰ ਸਤਦ੍ਰਵ ਤੀਰ ਤਰੰਗ" ਜਿਸਕਾ ਅਰਥ ਸ੍ਰੀ ਨੈਨਾਦੇਵੀ ਜੀਕੇ ਚਰਨੋ ਤਲੇ ਸਤਲੁਜ ਕੇ ਕਿਨਾਰੇ ਆਦਿ ਹੈ॥

(੧੫) ਸ੍ਰੀ ਅਸਪਾਨ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੁਮਰੀ ਕਰ ਮੈ ਨ ਕਹਿਯੋ ਸਭ ਤੋਹਿ ਬਖਾਨਿਯੋ॥ ਸਗਲ ਦੁਆਰ ਕਉ ਛਾਡ ਕੈ ਗਹਿਓ ਤੁਹਾਰੋ ਦੁਆਰ॥ ਬਾਹ ਗਹੇ ਕੀ ਲਾਜ ਅਸ ਗੋਬਿੰਦ ਦਾਸ ਤੁਹਾਰ॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਰਾਮਾ ਅਵਤਾਰ ਕੇ ਅੰਤਮੇਂ ਕਬਤਾ ੮੬੩ ਔਰ ੮੬੪)

ਨੋਟ–ਸ੍ਰੀ ਅਸਪਾਨ (ਤਲਵਾਰ ਵਾਲੀ ਭੁਜਾ) ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੀਹੀ ਪ੍ਰਾਚੀਨਗ੍ਰੰਥੋਮੇਂ ਲਿਖੀ ਔਰ ਪ੍ਰਸਿਧ ਹੈ ਜਿਸਕੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਸਾਹਿਬ ਦੁਆਰ (ਸਥਾਨ) ਮੰਦਰਕੋ ਕਹਤੇ (ਨਿਸਚਾ ਧਾਰਣ ਕਰਤੇ) ਹੈਂ ਜਿਸ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਕੋ ਬਾਂਹ ਪਕੜਨੇ ਕੀ ਲਾਜ ਹੈ ਸੋ ਮੈਂ ਉਸੀਕਾ ਦਾਸ ਹੂੰ ਬਚਿੱਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਗ੍ਰੰਥ ਅਧਯਾਯ ੧ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੯੩ ਨਸੁੰਭ ਨਿਸਾਚਰੋਂ ਕੇ ਬਧ ਕਰਨੇ ਵਾਲੀ (ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਹੈ ਸਾਹਿਬ ਔਰ ਉਸਕੇ ਦਾਸ ਆਪਨੇ ਆਪਕੋ ਕਥ ਤਾ ਹੈ॥

ਚ ਨਿਸੁੰਭ ਸੇ ਕੋਟ ਨਿਸਾਚਰ ਜਾਹਿ ਛਿਨੇਕ ਬਿਖੈ ॥ ਧੂਮ੍ਰ ਲੋਚਨ ਚੰਡ ਔ ਮੁੰਡਸੇ ਮਾਹਿਖ ਸੇ

ਪਲ ਬੀਰ ਨਿਵਾਰੇ ॥ ਚਾਮਰ ਸੇ ਰਣ ਭਿਛਰ ਸੇ ਰਕਤ੍ਰਿੱ-
ਛਰ ਸੇ ਭਟ ਦੇ ਭਭਕਾਰੇ॥ਐਸੋ ਸੁ ਸਾਹਿਬ ਪਾਇਕਹਾ ਪਰ
ਵਾਹਰਹੀ ਇਹ ਦਾਸ ਤਿਹਾਰੇ ॥ ੯੩ ॥

(੧੬) ਜੋ ਜੋ ਕਿਸਨ ਚਰਿੱਤ੍ਰ ਦਿਖਾਏ ॥ ਦਸਮ
ਬੀਰ ਸਭ ਭਾਖ ਸੁਣਾਏ ॥ ਗਜਾਰਾਂ ਸਹਸ ਬਾਨਵੇਂ ਛੰਦਾ ॥
ਕਹੇ ਦਸਮ ਪੁਰ ਬੈਠ ਅਨੰਦਾ ॥ ੪ ॥ ਅਬ ਦੇਵੀ ਜੂ ਕੀ
ਉਸਤਤੀ ਕਥਨੰ ॥ ਸਵੈਯਾ ॥ ਹੋਇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੁਮਰੀ ਹਮ ਪੈ
ਤੁ ਸਭੈ ਸਗਨੈ ਗੁਨਹੀ ਧਰਿਹੋਂ ॥ ਜੀਅਧਾਰ ਬਿਚਾਰ ਤਬੈ
ਬਰਬੁਧ ਮਹਾ ਅਗਨੈ ਗੁਨਕੋ ਹਰਿਹੋਂ ॥ ਬਿਨ ਚੰਡ ਕ੍ਰਿਪਾ
ਤੁਮਰੀ ਕਬਹੂ ਮੁਖਤੇ ਨਹੀਂ ਅੱਛਰ ਹਉਂ ਕਰਹੋਂ ॥ ਤੁਮਰੋ
ਕਰ ਨਾਮ ਕਿਧੋ ਤੁਲਹਾ ਜਿਮ ਬਾਕ ਸਮੁੰਦ੍ਰ ਬਿਖੇ ਤਰਿਹੋਂ
॥ ੫ ॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਰੇ ਮਨ ਭਜ ਤੂੰ ਸਾਰਦਾ ਅਨ ਗਨ ਗੁਨ
ਹੈਂ ਜਾਂਹਿ ॥ ਰਚੋਂ ਗ੍ਰੰਥ ਇਹ ਭਾਗਵਤ ਜਉ ਦੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕ-
ਰਾਹਿ ॥ ੬ ॥ ਕਬਿੱਤ ॥ ਸੰਕਟ ਹਰਨ ਸਭ ਸਿਧਨੋ
ਕਰਨ ਚੰਡ ਤਾਰਨ ਤਰਨ ਸਰਨ ਲੋਚਨ ਬਿਸਾਲ ਹੈਂ ॥
ਆਦਿ ਜਾਕੇ ਆਹਿਵਹੇ ਅੰਤ ਕੋ ਨ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ਸਰਨ
ਉਬਾਰਨ ਕਰਨ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਹੈ ॥ ਅਸੁਰ ਸੰਘਾਰਨਿ ਅਨਿਕ
ਦੁਖ ਜਾਰਨ ਸੁ ਪਤਿਤ ਉਧਾਰਨ ਛੁਡਾਏ ਜਮ ਜਾਲ ਹੈ ।
ਦੇਵੀ ਬਰਲਾਇਕ ਸੁ ਬੁਧ ਹੂੰ ਕੀ ਦਾਇਕ ਸੁ ਦੇਹ ਬਰ
ਪਾਇਕ ਬਨਾਵੈ ਗ੍ਰੰਥ ਹਾਲ ਹੈ ॥ ੭ ॥ ਸਵੈਯਾ ॥ ਅੱਦ੍ਰ
ਸੁਤਾਹੂੰਕੀ ਜੋ ਤਨਯਾ ਮਹਿਖਾਸੁਰਕੀ ਮਰਤਾ ਪੁਨ ਜੋਊ ॥

ਇੰਦ੍ਰ ਕੋ ਰਾਜਹਿ ਕੀ ਦਿਵਯਾ ਕਰਤਾ ਬਧ ਸੁੰਭ ਨਿਸੁੰਭ ਹਿ ਦੇਉ ॥ ਜੋ ਜਪਹੈ ਇਹ ਸੇਵ ਕਰੈ ਬਰ ਕੋ ਸੁ ਲਹੈ ਮਨ ਇੱਛਤ ਸੇਉ ॥ ਲੋਕ ਬਿਖੈ ਉਹ ਕੀ ਸਮ ਤੁੱਲ ਗਰੀਬ ਨਿ-ਵਾਜ ਨ ਦੂਸਰ ਕੋਉ ॥ ੮ ॥ ਇਤਿ ਸ੍ਰੀ ਦੇਵੀ ਜੂ ਕੀ ਉਸ-ਤਤੀ ਸਮਾਪਤੰ॥ (ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਅਵਤਾਰ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖਵਾਕ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪ ਸੇ ੮ ਤਕ)

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰੋ ਸ੍ਰੀ ਮਤ ਭਾਗਵਤ ਕੇ ਪ੍ਰਾਰੰਭ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤੀ ਕੇ ਕੋਈ ਸਲੋਕ ਨਹੀਂ ਜਿਨ ਕਾ ਤਰਜਮਾ ਸਮਝਾ ਜਾਇ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਨੇ ਅਪਨੀ ਇਸ਼ਟ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕਾ ਮੰਗਲਾ ਚਰਨ ਕੀਆ ਹੈ ਜੋ ਉਕਤ ਪ੍ਰ: ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਕਾ ਅਰਥ ਔਰ ਭਾਵਾਰਥ ਕਰਨ ਕੀ ਕੋਈ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਪ੍ਰਮਾਣ ਦੇਖਨੇ ਸੇ ਹੀ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋ ਜਾਤਾ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਜੀ ਨੇ ਅਨੰਦ ਪੁਰ ਮੇਂ ੧੧੯੨ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਲੀਲ੍ਹਾ ਕੇ ਛੰਦ ਰਚਨਾ ਕੀ ਔਰ ਮੰਗਲਾ ਚਰਣ ਰੂਪ ਅਪਨਾ ਇਸ਼ਟ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਚਾਰ ਛੰਦੋਂ ਮੇਂ ਉਸਤਤੀ ਔਰ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀ ਹੈ ਔਰ ਸਰਬ ਪੰਥ ਪ੍ਰਤੀ ਉਪਦੇਸ਼ ਕੀਆ ਹੈ ਕਿ ਐਸੇ ਹੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤੀ ਔਰ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀਆ ਕਰੇਂ ਤੋ ਭਵਸਾਗਰ ਸੇ ਪਾਰ ਹੋ ਜਾਇੰਗੇ ॥

(੧੭) ਅਬ ਦੇਵੀ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤ ਕਥਨੰ ॥ ਭੁਜੰਗ ਪ੍ਰਯਾਤ ਛੰਦ ॥ ਤੁਹੀਂ ਅਸਤ੍ਰਣੀ ਸਸਤ੍ਰਣੀ ਆਪ ਰੂਪਾ ॥ ਤੁਹੀਂ ਅੰਬਕਾ ਜੰਭ ਹੰਤੀ ਅਨੂਪਾ ॥ ਤੁਹੀ ਅੰਬਕਾ ਸੀਤ

ਲਾ ਤੋਤਲਾ ਹੈ ॥ ਪ੍ਰਿਥੀ ਭੂਮ ਅਕਾਸ ਤੇਹੀ ਕੀਆ ਹੈ ॥
॥੪੨੦॥ ਤੁਹੀ ਮੁੰਡਮਰਦੀ ਕਪਰਦੀ ਭਵਾਨੀ ॥ ਤੁਹੀ ਕਾਲ
ਕਾ ਕਾਲਪਾ ਰਾਜਧਾਨੀ ॥ ਮਹਾ ਜੋਗ ਮਾਇਆ ਤੁਹੀ
ਈਸ੍ਵਰੀ ਹੈ ॥ ਤੁਹੀ ਤੇਜ ਅਕਾਸ ਥੰਭੋ ਮਹੀ ਹੈ ॥ ੪੨੨ ॥
ਤੁਹੀ ਰਿਸਟਣੀ ਪ੍ਰਸਟਣੀ ਜੋਗ ਮਾਇਆ ॥ ਤੁਹੀ ਮੋਹ ਸੋ
ਚਉਦਹੂੰ ਲੋਕ ਛਾਇਆ ॥ ਤੁਹੀ ਸੁੰਭ ਨੈਸੁੰਭ ਹੰਤੀ ਭਵਾ
ਨੀ ॥ ਤੁਹੀ ਚਉਦਹੂੰ ਲੋਗਣੀ ਜੋਤ ਜਾਨੀ ॥ ਤੁਹੀ ਰਿਸਟਣੀ
ਪ੍ਰਸਟਣੀ ਸ਼ਸਤ੍ਰਨੀ ਹੈ ॥ ਤੁਹੀ ਕਰਟਣੀ ਹਰਤਣੀ ਅਸ-
ਤ੍ਰਣੀ ਹੈ ॥ ਤੁਹੀ ਜੋਗ ਮਾਇਆ ਤੁਹੀ ਬਾਕਬਾਨੀ ॥ ਤੁਹੀਂ
ਅੰਬਕਾ ਜੰਭਹਾ ਰਾਜਧਾਨੀ ॥ ੪੨੩ ॥ ਮਹਾ ਜੋਗ ਮਾਯਾ
ਮਹਾ ਰਾਜਧਾਨੀ ॥ ਭਵੀ ਭਾਵਨੀ ਭੂਤ ਭੱਬਿਖਯ ਭਵਾਨੀ ॥
ਚਰੀਆਚਰਣੀ ਖੇਚਣੀ ਭੂਪਣੀ ਹੈਂ ॥ ਮਹਾ ਬਾਹਣੀ ਆਪਣੀ
ਰੂਪਣੀ ਹੈ ॥੪੨੪॥ ਮਹਾਂ ਭੈਰਵੀ ਭੂਤਨੇਸ੍ਰੀ ਭਵਾਨੀ ॥
ਭਵੀ ਭਾਵਨੀ ਭਬਿਖੰ ਕਾਲੀ ਕ੍ਰਿਪਾਨੀ ॥ ਜਯਾ ਆਜਯਾ
ਹਿੰਗਲਾ ਪਿੰਗਲਾ ਹੈ ॥ ਸਿਵਾ ਸਾਤੁਲਾ ਮੰਗਲਾ ਤੋਤਲਾ
ਹੈ ॥੪੨੫॥ ਤੁਹੀ ਅਛਰਾ ਪਛਰਾ ਬੁਧਿ ਬੁਧਿਆ ॥ ਤੁਹੀ ਭੈਰਵੀ
ਭੂਪਣੀ ਸੁਧਿ ਸਿਧਿਆ ॥ ਮਹਾ ਬਾਹਣੀ ਅਸਤ੍ਰਣੀ ਸਸ-
ਤ੍ਰ ਧਾਰੀ ॥ ਤੁਹੀ ਤੀਰ ਤਰਵਾਰ ਕਾਤੀ ਕਟਾਰੀ ॥ ੪੨੬ ॥
ਤੁਹੀ ਰਾਜਸੀ ਸਾਤਕੀ ਤਾਮਸਾ ਹੈ ॥ ਤੁਹੀ ਬਾਲਕਾ ਬ੍ਰਿਧਣੀ
ਅਉ ਜੁਬਾ ਹੈ ॥ ਤੁਹੀ ਦਾਨਵੀ ਦੇਵਣੀ ਜਛਣੀ ਹੈ ॥ ਤੁਹੀ
ਕਿੰਨ੍ਰਣੀ ਮਛਣੀ ਕਛਣੀ ਹੈ ॥ ੪੨੭ ॥ ਤੁਹੀ ਦੇਵਤੇ ਸੇਸ

ਣੀ ਦਾਨਵੇਸਾ ॥ ਸਹਰ ਸ੍ਰਿਸਟਣੀ ਹੈ ਤੁਹੀ ਅਸਤ੍ਰ ਭੇਸਾ ॥
ਤੁਹੀ ਰਾਜ ਰਾਜੇਸ੍ਵਰੀ ਜੋਗ ਮਾਇਆ ॥ ਮਹਾ ਮੋਹਸੋ ਚਉ
ਦਹੂ ਲੋਕ ਛਾਇਆ ॥ ੪੨੮ ॥ ਤੁਹੀ ਬ੍ਰਹਮੀ ਬੈਸਨਵੀ
ਸ੍ਰੀ ਭਵਾਨੀ ॥ ਤੁਹੀ ਬਾਸਵੀ ਈਸ੍ਵਰੀ ਕਿਰਤ ਕਿਆਨੀ ॥
ਤੁਹੀ ਅੰਬਕਾ ਦੁਸਟਹਾ ਮੁੰਡ ਮਾਲੀ ॥ ਤੁਹੀ ਕਸਟ ਹੰਤੀ
ਕ੍ਰਿਪਾਲੇ ਕਿਰਪਾਲੀ ॥ ੪੨੯ ॥ ਤੁਮ੍ਹੀ ਬ੍ਰਾਹਿਣੀ ਹ੍ਵੈ ਹਿਰੰਨਾ
ਛ ਮਾਰਿਯੋ ॥ ਹਰੰਨਾਕਸੰ ਸਿੰਘਣੀ ਹ੍ਵੈ ਪਛਾਰਿਯੋ ॥ ਤੁਮ੍ਹੀ
ਬਾਵਨੀ ਹ੍ਵੈ ਤਿਨੋ ਲੋਗ ਮਾਪੇ ॥ ਤੁਮ੍ਹੀ ਦੇਵ ਦਾਨਵ ਕੀਏ
ਜਛ ਥਾਪੇ ॥ ੪੩੦ ॥ ਤੁਮ੍ਹੀ ਰਾਮ ਹ੍ਵੈਕੈ ਦਸੋ ਗ੍ਰੀਵ ਖੰਡਿਯੋ ॥
ਤੁਮ੍ਹੀ ਕ੍ਰਿਸਨ ਹੈ ਕੰਸ ਕੰਸੀ ਬਿਹੰਡਿਯੋ ॥ ਤੁਮ੍ਹੀ ਜ੍ਵਾਲਪਾ
ਹ੍ਵੈ ਬਿੜਾਲਾਛ ਘਾਯੋ ॥ ਤੁਮੀ ਸੁੰਭ ਨੈਸੁੰਭ ਦਾਨੋ ਖਪਾਯੋ
॥ ੪੩੧ ॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਦਾਸ ਜਾਨ ਕਰ ਦਾਸ ਪਰਿ ਕੀਜੈ
ਕ੍ਰਿਪਾ ਅਪਾਰਿ । ਆਪ ਹਾਥ ਦੈ ਰਾਖਿ ਮੁਹਿ ਮਨ ਕ੍ਰਮ
ਬਚਨ ਬਿਚਾਰ ॥੪੩੨॥ ਚੌਪਈ ॥ ਮੈਨ* ਗਨੇਸਹਿ ਪ੍ਰਿਥਮ

* ਸ ਸਾਖੀ ਮੇਂ ਸਾਖੀ ੭੭ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੫੨ ਗੁਰ ਦੀਨਾ
ਗਣੇਸ । ਸਫਲ ਕਾਮ ਮਾਨੇ ਆਦੇਸ ॥ ਸੌ ਸਾਖੀ ਮੇਂ ਸਾਖੀ
੯੪ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧ ਗਣਪਤ ਆਦਿ ਮਨੀਏ ਵਿਤਵਨ ਕੀ
ਕਾਨ ॥ ਔਰ ਭਗਤਰਤਨਾਵਲੀ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਜੀ
ਕ੍ਰਿਤ ਸਾਖੀ ੧੨੫ ਮੇਂ ਗਣੇਸ ਜੀ ਕੀ ਪੂਜਨ ਕਾ ਗੁਰੂ
ਹੁਕਮ ਲਿਖਾ ਹੈ ॥

ਮਨਾਊ। ਕਿਸਨ ਬਿਸਨ ਕਬਹੂ ਨ ਧਿਆਊ॥ ਕਾਨ ਸੁਨੇ ਪਹਿਚਾਨ ਨ ਤਿਨਸੋ॥ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ਮੋਰੀ ਪਗ ਇਨਸੋ॥ ੪੩੩॥ ਮਹਾ ਕਾਲ ਰਖਵਾਰ ਹਮਾਰੋ ਮਹਾ ਲੋਹ ਮੈ ਕਿੰਕਰ ਥਾਰੋ॥ ਅਪਨਾ ਜਾਨ ਕਰੋ ਰਖਵਾਰ। ਬਾਹ ਗਹੇ ਕੀ ਲਾਜ ਬਿਚਾਰ॥ ੪੩੪॥ ਅਪਨਾ ਜਾਨ ਮੁਝੈ ਪ੍ਰਤਿ ਪਰੀਐ। ਚੁਨ ਚੁਨ ਸਤ੍ਰੁ ਹਮਾਰੇ ਮਰੀਐ॥ ਦੇਗ ਤੇਗ ਜਗਮੈ ਦੋਊ ਚਲੈ। ਰਾਖ ਆਪ ਮੁਹਿ ਅਉਰ ਨ ਦਲੈ॥ ੪੩੫॥ ਤੁਮ ਮਮ ਕਰਹੁ ਸਦਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰਾ। ਤੁਮ ਸਾਹਿਬ ਮੈਂ ਦਾਸ ਤਿਹਾਰਾ॥ ਜਾਨ ਆਪਨਾ ਮੁਝੇ ਨਿਵਾਜ। ਆਪ ਕਰੋ ਹਮਰੇ ਸਭ ਕਾਜ॥ ੪੩੬॥ ਤੁਮ ਹੋ ਸਭ ਰਾਜਨਕੇ ਰਾਜਾ। ਆਪੇ ਆਪ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜਾ॥ ਦਾਸ ਜਾਨ ਕਰ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਹੁ ਮੁਹਿ। ਹਾਰ ਪਰਾ ਮੈਂ ਆਨ ਦੁਆਰ ਤੁਹਿ॥ ੪੩੭॥ ਅਪਨਾ ਜਾਨ ਕਰੋ ਪ੍ਰਤਿਪਾਰਾ। ਤੁਮ ਸਾਹਿਬ ਮੈਂ ਕਿੰਕਰ ਥਾਰਾ॥ ਦਾਸ ਜਾਨ ਦੈ ਹਾਥ ਉਬਾਰੋ। ਹਮਰੇ ਸਭ ਬੈਰੀ ਅਨ ਸੰਘਾਰੋ॥ ੪੩੮॥ ਪ੍ਰਥਮ ਧਰੋ ਭਗਵਤ ਕੋ ਧਿਆਨਾ। ਬਹੁਰ ਕਰੋਂ ਕਬਿਤਾ ਬਿਧ ਨਾਨਾ॥ ਕ੍ਰਿਸਨ ਜਥਾਮਤ ਚਰਿਤ੍ਰ ਉਚਾਰੋ। ਚੂਕ ਹੋਇ ਕਬਿ ਲੇਹੁ ਸੁਧਾਰੋ॥ ੪੩੯॥ ਇਤਿ ਸ੍ਰੀ ਦੇਵੀ ਉਸਤਤ ਸਮਾਪਤ॥ (ਦਸਮ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹੀ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕ੍ਰਿਸਨ ਅਵਤਾਰ ਰਾਸ ਮੰਡਲ ਸੇ ਪ੍ਰਿਥਮ ਕਥਾ ਅੰਕ ੪੨੦ ਸੇ ੪੩੯ ਤਕ ਸ੍ਰੀਮੁਖਵਾਕ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦)

ਨੋਟ—ਮਿੱਤ੍ਰੋ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਸ੍ਰੀ ਮਤ ਭਾਗਵਤ ਕੇ

ਕਿਸੀ ਪ੍ਰਸੰਗਕਾ ਭਰਜਮਾ ਨਹੀਂ ਕੇਵਲ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਜੀਕੇ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖਵਾਕ ਹੈਂ ਸੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਦਾਸ ਪੰਥਾਧਿਆਈ ਕਾ ਕਠਨ ਬਿਖਾ ਸਮਝ ਆਪਨੀ ਇਸ਼ਟ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਜਿਸ ਕੇ ਪ੍ਰਾਰੰਭ ਮੇਂ "ਅਬ ਦੇਵੀ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤ ਕਥਨੰ" ਔਰ ਅੰਤ ਮੇਂ "ਇਤਿ ਸ੍ਰੀ ਦੇਵੀ ਉਸਤਤ ਸਮਾਪਤ" ਲਿਖਨੇ ਮੇ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ਔਰ ਖਾਸਕਰ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪੨੦ ਸੇ ੪੩੨ ਤਕ ੧੨ ਪ੍ਰਮਾਣੋ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤੀ ਹੈ ਜਿਸ ਕਾ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਕੁਛ ਅਰਥ ਨਹੀਂ ਬਦਲ ਸਕਤੇ ॥ ਔਰ ਉਕਤ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਮੇਂ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪੩੨ ਸੇ ੪੩੯ ਤਕ ੭ ਪ੍ਰਮਾਣੋ ਸੇ ਗਣੇਸ਼, ਕਿਸ਼ਨ, ਬਿਸਨ ਦੇਵਤੋਂ ਕੀ ਮੁਖਤਾਸੇ ਨਿੰਦਾ ਸਮਝਕਰ ਨਿੰਦਾ ਕਰਤ ਹੈਂ ਏਹ ਕਹਿਤੇ ਹੈਂ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਕੀ ਯਿਹ ਉਸਤਤੀ ਹੈ ਜੋ ਪੁਰਖ ਸ਼ਬਦ ਬਾਚਕ ਹੈ। ਦੇਵੀਕੀ ਉਸਤਤੀ ਹੋਤੀ ਤੋ ਇਸਤ੍ਰੀ ਸ਼ਬਦ ਬਾਚੀ ਹੋਤੀ ਸੋ ਇਸਕਾ ਉਤਰ ਸਾਧਾਰਣ ਹੈ ਜ ਨਿਊਨ ਬੁਧੀ ਵਾਲਾ ਪੁਰਖ ਭੀ ਸਮਝ ਲੇਗਾ ॥

ਪ੍ਰਥਮ ਉਕਤ ਪ੍ਰਸੰਗ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕਾ ਹੈ ਜਿਸ ਕੇ ਆਦਿ ਮੇਂ "ਅਬ ਦੇਵੀ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤ ਕਥਨੰ" ॥ ਔਰ ਅੰਤ ਮੇਂ "ਇਤੀ ਸ੍ਰੀ ਦੇਵੀ ਉਸਤਤ ਸਮਾਪਤ" ਲੇਖ ਹੈ ਔਰ ਉਕਤ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪੨੯ ਔਰ ੪੩੧ ਮੇ ਬਿਸਨ ਔਰ ਕਿਸ਼ਨ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੇ ਰੂਪ ਲਿਖੇ ਹੈ

ਨਿੰਦਾ ਸਮਝਣਾ ਮੂਰਖੋਂ ਕਾ ਕਾਮ ਹੈ ਜੋ "ਬਿਰੋਧ ਭਾਸ ਅਲੰਕਾਰ" ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਮੇਂ ੧੦ ਜੀ ਕੀ ਅਨਿਨਯ ਭਗਤੀ ਸਿਧ ਹੋਤੀ ਹੈ ॥

ਦੂਸਰੇ ਕਵਤਾ ਅੰਕ ੪੩੪ ਔਰ ੪੩੫ ਮਹਾ ਕਾਲ ਸੇ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਨੇ ਅਪਨੀ ਰਖਯਾ ਲੀਏ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀ ਹੈ ਸੋ ਦੇਖੋ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਗ੍ਰੰਥ ਅਧਯ ਇ ੬ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧ ਔਰ ੨ ਕੇ ਪ੍ਰਮਾਣ ਦਵਾਰਾ ਉਕਤ ਨੰਬਰ ੧੧ ਮੇਂ ਸਿਧ ਕਰ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਮਹਾਕਾਲ ਔਰ ਕਾਲੀ (ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ) ਜੀ ਸਮੀਪ ਬਰਤੀ ਏਕ ਹੀ ਰੂਪ ਹੈਂ ॥

ਤੀਸਰੇ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪੩੬ ਸੇ ੪੩੮ ਜੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਆਪਨ ਨਿਮ੍ਰ ਭਾਵ ਸੇ ਸਾਹਿਬ ਦਾਸ ਔਰ ਰਾਜਾ ਆਦ ਉਸਤਤ ਕਥਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਸੋ ਭੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਹੈ ਦੇਖੋ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪੩੨ ਜੋ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪੨੦ ਸੇ ਲਗਾਤਾਰ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤ ੧੨ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਸੇ ਕਰਤੇ ਹੁਏ ਅੰਤ ਮੇਂ 'ਦਾਸ ਜਾਨਕਰ ਦਾਸ ਪਰ ਕੀਜੈ ਕ੍ਰਿਪਾ ਅਪਾਰ' ਸਪਸ਼ਟ ਹੈ ਔਰ ਬਚਿੱਤ੍ਰ ਨਾਟਕ ਅਧਯਾਇ ੧ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੯੩ ਸੁੰਭ ਨਿਸੁੰਭ ਕੋ ਮਾਰਨੇ ਵਾਲੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤੀ ਮੇਂ ਹੀ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਨੇ ਸਾਹਿਬ ਔਰ ਦਾਸ ਪਦ ਕਥਨ ਕੀਆ ਹੈ ਯਥਾ ਸੁੰਭ ਨਿਸੁੰਭ ਸਬਦ ਕੇ ਅੰਤਮੇਂ "ਐਸੋਸ ਸਾਹਿਬ ਪਾਇ ਕਹਾਂ ਪਰਵਾਹ ਰਹੀ ਇਹ ਦਾਸ ਤਿਹਾਰੇ" ਸੋ ਮਿਤਰੋ ਰਾਜਨ ਕੇ

ਰਾਜ ਪਦ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਸੇ ਭਿੰਨ ਔਰ ਕੋ ਸਿਧ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਤਾ ਜਬ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੇ ਆਪਨੇ ਆਪ ਕੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਦਾਸ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ॥

(੧੯) ਤੀਰ ਤੁਹੀ ਸੈਥੀ ਤੁਹੀ ਤੁਹੀ ਤਬਰ ਤਰਵਾਰ ॥ ਨਾਮ ਤਿਹਾਰੋ ਜੋ ਜਪੈ ਭਏ ਸਿੰਧ ਭਵਪਾਰ ॥ ਕਾਲ ਤੁਹੀ ਕਾਲੀ ਤੁਹੀ ਤੁਹੀ ਤੇਗ ਅਰ ਤੀਰ ॥ ਤੁਹੀ ਨਿਸਾਨੀ ਜੀਤਕੀ ਆਜ ਤੁਹੀ ਜਗਬੀਰ (ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸਸਤ੍ਰ ਮਾਲਾ ਅਧ੍ਯਾਇ ੧ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੪ ਵ ੫)

ਨੋਟ-ਸਿੱਧੇ ਜੜ ਲੋਹੇ ਸੇ ਬਨੇ ਤੀਰ ਤਰਵਾਰ ਆਦਿਕਾ ਨਾਮ ਜਪਨਸੇ ਭਵਸਾਗਰ ਪਾਰ ਹੋਨਾ ਕਠਨ ਹੈ ਯਹਿ ਸਾਬਤੀ ਤੁਕ "ਕਾਲ ਤੁਹੀ ਕਾਲੀ ਤੁਹੀ" ਇਨਕਾ ਧਿਆਨਾਦਿ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕਾ ਪੂਜਨ ਹੈ ਤੋ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਨਾਮ ਮਾਲਾ ਕੇ ਅਧਯਾਇ ੧ ਕ ਅੰਤ ਮੇਂ "ਇਤੀ ਸ੍ਰੀ ਨਾਮ ਮਾਲਾ ਪੁਰਾਣੇ ਸ੍ਰੀ ਭਗਉਤੀ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਪ੍ਰਿਥਮ ਧਯਾਇ ਸਮਾਪਤ ਮਸਤ ਸੁਭ ਮਸਤ" ਐਸੇ ਸਪਸ਼ਟ ਲਿਖਾ ਹੈ ਔਰ ਇਸੀ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਮਾਲਾ ਅਧਯਾਇ ੨ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੩੨ "ਸਿੰਘ ਸਬਦ ਭਾਖੋ ਪ੍ਰਿਥਮ ਬਾਹਨ ਬਹੁਰ ਉਚਾਰ ॥ ਸਭੈ ਨਾਮ ਜਗਮਾਤ ਕੇ ਲੀਜਹੁ ਸੁਕਵਿ ਸੁਧਾਰ" ਇਤਯਾਦਿ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਸੇ ਸਿੰਘ ਬਾਹਨੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੇ ਨਾਮ ਜਪਨੇ ਕਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਕਾ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ॥

(੧੯) ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਮੇਂ ਚਾਰ ਸੌ ਚਾਰ ਤੀਆ ਚਰਿੱਤ੍ਰੋਂ ਕੇ ਬੀਚ ਇਕੀਸਵਾਂ ਚਰਿਤ੍ਰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਕਾ ਇਨ ਕਾਰਣੋ ਸੇ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟਹੈ "ਤੀਰਸਤੁਦ੍ਰਵ ਕੇ ਹੁਤੋ ਪੁਰ ਅਨੰਦ ਇਕ ਗਾਉਂ।ਨੈਤ੍ਰਤੁੰਗਕੇ ਢਿਗ ਬਸਤ ਕਾਹਲੂਰਕੇ ਠਾਉਂ" ਜੋ ਰੂਪ ਕੁਅਰ ਕੇ ਨਾਮ ਸੇ ਲਿਖਾ ਹੈ ਜਿਸ ਕੋ ਗੁਰਮਤ ਕੇ ਅਨੇਕ ਵਿਦਵਾਨ ਜਾਨਤੇ ਹੂਏ ਆਪਨੇ ਲੇਖਾਂ ਮੇਂ ਪ੍ਰਮਾਣ ਦੀਆ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਉਸ ਉਕਤ ਚਰਿੱਤ੍ਰ ੨੧ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧੦ ਔਰ ੨੪ ਦੇਖਨੇਸੇ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਤਾ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੋ ਪਰਮ ਇਸ਼ਟ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ਜੋ ਆਪਣੀ ਧਾਤ੍ਰਾ (ਸਫਰ) ਕੋ ਪ੍ਰਿਥਮ ਸ੍ਰੀ ਭਗਉਤੀ (ਦੇਵੀ) ਕੋ ਮਨਾਤੇ ਹੈਂ ਔਰ ਰੂਪ ਕੁਅਰਕੇ ਅਨੇਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸੇ ਹਠ ਕਰਨੇਪਰ ਗੁਰੂ੧੦ ਜੀ ਡਰੇ ਜੋ ਕਹਾਂ ਸ੍ਰੀ ਭਗਵਤੀ ਕੀ ਸੁਗੰਦ ਨ ਦੇਂਦੇ ਯਦਿ ਭਗਵਤੀ ਸ਼ਕਤੀ ਕੀ ਸੁਗੰਦ ਦੇਦੀ ਤੋ ਮੁਝੇ ਬਜਰਚਾਰ ਕਰ ਨਰਕ ਮੇਂ ਗਿਰ ਨਾ ਪੜੇਗਾ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਸੁਗੰਦ ਕੋ ਉਲੰਘਨ ਨਹੀਂ ਕਰੂੰਗਾ ॥ ਯਥਾ ਭੁਜੰਗਛੰਦ ॥ "ਚਲਿਓ ਧਾਰ ਅਤੀਤ ਕੋ ਭੇਸਰਾਈ ॥ ਮਨਾਮਨ ਬਿਖੇ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਮਨਾਈ" (ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਚਰਿਤ੍ਰ ੨੧ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੧੦)

ਪੁਨਾ--ਰਾਇ ਭਰਥੋ ਜੀ ਦੈ ਮੁਝੈ ਸ੍ਰੀਭਗਵਤਿਕੀਆਨ॥ ਸੌਕ ਤਿਆਗ ਯਾਸੋ ਰਮੋਂ ਕਰਹੋਂ ਨਰਕ ਪਿਆਨ (ਦਾ.ਮ

ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਚਰਿਤ੍ਰ ੨੧ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੨੪)॥

ਨੋਟ ਮਿਤ੍ਰੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਐਸੇ ਆਪਨਾ ਇਸ਼ਟ ਸਮਝਤੇਥੇ ਜੋ ਚਰਿੱਤ੍ਰ ੨੧ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਸੇ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ॥

(੨੦) ਅਥ ਪਖਿਆਨ ਚਰਿਤ੍ਰ ਲਿਖਯਤੇ

ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦॥ ਭੁਜੰਗ ਪ੍ਰਯਾਤ ਛੰਦ॥ ਤ੍ਵਪ੍ਰਸਾਦਿ॥ ਤੁਹੀ ਖੜਗ ਧਾਰਾ ਤੁਹੀ ਬਾਢ ਵਾਰੀ॥ ਤੁਹੀ ਤੀਰ ਤਰਵਾਰ ਕਾਤੀ ਕਟਾਰੀ॥ ਹਲੱਬੀ ਜਨੱਬੀ ਮਗਰਬੀ ਤੁਹੀ ਹੈਂ॥ ਨਿਹਾਰੋਂ ਜਹਾਂ ਆਪ ਠਾਢੀ ਵਹੀ ਹੈਂ॥ ੧॥ ਤੁਹੀ ਜੋਗ ਮਾਯਾ ਤੁਹੀ ਬਾਕ ਬਾਨੀ॥ ਤੁਹੀ ਆਪ ਰੂਪਾ ਤੁਹੀ ਸ੍ਰੀ ਭਵਾਨੀ॥ ਤੁਹੀ ਬਿਸਨ ਤੂੰ ਬ੍ਰਹਮ ਤੂੰ ਰੁਦ੍ਰ ਰਾਜੈ॥ ਤੁਹੀ ਬਿਸ੍ਵ ਮਾਤਾ ਸਦਾ ਜੈ ਬਿਰਾਜੈ॥ ੨॥ ਤੁਹੀ ਦੇਵ ਤੂੰ ਦੇਤ ਤੇ ਜਛ ਉਪਾਏ॥ ਤੁਹੀ ਤੁਰਕ ਹਿੰਦੂ ਜਗਤ ਮੇਂ ਬਨਾਏ॥ ਤੁਹੀ ਪੰਥ ਹ੍ਵੈ ਅਵਤਰੀ ਸ੍ਰਿਸਟ ਮਾਹੀ॥ ਤੁਹੀ ਬੱਕਤ੍ਰ ਤੇ ਬ੍ਰਹਮ ਬਾਦੈ ਬਕਾਹੀ॥ ੩ ॥ ਤੁਹੀ ਬਿਕ੍ਰਤ ਰੂਪਾ ਤੁਹੀ ਚਾਰ ਨੈਨਾ॥ ਤੁਹੀ ਰੂਪ ਬਾਲਾ ਤੁਹੀ ਬਿਕ੍ਰ ਬੈਨਾ॥ ਤੁਹੀ ਬਕ੍ਰਤੇ ਬੇਦ ਚਾਰੋਂ ਉਚਾਰੇ॥ ਤੁਹੀ ਸੁੰਭ ਨੈਸੁੰਭ ਦਾਨੋ ਸੰਘਾਰੇ। ੪॥ ਇਤਯਾਦਿ ੪੮ ਕਬਤਾ ਅੰਕੋਂ ਮੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਹੈ (ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਮੁਃ ਪਾਃ ੧੦ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾਜੀ ਕਾ ਚਰਿਤ੍ਰ੧)॥

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੋ ਅਪਨਾ ਇਸ਼ਟ ਸਮਝਤੇ ਹੂਏ ਅਨਨਯ ਭਗਤੀ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ

ਕੋ ਸਰਬ ਬਿਆਪਕ ਔਰ ਜਗਤ ਰਚਨਾ ਕਰਨੇ ਵਾਲੀ ਲਿਖਕਰ ਅੰਤ ਮੇਂ ਐਸੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਜੈਸੀ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਿਕ ਅਧ੍ਯਾਇ ੨ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੨ ਮੇਂ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਜੀਕੀ ਹੈ ਦੋਨੋਂ ਕੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਮੇਂ ਜੁਦੀ ੨ ਜਗਹ ਐਹ ਏਕ ਹੀ ਦੋਹਰਾ ਹੈ ॥

"ਮੂਕ ਉਚਰੈ ਸਾਸਤ੍ਰ ਖਟ ਪਿੰਗ ਗਿਰਨ ਚੜਿ ਜਾਇ ॥ ਅੰਧ ਲਖੈ ਬਧਰੋ ਸੁਨੈ ਜੌ ਕਾਲ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਾਇ ॥"

ਇਸ ਸੇ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਸੇ ਭਿੰਨ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੋ ਨਹੀਂ ਮਾਨਤੇ ਥੇ ॥

ਸਿੱਖੋਂ ਕੀ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਸੌ ਸਾਖੀ ॥

(੨੧) ਤਾਂ ਸਿਖਾਂ ਪੁਛਿਆ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇਵੀ ਕੀ ਸਕਤ ਬਚਨ ਹੋਇਆ ਪ੍ਰਸਾਦ ਖੁਸ਼ੀ ਹੀ ਬਣਦੀ ਹੈ ॥ ਕੁਝ ਕਹਿਣਾ ਬਣਦਾ ਨਹੀਂ ॥ ਪਰ ਗੁਰੂ ਨੇ ਸਰਧਾ ਵਾਲਾ ਨਾ ਸਿਖ ਪੁਛੇ ਤਾਂ ਕਹਿਣਾ ਬਣਦਾ ਸਦਾ ਹੀ ਹੈ ॥ ਸੁਣੋ ਭਾਈ ਸੰਗਤੇ ਗੁਰੂ ਕੇ ਘਰਿ ਵਿਚ ਏਕਤਾ ਹੈ ॥ ਭੂਲ ਕਰਿ ਭੇਦ ਭਰਮ ਨਹੀਂ ਕਰਣਾ ॥ ਗੁਰੂ ਕਿਆਂ ਏਕ ਜਾਮਾ ਪਹਿਰਿਆ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸ ਵੇਲੇ ਤਪ ਕਰਨੇ ਵਾਸਤੇ ਬਿੰਦਾਚਲ ਅਰਣ ਕੇ ਮਾਂਝ ਥੇ । ਉਸ ਮਨੋਤ੍ਰ ਵਿਚ ਬਿੰਦਾਚਲ ਉਮਾ ਉਹਾਂ ਤਪ ਕਰਨੇ ਗਈ ਥੀ ॥ ਬ੍ਰਹਮਾ ਕੇ ਕਹੇ ਤੇ ਦੇਵਤੇ ਤਿਸ ਭਤਿ ਕਰਕ ਲਗਏ ਥੇ ॥ ਦਿੰਤ ਦਾਨਵ ਅਜੀ

ਭੁ ਤ੍ਰਿਲੋਕੀ ਕਾ ਰਾਜ ਲੈ ਲੀਆ ਥਾ ॥ ਬਹੁਤ ਬਰਸ ਭਵਾ
ਨੀ ਜੁਧ ਕਰਦੀ ਥਕ ਰਹੀ ਰਕਤ ਬੀਜਕੇ ਮਾਰਨੇਕਾ ਜਤ
ਨ ਕੀਆ ਪਰ ਅਸਰ ਰਕਤਤੇ ਬਧਦੇ ਜਾਵੇ ॥ ਨਾਵੇ ਅੰਕ
ਊਪਰ ਸੋ ਬਿੰਦੀ ਕੀ ਗਿਣਤੀ ਕਰੀ ਰਖੀਸੁਰਾਂਨੇ ॥ ਇਤਨੇ
ਰਕਤ ਤੇ ਜਨਮੇ ਮਾਰੇ ॥ ਤਬ ਰਕਤ ਕਾ ਪਾਣੀ ਪ੍ਰਮਾਣ
ਪ੍ਰਲੈ ਹੂਈ ਥੀ ॥ ਸ੍ਰਿਸਟ ਸੁੰਨ ਹੂਈ ਜੈਸੇ ਪਥਰ ਜਲ ਮਹਿ
ਰਹਿੰਦ ਹੈਨ ਤਾਂ ਦੇਵੀ ਦੇ ਗਣ ਭਾਗੇਗਏ ਕੇਈ ਲੜਕੇ
ਕਿਈ ਅਣਲੜੇ ॥ ਤਾਂ ਦੇਵੀ ਅੰਤਰ ਧਿਆਨ ਹੋਇਕੇ ਬਿੰਦਾ
ਜਲ ਪਰ ਮੂਰਤ ਬਣ ਗਈ ॥ ਅਸੁਰ ਲਗੇ ਤਪਣ ॥ ਤਬ
ਊਹਾਂ ਤਪਸੀ ਪਾਸ ਜਾਇਕੇ ਸੁਬੇਲਦੈਤ ਬੇਲਦੈਤ ਲਗੇ
ਕਹਿਣ ॥ ਹਾਇ ਹਾਇ ਨਾਰ ਕੌਣ ਲੈਗਏ ਤਾਂ ਤਪਸੀ ਬੋ-
ਲਿਆ ਅਰੇ ਬਕਬਾਦ ਨ ਕਰੋ ॥ ਸਕਤ ਸਦਾ ਹੀ ਪੂਰਣ
ਹੈ ॥ ਸੁਣਕਰ ਮਤਵਾਲੇ ਉਬੜ ਮਨਮੁਖ ਮਾਰਿਮਾਰਿ ਕਰ
ਤਪਮੀਸ ਮੁੰਡਨੋਂ ਮਾਰਨ ਦੌੜੇ ॥ ਤਾਂ ਤਪਸੀ ਵਿਚਾਰਿਆ
ਮੇਰਾ ਮੇਰੇ ਚੇਲੇ ਦਾ ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਜੁਧਦਾ ॥ ਹਮ ਬ੍ਰਹਮਣ
ਬ੍ਰਹਮ ਪਾਰਜਣ ਹਾਂ ॥ ਤਾਂ ਮ੍ਰਿਗ ਸ਼ੇਰਕੀ ਛਾਲਾ ਸੀ ॥ ਹੀਕਾ
ਰੀ ਅਤੇ ਤੇਜ ਪੁੰਜ ਪੁਰਖ ਨਿਕਾਸਕੇ ਜੁਧ ਕੀਤਾ ਦਸ ਲਖ
ਪੰਜ ਹਜਾਰ ਬਰਸ ॥ ਤਾਂ ਦੇਵੀ ਉਠੀ ਮੂਰਤਿ ਕਹ ਕਰਿ
ਅਸੁਰ ਖਪਾਏ ॥ ਉਸ ਪੁਰਖ ਨੂੰ ਕਹਿਆ ਹੇ ਤਪਸੀ ਕੇ ਤੁਪ
ਤੁਧ ਮੇਰੀ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰੀ ਹੈ ॥ ਮੈਂ ਭੀ ਏਕ ਬੇਰ ਤੁਮਾਰੀ
ਬੁਲਾਈ ਆਵਾਂਗੀ ॥ ਮਾਂਗ ਵਰ ਪ੍ਰਸੰਨ ਹੂਈ ਹਾਂ ॥ ਤੇਰਾ

ਥਪੁ ਈਹੀ ਰਹੋ ਦੁਸ਼ਟ ਦਮਨ ਨਾਮ ਤੇਰਾ ਹੂਆ ॥ ਇਹ ਸਭ ਸੰਗਤ ਤੇਰੀ ਹੂਈ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਹੀ ਸਰੂਪ ਰਖੀਂ ॥ ਤਾਂ ਪੁਰਖ ਬੋਲਿਆ ਨਾਮ ਸਿੰਘ ਕੇਸ ਖੁਲੇ ॥ ਕਟ ਤਾਗੇ. ਬਿਨਾ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਕਾ ਤੇਜ ਅਰ ਜੋ ਰਚਨਾ ਅਰ ਬਚਨ ਪਦਵੀ ਭੋਗ ਮੋਖ ਮਿਲੇ ਅਸੁਰ ਜੁਧ ॥ ਤਾਂ ਦੇਵੀ ਬੋਲੀ ਚਉਥੇ ਜੁਗ ਕਾ ਪਹਿਲਾ ਪਹਿਰਾ ਹੋਵੇਗਾ ॥ ਤਬ ਰੁਦ੍ਰ ਸ਼ੰਕ੍ਰ ਨਾਮ ਹੋਇ ਉਤਰੇਗਾ ॥ ਬਿਸ਼ਨ ਭਾਣਜਾ ਹੋਇ ਉਤਰੇਗਾ ॥ ਤਾਂ ਮੈਂ ਭੀ ਤੁਮਾਰੀ ਬੁਲਾਈ ਤੁਮਾਰੇ ਬੀਚ ਸਬਦ ਪ੍ਰਕਾਸ ਕਰਿ ਆਵਾਂ ਗੀ ॥ ਇਕ ਮੇਰਾ ਵਸਤ੍ਰ ਪਵਿਤ੍ਰ ਆਖ ਅੰਜਨ ਕੁਟਬ ਮੋਹਨੀ ਕਰਨਾ ॥ ਐਸੇ ਕਹਿਕੇ ਪ੍ਰੇਮ ਕਰ ਲਗੀ ਚਾਟਨ ॥ ਖੁਸੀ ਹੋਈ ਇਕ ਚੂੜੀ ਇਕ ਪਰਾਂਦਾ ਇਕ ਕਰਦ ਦਈ ॥ ਤਾਂ ਬੋਲੀ ਸਿੰਘ ਕੋ ਖਾਲ ਤੇ ਖਾਲਸਾ । ਤੇਜ ਸਿੰਘ ਕਾ ਅਗਾੜੀ । ਪਿਛੇ ਪਛਤਾਵਾ ਉਨਮਾਦ ਵਸਤ ਕਾ ਇਹ ਤੇਰੇ ਪੰਥ ਕੀ ਦੇਵਾਂਗੀ ॥ ਕਸਟ ਦੇਹ ਕਾ ਕਹਿ ਕਰਿ ਗਈ ॥ ਓਹ ਪੁਰਖ ਤਪਸੀ ਪਿਤਾ ਪਾਸ ਆਇਆ ॥ ਤਾਂ ਤਪਸੀ ਕੇਹਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਪਿਤਾ ਹੀ ਰਹਾਂਗਾ ॥ ਬਾਲਕ ਹੁੰਦੇਕਾ ਤੇਰਾ ਜੁਧ ਨਾ ਦੇਖਾਂਗਾ ॥ ਦੇਵੀ ਵਰ ਜੋ ਤੈਂ ਪਾਇਆ ਹੈ ਮੇਰੀ ਰਖਿਆ ਕਰ ਲਈ ॥ ਜਾਵੋ ਤਪ ਕਰੋ ਗੋਦਾਵਰੀ ਕੇ ਤਟ ਪਰ ॥ ਗੋਭੀ ਕੀ ਨਿਆਈਂ ਮੇਰੇ ਤੇ ਉਪਜਾ ਹੈਂ ॥ ਤੇਰਾ ਨਾਉਂ ਮੈਂ ਗੋਬਿੰਦ ਰਖਿਆ ਹੈ ॥ ਸਿੰਘ ਕੀ ਪਦਵੀ ਦੇਵੀ ਦੇ ਛਡੀਹੈ ॥ ਤਾਂ ਪ੍ਰਣਾਮ ਡੰਡੌਤ ਕਰਕੇ ਪੁਰਖ ਗਯਾ

ਨਦੀ ਪਰ ਤਪ ਆਰੰਭਿਆ ਸਮਾਧ ਲਗਾਈ ॥ ਐਸੀ ਮਾਇਆ ਭਈ ਸਮਾਧ ਹੀ ਰਹੀ ॥ ਭੀਤਰ ਤੇ ਕਲਸ ਦ ਪਤ੍ਰਾ ਨਿਕਸ ਜਨਮੀ ਭਾਗਣ ਮਾਤਾ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਘੂਰ ਮ ਸਮਾਧੀ ਉਹ ਤਪਸੀ ਹੂਆ ॥ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਦੂਇ। ਬਾਲਕ ਹੀ ਥੇ ਤਾਂ ਤਿਆਗ ਦੇਹ ਸੁਰ ਪੁਰ ਗਏ। ਉਹ ਪੁਰਖ ਦੁਸ਼ਟ ਦਮਨ ਮੈਂ ਗੁਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਹੂਆਜੂ ॥ ਗਣ ਸਭ ਤਪਸੀ ਕੇ ਹੁਏ ਥੇ ਸੋ ਖਾਲਸਾ ਸੰਗਤਿ ਹੂਈ। ਦੇਵੀ ਕੀ ਸ਼ਕਤਿ ਵਰ ਕੀ ਥੀ ਸੋ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਸ਼ਕਤਿ ਤਪ ਕੀ ਥੀ ਸੋ ਬਿਧਿ ਪਿਛਲੀ ਐਸੀ ਹੀ ਥੀ ॥ ਭਾਈ ਬੁਢਾ ਬੋਲਿਆ ਭਾਈ ਲਿਖਾਰੀਆ ਲਿਖ ਇਹ ਵਾਕ ਗੁਰੂ ਕਾ ਸੁਣਕੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ॥ (ਸੌ ਸਾਖੀ ਮੇਂ ਸਾਖੀ ੧੩) ॥

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰੋ ਆਪਹੀ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਦੇਖੋ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਮਾਨਤਾ ਔਰ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੇ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸੇ ਹੀ ਪੰਥ ਬਨਾ ਔਰ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕਾ ਦੀਆ ਚੂੜੀ (ਕੜਾ) ਪਰਾਂਦਾ ਕਰਦ ਸਿੰਘ ਲੋਗ ਆਜ ਤਕ ਧਾਰਨ ਕਰਤ ਹੈਂ ॥

(੨੨) ਏਕ ਬੇਰ ਮਾਤਾ ਜੀ ਕਹਿਆ ਮੇਰਾ ਮਨ ਬੌਰਾ ਹੈ ਤੇਰੇ ਮੋਹ ਕਰਕੇ ਬੇਟਾ ਮੁਹਿ ਸੁਖ ਨਹੀਂ ਦੇਖਿਆ। ਪਹਿਲੋਂ ਪ੍ਰਲੋਕ ਪਧਾਰੇ ਆਪ ਤੁਮਾਰੇ ਪਿਤਾ। ਆਜ ਹਉ ਇਕਾਂਤ ਆਇ ਬੈਠੀ ਹਾਂ। ਬੇਟਾ ਜੀ ਗੁਰੂਆਂ ਦੇ ਗੁਰੂ ਤੁਸੀ ਮੇਰੇ ਭੇਜਨਮੇ ਸਮਰਥ ਵਾਲੇ। ਅਤੇ ਦੇਖਾਂ ਮੈਂ ਕਿਆਗਤਿ ਮੋਹਿ ਛੁਟਦਾ ਨਹੀਂ। ਤੁਸੀ ਬੋਲਦੇ ਨਾਹੀਂ ਸ਼ਰੀਕ ਕਹਿੰਦੇ

ਹੈਨ। ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਦੇਵੀ ਨੂੰ ਸਾਧਿਆ ਇਸੇ ਵਾਸਤੇ ਸ੍ਰੀਨ ਸਮਾਧ ਹੋਗਈ। ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਹੈ ਹੋਮ ਕਾ ਅਰੰਭ ਪੂਰਾ ਨਾ ਹੋਇਆ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਸਾਧਕ ਖਿਸਕ ਗਇਆ। ਤਾਂ ਹੁਣ ਤੁਸੀ ਮੁਝੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰ ਕੈਹ ਦੇਵੋ। "ਗੁਰਦੇਵ ਮਾਤਾ ਗੁਰ ਦੇਵ ਪਿਤਾ" ਇਬਾਚਮਾਨਕੇ। ਤਾਂ ਸੁਨਕੇ ਚੁਪਤੇ ਉਠੇ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਕਿਨਾਰੇ ਸਿਲਪਰ ਲੈਕੇ ਜਾਇ ਬੈਠੇ। ਦੇਵਤਾ ਕੀ ਬਾਤ ਕੈਹਣੀ ਨਹੀਂ ਭਲੀ। ਪਰ ਕੈਹਣਾ ਬਣਾ ਤੁਮਾਰੇ ਹਠਤੇ॥

ਦੋਹਰਾ ॥ ਜਬ ਉਠੇ ਹਮ ਪਾ ਉਠੇ ਖੋਜੇ ਸਭ ਦਿਸ ਥਾਨ। ਜਗਯੋਚਿਤ ਪੂਜੇ ਕਿਸੇ ਤੁਰਤ ਹੋਇ ਪਬਰਾਨ। ਤੁਬੈ ਬੁਲਾਯਾ ਕੇਸ਼ੋਦਾਸ। ਕਾਂਸ਼ੀ ਵਾਸੀ ਸਾਰਸੁਤ ਭਾਸ। ਪਾਂਧਾ ਕਸਪ ਦੇਵਕਾ ਤੰਤ੍ਰ। ਜਪਦਾ ਰੈਹਤ ਦੇਵਕਾ ਮੰਤ੍ਰ। ਤਰਕ ਤੁਰਤ ਮਾਰੇ ਬਿਧ ਐਸੀ। ਨੈਨੂ ਪੁਤ੍ਰੀ ਸੇਵਹਿ ਬੈਸੀ। ਡੇਰਾ ਫਿਰਕਰ ਗਿਰ ਪਰ ਚੜ੍ਹੇ। ਗੁਹਾ ਉਛੇ ਛੋਟੀ ਸੀਵੜੇ। ਮੁਖਾ ਗੁਰੂਨੰਦਾ ਤਿਥਅੰਤ। ਹੋਈ ਅਰਾਧਨ ਧਰਾ ਨਮਿਤ। ਪਾਂਚ ਪੈਹਰਕਾ ਹੋਮ ਅਰੰਭਾ। ਸਭਕੋ ਸੌਂਪ ਦੀਆ ਗੁਰ ਪੰਧਾ। ਬਾਰਹ ਪੈਹਰ ਅਰੰਭਾ ਏਕ। ਤਾਂ ਮੈਂ ਦੇਵੀ ਮੂਰਤ ਟੇਕ। ਲਗੇ ਰੈਨ ਦਿਨ ਅੰਤ੍ਰ ਭੁਲਾ। ਦੇਹ ਕਾਮ ਸਭ ਅੰਗਨ ਝੁਲਾ। "ਓੁਣ ਓੁਨ ਮਣ ਮੁਨ ਗੁਣ ਗੁਣ ਰੁਣ ਰੁਨ"। ਸੋਲਾਂ ਅੰਕ ਜਾਪ ਕੀਓ ਧੁਨ ਝੁਣ। ਕੰਬਦ ਕਹਿਆ ਗੁਰੂ ਦੀਓ ਭੇਟ। ਮੇਰਾ ਹੋਇਗਾ ਤੁਮਰਾ ਓਟ। ਹਮ ਛਤ੍ਰੀ ਤੁਮ ਸਾਰਸੁਤੱਈਆ। ਹਮ ਸੁਤ ਤੁਮਰੇ

ਤੁਮਹਿ ਜਨੱਈਆ। ਕਹਿਓ ਵਿਪ੍ਰ ਤੁਮ ਹਮਰੇ ਅੰਗ। ਜਾ-
ਨਤ ਹੋ ਤੁਮ ਧਰਕੇ ਰੰਗ। ਦੇਵ ਅਰਾਧਨ ਉਦਮ ਧਾਰਾ।
ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਗੁਰੂ ਤੂੰ ਵੰਸ ਨਿਸਤਾਰਾ। ਮੇਰਾ ਕਹਿਣਾ ਤੁਮਰਾ
ਹੇਤ। ਰੈਨ ਦਿਨਾਂ ਨਿਤ ਪੜ੍ਹੋ ਸੁਚੇਤ। ਸੁਧਕਾਇ ਬ੍ਰਹਮਚਰਜ
ਰੈਹਣਾ। ਮੋਨ ਹੋਇ ਅਨਸੁਣੈ ਨ ਕੈਹਣਾ। ਜਾਂ ਬਿਧ ਮਾਤਾ ਰੁਚ
ਉਪਜਾਈ। ਗੁਰੂ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਿਤ ਹੂਈ ਸਵਾਈ। ਅਰਪੀ ਦੇਹ
ਗੇਹ ਕੀ ਬਾਤ। ਅਲਪ ਅਹਾਰ ਘ੍ਰਿਤ ਤਿਲਸਾਤ। ਪਾਂਚ
ਮਾਸ ਤੇ ਨੈਨ ਉਘਾਰਾ। ਸੁਪਨ ਸੁਹਾਇ ਅਊ ਇਕਬਾਰਾ।
ਜਾਂ ਜਗ ਨਹਿ ਆਊ ਦਿਵਦੇਵਾ। ਨਾਰ ਮਾਨਖੀ ਤੇਜ ਬਿ-
ਦੇਹਾ। ਤਬ ਜਾਗ੍ਰਤ ਸੁਪਨ ਇਕ ਸਮ ਭਇਆ। ਬੀਤੇ ਮਾਸ
ਨਵਮ ਦਸ ਅਗਿਆ। ਏਕਾਦਸ ਤਿਥ ਨਵਮੀ ਮਾਈ। ਰਵਿ
ਦਿਨ ਰਹਿਆ ਪਹਿਰਾਈ। ਏਲੇ ਮਿਸ੍ਰ ਆਈ ਸੁਰਦੇਵਾ
ਮਾਂਗੇਗੀ ਭੇਟ ਦੇਹ ਸੁਖਸੇਵਾ। ਸੁਪਨ ਮਹਿਆ ਮ੍ਰਹ ਜਾਗ੍ਰਤ
ਮਾਂਝ। ਲੈ ਆਉ ਭੇਟਾ ਦਿਵਰਾਜ। ਕਾਲੀ ਆਵੈ ਅਬਵਾ
ਪ੍ਰਾਤ। ਕਰੀ ਉਨ ਭੀਤ ਚਿਤ ਰਖਿਸਾਂਤ। ਬਲੇ ਮਿਸਰ ਕਛੁ
ਮਨ ਭਇਆ ਬਰਾ, ਜਾਂ ਇਧ ਮਮਾਵਿਗ ਰਹੀ ਨਿਹੋਰਾ।
ਯਾਮ ਇਕ ਦਿਨ ਘੜੀਅ ਚਾਰ। ਤੇਗ ਨਗ ਪਰਤੱਤ ਝੂਮਕੇ
ਪਹਾਰ। ਕਿਆ ਦਾਮਨੀ ਕਿਆ ਸੂਰਜ ਇੰਦ। ਦਮਕਿਓ
ਜਗਨ ਮੂਰਤ ਭੁਇ ਲਿਗ। ਮੀਚ ਨੈਨ ਉਠ ਹੂਆ ਠਾਂਢਾ।
ਨਿਰਖੀ ਏਕਬਾਰ ਮਖਨਾਂਡਾ। ਤੁਮਹਾਂ ਤੁਮਹੀ ਬਚਨ ਪ੍ਰਕਾ।
ਸਾਧਰਮ ਮਾਚ ਸਾਚ ਭਇਓ ਆਜ ਨਿਵਾਸਾ। ਮਗਨ ਹੁਆ

ਜਗ ਗਹਿਓ ਭੁਲਾਈ। ਬੇਂਟਾ ਨਿਕਸਾ ਭੇਟ ਕਹਾਈ। ਬੋਲੀ ਹਸਤਮੀਚ ਗਰਜਾਨੀ। ਪੰਥਕੇਸ ਢੀਆ ਫੁਰਮਾਨੀ। ਪੀਛੇ ਉਸਤਤ ਕਰੀਓ ਦਾਸਾ। ਰਖ ਮੀਚੇ ਮੀਚ ਹੁਇਜਾਉ। ਪੀਛੇ ਪੰਥ ਥੀ ਨਿਕਸਾਉ। ਚਾਲੀਬਰਸ ਪੀਛੇ ਵਰਤਾਈ। ਰਹੇ ਰਾਜ ਤੁਰਕਨਕੋ ਖਾਈ। ਤੁਮਰੀ ਚਾਹ ਪੂਰਨ ਅਬ ਭਈ। ਮੇਰੋਂ ਕਹਿਓ ਸਾਚ ਦਿੜ੍ਹਹਈ। ਸਸਤ੍ਰ ਛੁਰੀ ਲੇਹੁ ਇਹ ਮੇਰਾ। ਜਲ ਮਿਠ ਫੇਰਿ ਵਪੁ ਮਾਬਤ ਵੇਰਾ। ਸੂਰ ਹੋਇਗਾ ਸਿਦਕ ਤੁਮਾਰਾ। ਦਾਜੈ ਮਮਕੋ ਫੇੜ ਪਹਾਰਾ। ਛੁਰੀ ਪਕਰ ਵਪੁ ਰਕਤ ਨਿਕਾਰਾ। ਬੂੰਦ ਲਇ ਅਪਰੂਪ ਸਵਾਰਾ। ਲੈਕਰ ਬੋਲਾ ਭੁਟਾ ਲੇਹੂ। ਕਛਨੀ ਭਛਨੀ ਛਹ ਮਮ ਹੇਹੁ। ਤੁਮਰੀ ਮਹਾਇ ਜੁਧਮੇਂ ਆਊ। ਟਿਬ ਲਾਜ ਕੋ ਪਤਤ ਨਾ ਪਾਊ। ਗਏ ਦੇਵ ਗਣ ਮਣ ਮੋਂ ਉਲਟੀ। ਜਗਤ ਰੀਤ ਸਭ ਤਾ ਦਿਨ ਛਟਕੀ। ਕੁਛਕ ਅੰਤਰਾ ਮਾਤਾ ਸੋ ਰਾਖਾ। ਨਹਿ ਪੂਛੇ ਦੇਵੀ ਇਹ ਭਾਖਾ। ਮਾਤ ਸਾਂਤ ਭਈ ਤਿਹ ਬੇਰਾ। ਪੀਛ ਫਿਰੀ ਘਰ ਧਨਹਿ ਨਿਬੇਰਾ। ਗੁਰ ਮਾਇਆ ਨਹਿ ਜਾਤ ਲਖਾਨਾ। ਤਿਆਗੀ ਮਾਇਆ ਹੋਇ ਮਸਤਾਨਾ। ਕਹੋ ਘਰਿ ਕੁਲਕੇ ਸਭਜਨ ਸਗਰੇ। ਰਾਜਨ ਸੰਗ ਵੈਰ ਭਇਓ ਤਗਰੇ। ਰਾਜਾ ਸਭ ਮਿਲ ਧੂਮ ਮਚਾਈ। ਲਰੇ ਸਿਖ ਗੁਰ ਮਸਤਕ ਨਿਆਈ। ਆਇਆ ਭੇਰਵਾ ਦਿਨ ਕੇਸਵ। ਹਾਥ ਜੋਰ ਬੋਲੇ ਸਭ ਸੇਸਵ। ਦੇਵ ਕ੍ਰਿਪਾ ਮਮ ਤੁਮ ਪ੍ਨਾਦ। ਦਓ ਮੰਤ੍ਰ ਕੁਲ ਗੁਰ ਮੁਹ

ਆਦ। ਸਵਾ ਲਾਖ ਦੇਊਂਗਾ ਧਨਾ। ਇਹ ਕੈਹ ਮੋਲਿਓ ਅੰਗਨ ਘਨਾ। ਜਾਹ ਹਮ ਤਹਾਂ ਤੁਮ ਐਸੀ ਬਨੀ। ਸਬਹੀ ਤੁਮਰੇ ਰਛਕ ਗੁਨੀ॥ (ਸੌ ਸਾਖੀ ਮੇਂ ਸਾਖੀ ੧੭)।

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਕੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਸੇ ਵਾਰਤਾ ਲਾਪ ਸੇ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਪੂਜਨ ਕੀ ਔਰ ਕਰਵਾਨੇ ਵਾਲੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਕੋ ਸਵਾ ਲਾਖ ਰੁਪਯਾ ਭੇਟਾ ਦੀ॥

ਸਿੰਘਾਂ ਮੇਂ ਸੱਚਾ ਸ਼ਹੀਦ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਜੀ ਕੀ ਸਾਖੀ ਭਗਤ ਰਤਨਾਵਲੀ॥

(੨੩) ਤਾਂ ਸਿਖਾਂ ਨੇ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪਾਸ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਕੀਤਾ। ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਦਸਵੀਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਖਾਲਸਾ ਵਰਤਾਇਆ। ਤ ਦੇਵੀ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਈ ਹੈ। ਦੇਵੀ ਦੀ ਉਪਾਸਨਾ ਕੀਤੀ ਹੈ ਸੋ ਸਾਖੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਕੇ ਸਾਨੂੰ ਸੁਣਾਈਏ। ਤਾਂ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਜੀ ਹੋਰਾਂ ਕਹਿਆ ਇਕ ਸਮੇਂ ਸਾਹਿਬ ਦਸਵੀਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਕਾਂਸ਼ੀ ਤੇ ਪੰਡਿਤ ਬੁਲਾਇਆ। ਤੇ ਉਸਨੂੰ ਬਚਨ ਕੀਤਾ ਭਾਈ ਛਤ੍ਰੀਆਂ ਨੇ ਜੋ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਛੱਡ ਦਿੱਤੇ ਹਨ। ਤੇ ਮਲੇਛਾਂ ਨੇ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਫੜ ਲਏ ਹਨ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਮਲੇਛਾਂ ਦਾ ਰਾਜ ਤੇਜ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਤੇ ਅਸਾਂ ਨੇ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਫੇਰ ਫੜਾਇਕੇ ਰਾਜ ਮਲੇਛਾਂ ਥੋਂ ਫੇਰ ਲੈਣਾ ਹੈ। ਚਿਕੜ ਵਿਚੋਂ ਸੋਇਨਾ ਕੱਢ ਲੈਣਾ ਹੈ। ਅਸਾਨੂੰ ਦੇਵੀਕੀ

ਉਪਾਸਨਾ ਕੇ ਮੰਤ੍ਰ ਕਰੋ। ਤਿਸ ਕਰਕੇ ਦੇਵੀ ਪ੍ਰਤਖ ਹੋਵੇ। ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜ ਮਲੇਛ ਤਾਂ ਬਹੁਤੇ ਹੈਨ ਤੇ ਸਭ ਦੇਸਾਂ ਵਿਚ ਪਸਰੇ ਹੋਏ ਹੈਂ। ਤੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਹੁਣ ਸ਼ਸਤ੍ਰਾਂ ਨੂੰ ਪਕੜੇਗਾ। ਏਹ ਮਲੇਛਾਂ ਥੋਂ ਕਿਸਤਰਾਂ ਜੀਤੈਂਗੇ। ਬਚਨ ਹੋਇਆ ਜੈਸੇ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਕਪਾਂ ਅਰ ਭਾਲਕਾਂ ਸੇ ਰਾਕਸ਼ਾਂ ਦਾ ਨਾਸ ਕਰਵਾਇਆ ਹੈ। ਤੈਸੇ ਹਮ ਇਨਾਂ ਤਕੜੀ ਪਕੜਨ ਵਾਲਿਆਂ ਸੇਂ ਅਰ ਹਲ ਵਾਹੁਣ ਵਾਲਿਆਂ ਸੇਂ ਸਭ ਮਲੇਛਾਂ ਦਾ ਨਾਸ ਕਰਾਵਣਾ ਹੈ। ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜ ਜੇ ਤਾਂ ਬਰਸਰਾਤੀ ਤੁਸੀ ਨੇਮ ਕਰੋ ਤੇ ਖਲ ਦੇਵੀ ਦਾ ਪਾਠ ਕਰਵਾਓ ਤਾਂ ਦੇਵੀ ਪ੍ਰਤੱਖ ਹੋਵੇਗੀ। ਤਾਂ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਨੈਣਾ ਦੇਵੀ ਕੇ ਟਿੱਲੇ ਉਤੇ ਬੈਠਕੇ ਹੋਮਦਾ ਆਰੰਭ ਕੀਤਾ। ਚੇਤ੍ਰ ਦੇ ਨਵਰਾਤ੍ਰਿਆਂ ਦੀ ਅਸ਼ਟਮੀ ਕੇ ਦਿਨ ਜਬ ਬਰਸ ਕਾ ਦਿਨ ਪੂਰਾ ਹੋਇਆ ਤਬ ਪੰਡਤਾਂ ਨੇ ਸਭ ਦੇਸਾਂ ਦੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਯੱਗ ਦੇ ਨਿਉਂਦੇ ਵਾਸਤੇ ਬੁਲਾਏ। ਤੇ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਅਰਦਾਸ ਕੀਤੀ ਜੋ ਤੁਸਾਂ ਇਕ ਕੋਈ ਪਵਿਤ੍ਰ ਮਾਨੁਖ ਦੇਵੀ ਕੇ ਹੋਮ ਵਾਸਤੇ ਤਿਆਰ ਕਰਨਾ। ਤਿਸ ਪਿਛੇ ਬ੍ਰਹਮ ਭੋਜ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾਂ ਨੂੰ ਖਵਾਵਣਾ ਤਾਂ ਬਚਨ ਹੋਇਆ ਹੇ ਪੰਡਿਤ ਅਸੀ ਤੈਨੂੰ ਹੋਮ ਦੇਵਾਂਗੇ। ਤੇ ਜਿਤ ਵੇਲੇ ਦੇਵੀ ਪ੍ਰਤੱਖ ਹੋਈ ਤਾਂ ਅਸੀ ਕਹਾਂਗੇ ਇਹ ਪੰਡਤ ਅਸਾਡਾ ਜੀਵੇ। ਤੇ ਜੋ ਇਹ ਕਹੇ ਸੋ ਅਸੀ ਵਰ ਮੰਗਾਂਗੇ। ਤਾਂ ਪੰਡਿਤ ਭੈਮਾਨ ਹੋਇਕੇ ਕਹਿਆ ਮੈਂ ਇਸ਼

ਨਾਨ ਨਦੀ ਤੇ ਕਰਿ ਆਵਾਂ ਤੇ ਤੁਸੀ ਹੋਮ ਕਰੋ ਤੇ ਮੰਤਰ ਪੜ੍ਹੋ। ਤਾਂ ਮੰਤ੍ਰ ਪੜ੍ਹਦਿਆਂ ਹੀ ਦੇਵੀ ਪ੍ਰਤੱਖ ਹੋਈ ਤਾਂ ਕਰਦ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਹੱਥ ਦਿਤੀ ਤਾਂ ਸਾਹਿਬ ਕਰਦ ਲੈਕੇ ਧਿਆਨ ਧਰਕੇ ਨੇਤ੍ਰ ਮੂੰਦ ਲੀਏ। ਤੇ ਦੇਵੀ ਅਲੋਪ ਹੋਈ ਤੇ ਸਵਾ ਲਾਖ ਸੀਸ ਸਿਖਾਂ ਦੇ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਸਮਰਪਣ ਕੀਤੇ। ਜੋ ਸ਼ਸਤ੍ਰਾਂ ਕਰ ਜੂਝਨਗੇ ਤੇ ਸ਼ਸਤ੍ਰਾਂ ਦੀ ਭੇਟ ਹੋਵਣਗੇ। ਤੇ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਵਨਗੇ। ਤਾਂ ਲਾਂਗਰੀਆਂ ਨੇ ਅਰਦਾਸ ਕੀਤੀ ਜੀ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜ ਲੰਗਰ ਤਿਆਰ ਹੈ। ਤਾਂ ਉਸ ਸਮੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਸਭ ਆਪੋ ਆਪਣੇ ਘਰਾਂ ਵਿਚ ਤੇ ਸਿਖ ਸਭ ਹਜੂਰ ਬੈਠੇ ਹੈਸਨ ਤਾਂ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸਾਹਿਬਾਂ ਕਰਦ ਦੀ ਭੇਟ ਕਰਕੇ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਵਰਤ ਇ ਦਿੱਤਾ ਤਾਂ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾਂ ਨੂੰ ਖਬਰ ਹੋਈ। ਤਾਂ ਸਭੇ ਇਕੱਠੇ ਹੋਇਕੇ ਕਾਂਸੀ ਦੇ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਪਾਸ ਗਏ। ਲਗੇ ਸਭ ਬ੍ਰਾਹਮਨ ਕ੍ਰੋਧ ਕਰਨ। ਜੋ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਛੂਤ ਕਰ ਛੋਡਿਆ ਹੈ। ਤੇ ਅਸੀ ਖੁਧਿਆਰਥੀ ਰਹੇ ਹਾਂ। ਤਾਂ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਪਾਸ ਸਿਖਾਂ ਆਨ ਅਰਦਾਸ ਕੀਤੀ। ਜੋ ਬ੍ਰਹਮਣ ਕਲਪਦੇ ਹੈਂ॥ ਤਾਂ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਭਾਈ ਨੰਦਲਾਲ ਨੂੰ ਉਨਾਂ ਦੇ ਮਨਾਵਣ ਵਾਸਤੇ ਘਲਿਆ ਤੇ ਇਹ ਸਵੈਯਾ ਲਿਖ ਘੱਲਿਆ॥

ਸਵੈਯਾ॥ ਜੋ ਕਿਛੁ ਲੇਖੁ ਲਿਖਜੋ ਬਿਧਨਾ ਸੋਈ ਪਾਯਤ ਮਿਸ੍ਰਜੁ ਸੋਕ ਨਿਵਾਰੋ। ਮੇਰੋ ਕਛੂ ਅਪਰਾਧ ਨਹੀ ਗਯੋ ਯਾਦ ਤੇ ਭੂਲ ਨ ਕੋਪ ਚਿਤਾਰੋ॥ ਬਾਗੋ ਨਿਹਾ

ਜੀ ਪਠੇ ਦੇ ਹੋ ਆਜ ਭਲੇ ਤੁਮਕੋ ਨਿਹਾਰੇ ਜੀਅਧਾਰੋ । ਛਤ੍ਰੀ ਸਭੈ ਕ੍ਰਿਤ ਬਿਪਨ ਕੇ ਇਨਹੂੰ ਪੈ ਕਟਾਛ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੈ ਨਿਹਾਰੋ ॥ ੧ ॥ਜੁੱਧ ਜਿਤੇ ਇਨਹੂੰ ਕੇ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਇਨ ਹੀ ਕੇ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁ ਦਾਨ ਕਰੇ ॥ ਅਘ ਓਘ ਟਰੈ ਇਨਹੀ ਕੈ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਇਨਹੀ ਕੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਫੁਨ ਧਾਮ ਭਰੇ ॥ ਇਨਹੀ ਕੇ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਸੁ ਬਿਦਿਆ ਲਈ ਇਨਹੀ ਕੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਬ ਸਤ੍ਰੁ ਮਰੇ॥ ਇਨਹੀ ਕੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੇ ਸਜੇ ਹਮ ਹੈ ਨਹੀਂ ਮੋਸੇ ਗ੍ਰੀਬ ਕਰੋਰ ਪਰੇ ॥ ੨ ॥ ਸੇਵ ਕਰੀ ਇਨਹੀ ਕੀ ਭਾਵਤ ਔਰ ਕੀ ਸੇਵ ਸੁਹਾਤ ਨ ਕੀਜੋ ॥ ਦਾਨ ਦੀਯੋ ਇਨਹੀ ਕੋ ਭਲੋ ਅਰ ਆਨ ਕੋ ਦਾਨ ਨਾ ਲਾਗਤ ਨੀਕੋ ॥ ਆਗੈ ਫਲੈ ਇਨਹੀ ਕੋ ਦਯੋ ਜਗ ਮੋ ਜਸੁ ਔਰ ਦਯੋ ਸਭ ਫੀਕੋ ॥ ਮੋ ਗ੍ਰਿਹ ਮੈ ਤਨ ਤੇ ਮਨ ਤੇ ਸਿਰ ਲੌ ਧਨ ਹੈ ਸਭ ਹੀ ਇਨਹੀ ਕੋ ॥ ੩ ॥

ਦੋਹਰਾ ॥ ਚਟ ਪਟਾਇ ਚਿਤ ਮੈ ਜਰਿਓ ਤ੍ਰਿਨ ਜਿਉਂ ਕ੍ਰੁਧਤ ਹੋਇ ॥ ਖੋਜ ਰੋਜ ਕੇ ਹੇਤੁ ਲਗ ਦਯੋ ਮਿਸਰ ਜੂ ਰੋਇ ॥ ੪॥

ਤਾਂ ਭਾਈ ਨੰਦਲਾਲ ਜੀ ਓਨਾਂ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾਂ ਦੇ ਪਾਸ ਗਿਆ । ਤੇ ਕਹਿਓਸੁ ਜੋ ਸਾਹਿਬਨੇ ਬਚਨ ਕੀਤਾ ਹੈ॥ ਜੋ ਹੁਣ ਨਾਨਾ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਭੋਜਨੁ ਕਰਕੇ ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ ਛਕਾਵਨੇ ਹਾਂ ॥ ਤੇ ਬਸਤ੍ਰ ਸਭ ਦੇਹਾਂਗੇ ॥ ਤੇ ਤੁਸੀਂ ਕ੍ਰੋਧ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ॥ ਤੁਸੀਂ ਅਸਾਂਨੂੰ ਓਸ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ਦੇਲੇ ਭੁਲ ਗਏ ਹੋ ॥ ਤਾਂ ਭਾਈ ਕ੍ਰੋਧ ਸੋਂ ਟਲਿਓ ਨਾਹੀ । ਤਾਂ ਭਾਈ ਜੀਨੇ ਕਹਿਆ ਸਤਿ

ਗੁਰ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਮ ਹੈਨ ਤੁਸੀਂ ਜੀਵ ਰੂਪ ਕਰ ਨਾ ਜਾਣੋ ॥
ਤਾਂ ਉਨਾਂਨੈ ਕਹਿਆ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਤਾਂ ਬਚਿਤ੍ਰ ਨਾਟਕ
ਵਿਚ ਕਹਿਆਹੈ ॥ "ਜੋ ਮੁਝ ਕੋ ਪਰਮੇਸਰ ਉਚਰ ਹੈ ॥ ਤੇ
ਸਭ ਨਰਕ ਕੁੰਡ ਮਹਿ ਪਰਿ ਹੈ" ਅਸੀ ਤੇਰਾ ਬਚਨ ਮੰਨੀ
ਏ ਕਿ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਬਚਨ ਮੰਨੀਏ। ਭਾਈ ਜੀ ਨੇ ਅਗੋਂ
ਕਹਿਆ ਜੋ ਬਚਨ ਸਾਂਗ ਉਪਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ॥ ਸੋ ਸੁਣੀਦਾ ਹੈ
ਕਿਉਂ ਜੋ ਪਿਛੇ ਕਹਿ ਆਏ ਹੈਨ ॥ "ਇਹ ਬਿਧ ਕਰਤ
ਤਪਸਜਾ ਭਯੋ ॥ ਦ੍ਵੈ ਤੇ ਏਕ ਰੂਪ ਹੋ ਗਯੋ" ਤਾਂਤੇ ਸਤ
ਗੁਰਾਂ ਭਗਤ ਦਾ ਅਉਤਾਰ ਧਾਰਿਆ ਹੈ ॥ ਜੈਸੇ ਸ੍ਵਾਂਗੀ
ਸ੍ਵਾਂਗ ਧਾਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਪਿਛਲਾ ਰੂਪ ਪ੍ਰਗਟ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ
ਚਾਹੀਦਾ ॥ ਤਾਂ ਉਨਾਂਨੈ ਕਹਿਆ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਕਰਨ ਕਾਰਨ
ਹੈਸਨ। ਤਾਂ ਦੇਵੀ ਦੇ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇਆਂ ਨੇਤ੍ਰ ਕਿਉਂ ਮੁੰਦ
ਲਏ ॥ ਤਾਂ ਭਾਈ ਜੀਨੇ ਕਹਿਆ ਦੇਵੀਕੋ ਨੇਤ੍ਰ ਵਿਚ ਨਿ-
ਵਾਸ ਦੀਆ ਹੈ ਜੋ ਮਲੇਛ ਹੈਨ ਇਨਾਦਾ ਤੇਜ ਨਾ ਸਹਾਰ
ਸਕਨਗੇ ॥ ਤਾਂ ਸਤਿਗੁਰ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਭਗਤਾਂ ਕੋ ਵਡਿ
ਆਈ ਦੇਂਦੇ ਆਏ ਹੈਨ ਤੈਸੇ ਹੀ ਸਾਹਿਬ ਨੈ ਖਾਲਸੇ ਜੀ
ਨੂੰ ਰਾਜੁ ਭੀ ਗੁਰਿਆਈ ਭੀ ਦਿਤੀ ਹੈ ਇਹ ਜੋ ਗੁਰੂ ਕੇ
ਸਿਖ ਨਿਤ ਪ੍ਰਤਿ ਸਬਦ ਸੁਣਦੇ ਹੈਨ ਤੇ ਨਾਮੁ ਜਪਦੇ ਹੈਨ
ਇਸ ਕਰਕੇ ਇਨਾਂਦੇ ਮਨ ਸੁਧ ਹੈਨ ॥ ਕੋਈ ਤਪਵਾਨ ਹੈ
ਕੋਈ ਗਿਆਨੀ ਹੈ ਇਸ ਕਰਕੇ ਪੂਜਨੀਕ ਹੈ ॥ ਤਾਂ ਬ੍ਰਹਮਣਾਂ
ਨੂੰ ਖੁਸੀ ਕਰਕੇ ਭਾਈ ਨੰਦ ਲਾਲ ਜੀ ਮਨਾਇਕੇ ਹਜੂਰ

ਲੈ ਆਏ ॥ ਸਭਨਾਂ ਨੂੰ ਭੋਜਨ ਖਵਾਇਕੇ ਰੁਪਯਾ ਰੁਪਯਾ ਦਖਣਾ ਦੇਕੇ ਵਿਦਾ ਕੀਤੇ॥ ਤੇ ਕਾਂਸੀ ਦੇ ਬ੍ਰਹਮਣ ਨੂੰ ਲਖ ਰੁਪਯਾ ਭੇਟ ਦੇਕੇ ਕਾਸੀ ਪਹੁੰਚਾਇਆ॥ ਇਤ੍ਯਾਦੀ (ਸ੍ਰੀ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਕ੍ਰਿਤ ਭਗਤ ਰਤਨਾਵਲੀ ਸਾਖੀ ੧੨੧)॥

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰੋ ਉਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਸੇ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਪੂਜਨ ਕੀ ਔਰ ਪੂਜਨ ਕਰਾਨੇ ਵਾਲੇ ਬ੍ਰਹਮਣੋਂ ਕੋ ਲਖ ਰੁਪਯਾ ਭੇਟਾ ਦੀਆ ਔਰ ਬ੍ਰਹਮਣੋਂ ਕੀ ਉਸਤਤੀ ਮੇਂ "ਜੋ ਕਛੁ ਲੇਖ ਲਿਖ੍ਯੋ" ਸ੍ਵੈਯੇ ਭਾਈ ਨੰਦਲਾਲ ਜੀ ਕੇ ਹਥੀਂ ਭੇਜਕਰ ਬ੍ਰਹਮਣੋਂ ਕੋ ਮਨਵਾਯਾ। ਜੋ ਪਾਪੀ ਲੋਗ ਉਕਤ ਸਵੈਯੇ ਬ੍ਰਹਮਣੋਂ ਸੇ ਵਿਰੁਧ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਉਸਤਤ ਮੇਂ ਲਗਾਤੇ ਹੈਂ ਉਨਕੇ ਅਪਨਾ ਛਲ ਕਪਟ ਰੂਪੀ ਲੋਭ ਸੇ ਬਚਨਾ ਚਾਹੀਏ ਨਹੀਂ ਤੋ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਕੇ ਹਜ਼ੂਰੀਏ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਸਚੇ ਸ਼ਹੀਦ ਸ੍ਰੀ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਜੀ ਕੀ ਭਗਤ ਰਤਨਾਵਲੀ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਪੁਸਤਕ ਝੂਠੀ ਸਿਧ ਹੋਗੀ॥ ਔਰ ਜੋ ਕਛੁ ਲੇਖ ਲਿਖ੍ਯੋ॥ ਸਵੈਯੋਂ ਕੇ ਝੂਠੇ ਅਰਥ ਕਰਨੇ ਵਾਲੋਂ ਕੋ ਸ਼ਰਮਾਨਾ ਚਾਹੀਏ॥

ਗੁਰਬਿਲਾਸ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦

(੨੪) ਪ੍ਰਭੂ ਆਛੰਮਾਨੀ ਬਖਾਨੀ ਦਿਜੇਸੰ ॥ ਕਹਿ

ਓ ਸੋਇ ਕੀਜੈ ਭਲੀ ਜੋ ਬਿਸੇਸੰ ॥ ਸਬੈ ਜੋ ਬਿਚਾਰੀ ਇਹੈ ਚੀਤ ਆਈ ॥ ਚਲਜੋ ਨੈਣ ਦੇਵੈਂ ਭਲੀ ਸੁੱਧ ਜਾਈ ॥ ਇਤਜਾਦਿ ਸੇ ਆਗੰ ॥ਇਹ ਬਾਨ ਜਾਨ ਕਰੁਨਾ ਨਿਧਾਨ। ਪੂਜੰਤ ਚੰਡ ਹੈ ਸਾਵਧਾਨ ॥ ਹੋਮੰ ਸੁ ਮੰਤ੍ਰ ਜਪਹੈ ਅਨੇਕ॥ ਬਿਨ ਚੰਡ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਧਰਤ ਏਕ ॥ ੭੬ ॥ (ਗੁਰ ਬਿਲਾਸ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਅਧਜਾਇ ੯ ਕਬਤਾ ਅੰਕ ੬੫ ਔਰ ੭੬)

ਜਪੈ ਸੁੱਧ ਸਿੱਧੀ ਮਹਾਂ ਮੰਤ੍ਰ ਕਾਲੀ । ਨਮੋ ਘੋਰ ਰੂਪੰ ਨਮੋ ਬਿਸ੍ਵਪਾਲੀ॥ ਨਮੋਂ ਚੰਡ ਮੁੰਡੀ ਸਦਾ ਅਸ਼ਟ ਬਾਹਾ । ਸੁਧੰ ਸੁੱਧ ਸਿੱਧੀ ਅਭੂਤੰ ਅਬਾਹਾ ॥ ੧੨੯ ॥ ਸਵਾ ਪਹਿਰ ਦਿਨ ਚੜ੍ਹਤ ਲਗ ਸਵਾ ਜਾਮ ਪਛ ਰਾਤ ॥ ਅਖੰਡ ਪਾਠ ਯੌਂ ਕਰਤ ਹੈ ਸ੍ਰੀ ਕਾਲੀ ਜਗਮਾਤ ॥ ੧੩੫ ॥

ਊਪਰ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰ ਮਹਾਰਾਜਾ ॥ ਪੂਜਤ ਚੰਡ ਗ੍ਰੀਬ ਨਿਵਾਜਾ ॥ ਸਿੱਖ ਸਖਾ ਸਭਹੀ ਤਿਹ ਧਾਏ ॥ ਅਨਿਕ ਭਾਂਤ ਭੇਟਨ ਸਭ ਲਿਆਏ ॥ ੧੭੭ ॥

ਮੁੰਡਕੀ ਮਾਲ ਬਮੈ ਮੁਖ ਜ੍ਵਾਲ ਬਿਸਾਲ ਕਰਾਲ ਮਹਾ ਛਬਿ ਛਾਈ ॥ ਛੂਟੇ ਹੈਂ ਬਾਲ ਬਧਾਲ ਲਏ ਕਰ ਸਜਾਮ ਸਰੂਪ ਲਖਜੋ ਨਹੀਂ ਜਾਈ ॥ ਬਾਮ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਮਹਾਨ ਦਿਪੈ ਬਰ ਜਾ ਤਨ ਸੁੰਭ ਕੀ ਸੈਨ ਖਪਾਈ ॥ ਜੋ ਜਗਮਾਤ ਪ੍ਰਤੱਛ ਭਈ ਇਮ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਲੈ ਬਰਦਾਨ ਕਰਾਈ ॥੨੬੫॥

ਕਹੈਂ ਬਜੁਹ ਮਾਤਾ ਤੁਝ ਕਹਾ । ਜੋ ਤੁਮ ਬਜਾਪ ਚੀਤ ਮਹ

ਰਹਾ ॥ ਮਨ ਮਾਨਿਕ ਮੁਕਤਾ ਧਰ ਰਾਜਾ । ਹੀਰਾ ਕੰਚਨ ਬ੍ਰਿੰਦ ਸਮਾਜਾ॥ ੨੬੬ ॥ਐਸੁਨ ਗਦ ਗਦ ਭਯੋ ਕ੍ਰਿਪਾਲਾ । ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਸੈ ਕਹ ਬਚਨ ਬਿਸਾਲਾ ॥ ਮੱਯਾ ਇਹ ਕ੍ਰਿਪਾ ਅਬ ਕੀਜੇ ॥ ਖੜਗ ਪਾਨ ਵਾਹਨ ਮੁਹ ਦੀਜੇ ॥ ੨੬੭ ॥ ਨਿਸਦਿਨ ਬਿਜੈ ਹੋਇ ਜਗ ਮੇਰੀ । ਅਸੁਰ ਮਲੇਛ ਮਾਰਿ ਕਰ ਢੇਰੀ ॥ ਖੜਗ ਪਾਨ ਕਹ ਨਿਸ ਦਿਨ ਧਿਆਊਂ । ਤੋਰ ਚਰਿਤ੍ਰ ਰੈਨ ਦਿਨ ਗਾਊਂ ॥ ੨੬੮ ॥ ਮਿਤ ਅਨੰਤ ਸੁ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰਾ । ਸੁਖੀ ਬਸੇ ਆਲਮ ਇਹ ਸਾਰਾ॥ ਚਰਨਨ ਰਹੇ ਤਿਹਾਰੇ ਚਿੱਤਾ । ਗ੍ਰਿਹ ਮਹਿ ਹੁਇ ਅਨ ਗਨ ਤੇ ਬਿੱਤਾ ॥ ੨੬੯॥ਸਤ੍ਰ ਨ ਜੀਤ ਹਮੇ ਕੋਈ ਜਾਈ । ਦੇਗ ਤੇਗ ਹੈ ਬਿਜੈ ਬਨਾਈ॥ ਪੰਥ ਮਲੇਛਨ ਅਨਿਕ ਪ੍ਰਕਾਰਾ । ਪਲ ਮੈ ਹੋਇ ਸਰਬ ਹੀ ਛਾਰਾ ॥ ੨੭੦ ॥ ਏਵ ਸੱਤ੍ਯਹਿ ਮਾਤ ਭਵਾਨੀ ॥ ਬਰ ਦੈ ਭਈ ਲੋਪ ਜਗਰਾਨੀ ॥ ਜਹ ਤਹ ਸਰਬ ਸੁਭਵਨ ਮਝਾਰਾ॥ ਸੁਨਤ੍ਰਰ ਭਯੋ ਸਬਦ ਜੈਕਾਰਾ ॥ ੨੭੧ ॥

(ਗੁਰ ਬਿਲਾਸ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਅਧਯਾਇ ੯ ਔਰ ਅੰਕ ੧੦ ਕਥਤਾ ਅੰਕ ਉਕਤ)॥

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰੋ ਉਕਤ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਇਤਹਾਸ ਸੇ ਸਪਸ਼ਟ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਪੂਜਨ ਜ਼ਰੂਰ ਕੀਹੈ ॥

(੨੫) ਛੱਕੇ ਦੇਵੀ ਜੀ ਕੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ਜਿਸ ਮੇਂ " ਨਮੋ ਕਾਲਕਾ ਕਾਲ ਰੂਪੀ ਕ੍ਰਿਪਾਨੀ ॥ ਨਮੋਂ ਸੁੰਭ ਨਿਸੁੰ

ਭ ਨਾਸਨਿ ਭਵਾਨੀ ॥ ਨਮੋਂ ਚੰਡ ਅਰ ਮੁੰਡ ਸੰਘਾਰਕਾਰੀ ॥ ਨਮੋਂ ਰਕਤ ਬੀਜਾਨਕੇ ਪ੍ਰਾਣਹਾਰੀ" ਇਤ੍ਯਾਦੀ ਪਾਠ ਹੈ॥

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰ ਛੱਕੇ ਛੰਦ ਸ੍ਰੀ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਜੀ ਰਚਨਾ ਕੇ ਸਦ੍ਰਿਸ਼ ਰਚਨਾ ਹੈ ਇਸੀ ਕਾਰਣ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਬਾਬਾ ਅਟਲ ਜੀਮੇਂ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਮੇਂ ਛੱਕੇ ਛੰਦ ਚੜ੍ਹੇ ਹੂਏਹੈਂ ਜਿਨ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸ-ਤਤੀ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ॥

(੨੬) ਦੇਖੋ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੀਰਥ ਸੰਗ੍ਰਹ ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ਮਹੰਤ ਤਾਰਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਰਚਤ ਜੋ ਕੈਂਪ ਅੰਬਾਲਾ ਟੈਂਪਲ ਪ੍ਰੈਸ ਸੰਮਤ ੧੯੪੧ ਮੇਂ ਛਪੀ ਕੇ ਸਫਾ ੧੧੯ ਸਤਰ ੧ ਸੇ ੩ ਤਕ ॥

"ਸੰਮਤ ੧੭੫੬ ਚੇਤ੍ਰ ਸੁਦੀ ਨਵਮੀ ਰਵਿਵਾਰ ਡੇਢ ਪਹਿਰ ਦਿਨ ਰਹੇ ਗਿਆਰਵੇਂ ਮਹੀਨੇ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੋ ਮਹਾਂ ਕਾਲੀ ਭਗਵਤੀਕਾ ਦਰਸਨ ਹੂਆ ॥ ਤੇਜਸ੍ਵੀ ਪੰਥਕਾ ਬਰ ਦੀਆ ॥ ਇਤ੍ਯਾਦੀ ॥"

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰ ਸ੍ਰੀਮਾਨ ਮਹੰਤ ਤਾਰਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਗੁਰੂ ਘਰ ਮੇਂ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਵਿਦਵਾਨ ਗੁਜ਼ਰੇ ਹੈਂ ਜਿਨਹੋਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਕਈ ਬਾਣੀਓਂ ਪਰ ਟੀਕਾ ਕੀਆ ਹੈ ਔਰ ਗੁਰੂ ਗਿਰਾਰਥ ਕੋਸ਼ ਰਚਕਰ ਅਤੁਲ ਵਿਦ੍ਵਤਾ ਦਿਖਾਈ ਹੈ ॥ ਉਨਕੇ ਉਕਤ ਲੇਖ ਸੇ ਪ੍ਰਗਟਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਜੀਨੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਪੂਜਨ ਕੀ ॥

(੨੭) ਦੇਖੋ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਲੀਲ੍ਹਾ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਰੀ ਦੂਜੀ ਸ੍ਰੀ ਬੇਦੀ ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀਬਾਬਾ ਗਨੇਸ਼ ਸਿੰਘਜੀ ਰਚਿਤ ਜੋ ਵਜ਼ੀਰ ਹਿੰਦ ਪ੍ਰੈਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਮੇਂ ਭਾਈ ਵਜ਼ੀਰ ਸਿੰਘ ਮੈਨੇਜਰ ਕੇ ਯਤਨ ਸੇ ਸੰਮਤ ਨਾਨਕ ਸ਼ਾਹੀ ੪੩੩ ਮੇਂ ਛਪੀ ਕੇ ਸਫੇ ੭ ਸੇ ੧੦ ਤਕ ॥ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਲਾਹੌਰ ਕੇ ੯ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋ ਕੇ ਉਤਰ ਮੇਂ ਯਿਹ ਲੇਖ ਹੈ ॥

ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਦੂਜਾ ॥ ਦੇਵੀ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਨੇ ਕਾ ਸੰਮਤ ਕੌਨ ਥਾ ॥

ਉਤ੍ਰ ॥ ਸੰਮਤ ੧੭੫੬ ਚੇਤ ਸੁਦੀ ਨੌਮੀ ਰਵੀ-ਵਾਰ ਡੇਢ ਪਹਰ ਦਿਨ ਰਹੇ ਤੇ ਗਜਾਰਵੇਂ ਮਹੀਨੇ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੋ ਮਹਾਂ ਕਾਲੀ ਕਾ ਦਰਸ਼ਨ ਹੂਆ ॥

ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਚੌਥਾ ॥ ਦੇਵੀਕੋ ਬਲੀਦਾਨ ਕਿਆ ਦੀਆ ॥

ਉਤ੍ਰ॥ ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਂਕਾਲੀ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਨੇਕੇ ਸਮੇ ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਜੀ ਤੇ ਬਿਨਾ ਮੰਦਰ ਮੈਂ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਰਹਾ ਥਾ ਸਭ ਭੈ ਕਰਕੇ ਪਰਬਤ ਕੇ ਨੀਚੇ ਕੋ ਭਾਗ ਗਏ ਥੇ ਦੇਵੀ ਕਾ ਤੇਜ ਨਹੀ ਸਹ ਸਕੇ ਕੋਟਾਨ ਕੋਟ ਬਿਜਲੀਆਂ ਜੈਸਾ ਚਮਤਕਾਰ ਔ ਸ਼ਬਦ ਹੋਤਾ ਭਯਾ ਗੁਰੂ ਜੀਨੇ ਅਪਨੀ ਚੀਚੀ ਅੰਗੁਰੀ ਕੇ ਰੁਧਰ ਕਾ ਪਾਨ ਕਰਾਯਾ ॥ ਮਹਾਂ ਕਾਲੀ ਕੋ ਤਿਸ ਸਮੇਂ ॥

ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਪੰਜਵਾਂ ॥ ਪੰਡਤ ਕੋ ਕਿਉਂ ਕਹਾ ਆਪਸੇ ਪਵਿਤ੍ਰ ਹੋਰ ਕੌਨ ਬਲੀਹੈ ॥

ਉਤ੍ਰ ॥ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਪੰਡਤ ਕੇਸ਼ੋ ਦਾਸਕੋ

ਐਸੇ ਕਹਾ ਕਿ ਆਪਨੇ ਸਰੀਰ ਕੇ ਰੁਧਰ ਤੇ ਪਵਿਤ੍ਰ
ਹੋਰ ਕੌਨ ਬਲੀ ਹੈ ਈਹਾਂ ਬਿਰੋਧਾਭਾਸ ਅਲੰਕਾਰ ਹੈ ॥

ਨੋਟ-ਮਿਤ੍ਰ ਉਕਤ ਗੁਰਮਤ ਕੇ ਬ੍ਰਿਧ ਵਿਦਵਾਨ
ਕੇ ਲੇਖਸੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਘਰ ਮੇਂ ਦੁਰਗਾ ਪੂਜਨ ਸਿੱਧਹੋਤੀਹੈ॥

(੨੮) ਦੇਖੋ ਰਪੋਟ ਸੋਧਕ ਕਮੇਟੀ ਦਸਮ ਪਾਤ
ਸ਼ਾਹੀ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀਦੀ ਸੋਧਾਈ ਦੀ ਜੋ ਖਾਲ
ਸਾ ਦੀਵਾਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀਦੀ ਆਗਿਆ ਅਨੁਸਾਰ ਭਾਈ
ਮੰਨਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਹਕੀਮ ਸਕੱਤ੍ਰ ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਹੋਈ
੧ ਕਤਕ ਸੰਮਤ ੧੯੫੮ ਦੀ ਨੀਊ ਐਂਗਲੋ ਗੁਰਮੁਖੀ ਪ੍ਰੇਸ
ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀਮੇਂ ਛਪੀਕੇ ਸਫਾ ੧ ਸਤਰ ੨੨ ਸੇ ੨੫ ਤਕ
"ਅਕਾਲ ਪੁਰਖਦੀ ਮਹਾਂ ਸਕਤਿ ਦੁਰਗਾ ਮਹਾਂ ਲੱਖਮੀ
ਮਹਾਂ ਕਾਲੀ ਦੇ ਚਰਿਤ੍ਰ (ਅਦਭੁਤ ਕਥਾ ਅਪਾਰ ਸਮਝ
ਕਰ ਚਿਤ ਮੈਂ) ਉਸਤਤਿ ਜੈ ਕਾਰ ਸਬਦ ਬੀਰ ਰਸ ਦੀ
ਬ੍ਰਿਧੀ ਵਾਸਤੇ ਰੁਦ੍ਰਰਸਸਮੇਤ ਭਿੰਨਾਂਗ੍ਰੰਥਾਂਮੈ ਬਰਨਨ ਕੀਤੇ ॥

ਨੋਟ—ਮਿਤ੍ਰ ਉਕਤ ਰਪੋਟ ਕੇ ਕਰਤਾ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ
ਸਾਹਿਬਕੇ ਸੋਧਕ ੩੨ ਵਿਦ੍ਵਾਨ ਸਿੰਘ ਆਦਿਹੈਂ ਜੋ ਦਸਮ
ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੋ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਉਸਤਤਿ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ
ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ ॥ ਯਥਾ :-

੧ ਭਾਈ ਮੰਨਾ ਸਿੰਘ ਹਕੀਮ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ
੨ ਭਾਈ ਨਰੈਣ ਸਿੰਘ ਜੀ ਮਾਸਟਰ ੩ ਭਾਈ ਠਾਕੁਰ ਸਿੰਘ
ਮੁਨਸ਼ੀ ਦਫਤਰ ਮਿਊਨਿਸਪਲ ਕਮੇਟੀ ੪ ਭਾਈ ਹਜ਼ੂਰਾ

ਸਿੰਘ ਰਾਗੀ ੫ ਧਰਮ ਸਿੰਘ ੬ ਭਾਈ ਸੰਤ ਸਿੰਘ ੭ ਭਾਈ ਦਰਬਾਰਾ ਸਿੰਘ ੮ ਜੈ ਦਯਾਲ ਸਿੰਘ ੯ ਗੁਰਦਯਾਲਸਿੰਘ ੧੦ ਕਿਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ੧੧ ਨਰੈਣ ਸਿੰਘ ੧੨ ਭਾਈ ਬਿਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪੁਜਾਰੀ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਲੋਹਗੜ੍ਹ ੧੩ ਭਾਈ ਸ਼ੇਰ ਸਿੰਘ ਪਾਠਕ ਔਰ ਲਿਖਾਰੀ ੧੪ ਸੁਰਤ ਸਿੰਘ ਬਿਹੰਗਮ ੧੫ ਭਾਈ ਮੁਲਤਾਨਾ ਸਿੰਘ ਤਖਤ ਅਕਾਲ ਬੁੰਗੇ ਸ਼ਸਤ੍ਰੋਂ ਕੇ ਪੁਜਾਰੀ ੧੬ ਤਾਰਾਸਿੰਘ ਜੀ ਨਿਹੰਗ ੧੭ ਹਜਾਰਾ ਸਿੰਘ ਨਿਹੰਗ ੧੮ ਸਰਮੁਖ ਸਿੰਘ ਜੀ ਬਾਵਲੀ ਵਾਲੇ ੧੯ ਕਿਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪਾਠਕ ੨੦ ਕਰਮ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅਕਾਲ ਬੁਗਾ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਧਰਮਸਾਲੀਏ ੨੧ ਉਦਾਸੀ ਸੰਤ ਗੁਪਾਲਦਾਸ ੨੨ ਭਗਵਾਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਸਿੰਧੀ ੨੩ ਅਮੀਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਮਹੰਤ ੨੪ ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ ਜੀ ੨੫ ਨੱਥਾ ਸਿੰਘ ਔਰ ਗੁਰ ਦਿਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪੁਜਾਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ੨੬ ਦਰਬਾਰਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨਿਹੰਗ ੨੭ ਬੁਧ ਸਿੰਘ ਜੀ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਰਾਮ ਸਰ ਜੀ ਦੇ ਗ੍ਰੰਥੀ ੨੮ ਮਿਹਰਬਾਨ ਸਿੰਘ ਸ਼ਿਕਾਰਪੁਰੀਏ ੨੯ ਸੰਤਲਛਮਨ ਦਾਸਜੀਉਦਾਸੀ ਸੰਗਲਵਾਲੇ ਅਖਾੜੇ ਦੇ ਨਿਵਾਸੀ ੩੦ ਠਾਕੁਰ ਸਿੰਘ ਤਖਤ ਅਕਾਲ ਬੁੰਗੇ ਸਾਹਿ ਬ ਜੀ ਦੇ ਰਹਾਰਾਸੀਏ ੩੧ ਬਿਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਬਿਹੰਗਮ ੩੨ ਰਾਮਲੋਕ ਜੀ ਸੰਤ ॥

(੨੯) ਦੇਖੋ ਪ੍ਰਤੱਖ ਪ੍ਰਮਾਣ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਚਾਰ ਹੀ ਤਖਤ ਸਾਹਿਬੋਂ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੀ ਮਾਨਤਾ (ਪੂਜਨ)

ਹੋਤੀ ਹੈ (੧) ਸ੍ਰੀ ਤਖਤ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ਦਰਸ਼ਨੀ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਪਰ ਦੋ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਸਿੰਘ (ਸ਼ੇਰ) ਬਾਹਨੀ ਮੂਰਤੀ ਮੌਜੂਦ ਹੈਂ ਜਿਨਕੋ ਸਰਬ ਸਿਖ ਮਥੇ ਟੇਕਤੇ ਹੈਂ (੨) ਸ੍ਰੀ ਤਖਤ ਅਨੰਦ ਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਕੇਸ ਗੜ੍ਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਕੇ ਹਾਥ ਕੀ ਦੋ ਤੋਪੇਂ ਜਿਨ ਪਰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਇਸ਼ਟ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਮੂਰਤੀ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ ਜੋ ਅਬ ਲਾਹੌਰ ਕੇ ਅਜੈਬ ਘਰ ਮੇਂ ਮੌਜੂਦ ਪੜੀ ਹੈਂ ॥ (੩) ਸ੍ਰੀ ਹਜ਼ੂਰ ਅਵਚਲਨਗਰ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਪੂਜਨ ਔਰ ਆਰਤੀ ਨਿਤ੍ਯ ਨੇਮ ਸੇ ਹੋਤੀ ਹੈ॥ (੪) ਜਿਸ ਉਕਤ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਅਵਚਲਨਗਰ ਕਾ ਸੰਖ ਮਰ-ਮਰ ਪਰ ਬਨਾ ਨਕਸ਼ਾ ਸ੍ਰੀ ਤਖਤ ਅਕਾਲ ਬੁੰਗੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰ ਖਜ਼ਾਨੇ ਕੀ ਓਰ ਬਾਈਂ ਤਰਫ ਦਿਵਾਰ ਮੇਂ ਲਗਾ ਹੂਆ ਹੈ ਜਿਸ ਨਕਸ਼ੇ ਕੇ ਮਧ੍ਯ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਮੂਰਤੀ ਸਪਸ਼ਟ ਲਿਖੀ ਹੈ ਔਰ ਅਕਾਲ ਬੁੰਗੇ ਕੇ ਬੜੇ ਛਾਟ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਮੂਰਤੀ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ ਔਰ ਤਖਤ ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਹਰਿ ਮੰਦਰ ਕੀ ਦਖਣ ਓਰ ਬੜੀ ਪਰਕ੍ਰਮਾਂ ਮੇਂ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕਾ ਮੰਦਰ ਬਨਾ ਹੂਆ ਹੈ ਔਰ ਦੁਖ ਭੰਜਨੀ ਸਾਹਿਬ ਮੇਂ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਸਵ੍ਰਨ ਮੂਰਤੀ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ ॥ ਇਤ੍ਯਾਦਿ ਅਨੇਕ ਪਰਤੱਖ ਪ੍ਰਮਾਣ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈਂ ਔਰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਏਕ ਹੁਕਮ ਨਾਮਾ ਸ੍ਰੀ ਨੈਣਾ ਦੇਵੀ ਕੇ ਪੁਜਾਰੀ

ਨੂੰ ਕੋ ਲਿਖਕਰ ਦੀਆ ਹੂਆ ਹੈ ਜੋ ਸਾਲ ਦਰ ਸਾਲ ਆ ਨੰਦਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਸੋਢੀਓਂ ਕੋ ਦਿਖਾਕਰ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੇ ਭੋਗ ਲੀਏ ੫) ਲੇਜਾਤੇ ਹੈਂ ॥

ਨੋਟ–ਮਿਤ੍ਰੋ ਯਹਾਂਤਕ ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਘਰ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੀ ਪੂਜਨ ਪ੍ਰਤੱਖ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਸਬੂਤੋਂ ਸੇ ਸਿਧ ਹੋਤੀਹੈ ॥

ਆਦਿ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ

(੩੦) ਸਹਿਸ ਬਾਹੁ ਮਧੁਕੀਟ ਮਹਿਖਾਸਾ ॥ ਹਰ ਨਾਖਸਲੇ ਨਖਹੁ ਬਿਧਾਸਾ॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਆਦਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਰਾਗ ਗੌੜੀ ਅਸਟਪਦੀ ਮਹਲਾ ੧ ਸਬਦ ੯ ਤੁਕ ੬)॥

ਨੋਟ–ਮਿਤ੍ਰੋ ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬਜੀ ਭੀ ਮਧੁਕੈਟਭ ਔਰ ਮਹਿਖਾਸੁਰ ਆਦਿਦੈਤੋਂਕਾ ਨਸ਼ਟ ਕਰਨੇਵਾਲੀ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀਕੋਹੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ (ਈਸ਼੍ਵਰ) ਮਾਨਤਾ ਹੈ । ਫਿਰ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰਨੀ ਮਹਾਂਨ ਪਾਪ ਸੇ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕਾ ਅਗਿਆਨ ਹੈ ।

ਔਰ ਏਕ ਸਿੰਘਵਿਦਵਾਨਭਾਈ ਨਿਧਾਨਸਿੰਘ ਜੀ ਜ਼ਿਲਾ ਲੁਦਿਆਣਾ ਗੁਜਰਵਾਲ ਨਿਵਾਸੀਨੇ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਰਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕਾ ਖੰਡਨ ਮੰਡਨ ਜੋ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰੈਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਕੇ ਸੰ: ੪੩੯ ਮੇਂ ਛਪੇ ਕੇ ਸਫ਼ਾ ੧੯ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਕੀ ਮਾਨਤਾ ਸਿਧ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ॥ ਯਥਾ (ਗੁਰਬੀਸਰ

ਗੁਰ ਗੋਰਖ ਬਰਮਾ ਗੁਰ ਪਾਰਬਤੀ ਮਾਈ) ਦੇਖੋ ਪਾਰਬਤੀ ਕੋ ਮਾਈ ਕਹਿਨੇ ਸੇ ਉਸਕਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਅਦਬ ਪਾਇਆ ਜਾਤਾ ਹੈ ਇਸ ਸੇ ਆਦਗੁਰੂ ਭੀ ਦੇਵੀ ਕੇ ਭਗਤ ਮਾਲੂਮ ਹੋਤੇ ਹੈਂ ॥

ਐ ਨਵੀਨ ਖਾਲਸਾ ਹਠਕੋ ਛੋੜੋ ਮਾਇਆ ਕੇ ਬਗੈਰ ਤੋ ਜਗਤ ਕੀ ਰਚਨਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੋਸਕਤੀ ॥ ਮਾਯਾ ਕੇ ਸਬਬ ਹੀ ਪਰਮੇਸੁਰ ਕੇ ਦੋ ਸਰੂਪ ਹੈਂ । ਯਥਾ ਗੁਰਵਾਕ "ਨਿਰਗੁਣ ਆਪ ਸਰਗੁਣ ਭੀ ਓਹੀ॥ ਕਲਾ ਧਾਰ ਜਿਨ ਸਗਲੀ ਮੋਹੀ॥" ਇਸ ਸਬਬ ਸੇ ਜੈਸੇ ਪ੍ਰਮੇਸ੍ਵਰਕੇ ਅਵਤਾਰ ਰਾਮ ਕ੍ਰिਸ਼ਨ ਆਦਿਕ ਮਾਨਨੇ ਪੜੇ ਹੈਂ ਇਸੀ ਤਰਹ ਮਾਯਾ ਕੇ ਅਵਤਾਰ ਪਾਰਬਤੀ ਦੇਵੀ ਆਦਿਕ ਮਾਨਨੇ ਚਾਹੀਏ ॥ ਇਤਯਾਦੀ ਲੇਖ ਸੇ ਦੁਰਗਾ ਪੂਜਨ ਸਿੱਧ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ॥

ਅੰਤਮ ਬੇਨਤੀ

ਮਿਤ੍ਰੋ ਨਵੀਨਸਿੰਘ ਹਮਾਰੇ ਸੀਧੇ ਸਾਦੇ ਧਰਮ ਰਖਜ਼ਕ ਸੱਚ ਸਿੱਖੋਂ ਕੋ ਮਿਥਯਾ ਬਾਣੀ ਸੁਣਾ ਕਰ ਧੋਖਾ ਦੇਤੇ ਹੂਏ ਯੇਹ ਹੁਜਤੇਂ ਪੇਸ਼ਕੀਆ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਸੋ ਉਨਕੀ ਹੁਜਤੇਂ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਲੇਖੋਂ ਸੇ ਮਿਥਯਾ ਹੈਂ॥ ਯਥਾ—

ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਕੀ ਹੁੱਜਤ ੧ ॥ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਬੋੜੀ ਸੀ ਗੁਰੂ ੧੦ ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀਕੇ ਬਗੈਰ ਸਾਰਾ ਕਵੀਓਂ ਕ੍ਰਿਤ ਹੈ (ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਰ ਭੂਲੋਂਮੇਂ ॥ ਖਾਲਸਾ ਰਹਿਤ

ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਮੇਂ)

ਉਤ੍ਰ ॥ ਯਿਹ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕਾ ਸਰਾਸਰ ਝੂਠ ਹੈ ਦੇਖੋ ਖਾਲਸਾ ਦੀਵਾਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀਦੀ ਆਗਜਾ ਅਨੁ-ਸਾਰ ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੀ ਸੁਧਾਈਦੀ ਰਪੋਟ ਜੋ ੧ ਕਤਕ ਸੰਮਤ ੧੯੫੪ ਭਾਈ ਮੰਨਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਹਕੀਮ ਸਿਕੱਤ੍ਰ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰਚਾਰਕ ਸਭਾ ਅੰ-ਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੀ ਮਾਰਫਤ ਦੀ ਨੀਉ ਐਂਗਲੋ ਗੁਰਮੁਖੀ ਪ੍ਰੇਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਮੇਂ ਛਪਕਰ ਧਰਮਾਰਥ (ਮੁਫਤ) ਬਾਂਟੀ ਗਈ ਮੇਂ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਮੁਖੀਆ (ਖਾਲਸਾ ਦੀਵਾਨ) ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅਬ ਸੇ ਇਤੀ ਪ੍ਰਯੰਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਕ੍ਰਿਤ ਸਿੱਧ ਕੀਆ ਹੈ ॥

ਦੂਸਰੇ॥ ਦੇਖੋ ਭਾ: ਸਰਦੂਲਸਿੰਘਜੀਗਜਾਨੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਨਿਵਾਸੀਕੋ ਸੱਚਖੰਡ ਸ੍ਰੀਹਜੂਰ ਅਬਚਲ ਨਗਰ ਸਾਹਿਬਜੀ ਕੀ ਆਗਿਆ ਜੋ ੩ ਚੇਤ ਸੰਮਤ ੧੯੬੨ ਮਿਲੀਮੇਂ ਹੁਕਮ ਨੰਬਰ ੪ ਜੋ ਚਿੱਠੀ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰੇਸ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਛਪ ਕਰ ਬਤੌਰ ਇਸ਼ਤਿਹਾਰਕੇ ਹਜਾਰਾਂ ਜਗਾ ਬਾਂਟੀ ਗਈ॥ ਯਥਾ ਜੋ ਦਸਮਗੁਰੂ ਜੀਦੀ ਬਾਣੀਨੂੰ ਕਵੀ ਉਕਤ ਕਹਿਣ ਅਰ ਸ੍ਰੀਮੁਖਵਾਕ ਨਾ ਮੰਨਣ॥ ਸੋ ਇਹ ਗੁਰੂ ਤੇ ਬੇਮੁਖ ਗੁਰ ਦ੍ਵਾਰਿਆਂ ਦੀ ਬੇ ਅਦਬੀ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਮਝ ਕੇ ਪੰਥ ਤੇ ਖਾਰਜ ਕੀਤੇ ਜਾਣਗੇ ॥

ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਹੁੱਜਤ ੨ ॥ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ

ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀ ਕੋ ਜੁਦੀ ਜੁਦੀ ਕਰ ਦੇਨਾ ਚਾਹੀਏ ਜਿਸ ਸੇ ਜਗਤ ਮੇਂ ਦੂਸਰਾ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਨਾ ਰਹੇ (ਦੇਖੋ ਭੂਲੇ ਮੇਂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਰ ॥ ਖਾਲਸਾ ਰਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਮੇਂ)

ਉਤ੍ਰ ॥ ਮਿੱਤਰੋ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕਰਾਮਾਤ ਸੇ ਸੰਸਾਰ ਮੇਂ ਸਾਬਿਤ ਰਹਾ ਹੈ ਜੋ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਅਗ੍ਰਣੀਓਂ ਮੇਂ ਭਾਈ ਕਾਹਨ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ ਨਿਵਾਸੀ ਕ੍ਰਿਤ ਗੁਰਮਤ ਸੁਧਾਕਰ ਸਫਾ ੧੪੨ ਮੇਂ ਲੇਖ ॥ ਯਥਾ ॥ ਸੰ: ੧੯੦੬ ਮੇਂ ਭਾਈ ਮਤਾਬ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਕੀ ਬੇਅਦਬੀ ਕਾ ਹਾਲ ਸੁਨਕਰ ਮੱਸੇ ਰੰਘੜ ਕੋ ਮਾਰਨੇ ਕੇ ਇਰਾਦੇ ਸੇ ਬੀਕਾਨੇਰ ਸੇ ਦਮਦਮੇਂ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਰਾਸਤੇ ਆਏ ਇਸ ਮੁਆਮਲੇ ਮੇਂ ਜਬ ਉਨਸੇ ਰਾਇ ਲੀਗਈ ਤੋ ਉਨੋ ਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਅਗਰ ਮੈਂ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਮੇਂ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋ ਗਯਾ ਤਬ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀ ਕੀ ਏਕ ਬੀੜ ਨਾ ਰੱਖਣੀ ਅਰ ਜੇਕਰ ਮੈਂ ਮੱਸੇ ਕੋ ਮਾਰਕਰ ਇਸ ਜਗਹ ਵਾਪਸ ਆ ਗਿਆ ਤਬ ਬੀੜ ਕਾਇਮ ਰਹੇ। ਖਾਲਸੇ ਨੇ ਉਨਕੀ ਇਸ ਬਾਤ ਕੋ ਮਾਨ ਲੀਆ ਔਰ ਮਤਾਬ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅਰਦਾਸ ਕਰਾਕਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਕੋ ਗਏ ਔਰ ਮੱਸੇ ਕੋ ਮਾਰ ਕਰ ਦਮਦਮੇਂ ਸਾਹਿਬ ਮੇਂ ਆਏ ਇਸ ਤਰਾਂ ਦੂਸਰੀ ਬੀੜ ਕਾਇਮ ਰਹੀ ਜਿਸਕੋ ਅਬ "ਦਸਮੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਕਾ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ" ਕਹਿਤੇ ਹੈਂ। ਇਸ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਏਕ ਬੀੜ ਭਾਈ ਸੁਖਾ ਸਿੰਘ ਨੇ ਆਪਣੀ ਬੁੱਧੀ ਅਨੁਸਾਰ ਬਾਂਧੀ। ਜਿਸ ਮੇ

ਸੁਖਮਨਾ ਔਰ ਛੱਕੇ ਆਦਿਕ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰ ਦਿਯੇ॥ ਮੁੱਖ ਦੋਹੀ ਬੀੜੇਂ ਹੈਂ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਔਰ ਭਾਈ ਸੁਖਾਸਿੰਘ। ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਵਾਲੀ ਬੀੜਕੋ ਭਾਈ ਦੀਪਸਿੰਘਵਾਲੀ ਬੀੜ ਭੀ ਕਹਿਤ ਹੈਂ ਐਸੇ ਹੀ ਭਾਈ ਸੁਖਾ ਸਿੰਘ ਵਾਲੀ ਬੀੜ ਕਾ ਦੂਸਰਾ ਨਾਮ ਖਾਸ ਬੀੜ ਹੈ॥

ਕਿਉਂ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋ! ਐਸੇ ਕਰਾਮਾਤ ਸੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਬਾਣੀ ਜੁਦੀ ੨ ਕਰੋਗੇ ? ਸ਼ੋਕ ਹੈ ਆਪ ਕੀ ਬੁੱਧੀ ਪਰ ਔਰ ਸ਼ੋਕ ਹੈ ਖਾਸਕਰ ਉਕਤ ਲੇਖ ਪਰ ਜੋ ਆਪਨੇ ਪਾਉਂ ਕੁਹਾੜਾ ਮਾਰ ਕਰ ਆਪਨੇ ਭਾਈ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੋ ਝੂਠੇ ਬਨਾ ਰਹਾ ਹੈ॥

ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਕੀ ਹੁੱਜਤ ੩॥ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕੋ ਗੁਰੂ ਨਹੀਂ ਮਾਨਨਾ ਚਾਹੀਏ॥ (ਦੇਖੋ ਭੁਲੇਮੇਂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਰ॥ ਖਾਲਸਾ ਰਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਮੇਂ।

ਉਤ੍ਰ॥ ਮਿਤ੍ਰ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋ ਆਪਕੇ ਭਾਈਵਿਦਵਾਨ ਲੋਗ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀਕੋ ਗੁਰੂ ਸਾਬਿਤ ਕਰਤੇ ਹੂਏ ਆਪਕੇ ਮਿਥਯਾ ਲੇਖੋਂ ਪਰ ਸਿਆਹੀ ਫੇਰਰਹੇਹੈਂ॥ਯਥਾ—

ਪ੍ਰਥਮ—ਦੇਖੋਗੁਰੂਗਿਰਾਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਕਗ੍ਰੰਥ ਅਰਥਾਤਭੁਲੇਮੇ ਨੰਬਰ ੯ ਦਾ ਉਤਰ ਕ੍ਰਿਤ ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ ਗਜਾਨੀ ਜੋ ੧ ਮਾਘ ਸੰ: ਨਾਨਕ ਸ਼ਾਹੀ ੪੩੯ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਮੁਕਤਸਰ ਮੇਂ ਸੋਧਕਰ ਅਤੇ ਸ੍ਰੀਦਰਬਾਰ ਦਮਦਮੇ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਮੇਂ ਖਾਲਸਾ ਧਰਮ ਦੇ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਦੀ ਸੰਮਤ

ਮੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਹੂਆ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰ ਬਖਸ਼ ਪ੍ਰੇਸ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਛਪਾ ਜੋ ੧੪੦ ਸਫੇ ਕਾ ਗ੍ਰੰਥ ਹੈ ਜਿਸ ਮੇਂ ਬੜੀ ਬੁਧੀਵਾਨੀ ਸੇ ਲੇਖਕ ਜੀ ਨੇ ਪ੍ਰਬਲ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਦੁਆਰਾ ਸਿਧ ਕਰ ਦੀਆ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੋ ਨਹੀਂ ਮਾਨਤੇ ਵੋਹ ਆਦਿ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੋ ਭੀ ਨਹੀਂ ਮਾਨਤੇ ਦੋਨੋਂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬੋਂ ਕੀ ਏਕ ਰੂਪ ਬਾਣੀ ਹੈ॥

ਦੂਸਰੇ–ਦੇਖੋ ਖ਼ਾਲਸਾ ਰਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕਾ ਖੰਡਨ ਮੰਡਨ ਜਿਸ ਨੂੰ ਭਾਈ ਨਿਧਾਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਰਹਿਨੇ ਵਾਲੇ ਗੁਜਰਵਾਲ ਜਿਲਾ ਲੁਦੇਹਾਣਾ ਨੇ ਸੰ: ੪੩੯ ਨਾਨਕਸ਼ਾਹੀ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰੇਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਮੇਂ ਛਪਵਾਯਾ ਥਾ ਸਫਾ ੧੫ ਸਤਰ ੧੪ ਸੇ ਸਫਾ ੧੬ ਸਤਰ ੧੦ ਤਕ॥ ਯਥਾ॥ "ਅਠਵਾਂ ਫੈਸਲਾ ਭੁਲੇਖਾਂ ਯਿਹ ਹੈ ਕਿ ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਦੇ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਨਾ ਮੰਨਣਾ ਚਾਹੀਏ" ਇਤਯਾਦੀ ਲੇਖ ਕੇ ਉਤ੍ਰ ਮੇਂ ਗ੍ਰੰਥ ਕਰਤਾ ਖੰਡਨ ਕਰਤਾ ਹੂਆ ਲਿਖਤਾ ਹੈ ਯਥਾ ਖੰਡਨ "ਯਿਹ ਬਹੁਤ ਹੀ ਨਿਹਾਇਤ ਨਾਰਸ ਫੈ-ਸਲਾ ਹੈ ਬਲਕਿ ਇਸ ਫੈਸਲੇ ਕੇ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਕੇ ਸਿਖ ਨਹੀਂ ਸਮਝੇ ਜਾਤੇ ਅਗਰ ਸਿੱਖੋਂ ਕੀ ਸੂਰਤ ਮੇਂ ਹੋਵੇਂ ਤਬ ਭੀ ਭੇਸ ਬਦਲੇ ਹੂਏ ਈਸਾਈ ਸਮਝਨੇ ਚਾਹੀਏ ਬਲਕਿ ਈਸਾਈਓਂ ਔਰ ਮੁਸਲਮਾਨੋਂ ਸੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਿੱਖ ਮਜ਼ਹਬ ਕੇ ਦੁਸ਼ਮਨ ਗੁਰੂ ਮਾਰੀ ਸਰਹਿੰਦ ਕੇ ਨਾਜ਼ਮ ਕੇ ਬਰਾਬਰ ਕਸੂਰ ਵਾਰ ਸਮਝਨੇ ਚਾਹੀਏ ਕਿਉਂ ਕਿ ਉਸ

ਨੇ ਗੁਰੂ ਕੇ ਬੇਟੇ ਜੀਓ ਦੇ ਦੀਵਾਰ ਮੇਂ ਚਿਨੇ ਥੇ ਇਨਹੋਂ ਨੇ ਵਸਮ ਗੁਰੂ ਕਾ ਨਾਮ ਨੇਸਤ ਨਾਬੂਦ ਕਰਨਾ ਚਾਹਾ ਹੈ "॥ ਇਤਜਾਦੀ ਲੇਖ ਹੈ॥

ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੋ ਨੋਟਿਸ

ਪਿਆਰੇ ਭਾਈਓ! ਆਪ ਆਪਨੇ ਲੇਖੋਂ ਮੇਂ ਜੋ ਗੁਰੂ ਰਖਜਕ ਸਨਾਤਨ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਕਰਕੇ ਪਾਪੀ ਬਨ ਰਹੇ ਹੋ ਔਰ ਖਾਸਕਰ ਸ਼ਾਂਤੀ ਮਏ ਗਵਰਮਿੰਟ ਕੇ ਰਾਜ ਮੇਂ ਬ੍ਰਿਥਾ ਹੀ ਮੁਝੇ ਧਮਕਾਤੇ ਹੋ (ਦੇਖੋ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਨੰਬਰ ੨੯ ਜਿਲਦ ੫ ਜੂਨ ੧ ਸੰ: ੧੯੦੪ ਸਫਾ ੧੦ ਕਾਲਮ ੨ ਔਰ ੩)

ਹਾਇ ਅਨਗਹਿਲੀ ਤੇਰੀ ਜੜ੍ਹ ਪੁਟੀ ਜਾਇ॥ ਖਾਲਸਾ ਜੀ! ਆਪ ਦੇ ਵਿਰੁਧ ਨਿਤ ਨਵੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਅਨਮਤੀ ਰਚ ਰਹੇ ਹਨ ਅਨਮਤੀ ਅਖਬਾਰ ਆਪਦੇ ਬਰਖਿਲਾਫ ਲੇਖ ਲਿਖ ਰਹੇ ਹਨ। ਈਸਾਈ, ਆਰੀਆ, ਮੁਸਲਮਾਨ, ਬ੍ਰਹਮੂ ਵੇਦਧਰਮੀਏ, ਰਾਧਾਸ੍ਵਾਮੀ। ਸਭ ਦੇ ਸਭ ਸਿਖਾਂ ਦੇ ਮਗਰ ਹੀ ਹਥ ਧੋਕੇ ਪਏ ਹੋਏ ਹਨ। ਕਿਉਂ ਨਾ ਪੈਨ। ਉਹ ਜਾਨਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਹ ਸਭ ਦੇ ਸਭ ਆਪਾਪੰਥੀਏ ਅਰਸਿਧੇ ਸਾਦੇ ਹਨ। ਆਪਣੀ ਮਜ਼ਬੀ ਸਿਖਜਾ "ਬੁਰੇ ਸਿਉ ਭਲਾ ਕਰ" ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਅਸਾਡੇ ਬਰਖਿਲਾਫ ਕੁਝ ਨਹੀ ਲਿਖਦੇ ਇਸ ਕਰਕੇ ਉਹ ਹੋਰ ਵੀ ਦਲੇਰ ਹੋਕੇ ਨਿਤ ਹਮਲੇ ਕਰ ਰਹੇ

ਹਨ । ਇਕ ਪੰਡਿਤ ਜੀ ਨੇ "ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਸਿਖਿਆ" ਕਿ-ਤਾਬ ਬਣਾਈ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਪੰਥ ਦੇ ਸਖਤ ਹਤਕ ਵਾਲੇ ਪਦ ਲਿਖੇ ਹਨ "ਖੇਹ ਪਾਈ ਸਿਰ ਖੁਥੇ ਪੰਥ ਕੋ" ਆਦਿਕ ਕਈ ਅਯੋਗ ਕੁਲੇਖ ਲਿਖੇ ਹਨ। ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਅਸਾਂ ਨੂੰ ਸੰਭਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ । ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਰਬ ਰਾਖਾ॥

ਦਾਸ ਸੁਧਾ ਸਿੰਘ ਸਕਤ੍ਰ
ਸਿੰਘਸਭਾ ਬਹਿਰਾਮਪੁਰ"

ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਪੂਰਬਕ ਨੋਟ

ਮਿਤ੍ਰੋ! ਉਕਤ ਲੇਖ "ਸ਼ਕਲ ਮੋਮਨਾ ਕਰਤੂਤ ਕਾਫਰਾਂ" ਕੇ ਸਦ੍ਰਸ ਹੈ ਕਿਉਂ ਕਿ ਆਜ ਕਲ ਜਿਤਨੇ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਸਰਬ ਮਤਮਤਾਂਤ੍ਰੋਂ ਕਾ ਖੰਡਨ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਉਤਨਾ ਔਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ, ਦੇਖੋ "ਹਮ ਹਿੰਦੂ ਨਹੀਂ" ਮੇਂ ਹਿੰ-ਦੂਓਂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ "ਮਿਰਜ਼ਾ ਕਾਦੀਆਨ ਕੇ ਉਤ੍ਰ" ਮੇਂ ਮੁਸਲਮਾਨੋਂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ "ਹਰਾਮਜ਼ਾਦੇ ਕੌਣ ਹੈ" ਮੇਂ ਆਰੀਓਂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਇਤ੍ਯਾਦਿ ਛੋਟੀ ਬਡੀ ਅਨੇਕ ਪੁਸਤਕੇਂ ਹੈਂ ਔਰ ਜੋ ਖੇਹ ਪਾਈ ਸਿਰ ਖੁਥੇ। ਭਾਈਸਾਹਿਬ ਅਪਨੀ ਅਗ੍ਯਾਨਤਾ ਮੇਂ ਲਿਖਤੇ ਹੈਂ ਅਸਲ ਪਾਠ ਐਸੇ ਹੈ "ਭਸ ਪਈ ਸਿਰ ਖੁਥੇ" ਸੋ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਕਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀਕਾ ਬਚਨ ਹੈ ਮੇਰਾ ਮਨਘੜੰਤ ਨਹੀਂ॥

ਦੂਸਰੇ ਦੇਖੋ ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਨੰਬਰ ੨੬ ਜਿਲਦ ੯ ਮਈ ੧੩ ਸਨ ੧੯੦੮ ਈ: ਕਾ ਛਪਾ ਸਫਾ ੬ ਕਾਲਮ ਦੋ ਤੀਨਾ "ਧੋਖੇ ਤੋਂ ਬਚੋ। ਅਜ ਇਕ ਮਿਤ੍ਰ ਨੇ ਮੈਨੂੰ "ਨਵੀਨ ਸਿੱਖ ਸਿਖ੍ਯਾ" ਨਾਮੇ ਪੁਸਤਕ ਦਿਤੀ ਕਿ ਜੋ ਪੰਡਿਤ ਸੁਖਲਾਲ ਨਾਮਧਾਰੀ ਉਪਦੇਸ਼ਕ ਭਾਰਤ ਧਰਮ ਮਹਾਂ ਮੰਡਲ ਨੇ ਬਨਾਈ ਹੈ। ਪੋਥੀ ਆਦਤੋਂ ਲੈਕੇ ਅੰਤਤਕ ਪੜ੍ਹਕੇ ਦੇਖੀ ਤਾਂ ਮਲੂਮ ਹੋਯਾ ਕਿ ਭੋਲੇ ਭਾਲੇ ਸਿਖਾਂ ਨੂੰ ਗੁਮਰਾਹ ਕਰਨ (ਧੋਖਾ ਦੇਣ) ਲਈ ਪੋਥੀ ਲਿਖੀ ਗਈ ਹੈ ਬਾਤ ਬਾਤ ਵਿਚ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਦੀ ਨਿੰਦਿਆ ਔਰ ਹਤਕ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਅਰ ਗੁਰਬਾਣੀ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਦੇ ਅਨਰਥ ਕੀਤੇ ਗਏ ਹਨ। ਇਸਲਈ ਖਬਰ ਕੀਤੀਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਸਜਨ ਇਸ ਗੰਦੀ ਪੋਥੀ ਨੂੰ ਨਾ ਖਰੀਦੇ ਜਿਨਹਾਂ ਸਜਣਾਂਨੇ ਖ੍ਰੀਦੀ ਹੋਵੇ ਉਹ ਇਸਨੂੰ ਅਗ ਵਿਚ ਸਾੜ ਦੇਣ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਪੋਥੀ ਪੰਥ ਵਿਚ ਫੂਟ ਦਾ ਬੀਜ ਬੀਜਨ ਵਾਲੀਹੈ ਅਤੇ ਸਵਾਰਥੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਵਾਰਥ ਸਿਧ ਕਰਨ ਵਾਸਤੇ (ਸਿਖਾਂ ਨੂੰ ਲੁਟਣ) ਲਈ ਇਹ ਪੋਥੀ ਰਚੀ ਹੈ। ਇਸਲਈ ਸਾਵਧਾਨ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਸਜਨ ਇਨਾਂ ਦੇ ਜਾਲ ਵਿਚ ਨਾ ਫਸੇ ਔਰ ਮੇਰੀ ਰਾਇ ਵਿਚ ਕਿਉਂ ਨਾ ਐਸਿਆਂ ਨੂੰ ਸਜਾ ਦਿਲਾਈ ਜਾਵੇ। ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਅੱਗੇਨੂੰ ਕੋਈ ਸ਼ਖਸ ਐਸੀ ਕੋਸ਼ਸ਼ ਨਾ ਕਰੇ। ਬਹੁਤੇ ਸਜਣਾਂ ਨੇ ਸੁਨਾ ਹੋਵੇਗਾਕਿ ਇਕ ਦਯਾਨੰਦੀਨੇ "ਜੈਨਮਤਸਮੀਖ੍ਯਾ" ਨਾਮੀ ਪੋਥੀ ਬਨਾਈ

ਸੀ ਜਿਸਤੇ ਸੈਣੀਆਂ ਨੇ ਮੁਕਦਮਾ ਚਲਾਕੇ ਬਨਾਣ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਛਾਪਣ ਵਾਲੇ ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਦੋ ਦੋ ਸੌ ਰੁਪਯਾ ਜੁਰਮਾਨਾ ਅਤੇ ਛੇ ਛੇ ਮਹੀਨੇ (ਘਟ ਵਧ) ਕੈਦ ਦਵਾਈ ਸੀ ਔਰ ਪੋਥੀਆਂ ਲੈ ਕੇ ਅਗ ਵਿਚ ਸਾੜੀਆਂ ਗਈਆਂ ਸਨ। ਮੇਰੀ ਰਾਇਵਿਚ ਕਿਉਂ ਨਾ ਉਹੀ ਇਲਾਜ ਇਸਦਾ ਕੀਤਾਜਾਵੇ?

ਦਾਸ ਕੇਸਰ ਸਿੰਘ ਮੀਤ ਸੇਵਕ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਸਿੰਘਸਭਾ ਮੁਲਤਾਨ ਸ਼ਹਰ"

ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਪੂਰਬਕ ਨੋਟ

ਮਿਤ੍ਰ ਉਕਤ ਪੁਸਤਕ (ਨਵੀਨਸਿੰਘਸਿਖਯਾ) ਮੇਂ ਸ੍ਰੀਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬਾਦਿ ਸਿਖੋਂ ਕੀ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਪੁਸਤਕੋਂ ਕੇ ੪੦੦ ਪ੍ਰਮਾਣ ਹੈਂ ਜਿਨਕੋ ਕੇਸਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਗੰਦੇ ਔਰ ਫੂਕ ਦੇਣੇ ਕੀ ਸੰਮਤੀ ਸ੍ਰੀ ਮੁਖ ਸੇ ਪਰਗਟ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਧੰਨ ਹੋ ਜੋ ਗੁਰ ਬਾਣੀ ਕੇ ਫੂਕਣੇ ਵਾਲੇ ਪਰਗਟ ਹੋਗਏ। ਕੇਸਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਇਹ ਪੋਥੀ ਆਪ ਜੈਸੇ ਅਨੇਕ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਸਿਖਿਆ ਵਾਸਤੇ ਬਣਾਈ ਗਈ ਹੈ ਯਥਾ ਨਾਮ ਤਥਾ ਗੁਣ ਜੋ ਮਨ ਮਤੀਓਂ ਕੇ ਫੁਟ ਕੋ ਦੂਰ ਕਰੇਗੀ ਕੁਛ ਉਤਰ ਦੇਣ ਕੀ ਵਿਦਯਾ ਬੁਧੀ ਹੈ ਤੋ ਉਤਰ ਲਿਖੋ "ਗਿਦੜ ਦਾਖ ਨ ਉਪੜੇ ਆਖੇ ਥੂਹ ਕੌੜੀ" ਝੂਠੇ ਦਾਵੇ ਕਰਨੇ ਸੇ ਪਾਜ ਉਘੜ ਜਾਤੇ ਹੈਂ॥

ਮਿਤਰ ਜੀ! ਇਸ ਮੇਂ ਗੁਰੂਮਤ ਕੇ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕ ਪਸ

ਤਕੋਂ ਕੇ ੪੦੦ ਪ੍ਰਮਾਣੋਂ ਦ੍ਵਾਰਾ ਗੁਰੂ ਰਖਜਕ ਹਿੰਦੂ ਧਰ ਮਕੀ ਮਿਥਜਾ ਨਿੰਦਾ ਦੂਰ ਕੀ ਹੈ ਜਿਸਕੀ ਪ੍ਰਸੰਸਾਮੇਂ ਅਨੇਕ ਸਿੱਧੋਂ ਕੇ ਪ੍ਰਸੰਸਾਪਤ੍ਰ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਹੈਂ ਆਪਕੇ ਭੜਕਨੇ ਸੇ ਕਜਾ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਔਰ ਜੋ ਸਜਨ ਇਕ ਬਰਸ ਕੇ ਅੰਦਰ ਯਥਾਰਥ ਉੱਤਰ ਦੇਕਰ ਸ੍ਰੀ ਦੁਰਗਾ ਜੀ ਆਦਿ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮਕੇ ਸਿਧਾਂਤੋਂ ਕੀ ਨਿੰਦਾ ਸਿਧ ਕਰ ਦੇਗਾ ਮੈਂ ਉਸਕਾ ਸੇਵਕ ਬਨਣੇ ਕੇ ਲੀਏ ਤਿਆਰ ਹੂੰ ਮਗਰ ਯਾਦ ਰਹੇ ਉੱਤਰ ਦੇਣੇ ਸਮਯ "ਟੋਏ ਸੇ ਨਿਕਲਤੇ ਕਹੀਂ ਖਾਤੇ ਮੇਂ ਨਾ ਗਿਰ ਪੜਨਾ" ਜੈਸੇ ਪਿਸ਼ਾਵਰ ਸਦਰ ਕੇ ਸਿੰਘਸਭੀਯੇ ਔਰ ਉਪਕਾਰੀ ਕੇ ਐਡੀਟਰ ਆਦੀਓਂ ਕੀ ਦੁਰਦਸ਼ਾ ਥੀ। ਜੋ ਸਾਰੀ ਪੁਸਤਕ ਕਾ ਉੱਤਰ ਹੀ ਨਹੀ ਲਿਖ ਸਕੇ॥

॥ ਇਤੀ ॥

ਹਃ ਸੁਖਲਾਲ ਉਪਦੇਸ਼ਕ
ਸ੍ਰੀ ਭਾਰਤ ਧਰਮ ਮਹਾਂ ਮੰਡਲ
ਰੋਪੜ ਨਿਵਾਸੀ

ੴ

ਘ੍ਰਗੂ ਸੁਝ ਨਾ ਸੁਝਈ ਕਰਮਾਂਦਾ ਹੀਨਾ

ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਦਾ ਘੁਗੂਘੂੰ

(ਅਰਥਾਤ)

ਭਾਈ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਐਡੀਟਰ ਖਾਲਸਾ ਅਖਬਾਰ
ਲਾਹੌਰ ਰਚਿਤ "ਪੰਮਾ ਪ੍ਰਬੋਧ" ਦਾ
ਅਤਿ ਉੱਤਮ ਨਿਰੋਧ

ਜਿਸਕੋ ਕੌਣੀ ਗ੍ਰਾਂਮ ਜਿਲਾ ਫੀਰੋਜਪੁਰ ਨਿਵਾਸੀ
ਪੰਡਿਤ ਮੁਨਸ਼ੀਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾਂ ਲਾਸਾਨੀਗ੍ਰੰਥੀਨੇ ਰਚਾ

ਮੈਨੇਜਰ ਕਿਤਾਬ ਘਰ ਲਾਹੌਰ ਨੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਆ ॥

ਐਮਪ੍ਰੈਸ ਪ੍ਰੈਸ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਲਾਲਾ ਰਾਜਾਰਾਮ ਕੇ
ਅਧਿਕਾਰ ਸੇ ਛਪਾ ॥

ਦੂਜੀ ਵਾਰ ੪੦੦੦ ਛਪਿਆ ੧੯੧੪ ਅਪ੍ਰੈਲਵਿੱਚ

ਓਮ ਪਰਮਾਤਮਨੇ ਨਮਹ ॥

ਟੂੰਡਲੀਏ

(੧) ਦੇਖੀ ਏਕ ਕਿਤਾਬ ਮੈਂ ਪੰਮਾਂ ਨਾਂਮ ਪ੍ਰਬੋਧ ।
ਤਿਸਕਾ ਉਤਰ ਲਿਖਤ ਹੂੰ ਪੜੀਏ ਸਜਨ ਸੁਬੋਧ ।
ਪੜੀਏ ਸਜਨ ਸੁਬੋਧ ਹਾਲ ਮੰ ਸਭੀ ਸੁਨਾਵਾਂ ।
ਜਗਤ ਪੂਜ ਭੂ ਦੇਵ ਚਰਣੋਂ ਪੈ ਸੀਸ ਨੁਵਾਵਾਂ ।
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾ ਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਰੰਚ ਨਹੀਂ ਕਰੋ ਭੁਲੇਖਾ ।
ਸਭ ਪੁਰਾਣੋ ਕੇ ਬੀਚ ਪੂਜ ਦੇਵ ਮੈ ਦੇਖਾ ॥

(੨) ਭਲਾ ਬੁਰੇ ਸੇ ਕਰਨ ਦਾ ਦਜ ਕਾ ਸਦਾ ਸੁਭਾਉ ।
ਛਡਨ ਬੁਰਾ ਨਾ ਮੂਲ ਤੇ ਜੇ ਲਗ ਜਾਵੇ ਦਾਉ ।
ਜੇ ਲਗ ਜਾਵੇ ਦਾਉ ਕਰਨ ਤਬ ਤੁਰਤ ਭਲਾਈ ।
ਸਿੰਘੇ ਦੁਜ ਨੇ ਗੁਰੂ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਨੂੰ ਦੀ ਸਹਾਈ ॥
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਬੀਬੀ ਵੀਰੋ ਕੋ ਲਿਆਏ ।
ਜਿਸੇ ਦੇਖ ਕਰ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਜੀ ਧੀਰ ਧਰਾਏ ।

(੩) ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਮਥੇ ਲਗਿਆ ਹੋਤਾ ਕਾਜ ਸਵਾਰ ।
ਗੁਰਗੋਬਿੰਦ ਸੇ ਪੂਛੀਏ ਦੁਜ ਕੇਸੋਂ ਕਾ ਉਪਕਾਰ ।
ਦੁਜ ਕੇਸੋਂ ਕਾ ਉਪਕਾਰ ਪਾਠ ਸਵਾ ਲਾਖ ਕਰਾਇਆ
ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਕੋ ਚੰਡ ਤੇਜ ਪ੍ਰਤੱਖ ਦਿਖਾਇਆ ॥

ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਬਿਪ੍ਰ ਕੀ ਕਰੁਣਾ ਪਾਈ।
ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ਕੇ ਕਾਜ ਭਏ ਸਿਧ ਸਮਦਾਈ॥

(੪) ਭੀਖ ਮਾਗੀ ਘਰ ਜਾਹਿਕੇ ਦੇਖੋ ਦੁਜ ਕੀ ਚਾਲ।
ਬਲ ਰਾਜਾ ਨੂੰ ਪਕੜਕੇ ਦਿਤਾ ਰਾਜ ਪਤਾਲ॥
ਦਿਤਾ ਰ ਜ ਪਤਾਲ ਲੋਗ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਸਾਰੇ।
ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਬਾਵਨ ਹੋਇ ਤਾਹ ਕੇ ਗਿਆ ਦੁਆਰੇ।
ਕਹ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਰੰਚ ਨਹੀ ਹੂਆ ਕੁਕਾਜਾ।
ਪਰਸਪਰ ਕੇ ਕਾਜ ਦੀਏ ਬਾਵਨ ਨੇ ਸਾਜਾ॥

(੫) ਕਿਸਨੂੰ ਗੁਝੀ ਬਾਤ ਹੈ ਭ੍ਰਿਗੂ ਦੇਵ ਜੋ ਕੀਨ।
ਰਜ ਸਤ, ਤਮ ਕੀ ਪ੍ਰੀਖਯਾ ਕੀਨੀ ਦੁਜ ਪ੍ਰਬੀਨ।
ਕੀਨੀ ਦੁਜ ਪ੍ਰਬੀਨ ਹਰਿ ਕੇ ਜਾਇ ਲਾਤ ਲਗਾਈ॥
ਰਜ, ਸਤ, ਤਮ ਕੀ ਪ੍ਰੀਖਯਾ ਜਾਇ ਬਿਸ਼ਨੂੰਸੇ ਪਾਈ
ਕਹੋ ਸ਼ਰਮਾ ਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਪ੍ਰਭੂ ਜੀ ਪਕੜੇ ਚਰਣਾ।
ਹੁਈ ਸਿੱਧ ਯੇਹ ਬਾਤ ਹਰਿਸਤਗੁਣ ਕੇ ਕਰਣਾ॥

(੬) ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਪੜ ਦੇਖ ਲੋ ਕਰਕੇ ਸਭੀ ਵਿਚਾਰ।
ਦ੍ਰੁਪਦ ਸੁਤਾ ਕੇ ਪਾਂਚ ਸੁਤ ਦੀਏ ਭੂਲ ਸੇ ਮਾਰ॥
ਦੀਏ ਭੂਲ ਸੇ ਮਾਰ ਦੁਜ ਅਸ਼ਅਸਥਾਮਾ॥
ਸੀ ਵੋਹ ਅਸਲੀ ਸੂਰਮਾ ਜੁਧ ਕਰਤ ਸੰਗ੍ਰਾਮਾ॥
ਕਹ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਭੂਲ ਸਦਾ ਹੋਤੀ ਆਈ।

ਗੁਰ ਗੋਬਿੰਦ ਸੇ ਪੂਛੀਏ ਜਿਨੇ * ਭੂਲ ਬਖਸਾਈ ॥
(੭) ਦੂਜ ਕੀ ਸਭ ਸੰਗਤ ਕਰੋ ਜਿਉ ਕਰੀ ਹਰੀਚੰਦ ਰਾਜ,
ਦੂਜਕੀ ਸੰਗਤ੍ਸੇ ਮਿਲੇ ਵੋਹ ਬੰਸੀਵਾਲੇ ਮਹਾਰਾਜ।
ਵੋਹ ਬੰਸੀਵਾਲੇ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ ਹਰੀਚੰਦ ਕੋ ਤਾਰਦੀਆ।
ਸਹਤ ਕੁਟੰਬ ਔਰਖਰਕੂ ਕਰਕੇਭਵਸਾਗਰਸੇਪਾਰਕੀਆ
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾ ਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਮੁਨੋ ਦਾ ਦੇਖੋ ਉਪਕਾਰਾ।
ਸਭ ਤਕਲੀਫ਼ੇ ਸਹਾਰ ਕੀਆ ਰਾਜਾ ਕੋ ਭਵਪਾਰਾ।
(੮) ਲੰਕਾਪਤਿ ਕੋ ਦੇਖੀਏ ਕੇਹੀ ਕੀਨੀ ਬਾਤ।
ਅਪਨੀ ਮੁਕਤੀ ਹੇਤ ਜਿਸ ਹਰੀ ਸੀਤਾ ਜਗਮਾਤੁ।
ਹਰੀ ਸੀਤਾ ਜਗਮਾਤ ਰਾਮਕੇ ਮਿਲਨੇ ਕੋਰਣਾਂ।
ਨਹੀਂ ਦਿਲਮੇਂ ਕੁਛ ਔਰ ਕੀਆ ਸਦਮਾਤਹੀਮਾਤਉਚਾਰੇਣ
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਭੁਜੀ ਕੇ ਗਾਬਾ ॥
ਰਾਖਸ਼ ਜੂਨ ਛੁਡਾਇ ਉਹ ਦੇਈ ਪਦਵੀ ਰਘੁਨਾਥਾ।
(੯) ਭਾਰਤ ਮੇਂ ਛਤ੍ਰੀ ਬੜੇ ਕਰਨੇ ਲਗੇ ਕੁਕਾਜ।
ਘਰ ਬਿਪਰ ਕੇ ਪ੍ਰਗਟੇ ਤਬਸ਼੍ਰੀਸ਼ਾਮਸੁੰਦਰਮਹਾਰਾਜ।
ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼ਾਂਮਸੁੰਦਰਮਹਾਰਾ ਜਪਰਸਰਾਮਨਾਮਬਿਖਜਾਤਹੂਏ
ਭਾਰਤ ਕਸ਼ਟ ਨਿਵਾਰ ਦੀਆਜਿਉਂ ਗੀਤਾਮੇਂਕੌਲਕਰਾਰਦੀਏ
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਂਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਪਰਸਰਾਮ ਕਾ ਪਿਖ ਕਰ ਕਾਮ।
ਰਾਮਚੰਦ੍ਰ ਪ੍ਰਸੰਨ ਹੂਏ ਦੰਡਵਤ ਸੇ ਕਰੀ ਪ੍ਰਣਾਮ ॥

---

*ਮੇਰੇ ਕੁਛ ਅਪਰਾਧ ਨਹੀਂਗਿਓ ਜਾਦਤੇਭੁਲਨਾਕੋਪਹਚਾਨੋ

(੧੦)ਕਿਸਨੇ ਜਹਿਰ ਦਈ ਹੇ ਛੀਮੇ ਗੁਰੂ ਮਹਾਂਰਾਜ ।
ਸੂਰਜ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪੜ੍ਹ ਦੇਖੀਏ ਕਿਸਕੀ ਖੁਲਤੀ ਪਾਜ ॥
ਕਿਸਕੀ ਖੁਲਤੀ ਪਾਜ ਸੋਚ ਕਰ ਦੇਖੋ ਤੁਮ ਭਾਈ ।
ਅਪਨੇ ਘਰਕੀ ਫੂਟ ਛਪਾਹੈ ਬਿਪਰ ਪਰ ਦੋਸ ਲਗਾਈ।
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾ ਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਗੁਰ ਆਈ ਲੇਨੇ ਕਾਰਣ ।
ਦੀਨੀ ਵਿਖੜਾਏ ਪ੍ਰਥੀਏ ਖੁਦ ਕਰੋ ਵਿਚਾਰਨ ॥
(੧੧) ਭਾਣੇ ਮੇ ਗੁਰਸੁਤ ਮਰੇ ਦੇਖੋ ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥ
ਗੁਰ ਹੁਕਮ ਮਾਨਤ ਨਹੀਂ ਕੈਸਾ ਉਲਟਾ ਪੰਥ ॥
ਕੈਸਾ ਉਲਟਾ ਪੰਥ ਮਾਨੇਨਹੀਂ ਗੁਰੂਨਾਨਕਕੇਹੁਕਮਕੀਏ
ਚਾਰੋਂ ਬੇਟੇ ਔਰ ਲਾਖੋ ਧੋਧੇਗੁਰਗੋਬਿੰਦਦੇਵਭੇਟਕੀਏ॥
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਂਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਦੋਸ ਕਿਆ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਤਾਈਂ ।
ਕਹੀਏ ਸਾਕੇ ਗੁਰਾਂ ਨੂੰ ਜਿਨਾਂ ਹੁਕਮ ਕੀਆਈ ॥
(੧੨) ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਆਗਿਆ ਦਈ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਪੂਜਨ ਹੇਤ
ਹੋਇਸਕੈਸਕੈ ਕੇਸ ਬਿਨ ਦੇਵੇ ਦਾਨ ਸਰਤ ॥
ਦੇਵੇਦਾਨ ਸੁਚੇਤ ਬਿਆਸ ਮੁਨੀ ਸਦ੍ਰਿਸਜਾਨ ।
ਕੈਸੇ ਗੁਰਕੇ ਸਿਖ ਹੈ ਗੁਰ ਹੁਕਮ ਨਹੀਂਮਾਨ ॥
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਂਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਭੂਲ ਸਿਖਨ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਏ ।
ਕਰਕੇ ਉਕਤ ਪ੍ਰਚਾਰ ਸਦਾ ਗੁਰੂ ਹੁਕਮ ਮਨਾਈਏ॥
(੧੩) ਬਿਪਹ ਬਰਣ ਉਤਮ ਬਡਾ ਤੀਨਦੇਵ ਕੋ ਰੂਪ ।
ਪਲਟੇ ਮਜਬ ਪੀਰ ਨ ਜਜੇ ਸੋ ਪਾਪੀ ਪਰੇ ਕੂਪ ॥

ਸੋ ਪਾਪੀ ਪਰੈ ਕੂਪ ਦੇਖੋ ਦ੍ਰੁਮ ਸੂਰਜ ਪ੍ਰਕਾਸਾ।
ਬ੍ਰਾਹਮਣਹੋਕਰ ਸਿਖ ਬਨੇ ਉਰ ਪਦਵੀ ਸਹੁਆਬਿਨਾਸਾ
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦਭ੍ਰਲ ਕਰੀਓ ਮਤ ਭਾਈ। ।
ਜੋ ਬ੍ਰਾਹਮਨ ਸੇ ਸਿਖ ਹੋਇ ਕੂਪਵੋਹ ਪੜਹੈ ਜਾਈ ॥
(੧੪) ਪਟਿਆ ਘਰ ਲਾਹੌਰ ਦਾ ਰਾਣੀ ਚੰਦਕੌਰ ਆਪ।
ਦੋਸ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਪੈ ਦੇਤ ਹੈ ਯੇਹ ਕੈਸਾ ਭਾਰੀ ਪਾਪ॥
ਯੇਹ ਕੈਸਾ ਭਾਰੀ ਪਾਪ ਕਰਤ ਹੈ ਅਧਮ ਲੋਕਾਈ।
ਹੈ ਪ੍ਰਸਿਧ ਯੇਹ ਬਾਤ ਰਾਜ ਦੀਆ ਰਾਣੀ ਡੋਬਾਈ।
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮਿਗਿੰਦ ਝੂਠ ਸਭ ਐਸਾ ਹੀ ਪੜ ਦੇਖੋ।
ਭਾਰਾ ਝਠੀ ਨਿੰਦਾ ਸੇ ਲੇਖ ਦਿਤ ਕਾ ਸਜਨ ਖੁਦ ਪੇਖੋ ॥
(੧੫)ਬ੍ਰਾਹਿਮਣ ਜਾਤੀ ਕੇ ਬੁਰੇ ਕੋ ਜਾਨਤ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ।
ਦਿਆਰਾਮ ਦੁਜਨੇ ਜਿਨੇ ਜੁਧ ਮੇਂ ਦੀਆ ਅਨੰਦ ॥
ਜੁਧ ਮੇਂ ਦੀਆ ਅਨੰਦ ਤੁਰਕੋਂ ਸੇ ਬਿਜਆ ਕਰਵਾਈ।
ਦ੍ਰੋਣਾਚਾਰਯ ਗੁਰ ਪਦਵੀ ਦਈ ਦੇਖੋ ਦਸਗ੍ਰੰਥ ਪੜਾਈ ।
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਲਾਹੌਰ ਮੁਕਰਰ ਇਮਧਜਾਨਕਰਾਏ
ਪੰਡਿਤ ਭਾਨੂ ਮੁਰਦਾਰਾਮ ਕੇ ਕਿਉਂ ਭਲੇ ਭੁਲਾਏ ॥
(੧੬ ਸੂਦਰ ਪੜੇ ਜੋ ਵੇਦ ਦਾਬ ਤ੍ਰਿਆ ਗੀ ਧਾਰੇ ਨਾਰ।
ਸਿਖ ਤ੍ਰਿਆਗ ਸਿਦਕ ਨੋ ਕਿਆ ਤਾਕਾ ਇਤਬਾਰ ॥
ਕਿਆ ਤਾਕਾ ਇਤਬਾਰ ਯੇਹੀ ਗੁਰ ਦਸਮ ਫ਼ਰਮਾਵੇ ॥
ਸੌ ਸਾਖੀ ਪੜ ਦੇਖਲੋ ਸਤਾਹਿਟ ਸਾਖੀ ਮੇ ਆਵੇ ॥

ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਦੋਸ ਕਿਆ ਪੰਡਿਓਂ ਤਾਂਈਂ ।
ਦਸਮ ਗੁਰ ਜੀ ਸੇ ਪੁਛੀਏ ਜਿਨ ਮਰਜਾਦ ਬਤਾਈ ॥
(੧੭)ਦੇਖੋ ਭੁਗਤ ਕਬੀਰਜੀ ਮਾਨ ਜੁਲਾਹਾ ਆਪ ।
ਖੋਲੋ ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥ ਜੀ ਫਿਰ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਪਰ ਕਿਆ ਪਾਪ॥
ਫਿਰ ਬਾਹਮਣ ਪਰ ਕਿਆ ਪਾਪ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਬਤਾਵੇ ।
ਮਤੀਮੰਦ ਕੇ ਹੋਨੇ ਸੇ ਨਹੀਂ ਸਮਝ ਕੁਛ ਆਵੇ ॥
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਸਭ ਜਗ ਗੁਰੂ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਮਾਨੇ ।
ਕਬੀਰ ਸ਼ਲੋਕ ਪੜ੍ਹ ਦੇਖ ਲੋ ਸਚ ਝੂਠ ਪਛਾਨੇ ॥
(੧੮) ਸਭ ਸੇ ਪਹਿਲੇ ਬਿਪਰੋਂ ਕੋ ਮਾਨੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂਦੇਵ ।
ਗੁਵਾਰ ਜਾਤੀ ਕੇ ਲੋਗੋ ਕੋ ਕਿਆ ਬਿਪਰੋਂ ਕਾ ਭੇਦ !
ਕਿਆ ਬਿਪਰੋਂ ਕੇ ਭੇਦ ਕੋ ਸਿੰਘਦਿਤ ਹੈ ਪੂਛਾ ।
ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਕੇ ਭਾਵ ਕੋ ਨਹੀਂ ਜਾਨਤ ਹੂਛਾ ॥
ਕਹ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਆਦਿ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਫੁਰਮਾਵੇ ।
ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਕੀ ਜੋ ਬਿੰਦ ਹੈ ਸੋ ਪੂਜ ਮਨ ਭਾਵੇ ॥
(੧੯) ਅਪਨੀ ਪੂਜਾ ਵ ਸਤ ਨਾਮ ਲੇਤ ਰਵਿਦਾਸ ।
ਤਖਤ ਚਾਰੋ ਸੇ ਪੂਛੀਏ ਜ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ॥
ਜੋ ਗੁਰਮਤ ਪ੍ਰਕਾਸ ਤਖਤੋ ਨੇ ਹੁਕਮ ਹੈ ਦੀਆ ।
ਦਿਤਸਿੰਘ ਕੀ ਮਨਮਤੀ ਪੈ ਕੋਇ ਚਲੇ ਨਾ ਧੀਆ ॥
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾ ਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਦੇਖੀ ਤਖਤੋ ਕੀ ਰਾਇ ।
ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਕੀ ਪੂਜਾ ਕੋ ਜਿਨ ਦੀਆ ਗਰਾਇ ॥

(੨੦) ਵਿੱਤਸਿੰਘ ਰਵਿਦਾਸੀਏ ਕੀਤਾ ਬੁਰਾ ਪ੍ਰਚਾਰ।
ਸਾਧੂ ਭਗਤ ਮਹਾਤਮਾ ਕਰਤ ਰਹੇ ਹੈ ਪੁਕਾਰ।
ਕਰਤ ਰਹੇ ਹ ਪੁਕਾਰ ਪੁਛਲੋ ਸਜਨ ਜਨ ਜਾਈ।
ਗੁਰੂ ਰਖਜਕ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਕੋ ਜਿਨ ਚਹਾ ਗਿਰਾਣੇ॥
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਸ਼ਰਮ ਟਿਸਕੋ ਨਹੀਂ ਆਤੀ।
ਕਰਤਾ ਉਨਕੀ ਨਿੰਦ ਸਭਸੇ ਜੋ ਉਤਮ ਜਾਤੀ॥
(੨੧) ਸਚਾ ਨਜਾਈ ਰਾਜ ਹੈ ਗਵਰਮਿੰਟ ਮਹਾਰਾਜ।
ਜਿਨਕਾ ਕੋਟੀ ਧੰਨਵਾਦ ਕਰਤ ਰਹੇ ਹਮ ਗਾਜ॥
ਕਰਤਰਹੇਹਮਗਾਜਜਿਨਕਾ ਕ੍ਰਿਪਾਸੇ ਅਮਨਾਚਨਹੂਆ।
ਚਾਰੋ ਬਰਣ ਸਭੀ ਸੁਖੀ ਦੀਖਤੇ ਪਖੰਡੀਕੇ ਬੇਦਨ ਹੂਆ।
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾ ਮ੍ਰਿਗਿੰਦਕਰੇ ਸਭ ਜਾਤੀ ਮਿਲ ਕਾਜਾ
ਜਿਸਸੇ ਹੋਇ ਨਿਰਬਾਹਿ ਸੋਚ ਧਰਮੋ ਕੋ ਅਪਨਾਜਾ
(੨੨) ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥ ਕੀ ਆਗਿਆ ਸ ਕਰਤੇ ਉਲਟਾ ਕਾਜ।
ਪ੍ਰਚਾਰਕ ਬਨਗਏ ਵਿਤਸਿੰਘ ਜਿਨਕੋ ਨਾਕੁਛ ਲਾਜ॥
ਜਿਨਕੋ ਨਾ ਕੁਛ ਲਾਜ ਬੁਰਾ ਬਿਪਰੋਂ ਕੋ ਬਤਲਾਵੇ।
ਬਿਪਰ ਸੰਗ ਛੁਡਾਇ ਮਲੇਛ ਸੰਗ ਖਾਨਾ ਖੁਲਵਾਵੇ॥
ਕਹੇ ਸ਼ਰਮਾਮ੍ਰਿਗਿੰਦ ਸਮਝਲੋ ਸਜਨ ਜਨ ਪੂਰਣ।
ਵਿੱਤਸਿੰਘ ਦਾ ਘੁਗੂਘੂੰ ਕਰਤ ਹੈ ਸ਼ਰਮਾ ਸੰਪੂਰਣ॥

॥ ਇਤਿ ਵਿੱਤਸਿੰਘ ਦਾ ਘੁਗੂਘੂੰ ਸਮਾਪਤੰ॥

ਸਿੰਘਸਭਾ ਕਹਾਂ ਸੇ ਚਲੀ

ਪਿਆਰੇ ਮਿਤ੍ਰੋ ਅਜ ਕਲ ਬਹੁਤ ਸੇ ਸੀਧੇ ਸਾਧੇ ਗੁਰੁ ਮਹਾਰਾਜ ਕੇ ਸਚੇ ਹਿੰਦੂ ਸਿਖ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਕੀਨਵੀਨ ਰੋਸ਼ਨੀ ਸੇ ਭਰੀ ਹੂਈ ਮਨਮਤ ਮਰਜਾਦਾ ਕੋ ਦੇਖ ਕਰ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਕੇ ਜਾਲ ਮੇਂ ਫਸ ਜਾਤੇ ਹਂ ਕਿਉਂਕਿ ਵੋਹ ਬਿਚਾਰੇ ਜਾਨਤੇ ਹੈਂ ਕਿ ਯੇਹ ਗੁਰੂਮਹਾਰਾਜ ਕੀ ਚਲਾਈ ਹੂਈ ਮਰਜਾਦਾ ਹ ਮਗਰ ਸਭ ਸਜਨੋਂ ਕੋ ਯੇਹ ਮਾਲੂਮ ਹੋਨਾ ਚਾਹੀਏ ਕਿ ਯੇਹ ਇੱਤਸਿੰਘ ਰਵਿਦਾਸੀਏ ਕੀ ਚਲਾਈਹੋਈਮਨਮਤਮਰਜਾਦਾ ਹੈਗੁਰੂ ਮਤ ਨਹੀਂ ਜਿਸਦੀ ਬਾਬਤ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਕੇ ਮੁਖ ਅਸਥਾਨ ਚਾਰੋਂ ਤਖਤ। ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸਾਹਿਬ ੧ ਅਬਚਲਾ ਨਗਰ ਸਾਹਿਬ ੨ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ੩ ਅਨੰਦਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ੪ ਕੇ ਹੁਕਮਨਾਮੇ ਜੋ ਤਮਾਮ ਸਿਖੋਂ ਕੇ ਲੀਏ ਮਾਨਨੀ ਹੈ ਦੇਖੋ ਅਖਬਾਰ ਖਾਲਸਾ ਨੌਜੁਵਾਨ ਬਹਾਦਰਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜਿਲਦ ੧ ਨੰਬਰ ੫, ਤਾ: ੫ ਫਰਵਰੀ ਸੰਨ ੧੯੦੦ਈ: ਮੇਂਜੋ ਚਸ਼ਮਾ ਨੂਰ ਪ੍ਰੈਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਮੇਂ ਭਾਈ ਸੁੰਦਰ ਸਿੰਘ ਐਡੀਟਰ ਕੀ ਆਗਿਆਨੁਸਾਰ ਛਪਹੇ ਉਸਕੇ ਸਫਾ ੫ ਕਾਲਮ ੨ ਪੰਕਤੀ ੨੬ ਸੇ ਸਫੇ ੭ ਕਲਮ ੨ ਸਤਰ ੧੩ ਤਕ ਨੀਚੇ ਲਿਖੀ ਰਾਇ ਹੈ। ਜੋ ਇਨਤੀਨ ਹੁਕਮ ਨਾਮਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪ ਅੰਪਨੇ ਪੰਥ ਸੁਧਾਰ ਅਖਬਾਰ ਵਿਚ ਛਾਪਦਿਓ ਤਾਂ ਪੰਥਭੀ ਗੌਰਕਰ

ਏਹ ਏਨਾਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਤੇ ਤਖਤ ਸਾਹਿਬਾਂ ਦੀਆਂ ਮੋਹਿਰਾਂ ਲਗੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ, ਮੈਂ ਚਾਹੁਨਾ ਹਾਂ ਜੋ ਕੌਮੀ ਅਖਬਾਰ ਅਪਨੀ ਅਪਨੀ ਰਾਇ ਦਨਪਰ ਯਾਦ ਰਖਨਾ ਚਾਹੀਏ ਔਰ ਏਹ ਨਾ ਸਮਝ ਲੈਣਾ ਚਾਹੀਏ ਜੋ ਏਹ ਮਮੂਲੀ ਜੇਹੀਆਂ ਚਿੱਟੀਆਂ ਨਹੀਂ ਹਨ ਏਨਾਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਨੇ ਪੰਥ ਵਿਚ ਬੜੀ ਹਲਚਲ ਮਚਾ ਦਈ ਹੈ ॥

ਹੁਕਮਨਾਮਾ ਅਨੰਦ ਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਕਾ

(ਅਰਥਾਤ ਚਿੱਠੀ)

ਸ੍ਰੀਯੁਤ ਸ੍ਦਾਰ ਸਮੁੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ। ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ਹੈ। ਆਪਕੀ ਪਤ੍ਰਕਾ ਪਹੁੰਚੀ ਹਾਲਮਾਲੂਮਹੁਆ ਆਪਕੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਂਕਾ ਉਤ੍ਰਦੀਆ ਜਾਤਾਹੈ। ਪਹਿਲੇ ਜੋ ਆਪਨੇ ਬਾਬਤ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸਿੰਘ ਸਜਾਉਨ ਵਾ ਆਰਤੀ ਜਗਾਉਨੇ ਕੇ ਲੀਏ ਪੂਛਾਹੈ ਅਰ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਵਾਲੇ ਜੋ ਕਿ ਅਜਕਲ ਕਰ ਰਹੇ ਹੈਂ ਵੁਹ ਸਭ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਰਮਦਾਸੀਏ ਕੇ ਗੁਟਕੇ ਪੜ੍ਹਨੇ ਸੇ ਹਿਲਜੁਲ ਮਚ ਗਈ ਹੈ ਯਾਨੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸਿੰਘ ਸਜੌਨਾ ਅਰ ਆਰਤੀ ਕੀ ਬਤੀ ਨਾ ਜਗਾਉਨਾ ਯੇਹ ਸਭ ਮਨਮਤ ਹੈ ਜਿਸ ਸਾਲ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਦਿੱਤ ਸਿੰਘ ਰਵਦਾਸੀਏ ਨੇ ਮੁਸਲਮਾਨੋਂ ਕੋ ਰਲੌਨੇ ਕੇ ਲੀਏ ਜਿਕਰ ਕੀਆ ਥਾ ਉਸ ਵਕਤ ਲਾਹੌਰ ਮੇਂ ਕਿਆ ਹਾਲ ਹੂਆ ਥਾ

ਹਮ ਚਾਰੋ ਤੁਖਤੋਂ ਸੇਤੋ ਇਤਫਾਕਹੋਨਾ ਹੀ ਥਾ ਮਗਰਖਾਸ ਖਾਸ ਹੱਛੇ ਲਿਆਕਤਦਾਰ ਸਿੰਘ ਸਭਾਕੇ ਮੈਂਬਰ ਅਲੰਹਦਾ ਹੋਗਏ ਉਸਦਿਨ ਥੋੜੀ ਅਕਲ ਵਾਲੇ ਦਿੱਤ ਸਿੰਘ ਕੀ ਤਰਫ ਹੋਗਏ ਅਰ ਤੇਜ ਅਕਲ ਵਾਲੇ ਉਸਸੇ ਉਲਟ ਹੋਗਏ ਇਸ ਸੇ ਜਾਦੇ ਉਮਦਾ ਸਬੂਤ ਕਿਆ ਹੋਨੇ ਸਕਦਾ ਹੈ ਯੇਹ ਸਭ ਉਸ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਕੀ ਮਨਮਤ ਹੈ ਉਸੀ ਦਿਨ ਸੇ ਕੀਏ ਹੂਏ ਰਸਮ ਨਏ ਨਏ ਹੋਤੇ ਜਾਤੇ ਹਨ ਯੇਹ ਸਭ ਗੁਰਮਤ ਵਿਰੁਧ ਹੈ ਯਥਾ। ਸਸੇ ਕੇ ਸੀਂਗ। ਅਵਿਦਜਾ ਸੇ ਰਾਜਾ। ਅਕਾਸ ਕੇ ਫੂਲਵਤ। ਕਦਾਚਿਤ ਨਹੀਂ ਹੋਤੇ ਇਸ ਤਰਾਂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸਿਖ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦ ਔਰ ਯੇਹ ਨਹੀਂ ਸਮਝਨਾ ਚਾਹੀਏ ਕਿ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਕੀ ਮਨਮਤ ਸੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸਿੰਘੋਂ ਮੇਂ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋ ਗਏ ਹੈਂ ਬਲਕਿ ਵੋਹ ਸਿੰਘ ਜਿਨੋਂ ਨੇ ਉਨਕੇ ਸਾਥ ਖਾਨ ਪੀਨ ਕੀਆ ਹੈ ਹਮਾਰੀ ਕੌਮ ਮੇਂ ਸੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਹੋਗਏ ਹੈਂ ਔਰ ਉਨੋਂ ਨੇ ਅਪਨੀ ਅਸਤਨੋਂ ਮੇਂ ਸਾਂਪ ਡਾਲ ਲੀਏ ਹੈ। ਦੂਸਰੇ ਆਰਤੀ ਕੀ ਬਾਬਤ ਕਿ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਵਾਲੇ ਵਤੀ ਨਹੀਂ ਜਗਾਉਂਦੇ ਯੇਹ ਭੀ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਕੀ ਮਨਮਤ ਹੈ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਅਪਨੇ ਮੁਖਾਰਬਿੰਦ ਸੇ ਉਚਾਰਣਕੀਆਹੈ। ਯਥਾ—ਗਗਨ ਮੈ ਥਾਲ ਰਵਚੰਦ ਦੀਪਕ ਬਨੇ ਤਾਰਕਾ ਮੰਡਲਾ ਜਨਕ ਮੋਤੀ॥ ਆਦਿਕ ਇਸਦਾ ਅਰਥ ਇਸਤਰਾਂ ਪਰ ਹੈ ਗਗਨ ਥਾਲ ਰੂਪ ਮੋਤੀ ਸੇ ਜੜਤ ਹੈ ਰੌਦਨ ਕੀ

ਸੁਗੰਧ ਸੇ ਚੰਦਨ ਹੋਤਾ ਹੈ ਸੂਰਜ ਕਾ ਕਾਮ ਰੌਸ਼ਨੀ ਕਰਨਾ ਪਵਨ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਚੌਰ ਕਰਤੀ ਹੈ ਬਨਾਸਪਤੀ ਫੂਲ ਚੜ੍ਹਾਤੀ ਹੈ ਇਸ ਜੋਤੀ ਕੇ ਵਾਸਤੇ ਕਿਆ ਸਮਗ੍ਰੀ ਕਰੇਗਾ ਇਤਆਦਕ॥

ਇਸਕੇ ਅਰਥ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਔਰ ਉਸਦਮਤਵਾਲੇ ਯੇਹ ਸੋਚ ਕਰਤੇ ਹਨ ਕਿ ਧੂਪ ਘੀ ਬੱਤੀ ਆਦਿਕ ਸਭਕੀਮਤ ਸੇ ਆਤੀ ਹੈ ਇਸ ਲੀਏ ਬੰਦ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਏ ਇਸ ਸੇ ਆਪ ਸੋਚੋ ਯੇਹ ਮਨਮਤ ਨਹੀਂ ਤੋ ਕਿਆਹੈ। ਜਬ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ ਖੁਦ ਯੇਹ ਜਗਨਨਾਥਕੇ ਪਾਸ ਉਚਾਰਨ ਕੀਤੀ ਸੀ ਅਰ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਖਾਸ ਨਿਰਗੁਣ ਉਪਾਸਕ ਥੇ ਨਿਰਗੁਣ ਕੀ ਆਰਤੀ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਨਿਰਗੁਣ ਹੋਤੀ ਹੈ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਜੀ ਨੇ ਭੀ ਸਰਗੁਣ ਪੂਜਾ ਨਿਰਗੁਣ ਕੇ ਵਾਸਤੇ ਭਾਈ ਬਾਲੇ ਕੀ ਜਬਾਨੀ ਜਨਮਸਾਖੀ ਪੈੜੇ ਮੋਖੇ ਸੇ ਲਿਖਵਾਈ ਫਿਰ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਜੀ ਨੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਬੀੜ ਬਧੀ ਔਰ ਆਗਿਆ ਦਈਅਰ ਆਪ ਖੁਦ ਆਰਤੀ ਕੀ ਮਰਜਾਦਾ ਕਰਤੇ ਰਹੇ ਆਦਿ ਤਖਤ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਮੇਂ ਅਬ ਤਕ ਜਾਰੀ ਹੈ ਫਿਰ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਔਰ ਉਸਕੇ ਉਪਾਸਕ ਮਨਮਤ ਸੇ ਹੀ ਸਭ ਮਰਜਾਦਾ ਵਿਰੁਧ ਕਰ ਰਹੇ ਹੈਂ। ਨੌ ਗੁਰੂਆਂ ਕੇ ਮਤ ਸੇ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਕੀ ਆਗਿਆ ਸੇ ਨਾ ਕਿਸੀ ਮੁਸਲਮਾਨ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਛਕ ਕਰਨਾ ਤਾਂ ਖਾਨਪਾਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਸਾਥ ਕੀਆ ਹੈ ਔਰ ਨਾ ਗੁਰੂਆਂ ਕਾ ਹੁਕਮ ਹੀ ਹੈ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਯੇਹ ਸਭ

ਮਨਮਤ ਕੇ ਢਕੌਂਸਲੇ ਲਗਾਏ ਹੋਏ ਹੈਂ। ਕਿਉਂਕਿ ਅਜਕਲ ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਨਏ ਨਏ ਗੁਟਕੇ ਛਪ ਰਹੇ ਹਨ ਜੋ ਸਭ ਵਿਰੁਧ ਹਨ ਔਰ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਖੁਦ ਪ੍ਰੇਸ ਕਾ ਮੁਖਤਾਰਕਾਰ ਹੈ ਜੈਸੀ ਦਲੀਲ ਆਤੀ ਹੈ ਅਖਬਾਰ ਗੁਟਕੇ ਛਾਪ ਦੇਤਾ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਸਾਨੂੰ ਆਦਿ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ। ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀ। ਨੰਦ ਲਾਲ ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀ ਅਤੇ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਵਾ ਸੂਰਜ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕੀ ਬਾਣੀ ਪਰ ਚਲਨਾ ਚਾਹੀਏ ਇਸ ਸੇ ਇਲਾਵਾ ਬਾਣੀ ਸਭ ਵਿਰੁਧ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਖਿਆਲ ਕਰੋ ਜਬ ਤਕ ਰਾਜ ਗਾਨ ਤਖ਼ਤ ਸਾਹਿਬਾਂ ਕੀ ਛਾਪ ਵਾ ਮੋਹਰੇਂ ਨਾ ਲਗ ਜਾਏਂ ਤਬ ਤਕ ਏਹ ਜੋ ਕਾਮ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਵਾਲੇ ਕਰ ਰਹੇ ਹੈਨ ਝੂਠ ਪਰ ਝੂਠ ਹੈ ਏਹ ਸਾਡੀ ਪਤਕਾ ਸਭ ਸਜਨਾਂ ਨੂੰ ਸੁਨਾ ਦੇਨੀ ਦਿਵਾਲੀ ਦੇ ਮੇਲੇ ਪਰ ਤਾਕਿ ਇਨ ਮਨਮਤੋਂ ਕੇ ਕਾਮੋਂ ਸੇ ਬਚੇ ਰਹੇਂ। ਫਕਤ॥

ਦਸਖਤ ਸੋਢੀ ਬਿਅੰਤਸਿੰਘ॥

ਹਰੀਸਿੰਘ ਅਕਾਲਬੁੰਗੇ ਵਾਲਾ, ਸੰਤਾਸਿੰਘ, ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸਿੰਘ ਖਜਾਨਚੀ, ਬਲਵੰਤ ਸਿੰਘ ਅਨੰਦਪੁਰ ਸਾਹਿਬ॥

(ਨੋਟ) ਪਿਆਰੇ ਮਿਤ੍ਰੋ! ਅਨੰਦਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਇਸ ਹੁਕਮਨਾਮੇ ਕੇ ਜਰੀਏ ਸੇ ਆਪ ਖੁਦ ਹੀ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਲਵੋ ਕਿ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਗੁਰਮਤ ਹੈ ਜਾ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਰਵਦਾਸੀਏ ਕੀ ਚਲਾਈ ਹੁਈ ਮਨਮਤ ਹੈ॥

ਪਟਨੇ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਹੁਕਮਨਾਮਾ

(ਅਰਥਾਤ ਚਿਠੀ)

ਸ੍ਰਦਾਰ ਸਮੁੰਦਰਸਿੰਘ ਜੀ ਸ੍ਰੀਵਾਹਿਗੁਰੂਜੀਕੀਫਤਹਿ ਹੈ ਪਤ੍ਰਕਾ ਪਹੁੰਚੀ ਹਾਲ ਮਾਲੂਮ ਹੋਇਆ ਜਿਸਕਾ ਉਤ੍ਰ ਲਿਖਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਏਹ ਸਭ ਮਨਮਤਹੈ ਗੁਰੂਮਹਾਰਾਜ ਕੀ ਸਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਜੀ ਕੀ ਆਗਿਆ ਚਾਰੋਂ ਵਰਣੋਂ ਕੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਛਕਾਨੇ ਕੀ ਹੈ। ਮੁਸਲਮਾਨੋਂ ਕੋ ਰਲਾਨੇ ਕੀ ਆਗਿਆ ਕਹੀ ਨਹੀਂ। ਯਥਾ। ਤੁਰਕ ਤੁਰਕਨੀ ਤੇ ਬਚੇ ਤੁਰਕ ਨਾ ਕੀਜੇ ਸਿਖ। ਇਤਯਾਦੀ। ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਛਕਾਨੇ ਕੀ ਆਗਿਆ ਫਿਰ ਕਹਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਮੁਸਲਮਾਨੀ ਸੇ ਜੁਧ ਕੀਏ ਫਿਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਛਕਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਏਹ ਸਭ ਮਨਮਤ ਹੈ। ਝੂਠੇ ਲਗਾੜੇ ਗਿਆਨ ਸਿੰਘਨੇਗੱਪ ਲਗਾਈ ਹੈ ਅਰ ਦਿੱਤਸਿੰਘ ਚਾਹਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਸਿਖੋਂ ਕੀ ਬੇਅਦਬੀਹੋਵੈ ਕਿਉਂਕਿ ਓਹ ਖੁਦ ਰਵਿਦਾਸੀਆਂ ਹੈ। ਅਰ ਗੁਰੂ ਕੇ ਹੁਕਮ ਸੇ ਵਿਰੁਧ ਕਰਤਾ ਹੈ ਦਿਤ ਸਿੰਘ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਹੋਨੇ ਕੇ ਸਬਬ ਘੋਲਮਸੋਲ ਕਰਕੇ ਸਿਖੋਂ ਕੀ ਨਿਰਾਦਰੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹਤਾ ਹੈ। ਪਹਿਲੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸਿੰਘ ਹੋਤਾ ਹੀ ਨਹੀ ਯੇਹਭੀ ਸਭ ਅੰਧੇਰ ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਪੜ ਰਹਾ ਹੈ। ਦੂਸਰੇ ਜੋ ਮੁਸਲਮਾਨ ਐਸਾ ਹੀ ਪ੍ਰੇਮੀ ਹੋ ਤੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤਛਕਾ ਕਰ ਮਜੇ

ਥੀਓਂਮੇ ਦਾਖਲ ਕੀਆ ਜਾਵੇ ਲੇਕਿਨ ਚਾਰ ਬਰਣ ਮੈਂ ਉਸਕਾ ਖਾਨਪਾਨ ਨਹੀਂ ਹੋਸਕਦਾ ਅਰ ਆਰਤੀ ਕਾ ਹਟਾ ਦੇਨਾ ਭੀ ਅਥਵਾ ਬਤੀ ਨਾ ਜਗੌਨੀ ਸਭ ਮਨਮਤ ਹੈ ॥

ਦਸਖਤ ਬਾਵਾ ਸੁਮੇਰਸਿੰਘ ਮਹੰਤ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ॥

(ਨੋਟ) ਯੇਹ ਹੁਕਮਨਾਮਾ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ਜਾਂਕਾ ਹੈ ਜਿਸ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ਮੇਂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੁ ਗੋਬਿੰਦਸਿੰਘਜੀਮਹਾਰਾਜ ਕਾ ਜਨਮ ਹੂਆ ਥਾ ਔਰ ਹਿੰਦੂਓਂ ਕੇ ਮਾਨਨੇ ਕੀ ਜਗਾ ਹੈ ਉਸ ਪਟਨਾਂ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਹੁਕਮ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਪ੍ਰੇਮੀ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸਿਖ ਹੋ ਭੀ ਜਾਵੇ ਲੇਕਿਨ ਚਾਰ ਬਰਨ ਮੇਂ ਉਸਕਾ ਖਾਨ ਪਾਨ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਤਾ ਫਿਰ ਸਾਡੇ ਹਿੰਦੂ ਸਿਖਾਂ ਭਾਈਆਂਨੂੰ ਸੋਚਨਾ ਚਾਹੀਏ ਕਿ ਜਬ ਗੁਰੂ ਘਰਮੇਂ ਮੁਸਲਮਾਨੋਂਕੇਸਾਥ ਖਾਨਪਾਨ ਕੀਆ ਗਿਆ ਨਹੀਂ ਤੋ ਫਿਰ ਜੋਗੁਰੂਕੇਸਿਖਹੋਕਰ ਮਜ਼ਬੀਓਂ ਕੋ ਅਪਨੇ ਸਾਥ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਕਿਆ ਵੋਹ ਗੁਰੂ ਕੇ ਸਿਖ ਹੋ ਸਕਤੇ ਹੈਂ ਫਿਰ ਕਿਆ ਸਾਨੂੰ ਉਨਾਂਦੇਸਾਥ ਮੇਲ ਰਖਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈਂ ਹਾਂ ਹਾਂਬਿਲਕੁਲ ਨਹੀਂ ਜੈਸੇ ਦੇਖੋ ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਕੀ ਬਾਤ ਹੈ ਕਿ ਸਿੰਘ ਸਭਾਸਹਿਰ ਫੀਰੋਜ਼ਪੁਰਨੇ ਕੋਈ ਕਰੀਬਨ ਡੇਢ ਸੌ ਰਮਦਾਸੀਏ ਅਪਨੇ ਸਾਥ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰ ਉਨਕੇ ਹਾਥ ਸੇ ਕੜਾਹ ਪ੍ਰਸਾਦ ਛਕਿਆ ਔਰ ਉਨਕੋ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਛਕਾਇਆ ਉਸੀ ਦਿਨ ਸੇ ਸ੍ਰੀਮਾਨ ਭਾਈ ਸਾਧੂ-ਸਿੰਘ ਜੀ ਆਦਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਕੇ ਪਕੇ ਹਿੰਦੂ ਸਿੱਖੋ ਨੇ

ਅਪਨੇ ਗੁਰਦੁਆਰਿਓਂ ਮੇਂ ਉਨਕਾ ਆਨਾ ਔਰ ਉਨਕੇ ਸਾਥ ਮੇਲ ਜੋਲ ਰਖਨਾ ਔਰ ਸਿੰਘ ਸਭਾਮੇਂ ਜਾਨਾ ਬਿਲਕੁਲ ਬੰਦਕਰਦੀਆ ਕਿਉਂਕਿ ਵੋਹ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਜ ਕੇ ਸਚੇ ਸਿਖ ਹੈਂ ਔਰ ਗੁਰੂ ਘਰਕੀ ਮਰਜਾਦਾ ਕੇ ਜਾਨਨੇ ਵਾਲੇ ਹੈਂ ਇਸ ਲੀਏ ਹਿੰਦੂ ਸਿਖਾਂ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਘਰ ਕੀ ਸਚੀ ਮਰਜਾਦਾ ਕੋ ਛੋਡ ਕਰ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਕੇ ਸਾਥ ਮੇਲ ਰਖਨਾ ਔਰ ਉਨਕੋ ਅਪਨੇ ਗੁਰਦ੍ਵਾਰਿਓਂ ਕੇ ਜੋੜ ਮੇਲ ਮੇਂ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰਨਾ ਔਰ ਉਨਕੇ ਜੋੜ ਮੇਲ ਮੇਂ ਜਾਨਾ ਬਿਲਕੁਲ ਗੁਰੂ ਘਰ ਕੀ ਮਰਜਾਦਾ ਸੇ ਵਿਰੁਧਹੈ ਦੇਖੋ ਹੁਕਮਨਾਮਾ ਹਜੂਰ ਅਬਚਲਾ ਨਗਰ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਯਥਾਃ—

ਹੁਕਮਨਾਮਾਹਜੂਰਅਬਚਲਾਨਗ੍ਰਸਾਹਿਬਕਾ

ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤੇ। ਨਾਨਕ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿਦ ਸਿੰਘਜੀ ਪੂਰਨ ਗੁਰੂਔਤਾਰ। ਜਗਮਗ ਜੋਤ ਬਿਰਾਜਰਹੀ ਸ੍ਰੀ ਅਬਚਲ ਨਗਰ ਅਪਾਰ। ਰਚਿਓ ਪੰਥ ਜਿਨ ਖਾਲਸਾ ਲੀਊ ਸਕਲ ਅਵਤਾਰ। ਜਗਤ ਜੋਤ ਜਗਮਾਤ ਜ਼ਾਹਿਰ ਜਗ਼ਤ ਮਝਾਰ। ਤਖਤ ਸਾਹਿ ਬਅਬਚਲ ਨਗਰ ਸਚਖੰਡ ਦਰਬਾਰ ਲਿਖਤੁਮ ਹਜੂਰ ਸਾਹਿਬ ਸਚਖੰਡ ਜੀ ਦੇ ਦਰਬਾਰ ਸ੍ਰੀ ਮਹੰਤ ਮਾਨਸਿੰਘ ਜੀ ਪੁਜਾਰੀ ਤੇ ਪੁਜਾਰੀ ਨਾਰੈਣ ਸਿੰਘ ਵਾ ਗ੍ਰੰਥੀ ਹਜੂਰਾ ਸਿੰਘਜੀ, ਗ੍ਰੰਥੀ ਮਾਣਾਸਿੰਘ ਜੀ ਤੇ

ਆਇਆਸਿੰਘ ਜੀ ਤੇ ਹੋਰ ਸ੍ਰਬਤ ਤੇ ਸੰਬੂਹ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਨੇ
ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤੇ ਗਜਾਈ ਹੈ ਤੁਸਾਂ ਗਜਾਵਣੀ ਜੀ
ਯਹਾਂ ਸੁਖ ਆਨੰਦ ਹੈ ਆਪਕੀ ਸੁਖ ਆਨੰਦ ਸ੍ਰੀ ਕਲਗੀਧਰ
ਜੀ ਸੇ ਹਮੇਸ਼ ਚਾਹਿਤੇ ਹੈਂ । ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਤਖਤ ਕੇ ਪੁਜਾਰੀ
ਗ੍ਰੰਥੀ ਮੁਲਤਾਨਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਤੇ ਹੋਰ ਸ੍ਰਬਤ ਪੁਜਾਰੀ ਗ੍ਰੰਥੀ
ਹਰਨਾਮਸਿੰਘ ਜੀ ਤੇ ਭਾਈ ਪ੍ਰਤਾਪਸਿੰਘ ਜੀ ਤੇ ਹੋਰ ਸ੍ਰਬਤ
ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੋ ਮਾਲੂਮ ਹੋਵੇ ਜੋ ਗੁਰੂ ਦਸੋਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਓਂ ਕੇ
ਪ੍ਰੇਮੀ ਸਬਦ ਬਾਣੀ ਕੇ ਨੇਮੀ ਬੀਚ ਦੀਵਾਨ ਕੇ ਪੜਕਰ
ਸੁਨਾ ਦੇਨੀ ਜੀ ਹਜੂਰ ਸਚਖੰਡ ਦਰਬਾਰਸੇ ਕੇਸਗੜ ਸਾਹਿਬ
ਵਾ ਅਨੰਦ ਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਪਟਨਾ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੋ ਭੀ ਲਿਖਾ ਹੈ।
ਧਰਮ ਕੇ ਰੱਖਨੇ ਲੀਏ ਜੋ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੇ ਸਿੰਘ ਪ੍ਰੇਮੀ ਸਬਦ
ਬਾਣੀ ਕੇਨੇ ਮੀ ਸੋ ਦਸੋਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਓਂ ਕੋ ਔਰ ਦਸੋ ਪਾਤਸ਼ਾ-
ਹੀਓਂ ਕੀ ਬਾਣੀ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੋ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖਕਾ
ਸਰੂਪ ਜਾਨਦੇ ਹੈਂ। ਤਿਨਾਂ ਦੇ ਸਾਥ ਵਰਤਾਉ ਰਖਨੇ ਕਾ ਗੁਰੂ
ਜੀ ਕਾ ਹੁਕਮ ਹੈ। ਜੇ ਸੌ ਚੰਦਾ ਉਗਵੈ ਸੂਰਜ ਚੜੇ ਹਜਾਰ
ਏਤੇ ਚਾਨਣ ਹੁੰਦਿਆਂ ਗੁਰ ਬਿਨ ਘੋਰ ਅੰਧਾਰ। ਜੋ ਸਿੰਘ
ਸਭਾ ਮੇਂ ਭ੍ਰਮੀ ਛੇਕੇ ਔਰ ਪ੍ਰਪੰਚੀ ਪਾਖੰਡੀ ਰੂਹੜੇ ਚੁਮਾਰ
ਮੁਸਲਮਾਨਾ ਨੂੰ ਮਿਲਾਨੇ ਵਾਲੇ ਔਰ ਦਸਵੇਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਜੀ
ਕੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੀ ਨਿੰਦਜਾ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਹੈਂ ਯਾਂ
ਕਰਦੇ ਹੈਂ ਉਨਾਂ ਦੇ ਸਾਥ ਵਰਤਾਓ ਨਹੀਂ ਰਖਨਾ ਉਨਾਂ ਨੂੰ

ਖਾਲਸੇ ਜੀ ਨੇ ਛੋਡ ਦੀਆ ਹੈ ਉਨਾਂ ਦੇ ਜੋੜਮੇਲ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਜਾਨਾਂ ਔਰ ਨਾ ਉਨਾਂ ਨੂੰ ਜੋੜ ਮੇਲ ਮੇਂ ਮਲਾਨਾ ਜੋਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਕੇ ਤਾਬਿਹ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਹੈ ਸਾਂਰੇ ਅਰਦਾਸਾ ਲਿਖ ਭੇਜੋ॥ ਘਰ ਘਰਹੋਇ ਬੈਠੇਗੇ ਰਾਮਾ। ਤਿਨਤੇ ਸਰੇ ਨਾ ਕੋਊ ਕਾਮਾ॥ ਸੂਖਮ ਲਿਖਿਆ ਬਹੁਤ ਕਰ ਜਾਨਣਾ ਜੀ।

ਦਸਖਤ ਮਾਨਸਿੰਘ ਪੁਜਾਰੀ॥

(ਨੋਟ) ਯੇਹ ਚਿਠੀ ਹਜੂਰ ਅਬਜਲਾਂ ਨਗਰ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਅਕਾਲਬੁੰਗੇ ਮੇਂ ਭੇਜੀ ਸੀ ਜਿਸ ਮੇਂ ਖਾਸ ਲਿਖਾ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਪੁਰਖ ਦਸੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਂ ਨੂੰ ਔਰ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਪਰ ਸਰਧਾ ਰਖੇ ਉਨਕੇ ਸਾਥ ਮੇਲ ਰਖਣਾ ਵੋਹ ਚਾਹੇ ਸੈਹਜ ਧਾਰੀ ਹੋ ਚਾਹੈ ਕੇਸਧਾਰੀ ਹੋ ਕਿਉਂਕਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਕਾ ਹੁਕਮ ਹੈ। ਭਾਵੇ ਲੰਬੇ ਕੇਸ ਕਰ ਭਾਵੇਂ ਘਰਰ ਮੁਡਾਇ। ਦੂਸਰੇ ਦੇਖੋ ਭਗਤ ਰਤਨਾਵਲੀ ਸਾਖੀ ੧੩੪ ਭਾਈ ਮਨੀ-ਸਿੰਘ ਜੀ ਕੀ ਬਨਾਈ ਹੂਈ ਮੇਂ ਲਿਖਾ ਹੈ ਕਿ ਵਾਸੀਆਂ ਵਾਲੇ ਸਿਖਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਦਸਮਜੀ ਪਾਸ ਅਰਦਾਸ ਪੰਜਮੀ ਕੀਤੀ ਜੀ ਸਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਵਕਤ ਜੰਞੂ ਪਾਵਨ ਕਿ ਅਸੀਂ ਪੁਤ੍ਰ ਨੂੰ ਉਸਤਰੇ ਨਾਲ ਭਦਣ ਕਰਵਾਂਦੇ ਸਾਂ ਅਬ ਸਿਖ ਰੋਕਦੇ ਹੈ ਕੀ ਹੁਕਮ ਹੈ। ਉਤਰ। ਸੈਹਿਜਧਾਰੀ ਕੇ ਬੇਟੇ ਕੀ ਕੈਚੀ ਸੇ ਰੀਤੀ ਕਰੋ ਕੇਸ ਧਾਰੀ ਬੇਟੋਂ ਕੋ ਦਹੀ ਸੇ ਕੇਸੀ ਸਨਾਨ ਕਰਾਓ ਜਨੇਊ ਸਮਯ ਇਤਿ ੬—

ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੇ ਸਾਥ ਗੁਰ ਘਰ ਮੇਂ ਕਿਸੀ ਜਗੇ ਵਰਤਾਓ ਵਾ ਮੇਲ ਜੋਲ ਨਹੀਂ। ਯਥਾ ਦੇਖੋ ਅਖਬਾਰ ਗੁਰਮਤਪ੍ਰਚਾਰ ਲਾਹੌਰ ਤਾਃ ੧ ਜਨ ਸਨ੧੯੦੨ਮੇਂ ਇਸਤਰਾਂ ਸੇ ਲੇਖ ਹੈ। ਐਤਕੀ ਜਦ ਅਸੀਂ ਸ੍ਰੀ ਹਜੂਰ ਅਬਚਲਨਗਰ ਸਾਹਿਬ ਸਚ ਖੰਡ ਦੀ ਯਾਤ੍ਰਾ ਨੂੰ ਗਏ ਤਾਂ ਜਿਸ ਵਕਤ ਪਹਿਲੇ ਅਰਦਾਸਾ ਸੁਧਾਣ ਗਈ ਹਜੂਰ ਹੋਏ ਤਦ ਹੋਰ ਕੁਰੀਤਾਂ ਦੀ ਪੁਛਦੇਨਾਲ ਏਹ ਭੀ ਸਾਡੇ ਤੋਂ ਪੁਛਿਆ ਗਿਆ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਸਿੰਘ ਸਭੀਏ ਤਾਂ ਨਹੀਂ, ਇਸ ਪਰ ਅਸਾਂ ਨੇ ਕਹਾ ਨਹੀਂ ਤਦ ਸਾਡਾ ਅਰਦਾਸਾ ਸੋਧ ਆਗਿਆ ਅਰ ਤਖਤ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦੀਪ੍ਰ ਕਰਮਾ ਕਰਨੀ ਮਿਲੀ ਸੀ। ਸਾਡੇ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾ ਭਾਈ ਮੇਹਰਸਿੰਘ ਜੀ ਚਾਵਲੇ ਲਾਹੌਰ ਨਿਵਾਸੀ ਦੇ ਨਾਲ ਵੜੀ ਤੰਗੀ ਹੋਈ ਸੀ। ਇਕਰਾਰਨਾਮਾ ਲੈਕੇ ਤਨਖਾਹ (ਸਜਾ) ਲਗਾਕੇ ਅਰਦਾਸਾ ਸੋਧਿਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਛਪਵਾਨੇ ਵਾਲਾ ਸੰਤ ਖਾਲਸਾ ਭਾਈ ਅਵਤਾਰਸਿੰਘ ਬਹੀਰੀਆ ॥

ਪਯਾਰੇ ਮਿਤ੍ਰੋ ਦਸਮ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੇ ਮੁਖਅਸਥਾਨ ਸ੍ਰੀ ਅਬਚਲਨਗਰ ਸਾਹਿਬ ਆਦਿਓ ਮੇਂ ਦੇਖੀਏ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘੋਂ ਕੀ ਕਿਸ ਤਰਾਂ ਦੁਰਦਸ਼ਾ ਹੋਤੀ ਹ ਇਤੀ ॥

ਹਿੰਦੂਓ ਸਾਵਧਾਨ ਹੋ ਜਾਓ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕਦੇਵਜੀਕੀ ਸੰਤਾਨ ਬੇਦੀ ਬੰਸ ਅਵਤੰਸ ਸੰ ਔਨਰੇਬਲ ਬਾਬਾ ਖੇਮ ਸਿੰਘ ਜੀ ਸੀ. ਆਈ. ਈ. ੩੦ ਜਨਵਰੀ ਸੰ: ੧੮੯੬ ਈ: ਬੰਗਬਾਸੀ ਅਖਬਾਰ ਮੇਂ ਹਿੰਦੂ ਔਰ ਸਿਖੋਂ ਕੇ ਨਿਫਾਕ ਮੇਂ ਸ਼ਾਂਤੀ ਫੈਲਾਨੇ ਕੇ ਲੀਏ ਏਕ ਸਿਖਯਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕਰਤੇ ਹੈਂ—ਯਥਾ—ਹਿੰਦੂਓ ਡਰੋ ਮਤ ਜਿਨ ਸਿਖੋਂ ਕੋ ਤੁਮ ਸਚੇ ਸਿਖ ਸਮਝਤੇ ਹੋ ਵੋਹ ਝੂਠੇ ਬਾਬੂ ਸਿਖ ਹੈਂ ਵੋਹ ਨਹੀਂ ਰੋਸ਼ਨ ਕੇ ਚਮਗਿਦੜ ਹੈਂ ਐਸ ਲੋਗ ਸਭ ਸਮਾਜੋਂ ਮੇਂ ਪੈਦਾ ਹੋ ਗਏ ਹੈਂ ਸਿਖੋਂ ਮੇਂ ਹੀ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੋਂ ਇਨਕੀ ਬਾਤ ਬੁਰਾ ਨਾ ਮਾਨਨਾ ਸੱਚਾ ਸਿਖ ਔਰ ਹਿੰਦੂ ਦੋਨੋਂ ਦੇਹ ਔਰ ਏਕ ਪਰਾਣ ਹੈ ਅਬ ਸੇ ਹਿੰਦੂ ਹਿਟਦਾ ਉਠਨੇ ਵਾਲੇ ਸਿਖੋਂ ਕੋ ਜਾਤੀ ਦੰਡ ਦੀਆ ਜਾਏ ਗਾ ॥

ਇਤੀ

ਅੰਤਮ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ

ਪਿਆਰੇ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਸੱਚੇ ਹਿੰਦੂ ਸਿਖੋ ਸਾਨੂੰ ਸਮਝਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਏਹ ਜੋ ਕਾਮ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਵਾਲੇ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਏਹ ਗੁਰੂ ਔਰ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕੇ ਮੁਖ ਮੁਖ ਅਸਥਾਨੋਂ ਔਰ ਗੁਰੂ ਘਰ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਵਿਦਵਾਨੋਂ ਕੀ ਰਾਇ ਸੇ ਬਿਲਕੁਲ ਵਿਰੁਧ ਹੈ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਸਾਨੂੰ ਏਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਮੇਲਜੋਲ ਰਖਨਾ ਔਰ ਇਨਾਂ ਦੇ ਦੀਵਾਨ ਮੇਂ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਨਾ ਔਰ ਇਨਕੋ ਅਪਨੇ ਦੀਵਾਨ ਮੇਂ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰਨਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਘਰ ਮੇਂ ਸਾਡੀ ਭੀ ਓਹੀ ਹਾਲਤ ਹੋਵੇਗੀਜੇਹੜੀ ਕਿ ਲਾਹੌਰਦੇਦਿੱਤਸਿੰਘ ਰਵਦਾਸੀਏ ਦੀ ਹਲਾਈ ਹੋਈ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਦੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਜੈਸੇ ਕਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਂਰਾਜਦੇ ਮੁਖ ਅਸਥਾਨੋਂ ਚਾਰੋਂ ਤਖਤੋਂਮੇਂ ਏਹ ਸ਼ਾਮਿਲ ਨਹੀਂ ਹੋਸਕਦੇ ਔਰ ਏਨਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਦਾਂ ਭੋਗ ਨਹੀਂ ਲਗ ਸਕਦਾ ਫੇਰ ਆਪ ਹੀ ਸੋਚੋ ਕਿ ਏਹ ਵੀ ਗੁਰੂ ਦੇ ਸਿਖ ਹੈ, ਹਾਂ ਹਾਂ ਬਿਲਕੁਲ ਨਹੀਂ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਭਾਈਓ ਸਾਨੂੰ ਨਵੀਨ ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਪਾਸੋਂ ਜਰੂਰ ਬਚਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਸਾਡਾ ਗੁਰੂ ਰਾਖਾ ॥

ਗੁਰੂ ਘਰ ਦਾ ਸੱਚਾ ਹਿਤੈਸ਼ੀ

ਪੰਡਿਤ ਮੁਨਸ਼ੀਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ

(ਸੂਚਨਾ)

ਪਿਆਰੇ ਮਿਤ੍ਰ ? ਜਿਨ ਸਜਨੋ ਨੇ ਗੁਰਮਤ ਕਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਔਰ ਮਨਮਤ ਕਾ ਪ੍ਰਹਾਰ ਕਰਨੇ ਵਾਲੀ ਪੰਡਿਤ ਮੁਨਸ਼ੀਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ ਲਾਸਾਨੀ ਗ੍ਰੰਥੀ ਕੀ ਰਚੀ ਹੂਈ ਪੁਸਤਕੇ ਦੇਖਨੀ ਹੋ ਵੋਹ ਸਾਡੇ ਪਾਸੋ ਮਗਵਾ ਸਕਦੇ ਹਨ॥

ਹਾਇ ਹਾਇ ਯਹ ਕੈਸਾ ਅਨੰਦ ਉਰਦੂ)॥।

ਗੁਰੂ ਘਰ ਮੇ ਜਗਯੋਪਵੀਤ ਉਰਦੂ)।

ਗੁਰਮਰਯਾਦਾ ਉਰਦੂ ≡)

ਖਾਲਸਾ ਮਤ ਪ੍ਰਕਾਸ ਉਰਦੂ =)॥

,, ਗੁਰਮਖੀ ।=)

ਜੀਵਨ ਚਰਿਤ੍ਰ ਭਾਈ ਮਨੀਸਿੰਘ ਜੀ ਬਮਏ ਸਿਖ ਇਤਿਹਾਸ ਉਰਦੂ ।=)

ਜੀਵਨ ਚਰਿਤ੍ਰ ਭਾਈ ਤਾਰੂ ਸਿਘ ਜੀ ਉਰਦੂ -)॥

ਜੀਵਨ ਚਰਿਤ੍ਰ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦਸਿੰਘ ਜੀ ਤਸਵੀਰੋ ਸਹਿਤ ਨਾਗਰੀ ੧ ॥)

ਬੰਗਾਲੀ ਸਰਮਾ ।=)

ਈਸ਼ਰਕੇ ਨਾਂ ਮਾਨਨੇ ਸੇ ਹਾਨੀਏ -)

ਭੋਗ ਔਰ ਵੈਰਾਗ -)
ਤੀਨਸਿਖਜਾ ਕਹਾਨੀਆ ਸਹਿਤ -)
ਬੈਰਿਮਦੇਵ ਜੀਕਾ ਜੀਵਨ ਚਰਿਤ੍ਰ -)॥
ਨਵਜੀਵਨ ਵਿਦਜਾ ਨਾਗਰੀ ੧ ॥) ਜਿਲਦ ਸਾਹਿਤ ੨)
ਦੁਨੀਆਂ ਕੇ ਨੌਮਹਾਂ ਪੁਰਸ਼ ।-)
ਭਾਰਤ ਕੀ ਵੀਰ ਔਰ ਵਦੋਸ਼ੀ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਭਾਗ ੨ ।=)
ਬੀਰ ਮਾਤਾਏ ॥)
ਸਚੋਦੇਵੀਆ ।-)॥
ਇਨਸੇ ਇਲਾਵਾ ਹਰ ਪ੍ਰਕਾਰਕੀ ਨਾਗਰੀ ਉਰਦੂ ਗੁਰਮਖੀ
ਪੁਸਤਕੇ ਮਿਲ ਸਕਦੀ ਹੈ ਸੂਚੀਪਤ੍ਰ ਕੇ ਲੀਏ)॥ ਟਿਕਟਭੇਜੇ

ਮਿਲਨੇ ਕਾ ਪਤਾ:—

ਪੰਡਿਤ ਦੌਲਤਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ

ਮੈਨੇਜਰ ਕਿਤਾਬ ਘਰ ਲਾਹੌਰ,